JATAK NIRNAY ASTROLOGY HINDI-II

प्रथम संस्करण की प्रस्तावना

१ से ६ भावों के सम्बन्ध में खण्ड I का पहला संस्करण १९४९ में प्रकाशित हुआ। कुछ कारणों से खण्ड II को तैयार करने में काफी विलम्ब हुआ, जब तक कि मेरी सुपुत्री गायत्री देवी वासुदेव ने मेरी निगरानी में इसे तैयार करने का काम संभाल न लिया। बिना उसकी सहायता के दूसरे खण्ड को प्रकाशित कराना संभव नहीं था।

दूसरा खण्ड ७ से १२ वें भावों के सम्बन्ध में है। इसे प्रथम खण्ड से अधिक महत्त्वपूर्ण समझना चाहिये क्योंकि इसमें विवाह, व्यवसाय आदि जैसे महत्त्वपूर्ण मामलों पर विचार किया गया है।

लेखन का प्रतिमान लगभग प्रथम खण्ड के समान ही है—विभिन्न भावों में भावेश की स्थिति के फल, उस भाव से सम्बन्धित सामान्य योग, उस भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों के फल और इस प्रकार के संकेतों के फलित होने का समय और अनेक व्यावहारिक उदाहरण।

वास्तव में सातवें और दसवें भावों का इतने विस्तार में वर्णन किया गया है कि विवाह की संभावना और समय, इसका टूटना और पुनः बिवाह, पत्नी का स्वभाव, चरित्र, स्थिति, हैसियत, विवाहों की संख्या आदि जैसे विवरणों पर काफी विस्तार पूर्वक विचार किया गया है।

जहां तक दसवें भाव का सम्बन्ध है—यह जन्म कुण्डली का केन्द्रबिन्दु है—आधुनिक राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थिति में व्यवसाय के स्वरूप के बारे में ज्योतिष के माध्यम से जितना संभव था उनका यथासंभव निरूपण किया गया है।

अन्य भाव अर्थात अष्टम (आयु), नवम (सामान्य भाग्य, विदेश यात्रा, पिता आदि), एकादश भाव (वित्तीय लाभ) और द्वादश भाव (हानि, आध्यात्मिक प्रोन्नति आदि) का भी कम विस्तार में निरूपण नहीं किया गया है। उन पर भी यथा संभव ध्यान दिया गया है।

जन्म कुण्डली पर विचार करते समय ज्योतिषी को अनेक संकटों का सामना करना पड़ता है। इसका समुचित उदाहरणों के साथ निरूपण किया गया है कि इस प्रकार के संकटों पर किस प्रकार काबू पाया जा सकता है और ठोस निर्णय पर पहुँचा जा सकता है।

इस पुस्तक में २६० से अधिक कुण्डलियों का उदाहरण दिया गया है। अतः जो ज्योतिष का अध्ययन करना चाहते हैं उनके लिए इन उदाहरणों का काफी महत्त्व है।

इस पुस्तक के खण्ड I और II जिनमें फलित ज्योतिष के समस्त स्वर परास विशेष कर व्यावहारिक पहलू शामिल किये गये हैं, उन लोगों के लिये काफी लाभप्रद सिद्ध होंगे जो इस विषय में रुचि रखते हैं, व्यवसायी, अव्यवसायी और विद्वान। मुझे आशा है कि विद्वान लोग मेरे इस खण्ड को उसी प्रकार स्वीकार करेंगे जैसाकि मेरी अन्य पुस्तकों को अपनाया है।

मैं इस खण्ड को आकर्षक ढंग से प्रकाशित करने के लिये आई बी एच प्रकाशन के मेसर्स पी० एन कामत और जी. के अनन्तनम् को धन्यवाद देता हूँ।

बी० वी० रमन

बंगलौर

७-८-१९८०

तीसरे संस्करण की प्रस्तावना

कुण्डली पर विचार करने की विधि; जिसमें ७ से १२ वें भावों पर विचार किया गया है, के दूसरे खण्ड का दूसरा संस्करण शीघ्र ही बिक गया; ज्योतिष पर मेरी पुस्तकों में शिक्षित लोगों द्वारा रुचि रखे जाने के लिए मैं उनका धन्यवाद करता हूँ।

इस तीसरे संस्करण को पूर्णत: संशोधित कर दिया गया है।

बहुत कम समय में इस संस्करण को प्रकाशित करने का श्रेय आई. बी. एच. प्रकाशन को जाता है।

मेरी यह आशा है कि शिक्षित लोग ज्योतिष पर मेरी पुस्तकों में वैसी ही रुचि दिखाते रहेंगे जैसाकि पिछले अर्धशतक से चला आ रहा है।

बंगलौर
१५-८-१९८५

बी० वी० रमन

विषय वस्तु

			पृ० सं०
१.	सप्तम भाव के सम्बन्ध में	...	१
२.	अष्टम भाव के सम्बन्ध में	...	५४
३.	नवम भाव के सम्बन्ध में	...	१३९
४.	दसम भाव के सम्बन्ध में	...	१८३
५.	एकादश भाव के सम्बन्ध में	...	२७७
६.	द्वादश भाव के सम्बन्ध में	...	३१४
७.	कुछ व्यावहारिक उदाहरण	...	३४५

सप्तम भाव

सप्तम भाव मुख्यतः विवाह, पत्नी या पति और विवाहित सुख से सम्बन्धित होता है।

विवाह जीवन में एक सीमांकन होता है। यह प्यार और स्नेह पर स्थापित एक संस्था है। किन्तु यह विजातीय, आत्मनिष्ठ या वस्तुनिष्ठ तथ्यों की समस्त शृंखला से तैयार की गई एक अति जटिल संरचना भी है। चूँकि हमारा सम्बन्ध मात्र मनो ज्योतिष, पहलुओं से है अतः हम अपने अध्ययन के क्षेत्र में कानूनी और सामाजिक महत्व के वस्तुनिष्ठ तथ्यों को शामिल नहीं करेंगे।

विवाह पाशविक वासना की तुष्टि के लिए एक संस्था नहीं है। यह ऐसा सिविल समझौता नहीं है जिसका प्रभाव केवल सम्बन्धित पार्टी पर होता है। यह परिवार का आधार होता है और इसका विघटन या इसकी स्थापना एक सामाजिक हित की बात होती है। यह वह भूमि है जिससे भविष्य की संतति की उत्पत्ति होती है।

हमारे अपने देश में विवाह को एक धर्म विधि माना जाता है और धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के सम्बन्ध में पति-पत्नी दोनों को समान माना जाता है।

मुख्य बातें

सप्तम भाव का विश्लेषण करने में निम्नलिखित तीन बातों पर विधिवत् विचार करना चाहिए। (क) सप्तम भाव (ख) सप्तमाधिपति (ग) कारक, जो इस मामले में शुक्र है। कुछ अन्य बातों पर भी विचार करना चाहिए अर्थात् सप्तम भाव में स्थित ग्रह और सप्तमाधिपति से सम्बन्धित ग्रह।

विभिन्न भावों में सप्तमाधिपति का फल

प्रथम भाव में—जातक किसी ऐसे व्यक्ति से शादी कर सकता है जिसे वह बचपन से जानता हो अथवा जो उसी मकान में बड़ा हुआ हो। जातक की पत्नी या पति स्थिर और परिपक्व होगा। वह तेज बुद्धिवाला होगा और उसमें सभी वस्तुओं की जाँच करने की क्षमता होगी। सप्तमाधिपति पर यदि बुरे प्रभाव हों तो जातक निरन्तर यात्रा पर रह सकता है। यदि सप्तमेश और शुक्र दोनों ही पीड़ित हों तो जातक कामुक हो सकता है और विपरीत लिंग के साथ सम्बन्ध का इच्छुक होगा।

द्वितीय भाव में—जातक स्त्रियों से या विवाह के माध्यम से धन प्राप्त

करेगा। यदि पीड़ित हो तो जातक अपनी स्त्री सहित स्त्रियों का व्यापार जैसे घृणित साधनों से धन अर्जित कर सकता है। वह श्राद्ध के अवसर पर दिया गया भोजन करेगा और इस प्रकार का भोजन प्राप्त करने के लिए घूमता रहेगा। यदि दूसरे भाव में द्विस्वभाव राशि हो और बुरे प्रभाव में हो तो एक से अधिक विवाह की संभावना होती है। यदि मारक दशा चल रही हों तो जातक की मृत्यु सप्तमाधिपति की दशा के दौरान होगी। जातक एक भ्रमित मस्तिष्क वाला होगा और उसका झुकाव हमेशा वासना की ओर रहता हैं।

तृतीय भाव में—इस स्थिति में भाई भाग्यशाली होते हैं और वे विदेश में निवास करते हैं, यदि बुरे प्रभाव में हो तो वह भाई की विवाहित पत्नी या बहन के विवाहित पति के साथ व्यभिचार में रत रहेगा / रहेगी। यदि बुरे प्रभाव हों तो भाई बहनों का भाग्य बिगड़ता है। लड़कियाँ जीवित रहती हैं।

चौथे भाव में–विवाहित पति/पत्नी, भाग्यशाली और प्रसन्न रहते हैं, उनके बच्चे अधिक होते हैं तथा उन्हें हर प्रकार का सुख प्रात होता है। जातक उच्च शैक्षिक योग्यता प्राप्त करता है और उसके पास अनेक सवारियाँ होती हैं। यदि बुरे प्रभाव में हो तो अपरिपक्व और नीच पति/पत्नी के कारण पारिवारिक सद्भावना नष्ट हो सकती है। जातक को अपनी सवारियों के कारण अनगिनत समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। यदि छायाग्रहों और अन्य पापग्रहों द्वारा बुरी तरह प्रभावित हो तो जातक की पत्नी के चरित्र पर संदेह किया जा सकता है।

पंचम भाव में—कम आयु में शादी, पति/पत्नी की सम्पन्न परिवार से होगी। पत्नी या पति परिपक्व होगें और जातक के लिए लाभकारी होगें। यदि सप्तमाधिपति कमजोर हो तो कोई बच्चा नहीं भी हो सकता है। यदि बुरे ग्रहों के प्रभाव में हो तो पत्नी की चरित्र हीनता से जातक को सन्तान होगी। यदि सप्तमाधिपति पर बुरे प्रभाव और शुभ प्रभाव दोनों ही हों तो जातक को केवल लड़कियाँ होंगी। विदेशी स्रोतों से कार्यालय के वरिष्ठों को कष्ट की संभावना होती है। जातक का चरित्र उत्तम रहेगा।

षष्ठ भाव में—जातक की दो शादियाँ हो सकती हैं और दोनों जीवित रहेंगी। जातक अपनी चचेरी बहन से शादी कर सकता है। यदि उसपर बुरे प्रभाव हों और कारक शुक्र भी बुरी स्थिति में हो तो जातक नपुंसकता और अन्य बीमारियों का शिकार होगा। जातक की पत्नी रोगिणी होगी और स्वभाव से ईर्ष्यालु होगी तथा जातक को विवाह के सुख से बंचित रखेगी। यदि शुक्र उत्तम स्थिति में हो और सप्तमाधिपति पीड़ित हो तो जातक कुछ नासमझी के कामों के कारण विवाहित पति/पत्नी को छोड़ सकता है।

सप्तम भाव में—यदि उत्तम स्थिति में हो तो जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होगा। स्त्रियाँ उसके आगे पीछे घूमेंगी और उससे मित्रता करने के लिए इच्छुक रहेंगी। पत्नी या पति न्यायप्रिय और सम्मानित व्यक्ति होगा और वे सम्मानित तथा सामाजिक हैसियत वाले परिवार से होंगे। यदि सप्तमेश कमजोर और प्रभावित हो तो मित्रों से एकान्त जीवन देता है और विवाह तथा मित्रों से वंचित रखता है और विवाह से हानि होती है।

अष्टम भाव में—यदि उत्तम स्थिति में हो तो किसी संबन्धी से शादी होती है या पति-पत्नी धनी हो सकते हैं। यदि बुरे प्रभाव हों तो पति/पत्नी की शीघ्र मृत्यु हो जाती है जबकि जातक की मृत्यु दूर देश में होती है। ऐसी स्थिति में बीमार या खराब मिजाज की पत्नी या पति मिलता है जिसमे तलाक हो जाता है।

नवम भाव में—यदि बली हो तो पिता विदेश में रहते हैं जबकि जातक विदेशी भूमि पर सम्पन्न होता है। उसे सुसंस्कृत पत्नी मिलती है जो उसे धार्मिक जीवन बीताने में समर्थ बनाती है। यदि उसपर बुरे प्रभाव हों तो पिता की शीघ्र मृत्यु हो सकती है। विवाहित पति/पत्नी उसे धार्मिक जीवन से दूर ला सकते हैं और वह अपने धन का नाश कर सकता है तथा आर्थिक संकट में पड़ सकता है।

दसम भाव में—जातक विदेश में व्यवसाय में सफल होगा या उसे निरन्तर यात्रा करनी पड़ सकती है। जातक को समर्पित और आज्ञाकारी पति/पत्नी मिलेगी, पत्नी भी रोजगार में होगी और जातक की आय में सहयोग देगी। अथवा वह जातक की उन्नति में सहायता करेगी। यदि बुरे प्रभाव हों तो पत्नी धन लोलुप, कामी तथा महत्वाकांक्षी होगी किन्तु उसमें क्षमता कम होगी। परिणामस्वरूप जातक की वृत्ति में गिरावट आएगी।

एकादश भाव में—एक से अधिक विवाह हो सकता है या जातक स्त्रियों से सम्बन्ध रख सकता है। यदि यह शुभ स्थिति में हो तो पत्नी धनी परिवार से होगी और अपने साथ काफी धन लाएगी। यदि बुरे प्रभाव में हो तो जातक एक से अधिक शादियाँ कर सकता है परन्तु एक पत्नी जातक से अधिक समय तक जीवित रहेगी।

द्वादश भाव में—जातक के जीवन में एक से अधिक विवाह सम्पन्न होगा। वह दूसरी बार सगोत्रीय शादी कर सकता है जब कि पहली पत्नी जीवित रहेगी। अथवा यदि पीड़ित हो तो शादी के तुरन्त बाद पति या पत्नी की मृत्यु हो सकती है या वे अलग हो सकते हैं और दूसरी शादी नहीं भी हो सकती है। यात्रा के दौरान या विदेश में मृत्यु हो सकती है। यदि कारक और सप्तमाधिपति दोनों ही बुरे

प्रभाव में हों तो जातक केवल स्त्रियों का सपना देख सकता है किन्तु कभी शादी नहीं करेगा। जातक की पत्नी नौकर के परिवार से होगी। वह आर्थिक तंगी में रहेगा और साधारणतः गरीब होगा।

यदि सप्तमाधिपति विभिन्न भावों में स्थित हो तो ये फल होते हैं। किन्तु ग्रहों के बल और कमजोरी का निर्धारण करने के बाद समस्त कुण्डली पर विचार किए बिना इन्हें कुण्डली पर ज्यों का त्यों लागू नहीं करना चाहिए।

महत्त्वपूर्ण योग

नीचे सातवें भाव पर महत्त्वपूर्ण योग दिए जा रहे है जो मानक और अधिकृत पुस्तकों से लिए गए हैं--

यदि लग्न या चन्द्रमा से सातवें भाव में नवमेश या राशि स्वामी या अन्य कारक ग्रह स्थित हो या उनकी दृष्टि हो तो शादी से सुख मिलेगा और पत्नी स्नेहमयी और भाग्यशाली स्त्री होगी। यदि द्वितीयेश, सप्तमेश और द्वादशेश केन्द्र या त्रिकोण में हों तथा बृहस्पति से दृष्ट हों तो सौभाग्यशाली विवाह और उत्पादनशील पत्नी सुनिश्चित करता है। यदि सप्तमेश से दूसरे, सातवें और ग्यारहवें भाव में कारक ग्रह हों तो पति पत्नी को सभी प्रकार का सुख मिलेगा और बच्चे भाग्यशाली होंगे। यदि मंगल और शनि मकर राशि में सातवें भाव में हों तो पत्नी सती, सुन्दर और भाग्यशाली होगी।

यदि सप्तमेश और शुक्र सम राशि में हों, यदि सातवां भाव भी सम राशि हो, और पंचमेश तथा सप्तमेश सूर्य के सन्निकट न हों या अन्य प्रकार से कमजोर न हों तो उस व्यक्ति को उत्तम पत्नी और बच्चे मिलेंगे। यदि बृहस्पति सप्तम भाव में हो तो जातक अपनी पत्नी का भक्त होगा। यदि शुक्र उच्च का या स्ववर्ग में हो या गोपुर अथवा वैशेषिकांश में हो तो पत्नी उत्तम और सुन्दर होगी। यदि सातवां भाव कारक राशि में हो या यदि सप्तमेश शुक्र कारक ग्रह से दृष्ट हो तो पति या पत्नी भक्त होंगे और आकर्षक होंगे।

यदि शुक्र से ४, ८ और १२ वें भाव में कारक ग्रह हो या शुक्र मारक ग्रहों के बीच घेरे में हो तो विवाह के बाद पत्नी की शीघ्र मृत्यु हो जाएगी। यदि शुक्र से सातवें भाव में मारक ग्रह हों तो विवाह सुखी नहीं होगा। वृषभ लग्न वालों के सप्तम भाव में शुक्र होने पर पत्नी की मृत्यु हो जाती है।

यदि सप्तमेश पंचम भाव में हो या पंचमेश सप्तम भाव में हो तो जातक विवाह नहीं कर सकता है या यदि वह विवाह करता है तो बच्चे नहीं होंगे। यदि पुरुष के मामले में दूसरे और सातवें भाव में तथा स्त्री के मामले में सातवें और आठवें भाव

में मारक ग्रह स्थित हों या उनपर मारक ग्रह की दृष्टि हो तो पति या पत्नी की मृत्यु हो जाती है। यदि पंचमेश या अष्टमेश सातवें भाव में हो तो पति या पत्नी की मृत्यु हो जाती है। लग्न, बारहवें और सातवें भाव में मारक ग्रह हो और पंचम भाव में क्षीण चन्द्रमा हो तो शादी नहीं होती या बच्चे नहीं होंगे। यदि चन्द्रमा और शुक्र, मंगल और शनि के विपरीत हों तो शादी नहीं होती।

स्त्री की कुण्डली में सप्तम भाव में चन्द्रमा और शनि स्थित होने पर दूसरी शादी का संकेत मिलता है जबकि पुरुष की कुण्डली में ऐसी स्थिति में शादी या संतति नहीं होती। लग्न से २,७ और ८ वें भाव में मारक ग्रह होने पर विवाहिता का देहान्त हो जाता है। दूसरे भाव में सूर्य और राहु स्थित होने पर स्त्री के माध्यम से धन की हानि होती है।

सातवें भाव वृषभ में बुध, सातवें भाव मकर में बृहस्पति या सातवें भाव मीन में शनि–मंगल विवाहिता के जीवन के लिए हानिकर हैं। लग्न में बुध और केतु हो तो पत्नी बीमार रहेगी। सातवें भाव में शनि और बुध स्थित हों तो जीवन साथी के लिए वैधव्य या विधुर का संकेत मिलता है। यदि मारक राशि ७ वें भाव में नवांश में चन्द्रमा स्थित हो तो पत्नी दुष्ट, नीच या कमीनी होगी। यदि सातवें भाव में चन्द्रमा बली हो तो उत्तम पत्नी होगी। सातवें भाव में केतु स्थित होने पर पत्नी दुष्ट होती है। जबकि राहु की स्थिति से विजातीय स्त्री मिलती है। यदि ६,८ और ९ वे भाव में मारक ग्रह हों और मारक ग्रह से दृष्ट हों तो जातक की पत्नी व्यभिचारिणी होगी। यदि सातवें भाव में शनि हो या सप्तमेश से युक्त नवांश स्वामी मारक ग्रह हो या यदि सप्तमेश या शुक्र दबी हुई राशि में हो तो पत्नी एक दुष्ट स्त्री होगी। यदि कमजोर और पीड़ित शुक्र सातवें भाव में हो तो पत्नी बांझ हो सकती है या पति नपुंसक हो सकता है। यदि मारक ग्रह के साथ मंगल सातवें भाव में हो तो जातक मूत्र कुण्ड की समस्याओं के कारण नपुंसकता से पीड़ित हो सकता है। यदि शनि और शुक्र दसम और अष्टम भाव में हों और उनपर कोई शुभ दृष्टि न हो तो वह व्यक्ति नपुंसक होगा। यदि शनि जलीय तत्त्व राशि में छठे और बारहवें भाव में हो और शुभ दृष्टि से वंचित हो तो जातक हिजड़ा होगा। निम्नलिखित ग्रह स्थिति में जातक नपुंसक होता है—

१. शनि छठे या बारहवें भाव में दबा हुआ हो।
२. शनि शुक्र से छठे या आठवें भाव में हो।
३. चन्द्रमा सम राशि में और बुध विषम राशि में हो तथा दोनों पर मंगल की दृष्टि हो।
४. यदि लग्न, शुक्र और चन्द्रमा विषम नवांश में हों।

५. यदि मंगल सम राशि में तथा लग्न विषम राशि में हो।

६. सूर्य और चन्द्रमा, मंगल और सूर्य तथा शनि और बुध यदि ग्रहों के ये जोड़े विषम और सम राशि में हों और परस्पर दृष्टि परिवर्तन कर रहे हों।

७. यदि सप्तमेश और शुक्र छठें भाव में हों।

यदि सप्तमेश और शुक्र राहु या केतु के साथ युक्त हों और मारक ग्रह से दृष्ट हों तो जातक या उसकी पत्नी व्यभिचारी होगी। यदि शुक्र शनि या मंगल के नवांश में हो और क्रमशः मंगल या शनि से दृष्ट हों तो जातक का चरित्र संदेहात्मक होता है। यदि सातवें भाव में शुक्र पर शनि या मंगल की दृष्टि हो तो जातक व्यभिचारी होगा। यदि शनि, चन्द्रमा और मंगल सप्तम भाव में स्थित हों तो जातक और उसकी पत्नी दोनों ही अनैतिक होंगे। यदि द्वितीयेश, सप्तमेश और दसमेश सातवें भाव में हों तो जातक चरित्रहीन होगा।

यदि चन्द्रमा और शुक्र दबकर केन्द्र में क्रूर षष्ठांश में हों और मारक ग्रह से दृष्ट या युक्त हों तो जातक अपनी माँ के साथ व्यभिचारी हो सकता है। इसी प्रकार का परिणाम तब होता है यदि केन्द्र में दीप्तिमान ग्रह हों और अशुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त हों। चौथा भाव बुरी तरह पीड़ित होने पर भी ऐसा ही फल होता है।

यदि चौथे भाव में शनि पीड़ित हो तो जातक अनाचारी होगा। यदि पीड़ित चन्द्रमा या शुक्र नवम भाव में हो तो जातक अपने शिक्षक के बिस्तर का उल्लंघन करेगा। नवम भाव और चन्द्रमा या शुक्र पीड़ित होने पर भी इसी प्रकार का फल होता है। यदि गुलिका अशुभ ग्रह के साथ सप्तम भाव में हो या यदि सूर्य सप्तम भाव में हो और मंगल चौथे भाव में या यदि मंगल चौथे में और राहु सप्तम में हो या यदि शुक्र से दृष्ट सप्तमेश मंगल की राशि में हो या यदि तीन केन्द्रों में अशुभ ग्रह हों तो जातक का लैंगिक व्यवहार पशु के समान असभ्य तथा अभद्र होता है।

यदि द्वितीयेश और सप्तमेश अपनी नीच राशि में हो और शुभ ग्रह केन्द्र और त्रिकोण में हों तो केवल एक शादी संभव है। यदि बृहस्पति और बुध सूर्य और मंगल के नवांश में हों तो केवल एक शादी का संकेत मिलता है।

यदि सप्तम भाव में बुध बृहस्पति के नवांश में हो तो जातक केवल एक बार शादी करेगा।

यदि सप्तमेश और शुक्र द्विस्वभाव राशि या नवांश में हों तो जातक कम से:

कम दो बार शादी करेगा। यदि बुध या शनि सप्तम भाव में हों और ग्यारहवें भावमें दो ग्रह हों तो दो पत्नियों की संभावना होती है। यदि सप्तमेश शनि हो और अशुभ ग्रह से युक्त हो तो उस व्यक्ति की अनेक पत्नियाँ होती हैं। सप्तम भाव में तीन या अधिक अशुभग्रह हों या शुक्र अशुभ ग्रह के साथ नीच में शत्रुराशि में ग्रस्त हो, या अष्टमेश प्रथम भाव में हो या सप्तम भाव में हो अथवा लग्नेश छठे भाव में हो या सातवें भाव में अशुभग्रह हो जब कि सप्तमेश शुभ ग्रह के साथ अपनी शत्रु राशि या नीच राशि में हो या द्वितीयेश छठे भाव में हो और सातवें भाव में अशुभ ग्रह हो तो दो या अधिक पत्नियाँ होती हैं।

यदि द्वितीयेश, लग्नेश और षष्ठेश सातवें भाव में अशुभ ग्रह से युक्त हों या यदि बली सप्तमेश केन्द्र या कोण में हो तथा दसमेश से दृष्ट हो या यदि बली सप्तमेश और एकादशेश युक्त हों या परस्पर एक दूसरे पर दृष्टि डाल रहे हों या त्रिकोण में हों तो जातक की अनेक पत्नियां होंगी।

यदि लग्नेश या सप्तमेश नीच का हो या शत्रु राशि में हो या नवांश में ग्रस्त हो तो जातक की दूसरी पत्नी होगी जबकि पहली जीवित रहेगी। यदि सप्तमेश कमजोर हो और सप्तम भाव पर अशुभ दृष्टि हो या सप्तम भाव में अशुभ ग्रह स्थित हो या सप्तम और अष्टम भाव में अशुभ ग्रह हो और मंगल १२ वें भाव में हो या यदि द्वितीयेश कमजोर हो जबकि द्वितीय भाव में अशुभ ग्रह स्थित हो या उसपर अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो पहली पत्नी के जीवन काल में ही जातक की दूसरी पत्नी होगी।

सातवें भाव में ग्रह

सूर्य—जातक का रंग गोरा होगा और सिर पर बाल कम होंगे। उसके मित्र कम होंगे और लोगों के साथ मित्रता करने में उसे कठिनाई होगी। शादी विलम्ब से होगी और उसमें कष्ट होगा। यात्रा का शौकीन होगा और नैतिक रूप से गिरा हुआ होगा। वह विदेशी वस्तुओं को पसन्द करेगा। उसकी पत्नी का चरित्र संदिग्ध होगा और जातक को स्त्रियों के माध्यम से हानि और बदनामी उठानी पड़ेगी। उसे सरकार की अप्रसन्नता उठानी होगी और उसका अपमान होगा। उसकी आकृति बिगड़ जायेगी।

चन्द्रमा—जातक कामुक होगा और आसानी से ईर्ष्या करने लगेगा। जातक की युवावस्था में मां की मृत्यु हो सकती है। पत्नी देखने में सुन्दर होगी किन्तु जातक अन्य स्त्रियों को चाहेगा। संकीर्ण दिमाग का होगा किन्तु समाज में प्रिय होगा। वह जीवन्त होगा और जीवन में सफल रहेगा। यदि चन्द्रमा उच्च का हो या अन्यथा बली हो तो जातक अच्छे परिवार से होता है। उसके उरु मूल में दर्द

होगा। वह कठोर होगा। यदि चन्द्र क्षीण हो तो वह सर्वदा शत्रुओं के साथ झगड़ा करता रहेगा।

मंगल—जातक पर अपनी पत्नी का शासन रहेगा और वह स्त्रियों के साथ नम्र रहेगा। विवाहित जीवन में झगडा और तनाव रहेगा तथा उसकी दो पत्नियां हो सकती हैं। जातक क्रूर होगा और सट्टा में रुचि रखेगा। वह तेज बुद्धिवाला, अव्यावहारिक, हठी, चिड़ चिड़ा और असफल होगा।

बुध—वह सदाचारी और मिलनसार व्यक्ति होगा। वह उत्तम पोशाक पहनेगा। उसे कानून का अगाध ज्ञान होगा। वह कारोबार और व्यापार में कुशल होगा। उसमें लिखने की क्षमता होगी तथा जीवन के आरम्भ में इसके माध्यम से सफल रहेगा। अमीर स्त्री से शादी होगी। गणित, ज्योतिष और खगोल शास्त्र में विद्वान्, धार्मिक तथा पवित्र विचार वाला होगा। राजनयिक होगा किन्तु बुध पीड़ित हो तो जातक दुष्ट और मक्कार होगा।

वृहस्पति–राजनयिक और कोमल हृदय वाला होगा। जातक की पत्नी पवित्र, सुन्दर और सती होगी। उसकी शिक्षा अच्छी होगी और शादी से लाभ होगा। वह दूसरों के मनोभाव के प्रति संवेदनशील होगा। उसका मस्तिष्क चिन्तनशील होगा और वह एक उत्तम किसान होगा। वह दूरस्थ धर्मस्थलों पर जाएगा तथा उसमें अपने पिता से बढ़ चढ़ के गुण होंगे। जातक के उत्तम पुत्र होंगे।

शुक्र—झगड़ालू, विषयासक्त और कामुक। जातक की खराब आदतें होंगी और विवाहित जीवन सुखी रहेगा तथा उस की पत्नी उसकी भक्त होगी। वह आनन्द और पेय का शौकीन तथा प्रीतिकर एवं आकर्षक आचार वाला होता है। उसका व्यक्तित्व चुंबकीय है। रोग या आधिक्य के कारण उसे पुरुषत्व की हानि का खतरा रहता है। वह विपरीत लिंग वालों के साथ भागीदारी में सफल रहेगा।

शनि—जातक अपनी पत्नी के नियन्त्रण में रहेगा, पत्नी कुरूप या कुबड़ी होगी। उसकी एक से अधिक शादी होगी या विधवा, तलाक शुदा या अधिक उम्र वाले के साथ शादी होगी, वह राजनयिक और उद्यमी होगा। उसका आवास विदेश में होगा स्थिर विवाह करेगा और राजनीति में सफलता मिलेगी। उसे विदेश में सम्मान और विशिष्टता प्राप्त होगी, वह उदरशूल और बहरे पन से पीड़ित रहेगा।

राहु—जातक परिवार के लिए अप्रसिद्धि लाएगा यदि वह स्त्री है। वह अपारम्परिक तथा अपधर्मी होगा। उसे विजातीय या विदेशी स्त्रियों से प्रेम होगा। उसकी पत्नी गर्भाशय के रोग से पीड़ित रहेगी। वह अच्छा भोजन करता है और

उसकी आदतें आराम पसन्द होती हैं तथा मधुमेह, प्रेतों और अप्राकृतिक वस्तुओं से पीड़ित रहता है।

केतु—दुष्ट प्रकृति की पत्नी के साथ शादी करके जातक सुखी नहीं रहता है। वह कामुक, पापी होगा और विधवाओं के प्रति आसक्त रहेगा। उसकी पत्नी बीमार रहती है। जातक के पेट या यदि स्त्री है तो गर्भाशय में केन्सर होता है। उसकी बदनामी होगी और पुरुषत्व की हानि होगी।

सातवें भाव पर दृष्टि या युक्ति द्वारा इन परिणामों में संशोधन किया जाता है।

यदि सूर्य राहु से पीड़ित हो तो स्त्रियों के साथ प्रेम प्रणय के सम्बन्ध से बदनामी होती है या धमकी अथवा इसी प्रकार के कष्ट के कारण धन की हानि होती है। यदि सूर्य मंगल से पीड़ित हो तो विवाहित जीवन दूभर हो जाता है और एक दूसरे से घृणा करेंगे। इसके अतिरिक्त जातक रक्तचाप और हृदय रोग से पीड़ित होगा। शरीर में अत्यधिक ताप होगा जिससे बवासीर और नासूर का रोग होगा। यदि सूर्य चन्द्रमा से पीड़ित हो तो उसकी शादी नहीं भी हो सकती है और निकृष्ट जीवन बिताएगा। यदि सूर्य और बुध की युक्ति हो तो वह अधिक बुद्धिवाला होगा और सरकार या अन्य स्रोतों से होने वाले कष्टों का चतुराई से सामना करेगा। यदि सूर्य पर बृहस्पति की दृष्टि हो या युक्ति हो तो पत्नी काफी धर्मात्मा होगी और जातक का पथ प्रदर्शन भी करेगी। यदि सूर्य के साथ बली शुक्र हो तो विवाहित जीवन में आत्मिक सौहार्द होगा।

यदि चन्द्रमा बृहस्पति से प्रभावित हो तो विवाहित जीवन मधुर और सुखी होगा। यदि पीड़ित चन्द्रमा बृहस्पति के साथ हो तो जातक विधवाओं के साथ गुप्त प्रेम करेगा किन्तु दूसरों को धोखा देने के लिए उत्तम आचरण करेगा। यदि चन्द्रमा शुक्र के साथ हो तो रंगाई, कपड़ा, शिल्प में कुशल होगा किन्तु यदि वही चन्द्रमा पीड़ित हो तो जातक घुस के अप्राकृतिक पद्धतियों का सहारा लेगा। यदि चन्द्रमा और राहु सातवें भाव में युक्त हों तो प्रेतों और बैताल के कष्ट से जीवन दूभर हो जायेगा।

हमारे अनुभव के अनुसार निम्न लिखित योग उत्तम होते हैं—यदि शुक्र मंगल और बुध से युक्त हो तो दोनों का विवाहित जीवन स्थिर और सौहार्द पूर्ण होता है, वे अपने व्यवसाय में सफल और विशिष्ट होते हैं। यदि पीड़ित हो तो इससे विवाहेतर प्रेम प्रणय होता है। इसके परिणाम स्वरूप अभद्र और भ्रष्ट साहित्य के लेखन और प्रकाशन के कारण और विवाद उत्पन्न होता है। शनि के साथ शुक्र

होने पर विवाह में शान्ति, स्थिरता और नृत्य तथा नाटक में कुशलता प्रदान करता है। यदि बली हो तो रंगमंच या सिनेमा में सफलता की भविष्यवाणी की जा सकती है। यदि पीड़ित हो तो इन्हीं साधनों से कष्ट की संभावना है। शुक्र और बृहस्पति से उत्तम बच्चे होते हैं, पत्नी स्वस्थ और सुखी होती है। यदि राहु या मंगल से पीड़ित हो तो जातक उपदेशक की पत्नी या अधिक उम्र वाली महिलाओं के साथ अनैतिक सम्बन्ध कायम कर सकता है। मंगल और शुक्र से जुआ की कमजोरी आती है, अस्थायी आनन्द का सहारा लेता है। यदि पीड़ित हो तो इन साधनों और शरीर के व्यापार के माध्यम से जीविका का संकेत मिलता है। यदि बली हो तो पति/पत्नी सुन्दर, कामुक और विश्वासी होंगे। यदि शुक्र सूर्य से पीड़ित हो तो शादी में शारीरिक आकर्षण का अभाव रहेगा, दोनों की प्रवृत्ति भिन्न भिन्न होगी।

यदि शनि सूर्य से पीड़ित हो तो शादी में स्थिरता को खतरा रहता है। एक से अधिक शादी की भी संभावना होती है किन्तु यह भी असफल हो सकता है। सातवें भाव में शनि पर यदि बृहस्पति की दृष्टि हो तो शादी में स्थिरता आती है किन्तु पति–पत्नी के बीच आन्तरिक विक्षोभ और तनाव रहता है। यदि मंगल पीड़ित करता है तो न्यायालय का हस्तक्षेप हो सकता है, या विद्रोह जैसे कि आत्महत्या या हत्या, के कारण विवाहित जीवन नष्ट हो सकता हैं बशर्ते कि भाव अन्य प्रकार से पीड़ित हो। यदि शनि उच्च या बली चन्द्रमा के साथ हो तो विधवा के साथ शादी हो सकती है; किन्तु यदि चन्द्रमा और पीड़ित हो तो नौकरानी और विधवाओं के साथ गुप्त प्रेम करेगा। यदि बली शनि राहु से पीड़ित हो तो शादी अमीर से होगी किन्तु पति या पत्नी चिड़चिड़े प्रवृत्ति के होंगे। यदि शनि अपने ही नक्षत्र में बली हो तो पति या पत्नी बाद में पवित्र और भक्त बन जाते हैं। यदि शनि बुध से पीड़ित हो तो पति या पत्नी डरपोक हो सकते हैं किन्तु यदि बुध उत्तम स्थिति में हो तो शिक्षित और विद्वान् के साथ शादी होगी।

मात्र इन योगों को देखकर निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए। न केवल नैसर्गिक कारक या मारक बल्कि लग्न के अनुसार भावकारक या मारक ग्रहों की दृष्टि को भी हिसाब में लेना चाहिए। शादी की गुणवत्ता का निर्धारण करने से पूर्व कारक और सप्तम भाव के बल और युक्ति तथा चन्द्रमा से सप्तमेश का भी विचार कर लेना चाहिए।

जहां लड़की के सतीत्व और पति की विश्वस्तता का प्रश्न हैं वहां यह विशेष रूप से आवश्यक है। दोनों कुंडलियों की सावधानी पूर्वक और उचित जाँच के बाद ही इन संवेदनशील मुद्दों पर निर्णय देना चाहिए।

सातवें भाव के परिणाम फलित होने का समय

सातवें भाव को नियन्त्रित करने वाले तथ्य निम्नलिखित हैं—(क) अधिपति (ख) सातवें भाव पर दृष्टि डालने वाले ग्रह (ग) सातवें भाव में स्थित ग्रह (घ) सप्तमेश पर दृष्टि डालने वाले ग्रह (ङ) सप्तमेश के साथ युक्त ग्रह (च) चन्द्रमा से सप्तमेश और (छ) सातवें भाव का कारक।

ये तथ्य दशा नाथ भुक्ति नाथ या प्रत्यन्तर अथवा सूक्ष्म दशा स्वामी के रूप में सातवें भाव को प्रभावित करने में सक्षम हैं।

सातवें भाव को प्रभावित करने में सक्षम ग्रहों के दशा काल में, भुक्ति काल में सातवें भाव से संबन्धित फल उत्तम और अधिक गहन होते हैं। जो ग्रह सातवें भाव से सम्बन्धित नहीं हैं उनके दशाकाल में जो ग्रह सातवें भाव से सम्बन्धित हैं उनकी भुक्ति में सातवें भाव से सम्बन्धित फल सीमित सीमा में प्राप्त हो सकता है। इसी प्रकार सातवें भाव से सम्बन्धित ग्रहों के दशाकाल में जो ग्रह सातवें भाव से सम्बन्धित नहीं हैं उनकी भुक्ति में सातवें भाव से सम्बन्धित फल सीमित सीमा में प्राप्त हो सकते हैं।

जहाँ सप्तमेश शक्तिशाली योग में हो वहाँ वह अपनी दशा या भुक्ति में सातवें भाव से सम्बन्धित योग का फल देने में सक्षम है। यदि सप्तम भाव बुरी तरह पीड़ित हो वहाँ सप्तमेश अपनी दशा या भुक्ति में शादी को नष्ट कर सकता है या इसे काफी दयनीय बना सकता है। यदि बली हो तो इससे विवाहित जीवन सफल, विशिष्ट और सुखी हो सकते हैं।

परिणामों का स्वरूप

प्रथम भाग में छः भावों के सम्बन्ध में जो साधारण सिद्धान्त दिए गए हैं वे सातवें भाव पर विचार करने में भी लागू होंगे।

सप्तमेश जो उत्तम स्थिति में है, की दशा के दौरान जातक अपनी पत्नी की संगति का आनन्द उठाएगा। वह रंगीन वस्त्र, जवाहरात, सज्जा, बिस्तर प्राप्त करेगा तथा स्वस्थ और तेजस्वी रहेगा। वह विदेश में भ्रमण यात्रा पर जा सकता है। इस दशा में विवाह या इसी प्रकार का पवित्र उत्सव हो सकता है।

यदि सप्तमेश बुरी स्थिति में और पीड़ित हो तो जातक अपनी पत्नी से अलग रह सकता है। दामाद कठिनाई और संघर्ष से गुजर सकता है। जातक बदनाम स्त्रियों के साथ सम्बन्ध के कारण कष्ट में पड़ सकता है और निरुद्देश्य इधर-उधर घूमेगा। वह गुप्तांग में रोग से पीड़ित हो सकता है और इससे दुखी होगा।

यदि सप्तमेश के साथ सप्तम भाव में उत्तम स्थिति में हो तो विदेश यात्रा भाग्यशाली रहेगी। जातक विदेश में समृद्धि प्राप्त करेगा और वहीं रह जाएगा।

वह भाग्यशाली स्त्री से शादी करेगा जो काफी सहायक होगी। यदि सप्तमेश शुभ ग्रहों से युक्त हो तो वह आराम से यात्रा करेगा या समुद्री कप्तान का कार्य करेगा। यदि सप्तमेश कमजोर हो तो जातक उसकी दशा में भीख मांगने के लिए मजबूर हो जाएगा। यदि लग्नेश क्षीण हो तो सप्तम भाव के स्वामी की दशा मारक हो सकती हैं। यदि लग्नेश नवांश लग्न से ७, ८ या १२ वें भाव में हो तो उसकी दशा में यात्रा थकाऊ और हानिकर होगी।

जब सप्तमेश द्वितीयेश के साथ द्वितीय भाव में युक्त हो तो उसकी दशा में शादी के माध्यम से काफी धन प्राप्त हो सकता है। अथवा शादी एक नौकरी करने वाली लड़की के साथ होगी। जातक एजेन्सी या भागीदारी के कारोबार से दूरस्थ स्थान में धन कमाएगा। यदि पीड़ित हो तो उसकी दशाकाल में जातक या उसकी पत्नी की मृत्यु हो जाएगी। यदि आयु अच्छी है तो चूंकि दूसरा और सातवां भाव मारक स्थान हैं अतः जातक पत्नी से अलग रहेगा और उसे काफी मानसिक पीड़ा होगी। यदि सप्तमेश नवांश लग्न से ४ वें भाव में हो तो जातक की पत्नी की मृत्यु नहीं भी हो सकती है किन्तु इसकी बजाय वह दूर स्थान पर दूसरी शादी करेगा। यदि तृतीयेश और सप्तमेश तीसरे भाव में युक्त हों तो पत्नी अच्छे परिवार की होगी। पत्नी का पिता भाग्यशाली होगा। तृतीयेश की भुक्ति के दौरान भाई या बहन की मृत्यु हो सकती है या उनपर विपत्ति आ सकती है। इससे दूसरी शादी का भी संकेत मिलता है। यदि अशुभ प्रभाव प्रधान हों तो बुरा फल गहन हो जाता है अन्यथा अधिक भय करने की जरूरत नहीं है।

यदि सप्तमेश चतुर्थेश के साथ चौथे भाव में युक्त हो तो सप्तमेश की दशा में अधिक यात्रा का संकेत मिलता है। जातक के जीवन में पारिवारिक सौहार्द रहेगा और विवाह सगाई आदि जैसे अनेक शुभ कार्य होंगे। यदि पीड़ित हो तो जातक की माँ की मृत्यु हो सकती है या भयंकर स्थिति में पड़ सकती है। उसकी अधिकतर शिक्षा विदेश में होगी। यदि बली हो तो वह चतुर्थेश की दशा में कार या अन्य सवारी प्राप्त करेगा।

यदि बली सप्तमेश पंचमेश के साथ पाँचवें भाव में हो तो पत्नी और बच्चे सुखी और धनी होंगें। यदि पीड़ित हो तो बच्चों की मृत्यु हो सकती है या उनपर विपत्ति आ सकती है। विवाहित जीवन दुखी होगा और पत्नी की मृत्यु हो सकती हैं या वह जातक से अलग रह सकती है। यह विशेष तौर पर तब होता है यदि सप्तमेश नवांश लग्न से ९, ८ या १२ वें भाव में हो।

यदि पंचमेश नवांश लग्न से छठे भाव में हो तो बच्चे बीमारी के कारण अस्पताल में दाखिल हो सकते हैं। यदि वह १२ वें भाव में हो तो बच्चों को चोरों या शत्रुओं से कष्ट का संकेत मिलता है। यदि पंचम भाव में युक्त पंचमेश और सप्तमेश

काफी पीड़ित हों तो बच्चों की हत्या हो सकती है। यदि सप्तमेश षष्ठेश के साथ छठे भाव में हो तो अत्यधिक बुरे फल का संकेत मिलता है । पत्नी की बदनामी होगी या वह लम्बी बीमारी से पीड़ित होगी। चूँकि सप्तमेश मारक है अतः वह जातक के मामा को मृत्यु या खतरे से रोकता है मुकदमा या ऋण से कष्ट हो सकता है। जातक को चोरी या ठगी के माध्यम से धन की काफी हानि होगी। यदि वहाँ पर शुभ ग्रह भी हों तो बुरे फल कम हो जायेंगे और कष्ट अस्थायी स्वरूप का होगा ।

सप्तम भाव में शुभ ग्रह के साथ सप्तमेश का स्थित होना अपनी दशा में सामान्यतः उत्तम फल देता है। जातक के जीवन में खुशी होगी। पत्नी सुन्दर और अच्छे समाज से होगी। इस दशा के दौरान वह काफी धन प्राप्त करेगा क्योंकि वह विदेश की यात्रा करेगा। वह अनेक प्रभावी लोगों से मिलेगा और इस सम्पर्क से उसे जीवन वृत्ति में लाभ होगा। किन्तु यदि पीड़ित हो तो जातक बीमार हो सकता है या अनेक कष्ट उठा सकता है। इस अवधि में बदनामी है और समाज से निष्कासित हो सकता है । यदि सप्तमेश आठवें भाव में हो तो अपनी दशा में बुरा फल देगा । जातक का पति/पत्नी मर सकता है या स्वास्थ्य की गंभीर समस्या हो सकती है। उसे विदेश जाने का अवसर मिल सकता है किन्तु इससे न केवल अनेक कठिनाइयाँ आएंगी, उसकी दुर्घटना भी हो सकती है।

यदि सप्तमेश नवमेश के साथ नवम भाव में स्थित हो तो सप्तमेश के दशाकाल में शादी से धन आ सकता है। जातक धर्म स्थलों पर जायेगा और दान में काफी धन देगा। पवित्र और धर्मात्मा बनने की प्रवृत्ति होगी। वह न्याय और इमानदारी से धन जमा करेगा। वह सम्पत्ति प्राप्त करेगा और आराम का आनन्द उठाएगा। पत्नी श्रेष्ठ होगी और वह पति को सही रास्ते पर चलाएगी। उसे विदेश में समृद्धि प्राप्त होगी। प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त होगा। यदि सप्तमेश नवम भाव में पीड़ित हो तो पत्नी इसे अपने कर्तव्य से दूर ले जाएगी। इसमें बुरी इच्छा जागृत होगी और दूसरों से घृणा करेगा तथा गलत काम में फँस जायगा। यदि सप्तमेश ६, ८, १२ वें नवांश में हो तो बुरे फल होते हैं।

यदि बली सप्तमेश दसमेश के साथ दसम भाव में हो तो जातक को विदेश में लाभ और प्रसिद्धि प्राप्त होगी। वह अपनी उदारता और दानशीलता के लिए प्रसिद्ध होगा। सप्तमेश की दशा में उसका व्यवसाय चमकेगा और उसे अपने कार्य के क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त होगी। उसकी पत्नी आध्यात्मिक और सम्मानित होगी। यदि कमजोर हो तो फल बिल्कुल उल्टा होगा।

यदि एकादशेश बली हो तो वह व्यापार और भागीदारी में सफल रहेगा। कारोबार का फैलाव विदेश में भी होगा। जातक का बड़ा भाई समृद्ध होगा। यदि पीड़ित हो तो बड़े भाई को हानि हो सकती है। यदि सप्तमेश पर शुभ और अशुभ दोनों ही प्रभाव हों तो कारोबार से लाभ साधारण होगा। यदि सप्तमेश बारहवें भाव में हो और कारक भी काफी कमजोर हो तो विवाहित सुख का अभाव रहेगा और जातक मृत्यु या पृथक्करण के कारण पत्नी से अलग रह सकता है। यदि सप्तमेश और शुक्र दोनों बली हों तो पत्नी जीवन में काफी देर से पति से पहले मर जाएगी। जातक विदेश जा सकता है किन्तु निरन्तर कष्ट और चिन्ता के कारण वह वहाँ पर सुखी नहीं रहेगा।

लग्नेश बारहवें भाव में द्वादशेश और सप्तमेश से युक्त हो तो इन ग्रहों में से किसी की भी दशाकाल में विशेषकर सप्तमेश की दशा में जातक और उसकी पत्नी विदेश में रह सकते हैं। यदि इस योग पर अशुभ प्रभाव हो तो जातक अपनी पत्नी के साथ अनैतिक कार्य में जा सकता है। यदि इस योग पर शुभ प्रभाव हो तो जातक सप्तमेश की दशा में आध्यात्मिक जीवन में जा सकता है।

विवाह का समय

प्राचीन पुस्तकों में विवाह के समय के लिये अनेक पद्धतियों का सुझाव दिया गया है—

जिस राशि में सप्तमेश स्थित है उसके स्वामी या नवांश में जिस राशि में सप्तमेश स्थित है उसके स्वामी के दशा काल में शादी हो सकती है। कारक या सातम भाव का नैसर्गिक कारक शुक्र और चन्द्रमा भी अपने दशा काल में शादी करा सकते हैं। इन स्वामियों में जो बली है वह अपनी दशा में शादी करा देगा। सप्तमेश यदि शुक्र से युक्त हो तो वह अपनी दशा या भुक्ति में शादी करा सकता है। द्वितीयेश या नवांश में द्वितीयेश जिस राशि में स्थित है उसका स्वामी भी अपनी दशा में शादी कराने में सक्षम है। यदि पहली दशाओं में शादी नहीं होती तो नवमेश और दसमेश शादी कराने में सक्षम होता है। सप्तमेश के साथ युक्त ग्रह या सप्तम भाव में स्थित ग्रह की दशा में भी शादी संभव है।

दूसरी पद्धति यह है कि लग्नेश और सप्तमेश का देशान्तर जोड़ें। जब पारिणामिक राशि या त्रिकोण में वृहस्पति रहता है तो उस समय शादी हो सकती है। चन्द्रमा और सप्तमेश का देशान्तर जोड़ने के बाद जो परिणाम आता है वहां पर या वहां से त्रिकोण में वृहस्पति के रहने पर भी शादी हो सकती है।

यद्यपि अनेक ऐसे ग्रह हैं जो अपनी दशा में शादी कराने में सक्षम हैं, अन्य

कारणों से होने वाले विलम्ब पर विचार अवश्य करना चाहिए। यदि दशानाथ अधिक बली न हो तो लग्न और चन्द्रमा से सप्तम भाव और सप्तमेश तथा शुक्र पर शनि की दृष्टि होने पर शादी देर से होती है। सप्तम भाव, सप्तमेश और कारक पर ६, ८ और १२ वें भाव के स्वामी की दृष्टि या युक्ति से भी शादी देर से होती है। जन्म समय की स्थिति और दशा को प्रमुख महत्त्व देना चाहिये और गोचर पर बाद में विचार करना चाहिये।

पति या पत्नी की मृत्यु

हमारे समाज में पत्नी और विशेषकर पति की मृत्यु को गम्भीरता से लिया जाता है। पति या पत्नी की मृत्यु से होने वाली भावात्मक रिक्ति के अतिरिक्त समान महत्त्व के अन्य कारणों का भी महत्त्व है। परिवार चलाने और बच्चों के लालन पालन जैसे अन्य व्यावहारिक प्रश्न के अतिरिक्त आर्थिक पहलू का भी प्रश्न उठता है। अतः पति या पत्नी की मृत्यु के लिए कुण्डली की हमेशा सावधानी पूर्वक जांच करनी चाहिये।

नीचे विवाहित जोड़ों की मृत्यु से सम्बन्धित कुछ महत्त्वपूर्ण योग और विवाहित जीवन पर प्रभाव दिये जा रहे है जो प्राधिकृत पुस्तकों से लिए गये हैं।

यदि दूसरे और सातवें भाव में अशुभ ग्रह स्थित हों तो पत्नी की मृत्यु हो जाती है। किन्तु यदि जातक उसी प्रकार के ग्रह प्रभाव वाली स्त्री से शादी करता है तो बुरे प्रभाव मिट जाते हैं और उनके बच्चे होते हैं तथा समृद्धि मिलती है।

यदि लग्न या चन्द्रमा से पांचवें या सातवें भाव पर अशुभ ग्रह की दृष्टि हो या अशुभ ग्रह स्थित हों तो जातक की शादी नहीं भी हो सकती है और यदि वह शादी करता है तो उसकी पत्नी जीवित नहीं रहेगी। यदि लग्न कन्या हो और वहां सूर्य स्थित हो और सातवें भाव में शनि हो तो पत्नी की मृत्यु हो जाएगी। यदि सप्तम में मंगल हो तो पत्नी की मृत्यु हो जाएगी। यदि लग्न से सप्तमेश और शुक्र बली हों और सातवें भाव में स्थित हों और यदि सप्तम भाव बली हो तथा अशुभ ग्रहों की दृष्टि या युक्ति से पीड़ित न हो तो पति और पत्नी की मृत्यु एक ही समय होगी। यदि सप्तम भाव कारमुक हो तो जातक या उसकी पत्नी दोनों में से एक की मृत्यु पहले हो जायेगी।

यदि द्वितीयेश और सप्तमेश शुक्र या अशुभ ग्रह से युक्त हों और बुरी स्थिति में हों तो दुःस्थान में उनके साथ ग्रहों की संख्या के आधार पर एक या एक से अधिक पत्नियों की मृत्यु हो जायेगी। यदि शुक्र के नवांश में सातवें भाव में मंगल हो और यदि सप्तमेश पांचवें भाव में हो तो जातक की पत्नी की मृत्यु हो जाएगी।

यदि शुक्र और मंगल सातवें भाव में युक्त हों तो जातक की पत्नी की मृत्यु हो जायेगी। यदि प्रथम, सातवें और बारहवें भाव में अशुभ ग्रह स्थित हों और क्षीण चन्द्रमा पांचवें भाव में हो तो जातक की कोई पत्नी नहीं होगी या वह बांझ स्त्री से शादी करेगा। यदि मंगल २, १२, ४, ८ या ७ वें भाव में हो तो जातक के जीवन साथी की मृत्यु हो जाती है।

अन्य बुरे प्रभाव

यदि प्रथम या सातवें भाव में राहु या केतु के साथ चन्द्रमा हो या सर्प, पक्षी, पासा या निगूढ़ जैसे अशुभ द्रेष्काण में हो या राशि सन्धि में हो तो जातक की पत्नी या तो पथभ्रष्ट हो जायेगी या विधवा हो जायेगी। यदि पुरुष के मामले में लग्न से सप्तम भाव में मंगल की राशि हो या मंगल के नवांश में हो और यदि नवांश लग्न से सप्तमेश कमजोर या राहु अथवा केतु के साथ हो तो जातक अपनी पत्नी को अस्वीकार कर देगा और वह युवावस्था में पथभ्रष्ट हो जायेगी, स्त्री के मामले में यदि लग्नेश मंगल हो या मंगल के नवांश में हो और यदि नवांश में सप्त-मेश उक्त प्रकार से पीड़ित हो तो जातक नौकरानी बनती है और बाल्यकाल में ही पथभ्रष्ट हो जाती है तथा उसका पति उसे छोड़ देता है।

यदि सप्तम भाव में अशुभ ग्रह हो तो जातक विधवा हो जाती है। यदि सातवें भाव में अशुभ और शुभ दोनों ही प्रकार के ग्रह हों तो वह दूसरी बार शादी करेगी। यदि सातवें भाव में कमजोर अशुभ ग्रह हो और उसपर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो जातक अपने पति द्वारा निकाल दी जाती है। यदि सप्तम भाव अशुभ राशि हो और वहाँ पर शनि स्थित हो तो जातक विधवा हो जायेगी। यदि अष्टम भाव में अशुभ राशि में अशुभ ग्रह हो और उसपर अशुभ ग्रह की दृष्टि भी हो तो इसके पति की मृत्यु हो जाती है। इसके अतिरिक्त यदि नवांश स्वामी के साथ अष्टमेश युक्त हो तो यह अशुभ होता है और बुरे प्रभाव बढ़ जाते हैं। यदि अष्टम भाव में शुभ ग्रह हों तो जातक अपने पति से पहले मरेगी। यदि सप्तम या अष्टम भाव में अशुभ ग्रह स्थित हों और नवम भाव में शुभ ग्रह हों तो जातक अपने पति के साथ दीर्घ काल तक सुखी रहती है।

यदि सप्तमेश और अष्टमेश आठवें भाव में युक्त हों, यदि सातवें भाव में राहु स्थित हो जब कि सप्तमेश सूर्य के साथ हो और उस पर अष्टमेश की दृष्टि हो, या यदि राहु सप्तम या अष्टम भाव में शनि तथा मंगल से युक्त हो तो वह जीवन में शीघ्र ही विधवा हो जाती है।

यदि सप्तमेश और अष्टमेश बारहवें भाव में युक्त हों और सातवें भाव पर अशुभ

ग्रह की दृष्टि हो तो इससे भी विधवा होने का संकेत मिलता है। यदि सप्तम भाव और सप्तमेश पाप कर्तरी योग में हों अर्थात् अशुभ ग्रहों के बीच घेरे में पड़े हों और उनपर कोई शुभ प्रभाव न हो तो इसके परिणाम स्वरूप पति की मृत्यु हो जाती है।

यदि शुक्र और मंगल नवांश में स्थान परिवर्तन योग में हों तो जातक विवाहेतर सम्बन्ध स्थापित करता है। यदि सातवें भाव में शुक्र, मंगल और चन्द्रमा हों तो वह अपने पति की मौन अनुमति से अन्य पुरुष के साथ रहेगी। यदि लग्नेश शनि या मंगल हो और उसमें चन्द्रमा या शुक्र स्थित हो तथा उस पर अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो जातक और उसकी मां दोनों ही वेश्यावृत्ति करेंगी। यदि शुक्र और शनि दोनों परस्पर एक दूसरे के नवांश में हों या एक दूसरे पर परस्पर दृष्टि डाल रहे हों, यदि जन्म लग्न कर्क और नवांश लग्न कुम्भ हो तो जातक अति कामुक होगी।

संक्षेप में राशि या नवांश में सप्तम भाव से सम्बधित ग्रह या शुक्र या राशि या नवांश में दूसरे भाव से सम्बन्धित ग्रह या नवमेश या दशमेश या चन्द्रमा अपनी दशा भुक्ति में विवाह कराने में सक्षम हैं। इसमें अन्य तथ्यों पर भी विचार करना होता है। सप्तम भाव या इसके स्वामी पर शुभ प्रभाव होने पर विवाह से सुख प्राप्त होता है जबकि अशुभ ग्रहों का प्रभाव होने पर विवाह में विपत्ति आती है, मृत्यु हो जाती है या तलाक हो जाता है। यदि सप्तम भाव और शुक्र द्विस्वभाव राशि में हो तो एक से अधिक शादी होती है।

कुण्डली सं० १

जन्म तारीख १९-८-१९३७ जन्म समय ८-३१ बजे प्रातः (आई. एस. टी.)
अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ७१°३५ पूर्व।

राशि

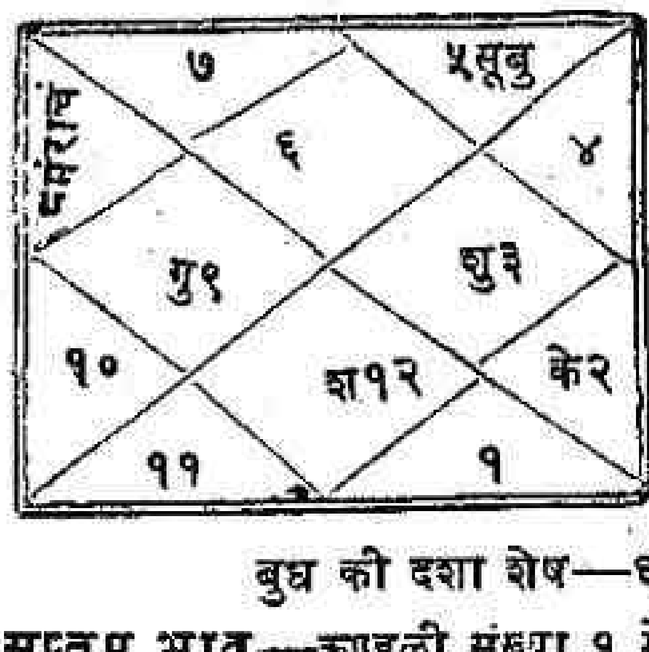

नवांश

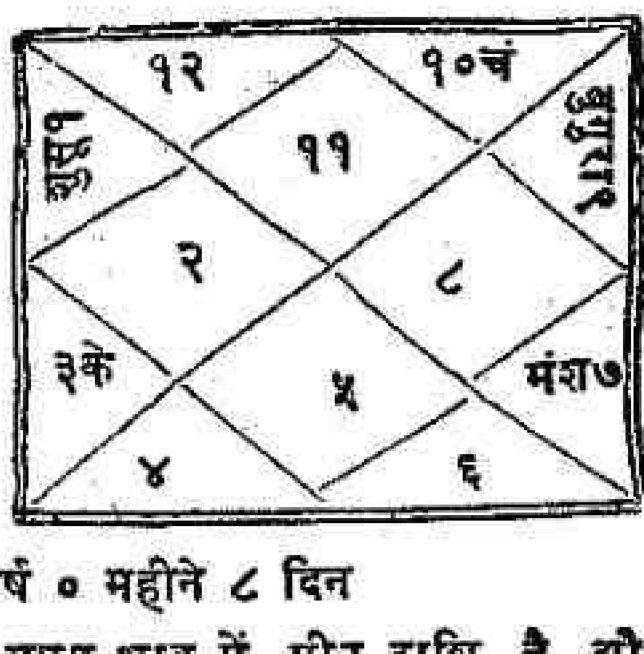

बुध की दशा शेष—६ वर्ष ० महीने ८ दिन

सप्तम भाव—कुण्डली संख्या १ में सप्तम भाव में मीन राशि है और वहां

पंचमेश तथा षष्ठेश शनि स्थित है। वहाँ अशुभ शनि की स्थिति उत्तम नहीं है और यह उस भाव को प्रभावित करता है।

सप्तमेश—सप्तमेश वृहस्पति चौथे भाव में हैं तथा सप्तम भाव से केन्द्र स्थान दशम भाव में है। उसपर कारक शुक्र और अशुभ ग्रह शनि की दृष्टि है। वृहस्पति राशि और नवांश दोनों में अपनी मूलत्रिकोण राशि धनु में स्थित है। किन्तु वह नवांश में राहु तथा उच्च के शनि से पीड़ित है।

कलत्र कारक—द्वितीयेश और नवमेश शुक्र मित्रराशि में केन्द्र में लाभप्रद ढंग से स्थित है वह शुभ ग्रह तथा सप्तमेश वृहस्पति और मंगल से दृष्ट है। मंगल तृतीयेश और अष्टमेश होने के कारण मारक है। शुक्र हल्का कलंकित है किन्तु वृहस्पति की दृष्टि से काफी बली है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव में शुभ राशि वृषभ है और वह चन्द्रमा तथा मंगल से दृष्ट है और वहाँ पर केतु स्थित हैं। मंगल स्वयं मारक नहीं है किन्तु चन्द्रमा और राहु की युक्ति के कारण वह प्रभावित है। सप्तमेश शुक्र अच्छी स्थिति में है जैसाकि ऊपर विश्लेषण किया गया है।

निष्कर्ष—सप्तम भाव काफी बली है किन्तु अशुभ प्रभाव नगण्य नहीं है। सप्तमेश वृहस्पति के बल के कारण प्रबल इच्छा वाला पति मिलेगा किन्तु मंगल और राहु के साथ चन्द्रमा के स्थित होने के कारण जातक की इच्छा सीमित होगी। इस प्रभाव के कारण आपस में स्वाभाविक विवाद होगा परन्तु सप्तम भाव में शनि के स्थित होने और वृहस्पति तथा शुक्र के परस्पर दृष्टि परिवर्तन के फलस्वरूप विवाह स्थायी होगा तथा दोनों के बीच गहरा लगाव रहेगा।

शनि षष्ठेश होकर सप्तम भाव में स्थित है। इससे विवाह में विलम्ब होगा। योग्य आयु की अवधि के दौरान तथा उसके बाद शुक्र, सूर्य, चन्द्रमा, मंगल और राहु की दशा रहेगी।

विवाह के लिए अनुकूल समय (१) राशि और नवांश के स्वामी और सप्तमेश (२) शुक्र (३) चन्द्रमा (४) जिस राशि में द्वितीयेश स्थित हो उसका स्वामी (५) दसमेश (६) नवमेश (७) सप्तमेश या सप्तम में स्थित ग्रह अपनी दशा या भुक्ति में विवाह करा सकते हैं।

अतः कुण्डली संख्या १ में निम्नलिखित ग्रह अपनी दशा या भुक्ति में शादी कराने में सक्षम होगें—

१. राशि और नवांश स्वामी सप्तमेश—वृहस्पति
२. शुक्र

३. चन्द्रमा

४. द्वितीयेश शुक्र जिस राशि में स्थित है उसका स्वामी बुध

५. दशमेश–बुध

६. नवमेश–शुक्र

७. सप्तमेश–बृहस्पति, सप्तम भाव में स्थित ग्रह–शनि और सप्तम भाव पर दृष्टि डालने वाले ग्रह–कोई नहीं

जातक की बुध की दशा बाल्यकाल में बीत गई। आगे की जिस दशा में शादी हो सकती थी वह शुक्र की है। बृहस्पति और शनि की दशा जीवन में काफी देर से आएगी। चन्द्रमा की दशा भी जीवन में देर से आएगी सन्देह नहीं कि सातवें भाव में शनि शादी में विलम्ब कराता है किन्तु कारक शुक्र और सप्तमेश बृहस्पति अधिक विलम्ब नहीं कराएगा। अत: शुक्र अपनी दशा में शादी कराने में सक्षम है। इसमें शुक्र, बृहस्पति, शनि, बुध और चन्द्रमा, शुक्र की भुक्ति काफी पहले आएगी। चारों ग्रहों में बृहस्पति दृष्टि, स्थिति और स्वामित्व के कारण सबसे बली है। शुक्र की दशा और बृहस्पति की भुक्ति में अप्रैल १९६१ में शादी हुई।

शीघ्र या विलम्बित विवाह समय के अनुसार अवधारित किया जाता है। भारत में किसी समय ५ या ६ वर्षों की आयु में लड़के या लड़कियों की शादी कर दी जाती थी। उसके बाद १० या १२ वर्षों की उम्र में शादी होने लगी। १९६० के आस पास २५ वर्ष की आयु में शादी को विलम्बित शादी माना जाता था जबकि आज इसे बिल्कुल सही माना जाता है। पृष्ठ भूमि, काल और जातक जिस समाज का है उसके रस्म रिवाज को ध्यान में रखकर कुण्डली की व्याख्या करनी चाहिए।

कुण्डली सं० २

जन्म तारीख ३-८-१९४२ जन्म समय ७-२३ बजे प्रात: (आई. एस. टी.)
अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ७७°३५ पूर्व।

राशि

नवांश

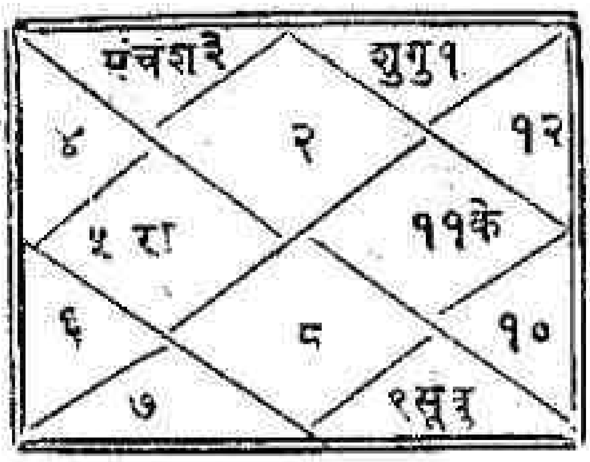

केतु की दशा शेष–२ वर्ष ७ महीने

सप्तम भाव—कुण्डली संख्या २ में सप्तम भाव कुम्भ में केतु स्थित है जो वर्गोत्तम में है। यह सप्तमेश शनि, शुभ ग्रह बृहस्पति और चतुर्थेश तथा नवमेश योग कारक मंगल से दृष्ट है। शनि सप्तमेश है और सप्तम भाव पर उसकी दृष्टि उत्तम है। बृहस्पति और मंगल नैसर्गिक शुभ ग्रह हैं और उनकी दृष्टि से सप्तम भाव बली हो गया। केतु राशि पर दृष्टि डालने वाले शनि या मंगल का फल देगा, जो दोनों ही लाभप्रद स्थिति में हैं। सातवां भाव पीड़ित नहीं है।

सप्तमेश—सप्तमेश शनि शुभ राशि वृषभ में दसम भाव में स्थित है और शुभ ग्रहों के घेरे में है जिसकी एक ओर चन्द्रमा तथा दूसरी ओर बृहस्पति और शुक्र स्थित है।

कलत्र कारक—शुक्र मित्र राशि में शुभ ग्रह बृहस्पति से युक्त है और शनि तथा सूर्य के कारण हल्का पाप कर्तरी योग में है। किन्तु वहाँ पर बृहस्पति के स्थित होने के कारण यह अशुभ योग संतुलित हो गया। वहाँ सूर्य और शनि स्थित हैं किन्तु क्रमश: लग्न और सप्तमेश भाव और कारक के लिए शुभ हैं।

चूँकि सप्तमेश बुरे प्रभाव से मुक्त है और एक शुभ राशि में है अत: शनि द्वारा परम्परा के अनुसार सुन्दर स्त्री का संकेत देता है। सप्तम भाव पर बुरा प्रभाव न होने के कारण विवाहित जीवन सुखी होगा। सप्तम भाव में केतु का बली होना अच्छा है किन्तु कुछ मामलों में पत्नी के भावुक होने के कारण कुछ मत-भेद रहेगा।

चन्द्रमा की दशा और चन्द्रमा की भुक्ति में अगस्त १९७२ में शादी हुई। इस संबन्ध में निम्नलिखित स्थिति पर विचार करें (१) शुक्र और बुध (२) शुक्र (३) चन्द्रमा (४) चन्द्रमा (५) शुक्र (६) मंगल (७) शनि केतु और मंगल अपनी दशा या भुक्ति में शादी करा सकते हैं। केतु और शुक्र की दशा जीवन में पहले ही समाप्त हो गई। बुध की दशा आई ही नहीं। मंगल और शनि की दशा काफी देर से आएगी। सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि के कारण शादी में बिलम्ब नहीं होगा क्योंकि वह स्वयं ही सप्तमेश है। अत: चन्द्रमा की दशा प्रभावी हुई। इसी प्रकार चन्द्रमा की भुक्ति भी प्रभावी हुई।

कुण्डली संख्या ३

जन्म तारीख ३-४-१२-१९५३ जन्म समय ५-१७ बजे प्रात: (आई. एस. टी.)

अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ७८°३५′ पूर्व।

राशि

नवांश

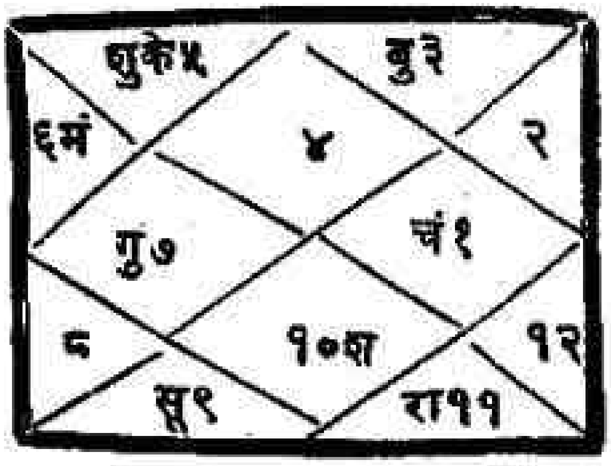

बृहस्पति की दशाशेष—१४ वर्ष १ महीने २० दिन

सप्तम भाव—कुण्डली संख्या ३ में सप्तमेश शुक्र और दशमेश सूर्य की सप्तम भाव पर दृष्टि है। सप्तम भाव में कोई ग्रह स्थित नहीं है।

सप्तमेश—सप्तमेश शुक्र लग्न में दशमेश सूर्य के साथ स्थित है। सूर्य अशुभ ग्रह है किन्तु केन्द्र स्थान दसम भाव का स्वामी होने के कारण शुभ कार्य करेगा।

कलत्र कारक—शुक्र न केवल सप्तमेश है बल्कि सप्तम भाव नैसर्गिक कारक भी है। वह दसमेश के साथ उत्तम स्थिति में है और सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव में मेष राशि है। उसपर दसमेश चन्द्रमा, नवमेश और द्वादशेश बुध, योग कारक उच्च शनि और सप्तमेश मंगल की दृष्टि है। सप्तमेश के रूप में मंगल की दृष्टि उत्तम है परन्तु बारहवें भाव में स्थित होने के कारण कुछ भावुक बना देगा। तथापि उच्च के शनि और नवमेश बुध की मिली जुली दृष्टि किसी भी समस्या का सामना करने के लिए काफी बली है।

निष्कर्ष—जातक की शादी एक सती और भक्त पत्नी के साथ हुई। यह विशेष रूप से कारक के शुक्र की अकलंकित दृष्टि और सप्तम भाव पर सप्तमेश की दृष्टि से स्पष्ट है।

जातक की शादी मई १९७७ में हुई। निम्नलिखित ग्रह अपनी दशा और भुक्ति में शादी कराने में सक्षम हैं—

(१) राशि और नवांश स्वामी जो सप्तमेश से युक्त हों—मंगल और सूर्य
(२) शुक्र
(३) चन्द्रमा
(४) द्वितीयेश बृहस्पति जिस राशि में है उसका स्वामी
(५) दसमेश सूर्य

(६) नवमेश चन्द्रमा

(७) सप्तमेश शुक्र

सप्तम भाव में कोई ग्रह नहीं है और सप्तम भाव पर दृष्टि डालने वाला सूर्य है इन सब में बुध अधिक सही प्रतीत होता है क्योंकि अन्य दशाएँ जीवन में काफी देर से आएँगी । परन्तु बुध की दशा भी जीवन में देर से आरंभ होगी अर्थात् ३३ वर्ष की आयु में । इस कुण्डली में देर से शादी का संकेत नहीं है । अतः बुध के साथ युक्त ग्रह अर्थात् चन्द्रमा और शनि दूसरे उचित ग्रह होगें । चन्द्रमा की दशा काफी देर से आती है जबकि शनि की दशा युवावस्था में आएगी । अतः शनि विवाह कराने में सक्षम होगा । शनि की दशा में शुक्र की भुक्ति में शादी हो सकती है क्योंकि वह कारक और सप्तमेश होकर सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और स्वयं भी उत्तम स्थिति में है । शनि की दशा में शुक्र की भुक्ति में शादी हुई ।

कुण्डली सं० ४

जन्म तारीख २०–११–१९५०, समय ३–० बजे प्रातः (आई० एस० टी०) अक्षांश १८'५५' उत्तर, देशा० ८२° ५४' पूर्व ।

राशि

नवांश

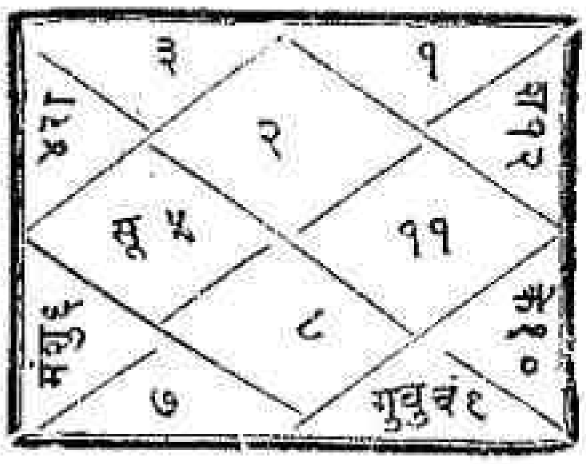

बुध की दशा शेष—१३ वर्ष ७ महीने ६ दिन

सप्तम भाव—कुण्डली सं० ४ में सप्तम भाव में मीन राशि है और वहां पर चन्द्रमा और राहु स्थित हैं । इस पर पंचमेश और षष्ठेश क्रूर ग्रह शनि और मारक ग्रह मंगल की दृष्टि है । सप्तम भाव पर कोई कारक प्रभाव नहीं है । यह भाव काफी पीड़ित है ।

सप्तमेश—सप्तमेश बृहस्पति है जो दुःस्थान अर्थात् छठे भाव में स्थित है । उस पर किसी ग्रह की दृष्टि नहीं है । कलत्र कारक शुक्र बारहवें भाव के स्वामी सूर्य और लग्नेश बुध के साथ स्थित है और उस पर अशुभ ग्रह शनि की दृष्टि है । इस पर कोई शुभ प्रभाव नहीं है और वह काफी पीड़ित है ।

चन्द्रमा से विचार—चन्द्रमा से सप्तम भाव में कन्या राशि है और वहां पर शनि तथा केतु स्थित है। सप्तमेश बुध कारक के साथ होने के कारण थोड़ी सी बेहतर स्थिति में है किन्तु तीसरे भाव में जो मारक स्थान है, अष्टमेश शुक्र और षष्ठेश सूर्य के साथ स्थित है। चन्द्रमा से सप्तम भाव भी पीड़ित है।

निष्कर्ष—जातक की शादी सितम्बर १९७२ में शुक्र की दशा और शुक्र की भुक्ति में हुई। विवाह समय का सिद्धान्त लागू करने पर यह बिल्कुल सही है। अगस्त १९७३ में जातक और उसके पति के बीच मतभेद आरम्भ हुआ। वे जून १९७४ में अलग हो गये। कन्या लग्न के लिए मङ्गल और शनि दो बली अशुभ ग्रहों से सप्तम भाव में राहु और चन्द्रमा के पीड़ित होने के कारण पति बदनाम स्त्रियों के साथ विवाहेतर सम्बन्ध स्थापित करता है। सप्तम भाव से सम्बन्धित सभी तथ्य जिनपर कोई शुभ प्रभाव नहीं है, के कारण जातक विवाहित सुख से पूर्णतः वंचित रही।

कुण्डली सं० ५

जन्म तारीख ८–१०–१९३५, जन्म समय ११–३० बजे प्रातः (आई०एस०टी०)
अक्षांश १३° १०′ उत्तर, देशा० ७६°–१०′ पूर्व।

राशि

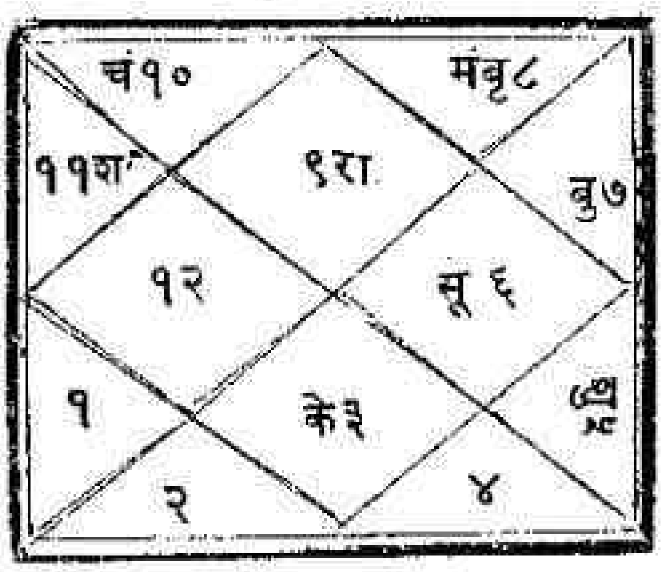

नवांश

जन्म समय मंगल की दशा शेष–४ वर्ष ११ महीने २० दिन

सप्तम भाव—कुण्डली संख्या ५ में सप्तम भाव में केतु स्थित है और उस पर मंगल की विपरीत दृष्टि है। पंचमेश के रूप में मंगल शुभ है परन्तु वह बारहवें भाव में स्थित है और सप्तम भाव पर अपनी अष्टम दृष्टि डाल रहा है जो बहुत खराब है।

सप्तमेश—सप्तमेश बुध है और वह ग्यारहवें भाव में मित्र राशि में स्थित है परन्तु वह अशुभ ग्रह सूर्य और मंगल के बीच में पड़ा है।

कलत्र कारक—शुक्र नवम भाव में शत्रु राशि में है तथा उसपर अशुभ ग्रह शनि की दृष्टि है और उसपर कोई शुभ प्रभाव नहीं है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव में कर्क राशि है और उस पर बृहस्पति की दृष्टि है। सप्तमेश चन्द्रमा अशुभ ग्रह शनि और राहु के बीच घेरे में है। चन्द्रमा से सप्तम भाव पर बृहस्पति की दृष्टि को छोड़कर सप्तम भाव पीड़ित है।

निष्कर्ष—सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि और वहां पर केतु की स्थिति के फलस्वरूप विवाहित जीवन में प्रचण्ड संघर्ष होता है। शुक्र से सप्तम भाव में अशुभ ग्रह शनि स्थितहै जो विवाहित जीवन के सुख से बंचित करता है। केवल चन्द्रमा से सप्तम भाव पर बृहस्पति की दृष्टि के कारण पूर्णतः विच्छेद नहीं हो पाया यद्यपि जीवन दयनीय है।

कुण्डली सं० ६

जन्म तारीख २४–३–१८८३, जन्म समय ४'० बजे प्रातः (स्थान सं०) अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ७७° ३५' पूर्व।

राशि

नवांश

चन्द्रमा की दशा शेष–६–०–० वर्ष

सप्तम भाव—कुण्डली संख्या ६ में सप्तम भाव में कन्या राशि है। यह द्विस्वभाव राशि है और वहां पर शुभ ग्रह पंचमेश चन्द्रमा स्थित है और उस पर बारहवें भाव से द्वितीय और नवमेश मंगल की और षष्ठेश सूर्य की दृष्टि है। सप्तम भाव चन्द्रमा की स्थिति को छोड़कर कलंकित है।

सप्तमेश—सप्तमेश बुध बारहवें भाव में मंगल के साथ स्थित है तथा उसपर लग्नेश बृहस्पति और दसमेश तथा एकादशेश शनि की दृष्टि है।

कलत्र कारक—शुक्र ग्यारहवें भाव में मित्र राशि में है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव में द्विस्वभाव राशि है और वहाँ पर बारहवें भाव का स्वामी सूर्य स्थित है। यह मंगल और केतु के घेरे में है। सप्तमेश बृहस्पति दशम भाव में द्विस्वभाव राशि में स्थित है।

निष्कर्ष—शुक्र की ग्यारहवें भाव में स्थिति, लग्न और चन्द्रमा दोनों से सप्तम

भाव द्विस्वभाव राशि में होने और सप्तमेश वृहस्पति के द्विस्वभाव राशि में होने के फल स्वरूप दो विवाह हुआ। विवाहित जीवन सुखी नहीं था।

इसकी कुण्डली संख्या १ के साथ तुलना करें जहां सप्तमेश वृहस्पति और शुक्र द्विस्वभाव राशि में स्थित हैं किन्तु जातक की केवल एक शादी हुई। वृहस्पति सप्तमेश है और शुक्र कारक है। दो ग्रहों के बीच परस्पर दृष्टि परिवर्तन से शादी सफल रही।

कुण्डली संख्या ७

जन्म तारीख १२-२-१८५६

जन्म समय १२-२१ बजे संध्या

अक्षांश १८° उत्तर, ३४° पूर्व

राशि

नवांश

शुक्र की दशा शेष-१२ वर्ष ३ महीने १ दिन

सप्तम भाव—चूंकि लग्न वृषभ राशि है अतः सप्तम भाव में वृश्चिक राशि है। इस पर किसी ग्रह की दृष्टि नहीं है और यह बुरे प्रभाव से मुक्त है।

सप्तमेश—सप्तमेश मंगल शुभ राशि में केतु के साथ स्थित है और उसपर चन्द्रमा और वृहस्पति की दृष्टि है।

कलत्र कारक—कलत्र कारक शुक्र द्विस्वभाव राशि में स्थित है तथा उस पर योग कारक शनि की दृष्टि है। वह अष्टम भाव में दुःस्थान में स्थित है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव में तुला राशि है और वहां पर उसी भाव का स्वामी मंगल स्थित है और वृहस्पति की दृष्टि है। सप्तमेश शुक्र नवम भाव में द्विस्वभाव राशि में है तथा उसपर अशुभ दसमेश तथा एकादशेश शनि की दृष्टि है।

निष्कर्ष—सप्तमेश और कलत्र कारक शुक्र के द्विस्वभाव राशि में स्थित होने के कारण जातक ने एक की मृत्यु के बाद दूसरा विवाह किया। दोनों शादियां सुखी थीं। सप्तमेश मंगल केतु के साथ युक्त होने के कारण भागीदारों के बीच नाराजगी और भावुक पत्नी देता है। शुक्र से सप्तम भाव में शनि कष्ट कारक

नहीं है वह साधारण रहेगा। क्योंकि वह योग कारक है। सप्तमेश मंगल पर बृहस्पति की दृष्टि से भी विवाहित जीवन में सुख की प्राप्ति होगी। सप्तमेश मंगल और केतु की छठे भाव (बारहवें से सप्तम) में स्थिति भी महत्त्वपूर्ण है।

कुण्डली संख्या ८

जन्म तारीख ८-८-१९१२ समय ७·३५ बजे संध्या (आई. एस. टी)
अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ७७° ३०' पूर्व।

राशि नवांश

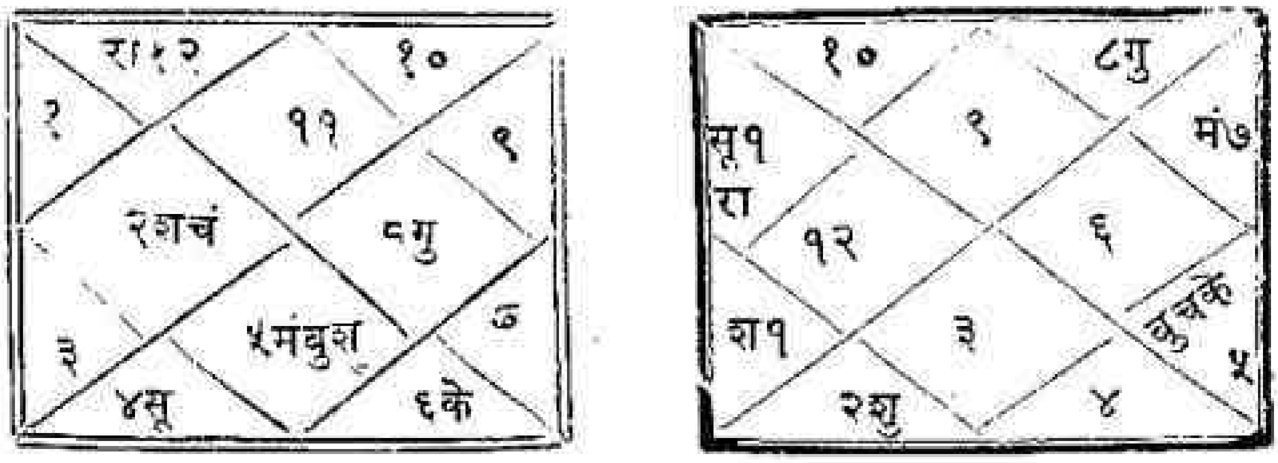

मंगल की दशा शेष–६ वर्ष १ महीने ६ दिन

सप्तम भाव—कुण्डली सं० ८ में सप्तम भाव में सिंह राशि है और वहाँ पर तीन ग्रह अर्थात् मंगल बुध और शुक्र स्थित हैं। सप्तम भाव नवमेश शुक्र और पंचमेश तथा अष्टमेश बुध से बली है। इसे मंगल थोड़ा कलंकित करता है।

कलत्र कारक—शुक्र सप्तम भाव में मंगल और केतु के साथ स्थित है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव वृश्चिक में वर्गोत्तम बृहस्पति स्थित है तथा उसपर सप्तमेश मंगल और योग कारक शनि की दृष्टि है। सप्तमेश मंगल राशि चन्द्रमा और शुभ ग्रह पंचमेश बुध के साथ है। इन तथ्यों से सप्तम भाव बली है।

निष्कर्ष—जातक ने एक भक्त और सती पत्नी से सुख पूर्वक विवाह किया। कुण्डली सं० ८ की कुण्डली संख्या ७ के साथ तुलना करें दोनों में ही सप्तमेश छठे भाव में स्थित है और उस पर शुभ ग्रह बृहस्पति की दृष्टि है। कुण्डली सं० ७ में कलत्र कारक और चन्द्रमा से सप्तमेश, शुक्र द्विस्वभाव राशि में स्थित है। कुण्डली सं० ८ में कलत्र कारक शुक्र दो अन्य ग्रहों के साथ सप्तम भाव में स्थित है। फिर कुण्डली सं० ८ के जातक ने एक विवाह किया और स्थिर रहा। यह इसलिए हुआ क्योंकि यद्यपि कारक के रूप में शुक्र सप्तम भाव में ठीक नहीं है। इस मामले में शुक्र के योग कारक के रूप में कलंक पर विचार किया जाता है। इसके अतिरिक्त वह स्थिर राशि में है जिससे प्यार की स्थिरता का संकेत मिलता है। सप्तमेश पर लग्नेश शनि की दृष्टि है। चन्द्रमा से भी चन्द्रमा, राशि स्वामी शुक्र और मंगल

की सिंह राशि में युक्ति वांछित है। सप्तमेश के रूप में मंगल की सप्तम भाव पर दृष्टि से इसे सुरक्षा मिलती है।

कुण्डली सं० ९

जन्म तारीख ३-११-१९४० जन्म समय ७-० बजे प्रात: (ई.एस.टी)
अक्षांश ३५°४४ उत्तर, देशा० ८१°२१′ पश्चिम।

राशि

नवांश

केतु की दशा शेष—२ वर्ष ७ महीने १८ दिन

सप्तम भाव—कुण्डली सं० ९ में सप्तम भाव में मेष राशि है और वहाँ पर योग कारक ग्रह स्थित है किन्तु शनि नीच का है और बृहस्पति तीसरे तथा छठे भाव का स्वामी है। सप्तमेश मंगल बारहवें भाव के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है। नीच का सूर्य भी एकादशेश के रूप में सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है।

सप्तमेश—सप्तमेश मंगल राहु के साथ है और लग्नेश शुक्र बारहवें भाव में द्विस्वभाव राशि में है।

कलत्र कारक—शुक्र बारहवें भाव में मंगल और राहु के साथ स्थित है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव मिथुन पर नीच शनि की दृष्टि है जब कि सप्तमेश स्वयं चन्द्रमा से बारहवें भाव में स्थित है। सातवें भाव पर कोई शुभ दृष्टि नहीं है।

निष्कर्ष—दो नैसर्गिक शत्रु सूर्य और शनि की लग्न और सप्तम भाव के आमने सामने स्थिति से पति-पत्नी के बीच विरोध और मतभेद होता है। शुक्र और मंगल लग्नेश तथा सप्तमेश के रूप में एक साथ स्थित हैं। किन्तु उनके साथ राहु भी स्थित है। इससे पति-पत्नी के बीच शारीरिक आकर्षण होता है किन्तु अशुभ प्रभाव के कारण सौहार्द में कठिनाई आती है। यद्यपि बृहस्पति सप्तम भाव में स्थित है।

किन्तु यह षष्ठेश है और अधिक सहायक नहीं है। चन्द्रमा से लग्नेश और सप्तमेश आपस में एक दूसरे से विपरीत हैं। यह कुण्डली एक स्त्री की है। जिसकी शादी १९६१ में हुई और १९६४ में अपने पति से अलग हो गई। विवाहित जीवन बिल्कुल ही सुखी नहीं था।

कुण्डली सं० १०

जन्म तारीख १३-३-१९४८ जन्म समय १०–३० बजे प्रातः (आई एस टी)

अक्षांश ११° ६′ उत्तर, देशा० ७९°४२′ पूर्व।

राशि

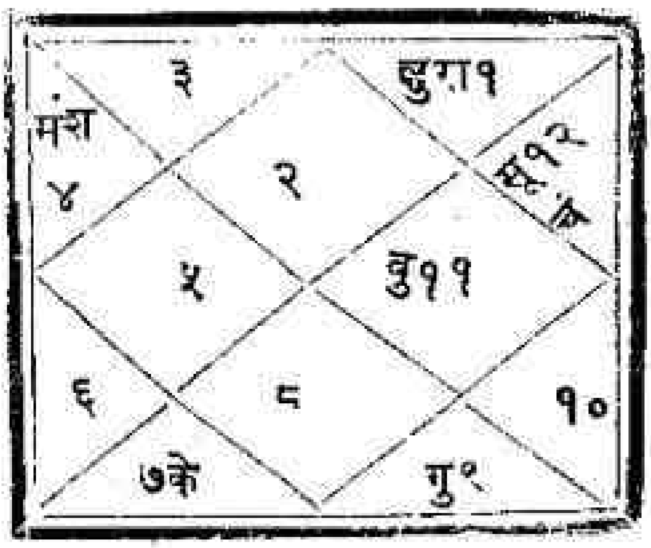

नवांश

बुध की दशा शेष–३ वर्ष ९ महीने २७ दिन

सप्तम भाव—कुण्डली संख्या १० में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि है जिसपर किसी ग्रह की दृष्टि नहीं है।

सप्तमेश—सप्तमेश मंगल तीसरे भाव में नीच का पड़ा है। वह योगकारक शनि के साथ युक्त है।

कलत्र कारक—शुक्र अशुभ भाव बारहवें में राहु के साथ स्थित है और शनि से दृष्ट है वह नीच के मंगल के साथ युक्त होने से अशुभ है। शुक्र पर अष्टमेश बृहस्पति की दृष्टि है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव में कन्या राशि है जिस पर षष्ठेश सूर्य और मारक शनि की दृष्टि है। सप्तमेश बुध चन्द्रमा से बारहवें भाव में स्थित है और उसपर मारक मंगल की दृष्टि है। सप्तमेश या सप्तम भाव पर कोई शुभ प्रभाव नहीं है।

निष्कर्ष—विवाह के तीन दिन बाद ही पति ने जातक को छोड़ दिया। वह चरित्रहीन, धोखेबाज और ऐयाशी पाया गया। योगकारक शनि के साथ सप्तमेश

मंगल की युक्ति से एक सम्पन्न और समाज में प्रतिष्ठित पति मिला किन्तु नीच मंगल ने उसे अवमानित कर दिया।

कुण्डली सं० ११

जन्म तारीख २६·१२·१९५३ जन्म समय ११-४७ बजे संध्या (आई. एस. टी.) अक्षांश १०°२३ उत्तर, देशा० ७८–५५ पूर्व।

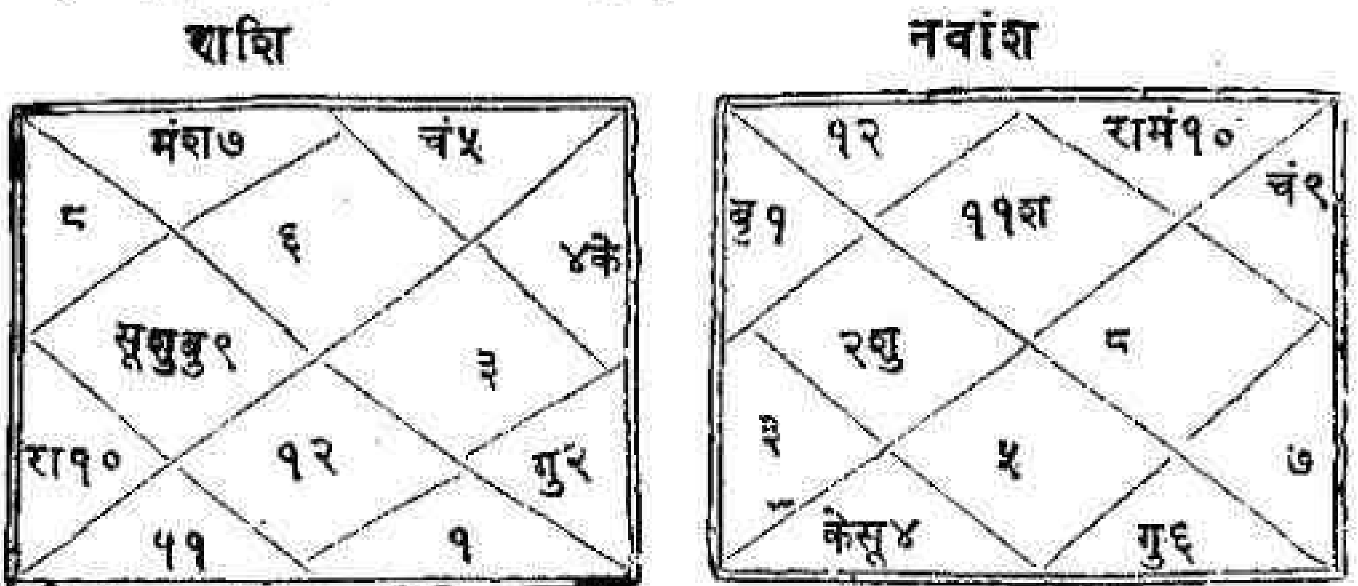

जन्म समय सूर्य की दशा शेष–५ वर्ष १० महीने ९ दिन

सप्तम भाव—कुण्डली सं० ११ में सप्तम भाव में मीन राशि है, उस पर कोई शुभ या अशुभ दृष्टि नहीं है।

सप्तमेश—सप्तमेश बृहस्पति नवम भाव में स्थित है और उसपर तृतीयेश तथा अष्टमेश मंगल की दृष्टि है।

कलत्र कारक—कलत्र कारक शुक्र लग्नेश बुध और द्वादशेश सूर्य के साथ चौथे भाव में अच्छी स्थिति में है। बृहस्पति और शुक्र के बीच राशि परिवर्तन योग है जो परस्पर एक दूसरे को लाभान्वित कर रहे हैं।

चन्द्रमा से विचार—चन्द्रमा सिंह राशि में है अत: सप्तम भाव में कुम्भ राशि है। सप्तमेश शनि योग कारक मंगल के साथ तीसरे भाव में उच्च स्थिति में है। चन्द्रमा से सप्तम भाव पर कोई शुभ या अशुभ दृष्टि नहीं है।

निष्कर्ष—सप्तमेश और कलत्र कारक क्रमश: बृहस्पति और शुक्र के बली होने तथा लग्न एवं चन्द्रमा दोनों से सप्तमेश और सप्तम भाव कलंक से मुक्त होने के कारण सुखी विवाहित जीवन मिला। बृहस्पति पर मंगल की दृष्टि, शुभ राशि में शनि उच्च का होने के कारण प्रभाव हीन हो गई और इससे मात्र जिद्दी स्वभाव हो सका किन्तु विवाहित जीवन सामान्यत: आनन्दित रहा।

कुण्डली संख्या १२

जन्म तारीख २१–५–१९४० जन्म समय ७·५० बजे प्रात: (आई. एस. टी.) अक्षांश १३° उत्तर, देशान्तर ७७° ३०′ पूर्व।

राशि

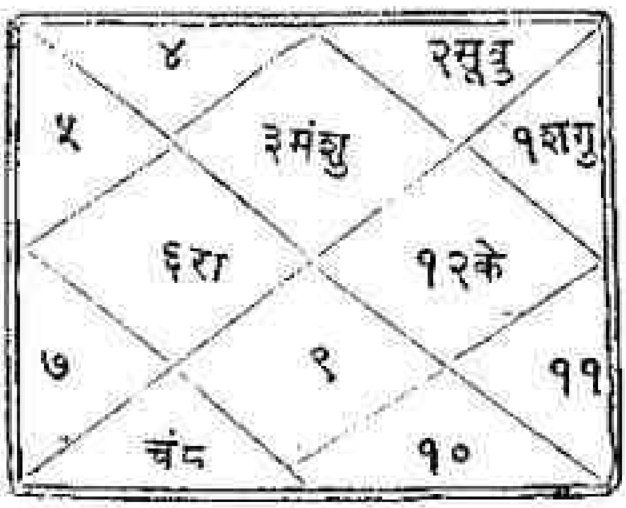

नवांश

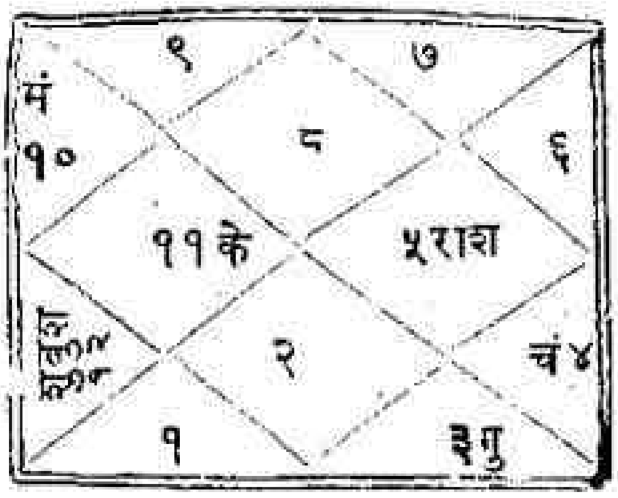

बृहस्पति की दशा शेष—१ वर्ष ६ महीने २२ दिन

सप्तम भाव—कुण्डली सं० १२ में सप्तम भाव में शुभ राशि धनु का उदय हो रहा है। इस राशि में कोई भी ग्रह स्थित नहीं है। इस पर सप्तमेश बृहस्पति की ग्यारहवें भाव से दृष्टि आ रही है जबकि षष्ठेश और एकादशेश मंगल तथा पंचमेश और द्वादशेश शुक्र की दृष्टि लग्न से आ रही है। सप्तम भाव पूरी तरह बली है।

सप्तमेश—बृहस्पति नवमेश शनि के साथ जो नीच का है, ग्यारहवें भाव में स्थित है। जिस राशि में शनि उच्च का होता है, उस राशि का स्वामी शुक्र केन्द्र में है अतः शनि का नीच भंग हो जाता है।

कलत्र कारक—शुक्र षष्ठेश और एकादशेश होने के कारण मारक मंगल के साथ मित्र राशि में स्थित है। शुक्र पर नवमेश शनि की दृष्टि है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव वृषभ में अष्टमेश और एकादशेश बुध और दसमेश सूर्य स्थित है। सप्तमेश शुक्र चन्द्रमा से अष्टम भाव में मंगल के साथ है। सप्तम भाव उचित रूप से संतुलित है।

निष्कर्ष—सप्तम भाव पर दो शुभ ग्रह बृहस्पति और शुक्र की दृष्टि के कारण उस पर शुभ प्रभाव की प्रधानता है। शुक्र न केवल शुभ भाव का स्वामी है बल्कि कलत्र कारक भी है। अतः सप्तम भाव पर उसकी दृष्टि काफी उत्तम है। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि अति शुभ नहीं है क्योंकि वह अशुभ भावों का स्वामी है किन्तु नवमेश नीच भंग शनि की दृष्टि से मंगल का अशुभ स्वभाव कम हो जाता है। जातक का विवाहित जीवन सुखी है, सप्तम भाव पर सप्तमेश बृहस्पति और कारक शुक्र की दृष्टि के कारण जातक को पतिव्रता पत्नी मिली।

कुण्डली संख्या १३

जन्म तारीख १६–१०–१९१८ जन्म समय २–० बजे सन्ध्या (स्थान सं०) अक्षांश १३° उत्तर, देशान्तर ७७° ३५′ पूर्व।

राशि

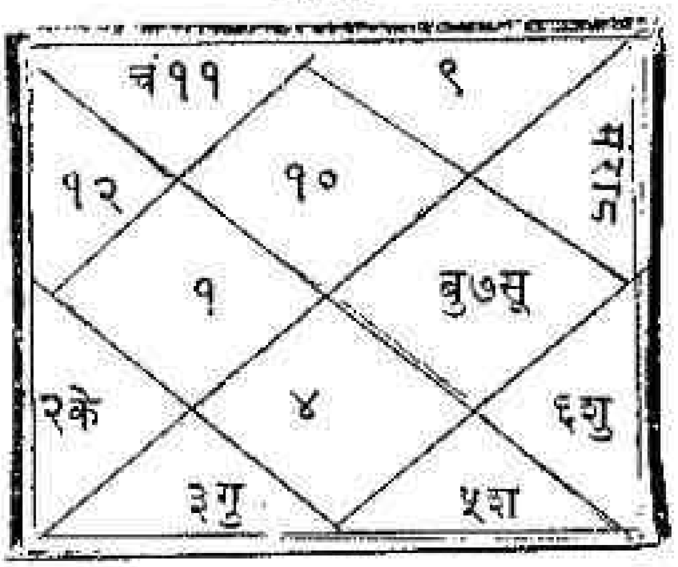

नवांश

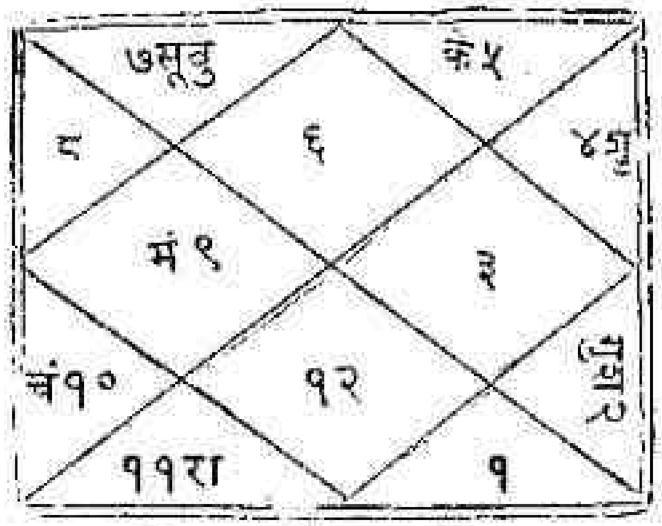

जन्म समय राहु की दशा शेष—११ वर्ष ८ महीने २० दिन

सप्तम भाव—कुण्डली सं० १३ में सप्तम भाव में कर्क राशि है और वहां पर कोई भी ग्रह स्थित नहीं है और उस पर किसी ग्रह की दृष्टि भी नहीं है।

सप्तमेश—चन्द्रमा दूसरे भाव में है और उस पर लग्नेश तथा द्वितीयेश शनि, तृतीयेश और द्वादशेश बृहस्पति, चतुर्थेश और एकादशेश मंगलकी दृष्टि है। जो राहु से पीड़ित है।

कलत्र कारक—शुक्र नवम भाव में नीच का है। उसका नीच भंग हो रहा है क्योंकि वहां का राशि स्वामी लग्न से केन्द्र में स्थित है। नवमेश बुध के साथ शुक्र का राशि परिवर्तन हो रहा है। शुक्र पापकर्तरी योग में भी है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव में चन्द्रमा का राशि स्वामी शनि स्थित है। सप्तमेश सूर्य नवम भाव में नीच का है किन्तु उसका नीच भंग हो रहा है क्योंकि सूर्य के उच्च स्थान का स्वामी मंगल चन्द्रमा से दसम भाव में स्थित है। सूर्य वर्गोत्तम में भी है (राशि और नवांश दोनों में एक ही राशि में है) और बुध के साथ जो पंचमेश और अष्टमेश के रूप में वर्गोत्तम है, बुध-आदित्य योग बना रहा है। सूर्य पर चन्द्रमा के राशि स्वामी शनि और द्वितीयेश तथा एकादशेश बृहस्पति की दृष्टि है।

निष्कर्ष—लग्न और चन्द्रमा दोनों से ही सप्तम भाव अशुभ प्रभावों से मुक्त है। इनसे सुखी विवाहित जीवन मिला। कलत्र कारक शुक्र का पाप कर्तरी योग सूर्य और शनि के कारण कम हो गया क्योंकि वे सप्तम भाव के कारक हैं (अर्थात् लग्नेश और चन्द्रमा से सप्तमेश) और भाव या प्रश्नगत कारक पर उनका विपरीत प्रभाव नहीं हो सकता है। सप्तमेश के विशेषकर चन्द्रमा से, प्रबल होने के कारण जातक को एक ऐसा पति मिला जो न केवल सम्पन्न है बल्कि अपने चरित्र, सत्य-निष्ठा और विद्वत्ता के लिए काफी सम्मानित है। सप्तमेश के सम्बन्ध में बुध आदित्य योग से विद्वान पति मिला जब कि जातक भी अपने कार्य के योग में काफी तेज और विद्वान है।

कुण्डली सं० १४

जन्म तारीख ३-११-१९५७ जन्म समय १०-२० बजे प्रात: (आई. एस. टी.)
अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ७७°३० पूर्व ।

राशि

नवांश

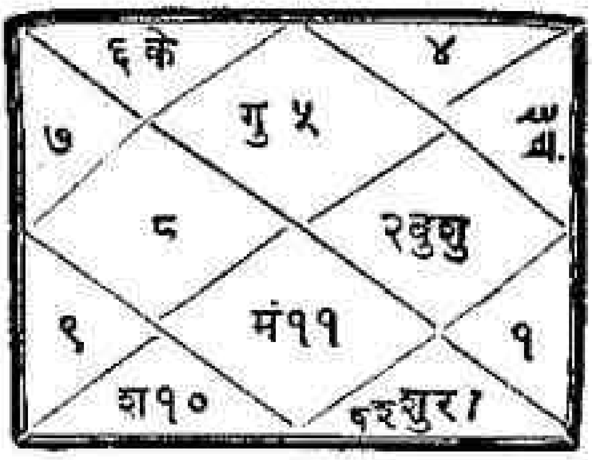

बृहस्पति की दशा शेष–४ वर्ष ४ महीने १७ दिन

सप्तम भाव—कुण्डली सं० १४ में सप्तम भाव मिथुन राशि में कोई भी ग्रह स्थित नहीं है। इसपर लग्न से षष्ठेश और एकादेशश शुक्र की दृष्टि है।

सप्तमेश—सप्तमेश बुध नवमेश सूर्य और राहु के साथ ग्यारहवें भाव में स्थित है। लग्न और सप्तमेश द्विर्द्वादश स्थिति में हैं।

कलत्र कारक—नैसर्गिक कारक शुक्र लग्न में स्थित है और उस पर पंचमेश तथा द्वादशेश मंगल की दृष्टि है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव में सिंह राशि है। और उस पर चन्द्रमा के राशि स्वामी शनि की दृष्टि है जबकि सप्तमेश सूर्य बुध और राहु के साथ नवम भाव में नीच का हैं। सूर्य का नीच भंग हो रहा है क्योंकि सूर्य के उच्च स्थान का स्वामी मंगल ग्न से केन्द्र में स्थित है।

निष्कर्ष जन्म लग्न और चन्द्र दोनों से ही सप्तमेश राहु से पीड़ित है। इसके अतिरिक्त लग्न से सप्तमेश राहु के साथ ग्यारहवें भाव में स्थित है। इससे ऐसा पति मिलेगा जो जातक के साथ विवाह के समय पहले से ही विवाहित हो। सप्तमेश बुध के साथ नवमेश सूर्य के स्थित होने से पति काफी सम्पन्न होगा किन्तु वहाँ पर राहु के स्थित होने से वह अनैतिक होगा। सप्तम भाव पर शुक्र की दृष्टि काफी सहायक नहीं है क्योंकि धनु लग्न के लिए वह मारक है।

कुण्डली सं० १५

जन्म तारीख ८-१२-१९४१ जन्म समय १-२० बजे प्रात: (आई. एस. टी.)
अक्षांश १३° उत्तर, ७७°३५′ पूर्व ।

राशि

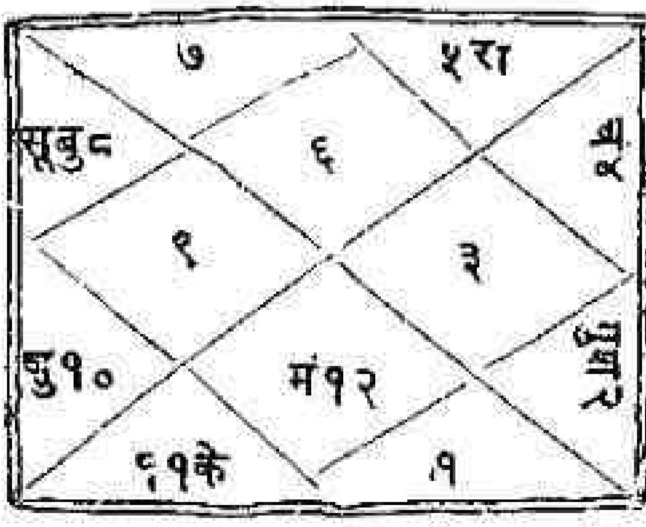

नवांश

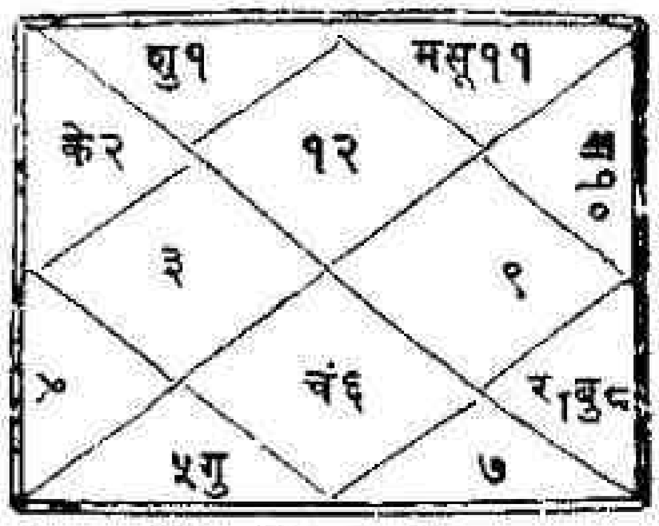

शनि की दशा शेष–१३ वर्ष २ महीने और २२ दिन

सप्तम भाव—कुण्डली सं० १५ में सप्तम भाव मीन में तृतीयेश मंगल स्थित है। इसपर किसी ग्रह की दृष्टि नहीं है।

सप्तमेश—सप्तमेश बृहस्पति पंचमेश और षष्ठेश शनि के साथ नवम भाव में स्थित है। उसपर लग्नेश बुध और द्वादशेश सूर्य की दृष्टि है।

कलत्र कारक—शुक्र पंचम भाव में स्थित है और उसपर एकादशेश चन्द्रमा और सप्तमेश बृहस्पति की दृष्टि है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव में शुक्र स्थित है जो चौथे और ग्यारहवें भाव का स्वामी है, अत: यह कर्क के लिए मारक हो जाता है। सप्तम भाव पर षष्ठेश और नवमेश बृहस्पति की दृष्टि है। सप्तमेश शनि बृहस्पति के साथ ग्यारहवें भाव में स्थित है।

निष्कर्ष—यदि सप्तमेश नवम भाव में स्थित हो तो सम्पन्न पति / पत्नी देता है। पंचमेश और षष्ठेश के रूप में शनि की युक्ति से उसका स्वभाव जटिल और रूढ़िवादी होता है जबकि मारकेश के रूप में मंगल के स्थित होने पर विवाहित जीवन में तनाव और झगड़ा होता है क्योंकि विचारों में मतभेद रहता है। परन्तु शुक्र और बृहस्पति की शुभ स्थिति से विवाहित जीवन में तलाक जैसी भारी घटना नहीं होती।

कुण्डली सं० १६

जन्म तारीख २५-२-१९५३ जन्म समय ६–५४ बजे प्रात: (आई एस टी)
अक्षांश ८°२९' उत्तर, ७६°५९ पूर्व।

राशि

नवांश

शनि की दशा शेष–१८ वर्ष २ महीने।

सप्तम भाव—कुण्डली सं० १६ में सप्तम भाव में सिंह राशि है जिसपर सूर्य और द्वितीयेश तथा एकादशेश बृहस्पति की दृष्टि है। सूर्य वर्गोत्तम में है।

सप्तमेश—सूर्य सप्तमेश होकर केन्द्र में स्थित है। उस पर किसी ग्रह की दृष्टि नहीं है।

कलत्र कारक—शुक्र दूसरे भाव में उच्च और वर्गोत्तम में है। वह तृतीयेश और दसमेश मंगल और पंचमेश तथा अष्टमेश बुध के साथ है। बुध नीच का है परन्तु चन्द्रमा से बृहस्पति केन्द्र में स्थित होने के कारण नीच भंग हो रहा है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव में राहु स्थित है, सप्तमेश शनि उच्च का है परन्तु उसपर योग कारक मंगल की विपरीत दृष्टि है। सप्तमेश शनि पर भी षष्ठेश और नवमेश बृहस्पति की दृष्टि है।

निष्कर्ष—जातक का विवाहित जीवन सामान्यत: सुखी है किन्तु सप्तम भाव में राहु की स्थिति, शनि पर मंगल की दृष्टि और कलत्र कारक शुक्र के साथ युक्ति के कारण पारिवारिक कलह होगा।

कुण्डली सं० १७

जन्म तारीख १३-८-१९४८ जन्म समय ००·०७ बजे प्रात: (आई एस टी)
अक्षांश १३° उत्तर, ७७°३५′ पूर्व।

राशि

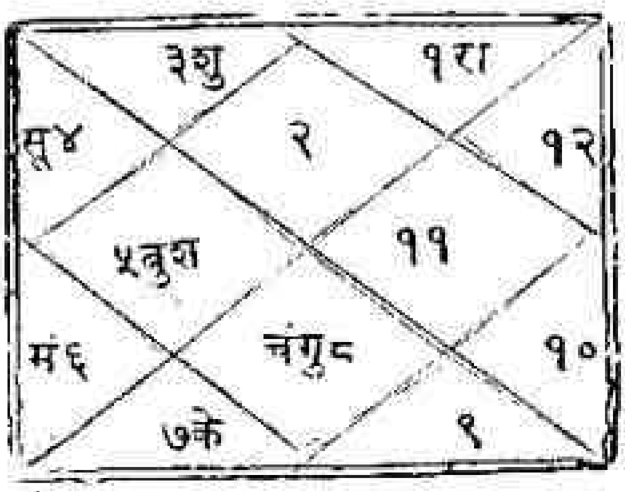

नवांश

बुध की दशा शेष—९ वर्ष ९ महीने ५ दिन

सप्तम भाव—सप्तम भाव में वृश्चिक राशि है। वहाँ पर अष्टमेश और एकादशेश बृहस्पति और नीच का चन्द्रमा स्थित है। चन्द्रमा का नीच भंग नहीं है।

सप्तमेश—सप्तमेश मंगल पंचम भाव में द्विस्वभाव राशि में स्थित है और शनि तथा केतु के बीच घेरे में है। अतः यह पापकर्तरी योग में है।

कलत्र कारक—शुक्र लग्न से दूसरे भाव में द्विस्वभाव राशि में स्थित है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव वृषभ पर नीच के चन्द्रमा और द्वितीयेश तथा पंचमेश की दृष्टि है। सप्तमेश शुक्र अष्टम भाव में द्विस्वभाव राशि में स्थित है।

निष्कर्ष—सप्तमेश और शुक्र, जो कारक और चन्द्रमा से सप्तमेश है, ये दोनों ही द्विस्वभाव राशि में स्थित हैं। अतः जातक की दो पत्नियां होंगी। अष्टमेश और नीच का चन्द्रमा सप्तम भाव में है जिसके फलस्वरूप जातक का नियमित विवाह होने से पूर्व अन्य स्त्री के साथ गुप्त विवाह होगा। सप्तमेश मंगल के पापकर्तरी योग में होने के परिणामस्वरूप विवाहित जीवन में औदार्य नहीं रहेगा जबकि पति के गुप्त विवाह के बारे में जानने के बाद पत्नी उसे छोड़कर चली जाएगी।

कुण्डली सं० १८

जन्म तारीख २-४-१९४७ जन्म ७–०२ बजे प्रातः (आई एस टी)
अक्षांश २६°१३′ उत्तर, ७८°०४′ पूर्व।

राशि

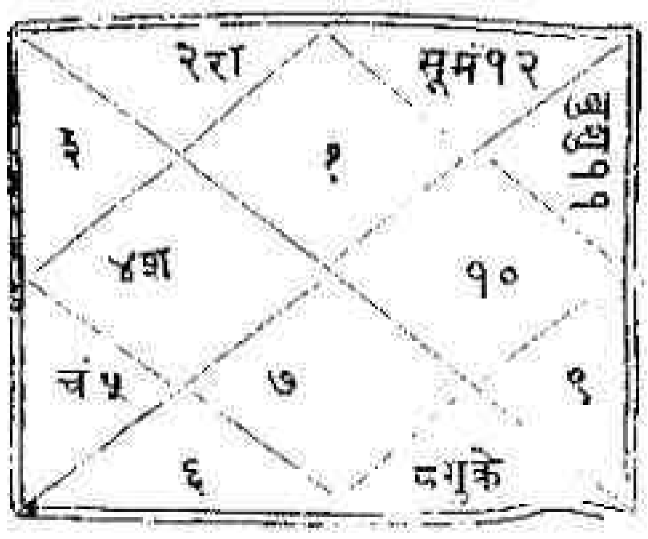

नवांश

केतु की दशा शेष–४ वर्ष ९ महीने ७ दिन

सप्तम भाव—कुण्डली सं० १८ में सप्तम भाव तुला में कोई भी ग्रह स्थित नहीं है किन्तु उसपर बारहवें भाव से मंगल की विपरीत दृष्टि है।

सप्तमेश—लग्न से सप्तमेश शुक्र तृतीयेश और षष्ठेश बुध के साथ ग्यारहवें भाव में स्थित है। उसपर चतुर्थेश चन्द्र की दृष्टि है।

कलत्र कारक—शुक्र तृतीयेश और षष्ठेश बुध के साथ एकादश भाव में स्थित है तथा उसपर चन्द्रमा की दृष्टि है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव में द्वितीयेश और एकादशेश बुध तथा तृतीयेश और दसमेश शुक्र स्थित है।

निष्कर्ष—लग्न और चन्द्रमा दोनों से सप्तमेश और एकादशेश के बीच संबन्ध के परिणामस्वरूप द्विकलत्र योग बनता है। जातक की दो जीवित पत्नियाँ हैं।

कुण्डली सं० १९

जन्म तारीख १९-३-१९३८ जन्म समय ९-२० बजे संध्या (आई एस टी)
अक्षांश १२°१८′ उत्तर, ७६°४२′ पूर्व।

राशि

नवांश

सूर्य की दशा शेष–० वर्ष १ महीने २९ दिन

सप्तम भाव—कुण्डली सं० १९ में सप्तमेश मंगल सप्तम भाव में है।

सप्तमेश—मंगल सप्तमेश है और वह सप्तम भाव में अपनी ही राशि में स्थित है। वह केतु और शनि के कारण पापकर्तरी योग में भी है।

कलत्र कारक—योग कारक शनि, एकादशेश सूर्य और नवमेश तथा द्वादशेश बुध के साथ शुक्र छठे भाव में द्विस्वभाव राशि में उच्च का है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव में शनि शुक्र, बुध और सूर्य क्रमशः पंचमेश और षष्ठेश, द्वितीयेश और नवमेश, लग्नेश और दशमेश तथा द्वादशेश द्विस्वभाव राशि में स्थित हैं। सप्तमेश बृहस्पति पाँचवें भाव में नीच भंग में स्थित है।

निष्कर्ष—चन्द्रमा से सप्तम भाव द्विस्वभाव राशि में चार ग्रहों की स्थिति, कारक शुक्र भी सातवें भाव में हैं और चन्द्रमा के एकादश और सप्तम भाव के बीच सम्बन्ध से जातक के दो विवाह होंगे। दूसरा विवाह पहले पति की मृत्यु के बाद होगा।

कुण्डली सं० २०

जन्म तारीख ७-४-१८९३ जन्म समय ९–३१ बजे प्रातः (स्था. स.)
अक्षांश १०°५६′ उत्तर, ७५°५५′ पूर्व।

राशि

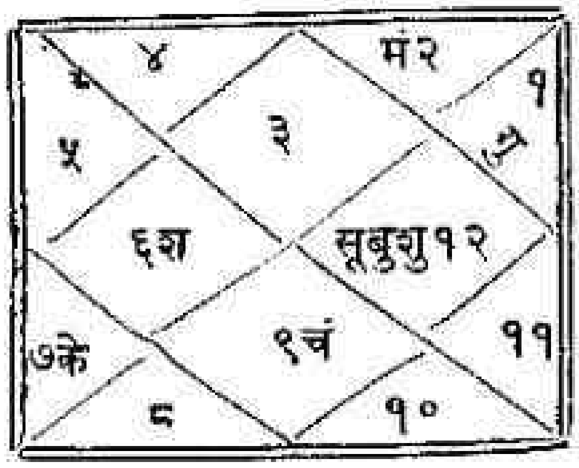

नवांश

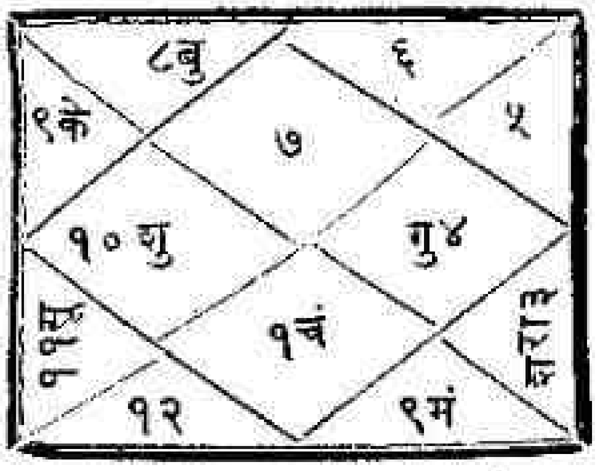

केतु की दशा शेष—६ वर्ष ४ महीने ४ दिन

सप्तम भाव—कुण्डली सं२० में द्वितीयेश चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित है और सप्तमेश बृहस्पति तथा षष्ठेश और एकादशेश मंगल की दृष्टि है।

सप्तमेश—सप्तमेश बृहस्पति राहु के साथ ग्यारहवें भाव में स्थित है।

कलत्र कारक—कारक शुक्र दसम भाव में उच्च का है और तृतीयेश सूर्य तथा लग्नेश एवं चतुर्थेश बुध के साथ युक्त है और उसपर अष्टमेश शनि की दृष्टि है किन्तु शुक्र द्विस्वभाव राशि में है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव मिथुन द्विस्वभाव राशि है उस पर अष्टमेश चन्द्रमा और द्वितीयेश तथा तृतीयेश शनि की दृष्टि है। सप्तमेश बुध षष्ठेश और एकादशेश शुक्र तथा नवमेश सूर्य के साथ द्विस्वभाव राशि में स्थित है।

निष्कर्ष—सप्तम भाव में चन्द्रमा स्थित है और उसपर मंगल की दृष्टि है, शुक्र द्विस्वभाव राशि में दो ग्रहों से युक्त है तथा उसपर शनि की दृष्टि है। यह अफवाह थी कि जातक जी पाँच पत्नियाँ हैं। वास्तव में उसकी दो पत्नियाँ थीं, इसमें सन्देह नहीं है।

पति या पत्नी की मृत्यु

विवाह का समय निर्धारित करने के अनुरूप ही विवाहित जीवन की अवधि पर विचार करने में हमें चालू महादशा और अन्तर्दशा पर विचार करना चाहिये, प्रचलित दशा और भुक्ति का निर्धारण आवश्यक है। यद्यपि इसके लिए सप्तम भाव है, हमें अष्टम और नवम भावों पर भी विचार करना चाहिये। अष्टम भाव 'मंगल' भाव होता है या इससे वैवाहिक बाधक के बल का निर्धारण किया जाता है। नवम भाव सौभाग्य या उत्तम भाग्य का कारक होता है। उत्तम भाग्य में न केवल वैवाहिक अभिवहन शामिल होता है बल्कि दीर्घजीवी जीवन साथी भी शामिल होता है।

कुण्डली संख्या २१

जन्म तारीख ७–१–१९५४ जन्म समय १०:० बजे रात्रि (आई एस टी)

अक्षांश १२° १८′ उत्तर, ७६° ४२′ पूर्व ।

राशि

नवांश

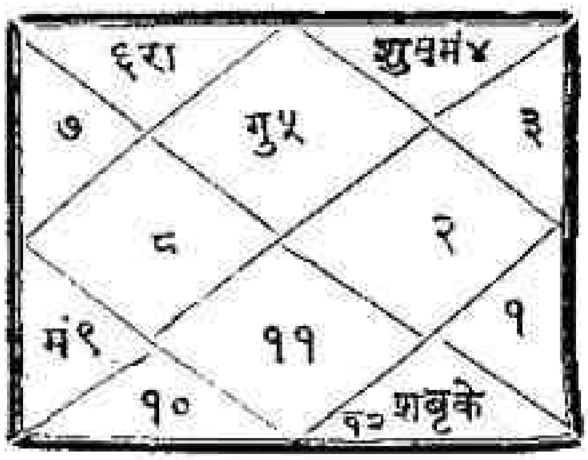

चन्द्रमा की दशा शेष–१ वर्ष ९ महीने १३ दिन

सप्तम भाव—कुण्डली सं० २१ में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि है। वहां लग्नेश और षष्ठेश शुक्र स्थित है। यह उच्च के शनि तथा मंगल और राहु के घेरे में है। इस पर अष्टमेश और एकादशेश उच्च के बृहस्पति की दृष्टि है।

सप्तमेश—सप्तमेश मंगल राहु के साथ अष्टम भाव में स्थित है और उस पर उच्च के योग कारक शनि की दृष्टि है।

कलत्र कारक—शुक्र सप्तम भाव में है। वह एक ओर से मंगल और राहु तथा दूसरी ओर से शनि के कारण मारक योग में है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव में कर्क राशि है। वहां पर तृतीयेश तथा चतुर्थेश उच्च के बृहस्पति और जहाँ चन्द्रमा स्थित है वहाँ के स्वामी उच्च के शनि की दृष्टि है। चन्द्रमा से सप्तमेश चन्द्रमा पर उच्च के बृहस्पति की दृष्टि है।

निष्कर्ष—सप्तमेश मंगल की अष्टम भाव में स्थिति और इस पर शनि की दृष्टि तथा राहु की युक्ति से मंगल और राहु की दशा के दौरान पति की मृत्यु या वैधव्य का संकेत मिलता है। जातक का विवाह अगस्त १९७६ में हुआ। शादी से ठीक १० महीने बाद जून १९७७ में उसके पति की दुर्घटना में मृत्यु हो गई। दोनों घटनायें राहु की दशा के अन्तर्गत शुक्र की भुक्ति में हुई। राहु अष्टम भाव में स्थित है और मंगल तथा शनि उस भाव को पीड़ित कर रहा है। शास्त्र में यह सिद्धान्त है कि यदि राहु मंगल और शनि से युक्त होकर सप्तम या अष्टम भाव में स्थित हो तो शीघ्र ही विधवा होने का संकेत मिलता है। शुक्र कलत्र कारक और लग्नेश है किन्तु सप्तम भाव में उसकी स्थिति से वह पाप कर्तरी योग में पड़ जाता है

क्योंकि वह भाव पाप कर्तरी योग में है। अतः प्रभावित शुक्र ने उस लड़की को अपनी भुक्ति में विवाहित जीवन से वंचित कर दिया।

कुण्डली संख्या २२

जन्म तारीख २२-११-१९३९ जन्म समय १०-१० बजे संध्या (आई एम टी) अक्षांश १२°-९′ उत्तर, ७७°-९′ पूर्व।

राशि

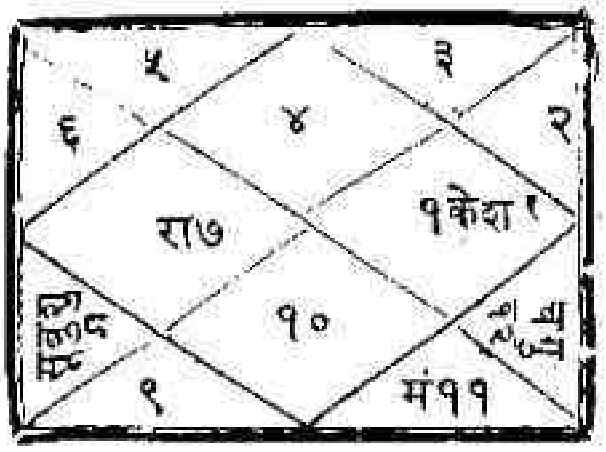

नवांश

बुध की दशा शेष—१४ वर्ष ८ महीने २१ दिन

सप्तम भाव—कुण्डली सं० २२ में सप्तम भाव मकर में कोई भी ग्रह स्थित नहीं है। इसपर सप्तमेश शनि की दृष्टि है जो नीच का है।

सप्तमेश—शनि सप्तमेश है और सप्तम भाव में नीच का है। उसका नीच भंग नहीं हो रहा है किन्तु केतु से पीड़ित है।

कलत्र कारक—कारक शुक्र द्वितीयेश सूर्य और तृतीयेश तथा एकादशेश बुध के साथ पंचम भाव में स्थित है और उसपर षष्ठेश और नवमेश बृहस्पति की नवम भाव से दृष्टि आ रही है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव में कन्या राशि है। उसपर चन्द्रमा जिस राशि में हैं उस राशि के स्वामी बृहस्पति और द्वितीयेश तथा नवमेश मंगल की दृष्टि है। सप्तमेश बुध नवम भाव में तृतीयेश और अष्टमेश शुक्र तथा षष्ठेश सूर्य के साथ युक्त है।

निष्कर्ष—सप्तम भाव पीड़ित है क्योंकि यद्यपि इसपर सप्तमेश की दृष्टि है, एक ऐसे ग्रह की दृष्टि है जो नीच का होने के कारण और केतु की युक्ति के कारण मारक है। अष्टम भाव में मंगल स्थित है जो योगकारक होते हुए भी यहाँ पर सही स्थिति में नहीं है। वह लग्न या चन्द्र लग्न से दूसरे, चौथे, सातवें और बारहवें भाव में विशेष रूप से अनिष्टकारी होता है। सप्तमेश के नीच का होने तथा मंगल का अष्टम भाव में स्थित होने के परिणामस्वरूप पत्नी की मृत्यु होगी। यद्यपि नवम भाव में नवमेश स्थित है, वह मंगल

और शनि के कारण पापकर्तरी योग में हैं। नवमेश बृहस्पति भी उससे पीड़ित है और शुक्र पर उसकी दृष्टि अधिक प्रभावी नहीं है। इसके अतिरिक्त अष्टमेश और दसमेश के बीच राशि परिवर्तन है जिससे सप्तमेश शनि भी इस परिवर्तन से पीड़ित है। १९६८ में विवाह हुआ और १९७० में पत्नी की मृत्यु हो गई। दोनों ही घटनाएँ शुक्र की दशा में राहु की भुक्ति में हुई। शुक्र कलत्रकारक है और तृतीयेश तथा द्वादशेश बुध के साथ युक्त हैं। राहु अपने पूरक केतु द्वारा सप्तमेश को पीड़ित करता है।

कुण्डली सं० २३

जन्म तारीख १६-३-१९३७　　　　जन्म समय ६.४५ बजे संध्या (आइ एस टी)
अक्षांश २८°५१′ उत्तर, ७८°४९′ पूर्व।

राशि

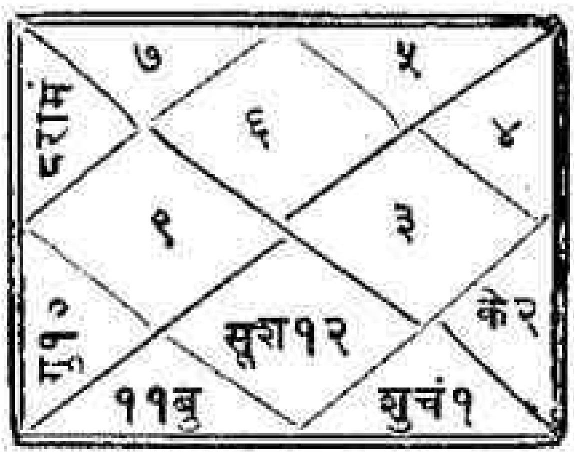

नवांश

शुक्र की दशा शेष—२ महीने ३ दिन

सप्तम भाव—कुण्डली सं० २३ में सप्तम भाव में मीन राशि है। वहाँ पर पंचमेश और षष्ठेश शनि तथा द्वादशेश सूर्य स्थित हैं। दोनों ही मारक हैं। यह एक ओर बुध तथा दूसरी ओर शुक्र तथा चन्द्रमा के कारण शुभ कर्तरी योग में है।

सप्तमेश—सप्तमेश बृहस्पति पंचम भाव में नीच का है। उसका नीच भंग हो रहा है। क्योंकि उस राशि का स्वामी लग्न से केन्द्र में स्थित है। वह नवांश में भी उसी राशि में वर्गोत्तम में है और पंचमेश शनि के साथ राशि परिवर्तन योग में है।

कलत्र कारक—शुक्र एकादशेश चन्द्रमा के साथ अष्टम भाव में स्थित है और एक तरफ मारक सूर्य और शनि तथा दूसरी ओर केतु के बीच घेरे में है।

चन्द्रमा के विचार—सप्तम भाव पर राशि स्वामी शुक्र की दृष्टि है। अष्टम भाव में दो अशुभ ग्रह राहु और मंगल स्थित हैं और उसपर कोई शुभ प्रभाव नहीं है।

निष्कर्ष—यद्यपि सप्तमेश बृहस्पति बली है, पंचमेश शनि के साथ उसका राशि परिवर्तन वांछनीय नहीं है क्योंकि इससे शादी नहीं हो सकती है या सन्तान नहीं हो सकती है। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा से अष्टम भाव काफी पीड़ित है जिससे वैधव्य योग बनता है। जातक की शादी राहु की दशा में केतु की भुक्ति में हुई और उसी भुक्ति में ठीक एक साल बाद विधवा हो गई। सप्तमेश के बली होने से अच्छा पति मिला और शादी से इनकार नहीं किया। किन्तु सप्तम भाव और सप्तमेश, शुक्र और लग्न और चन्द्रमा से अष्टमेश पर अनेक बुरे प्रभावों तथा बुरे प्रभाव वाले ग्रह राहु की चालू दशा के परिणामस्वरूप पति की मृत्यु हो गई। उत्तम भाग्य के स्वामी के क्रम में नवमेश शुक्र नवम भाव से १२ वें भाव (हानि भाव) में है।

कुण्डली सं० २४

जन्म तारीख २-११-१७५५ (एन एस) समय लगभग ८–४ बजे संध्या
देशा० अक्षांश ४६°३०' उत्तर, देशा४ ३३° पूर्व ।

राशि

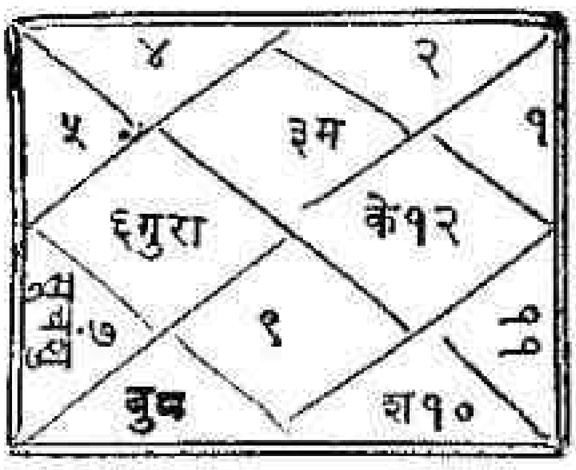

नवांश

मंगल की दशा शेष–२ वर्ष ५ महीने ९ दिन

सप्तम भाव—कुण्डली सं० २४ में सप्तम भाव में धनु राशि है उसपर षष्ठेश और एकादशेश मंगल की दृष्टि है। मंगल वर्गोत्तम में है क्योंकि वह नवांश में उसी राशि में है।

सप्तमेश—सप्तमेश बृहस्पति राहु के साथ चौथे भाव में स्थित है। उसपर षष्ठेश और एकादशेश मंगल की दृष्टि है।

कलत्र कारक—शुक्र अपनी ही राशि में है किन्तु वह वर्गोत्तम द्वितीयेश चन्द्रमा और तृतीयेश सूर्य के साथ है। उस पर अष्टमेश तथा शनि की दृष्टि है। इसके अतिरिक्त वह सूर्य के बहुत करीब है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तमेश मंगल नवम भाव में द्विस्वभाव राशि में वर्गोत्तम में है। सप्तम भाव पर कलत्र कारक, दसमेश चन्द्रमा और एकादशेश शुक्र की दृष्टि है।

निष्कर्ष—यदि सप्तमेश राहु और मंगल से पीड़ित हो तो घृणित पति मिलता है जो दुष्ट और जिद्दी होता है। अष्टमेश शनि अष्टम भाव में मंगल तथा सप्तमेश बृहस्पति से पीड़ित है। नवमेश शनि नवम भाव से १२ वें भाव (हानि भाव) में स्थित है। जिससे शनि की दशा और शनि की भुक्ति में जातक विधवा हो गई। शनि सप्तम भाव धनु से द्वितीयेश है और दूसरे भाव में ही स्थित है। अतः वह पति के लिए मारक है।

कुण्डली सं० २५

जन्म तारीख १-२-१९५३ जन्म समय २–४३ बजे प्रातः (आई एस टी)
देशा० १२°१८′ उत्तर, ७६°४२′ पूर्व।

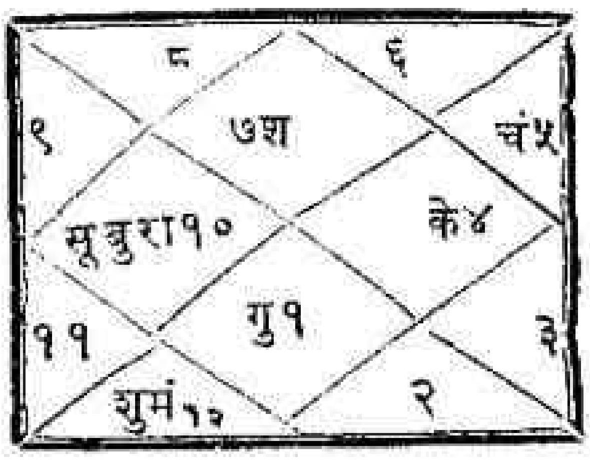

शुक्र की दशा शेष–४ वर्ष २ महीने १८ दिन

सप्तम भाव—कुण्डली सं० २५ में सप्तम भाव मेष राशि में षष्ठेश बृहस्पति स्थित है और उसपर उच्च के योगकारक शनि की दृष्टि है।

सप्तमेश—सप्तमेश मंगल छठे भाव में स्थित है और षष्ठेश बृहस्पति के साथ राशि परिवर्तन में है। लग्नेश शुक्र के साथ मंगल की युक्ति है।

कलत्र कारक—शुक्र छठे भाव में उच्च का है और सप्तमेश मंगल के साथ युक्त है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव कुम्भ एक ओर अशुभ ग्रह सूर्य और राहु तथा दूसरी ओर मंगल के घेरे में है। सप्तमेश शनि तीसरे भाव में उच्च का है और उस पर पंचमेश तथा अष्टमेश बृहस्पति की दृष्टि है।

निष्कर्ष—जातक के पति की मंगल की दशा में शुक्र की भुक्ति में मृत्यु हो गई। दशा नाथ और भुक्ति नाथ दोनों ही सप्तम भाव से हानि भाव में स्थित हैं। चन्द्रमा से अष्टम भाव में मंगल स्थित है। नवमेश मंगल नवम भाव से १२ वें भाव में है तथा अष्टमेश बृहस्पति के साथ राशि परिवर्तन में है। इससे मांगल्य स्थान कमजोर हो जाता है। स्वयं लग्न से कारक और सप्तमेश दोनों ही छठे भाव में

स्थित हैं जो सप्तम भाव से बारहवां भाव है। इसके अतिरिक्त लग्न से षष्ठेश और सप्तमेश अर्थात बृहस्पति और मंगल के बीच राशि परिवर्तन से सप्तम भाव कमजोर हो जाता है।

विवाह में मंगल और शुक्र की भूमिका

एक भारतीय विद्वान ने भारत में विवाह में स्थिरता और सौहार्द देखकर विवाहित जोड़ों का व्यक्ति–वृत्त एकत्र करना आरम्भ किया। उसने अध्ययन के लिए ६०३ मामले एकत्र किये। उसने ३०–४० वर्ष आयु वर्ग को चुना। सभी सम्बोधित व्यक्तियों का जन्म १९३१–४० के बीच हुआ था और १९५५–६० के बीच उनका विवाह हुआ था। उनकी आर्थिक पृष्ठभूमि अधिकांशतः ग्रामीण और कृषि थी। यद्यपि सम्बन्धित व्यक्ति-वृत्त में से २२ प्रतिशत ऐसे थे जो वाणिज्य और औद्योगिक पेशा से जीविका चलाते थे। अधिकतर मामलों में जानकारी देने वाले पुरुष थे। यह पाया गया कि तलाक और पृथक्करण लगभग ६ प्रतिशत था और पति या पत्नी की मृत्यु के मामले १० प्रतिशत थे। उस विद्वान का निष्कर्ष यह था कि ४७ प्रतिशत सकारात्मक और ४२ % नकारात्मक तथा ११% तटस्थ थे। सकारात्मक से उसका मतलब है काफी सफल विवाह। तटस्थ से उसका मतलब है कि घरेलू जीवन में सौहार्द का अंश उचित है। और नकारात्मक से उसका मतलब पारिवारिक जीवन में सौहार्द का अभाव है। उसका निष्कर्ष यह था कि इन आंकड़ों से वैवाहिक समाधान में ज्योतिष की प्रभावोत्पादकता सिद्ध होती है। शादी के लिए कुण्डली के मिलन की प्रणाली में जिसका विवाह निश्चित करने से पूर्व माता पिता द्वारा सहारा लिया जाता है, विवाह की स्थिरता और सौहार्द कुछ सीमा तक सुनिश्चित हो जाती है।

हमारे अनुभव के अनुसार ज्योतिष सम्बन्धी अन्य विचारों के अतिरिक्त मंगल और शुक्र की परस्पर स्थिति का सावधानी पूर्वक अध्ययन करना चाहिये। यह एक संयोग नहीं हो सकता है कि जब शुक्र और मंगल की युक्ति हो विशेषकर यदि अन्तर्ग्रस्त नक्षत्र का स्वामी अनिष्ट ग्रह हो, तो तलाक, पृथक्करण और भावावेश के अपराध में वृद्धि होती है। जब शुक्र और मंगल की युक्ति हो और बच्चे पैदा हों तो उनका पालन पोषण अनुशासित ढंग से करना चाहिए और उन्हें यह सिखाना चाहिये कि क्षणिक आनन्द वाले भोग विलास की आदतों से दूर रहें। यदि इस योग पर बृहस्पति की दृष्टि हो या वहां से बृहस्पति केन्द्र में स्थित हो तो इस योग के विपरीत प्रभाव ठोस चैनलों के माध्यम से स्वयं ही प्रकट होने चाहिये।

शुक्र जीवन के अनेक सम्मोहक पहलुओं से युक्त होता है। वह पत्नी, सवारी,

लैंगिक सौहार्द्र और सम्मिलन, कला, अनुरक्ति, पारिवारिक सुख, साधारण विवाह, जीवन शक्ति, उपजाऊपन, शारीरिक सुन्दरता और मित्रता का कारक होता है। मंगल में ऊर्जा, आक्रमकता, शक्ति, अनुमेय बल और शुक्र के साथ युक्ति से विषय सम्बन्धी तोष की प्रचुरता होती है। अतः यह आवश्यक है कि पति-पत्नी की कुण्डली में मंगल शुक्र की युक्ति या विपरीत स्थिति पर बृहस्पति की अनुकूल स्थिति का शुभ प्रभाव होना चाहिये अथवा विकल्पतः बृहस्पति या बुध या शुक्र के नक्षत्रों में युक्ति, या विरोध में बृहस्पति और बुध अधिक अनुकूल होते हैं। शुक्र-मंगल की स्थिति शारीरिक सुन्दरता के लिये एक महत्त्वपूर्ण तथ्य है। किन्तु बृहस्पति या शनि के सौम्य प्रभाव के अभाव में वास्तविक सुसंगति में अभाव हो सकता है। शुक्र-मंगल की युक्ति से जातक आमोद का शौकीन होता है, प्रदर्शन करने वाला होता है और जातक के विषय सम्बन्धी जीवन में उत्साह देता है। जब शुक्र और मंगल विपरीत दृष्टि दे रहे हों तो अधिक विषय से कठिनाई और विवाह के माध्यम से कष्ट होता है। यदि शुक्र उत्तम राशि या नक्षत्र में हो तो मंगल का रूखापन कम हो जाता है किन्तु उसमें राहु भी अन्तर्गत हो तो वह जातक को कामुक, व्यभिचारी और दुष्ट बना देता है। यदि अन्तर्गत नक्षत्र बृहस्पति या बुध या शुभ चन्द्रमा का न हो यद्यपि अन्तिम स्थिति में जातक का विचार अत्यधिक कामुक होता है भले ही कुण्डली लड़के की हो या लड़की की हो तो केतु-शुक्र-मंगल की युक्ति (या परस्पर दृष्टि परिवर्तन भी) वांछित नहीं है। केतु-शुक्र-मंगल (या शनि) से विवाह में अफवाह के खतरे का संकेत मिलता है। किन्तु यदि दसम भाव या कर्म भाव उत्तम स्थिति में हो तो बुरे प्रभाव कुछ सीमा तक कम हो जाते हैं।

एक व्यक्ति का उदाहरण देते हैं जिसकी कुण्डली में वृषभ राशि में शुक्र और मंगल की युक्ति है, लग्न वृश्चिक है। कारको भावनाशकः के सिद्धान्त पर प्राचीन लेखकों द्वारा कलत्र कारक शुक्र की सप्तम भाव में स्थिति को सामान्यतः अनुकूल नहीं माना गया है क्योंकि सप्तम भाव के संकेतों को निषेधित कहा जाता है। तथापि अनुभव से यह पता लगा है कि यह सिद्धान्त अधिक मान्य नहीं है। वास्तव में उचित रूप से सुखी विवाह के लिए सप्तम भाव में शुक्र का होना एक उत्तम योग है जिसमें पति पत्नी के बीच स्नेह का संकेत मिलता है। उपरोक्त मामले में शुक्र सूर्य के नक्षत्र कृत्तिका में है और मंगल मृगसिरा में है अतः सप्तम भाव को पर्याप्त बल प्राप्त है और विवाहित जीवन सुखी होगा, यद्यपि यदा कदा टकराव होगा। यदि इस प्रकार के जातक का विवाह ऐसे के साथ होता है जिसका लग्न वृषभ है और वृश्चिक में शुक्र और मंगल स्थित हो तो दोनों ही एक दूसरे की वासना को शान्त करने का प्रयास करेंगे और विषय सम्बन्धी आनन्द में तब तक रत रहेंगे जबतक उनका

स्वास्थ्य बिगड़ न जाए। वृषभ राशि में शुक्र उत्तम होता है किन्तु अग्नि प्रकृति वाले नक्षत्र (कृत्तिका) में होने के कारण जातक जिद्दी होता है । दूसरी ओर रोहिणी नक्षत्र में शुक्र का उत्तम गुण प्रदर्शित होता है। लग्न या चन्द्रमा से मंगल का त्रिकोण या केन्द्र में होना हमेशा बेहतर होता है। यदि वे युक्त हों तो भी कोई बात नहीं है बशर्ते कि दोनों अलग अलग नक्षत्र में हों। पति/पत्नी की कुण्डली में इसी प्रकार की स्थिति वांछित है यद्यपि यह आवश्यक नहीं है।

विवाह के लिए चुनाव में कुण्डली मिलान की अपेक्षा कुण्डली की मूल संरचना अधिक महत्त्वपूर्ण है। एक व्यक्ति में बाहरी आकर्षण हो सकता है किन्तु वह पत्थर हृदय वाला काफी स्वार्थी हो सकता है और स्व अतिकथन पसन्द करता हो। सामान्यत: जिस व्यक्ति की कुण्डली में लग्न में सूर्य मंगल और बुध की युति हो वह व्यक्ति उपरोक्त के अनुसार होता है यदि कोई और विशेषता न हो अर्थात् बृहस्पति की दृष्टि। हमारे पास अनेक कुण्डलियाँ हैं जिनमें चन्द्रमा मंगल के नक्षत्र में स्थित है और चन्द्रमा से १२ वें भाव में सूर्य और शनि स्थित है। उनमें से अनेक ने यह पुष्टि की है कि उनका जीवन सुखी नहीं है। जब सप्तमेश छठे भाव में हो और शुक्र राहु के नक्षत्र में हो तो जातक उत्साहहीन होता है यद्यपि वह आकर्षक होता है। कुण्डली की संरचना निर्धारित करने की आवश्यकता पर कभी जोर नहीं दिया जा सकता है।

विवाह के प्रयोजन के लिए कुण्डलियों के मिलान की पद्धति पर मेरी पुस्तक 'मुहूर्त या चुनाव ज्योतिष' में चर्चा की गई है।

कुण्डली सं० २६

जन्म तारीख १०-१०-१८७१ समय २ बजे संध्या (स्था० स०)

देशा० ५१°२७′ उत्तर, २°३५′ पश्चिम

राहु की दशा शेष–१३ वर्ष ४ महीने १३ दिन

सप्तम भाव—कुण्डली सं० २६ में सप्तम भाव में द्विस्वभाव राशि मिथुन है। यहाँ पर राहु स्थित है तथा उसपर पंचमेश और द्वादशेश मंगल तथा तथा शनि की विपरीत दृष्टि है।

सप्तमेश—सप्तमेश बुध द्विस्वभाव राशि में दसम भाव में उच्च का है और नवमेश सूर्य तथा षष्ठेश और एकादशेश नीच के शुक्र के साथ युक्त है। ग्रहों का यह योग शनि की दृष्टि से पीड़ित है।

कलत्र कारक—शुक्र दसम भाव में नीच का है और द्विस्वभाव राशि में सूर्य तथा बुध से युक्त है और उसपर शनि की दृष्टि है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव पर सप्तमेश शनि और योगकारक मंगल की दृष्टि है। सप्तमेश शनि द्विस्वभाव राशि में केतु के साथ स्थित है।

निष्कर्ष—दसम भाव में द्वितीयेश, दसमेश और सप्तमेश स्थित होने पर जार योग बनता है। जिसके परिणाम स्वरूप जातक अनेक स्त्रियों के साथ विवाहेतर सम्बन्ध रखता है। जातक लैंगिक अनुभवों के लिए बहुत भूखा था और वह अपने आप को विवाह के बंधन तक सीमित कभी नहीं रख सका। सप्तमेश बुध दसम भाव में शुक्र और सूर्य से युक्त है और शनि से दृष्ट है, ये सभी द्विस्वभाव राशि में हैं और सप्तम भाव में राहु स्थित है। इससे जातक की पत्नी समाज में यारी दोस्ती करने लगी और सभी तरह के लोगों के साथ उसका प्रणय सम्बन्ध चलने लगा। पति पत्नी के बीच यह समझौता हुआ कि जहाँ तक उनके निजी जीवन का सम्बन्ध है, उनके खुद के अपने-अपने रास्ते होंगे।

कुण्डली सं० २७

जन्म तारीख ६-४-१८८६ जन्म समय लगभग ६–३० बजे संध्या
देशा० १७°३०′ उत्तर, ७८°३०′ पूर्व।

राशि

नवांश

शुक्र की दशा शेष–११ वर्ष ९ महीने ९ दिन

सप्तम भाव—कुण्डली सं० २७ में सप्तम भाव में मेष राशि है और वहां पर दसमेश चन्द्रमा तथा नवमेश बुध स्थित है। सप्तम भाव पर कोई दृष्टि नहीं है।

सप्तमेश—सप्तमेश मंगल ग्यारहवें भाव में राहु से युक्त है और उसपर शनि तथा शुक्र की दृष्टि है।

कलत्र कारक—शुक्र पंचम भाव में केतु के साथ स्थित है तथा उसपर मंगल की दृष्टि है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव पर तृतीयेश और षष्ठेश बुध तथा चतुर्थेश चन्द्रमा की दृष्टि है। सप्तमेश शुक्र ११ वें भाव में केतु से युक्त और मंगल से दृष्ट है।

निष्कर्ष—सप्तमेश मंगल ११ वें भाव में राहु से युक्त है और दोनों ही शुक्र के नक्षत्र में हैं और मृगशिरा नक्षत्र में शनि से दृष्ट हैं। दूसरी ओर कलत्र कारक शुक्र राहु के नक्षत्र में स्थित होकर केतु की युक्ति से पीड़ित है और उस पर मंगल की दृष्टि है। सप्तमेश और शुक्र दोनों ही काफी पीड़ित हैं। जातक अपनी पत्नी को नहीं चाहता था और चरित्रहीन था। बुरे रास्ते से अपने पति को हटाने के लिए उसकी पत्नी के सभी प्रयास विफल रहे। विरक्त होकर महिला अपने माता पिता के घर चली गई। जातक के अति कामुक जीवन के फलस्वरूप उसे भयानक गुप्त रोग लग गया।

कुछ सामान्य टिप्पणियां

जब एक कुण्डली में शुक्र, मंगल और बृहस्पति दूसरी कुण्डली में त्रिकोण या ३ और ११ में स्थित हों अर्थात यदि लड़के की कुण्डली में शुक्र वृष राशि में स्थित हो और लड़की की कुण्डली में कन्या या कर्क में हो तो यह अनुकूल स्थिति होती है। यदि सूर्य और चन्द्रमा २ या १२ (द्विर्द्वादश) के अतिरिक्त इसी प्रकार की अनुकूल स्थिति में हों तो साधारणत: काफी अनुरक्ति रहती है। पुन: यदि पति का सूर्य कर्क में हो और पत्नी का सूर्य कन्या में हो तो आवश्यक सामंजस्य रहता है। यदि सूर्य और चन्द्रमा उपरोक्त स्थिति में हों किन्तु एक कुण्डली में मंगल ऐसी राशि में स्थित हो तो दूसरी कुण्डली में शुक्र से बारहवां भाव हो तो आपस में प्रेम रहता है। किन्तु उनके निजी जीवन में साधारण सुख नहीं रह सकता है। यदि एक कुण्डली में शुक्र ऐसी राशि में हो जहाँ पर दूसरी कुण्डली में शनि स्थित हो तो एक मिहनती और गम्भीर जीवन साथी का संकेत मिलता है। सप्तम भाव में बिना किसी शुभ दृष्टि के मंगल स्थित होने पर यदा कदा झगड़े का संकेत मिलता है जिससे आपस में मतभेद होता है। मंगल से दृष्ट अष्टम भाव में शनि परस्पर

समझौते के लिए लाभ प्रद नहीं है। सप्तम भाव में शनि रहने पर विवाह में स्थिरता आती है किन्तु पति या पत्नी में शान्ति प्रदर्शित होती है न कि सहृदयता। यदि कोई शुभ दृष्टि हो तो चौथे भाव में बली अशुभ ग्रह विवाहित जीवन को प्रभावित करता है। यदि पत्नी (या पति) की जन्म राशि पति (या पत्नी) की कुण्डली में लग्न में हो अथवा यदि पत्नी (या पति) की लग्न राशि दूसरी कुण्डली में जहाँ सप्तमेश स्थित है वहाँ से सप्तम भाव में हो तो विवाहित जीवन स्थिर होता है और आपस में मतैक्य और प्यार रहता है।

यदि एक कुण्डली में कुछ बुरे प्रभाव हों तो यह कहा जाता है कि ऐसे जीवन साथी की खोज करने पर वे प्रभाव दूर हो सकते हैं जिसकी जन्म कुण्डली में उसी प्रकार के बुरे प्रभाव हों।

ज्योतिष का एक सिद्धान्त जिसे गलत समझा जाता है और गलत ढंग से लागू किया जाता है, मंगल के बुरे प्रभाव (कुज दोष) से सम्बन्धित है।

यदि स्त्री की कुण्डली में मंगल २,१२,४,७, ८ भाव (लग्न, चन्द्रमा या शुक्र से) में हो तो पति की मृत्यु हो जाती है। पति की कुण्डली में मंगल की ऐसी ही स्थिति हो तो पत्नी की मृत्यु हो जाती है। यह ध्यान देना चाहिये कि २, १२, ४, ७ और ८ वें भाव में दोष का बल आरोही होता है। दोष की प्रमात्रा का निर्धारण करने में भाव पर अवश्य विचार करना चाहिये न कि राशि पर। यह कहा जाता है कि निम्नलिखित परिस्थितियों में मंगल का दोष समाप्त हो जाता है या कम हो जाता है।

दूसरे भाव में मंगल खराब होता है यदि दूसरे भाव में मिथुन और कन्या के अतिरिक्त कोई अन्य राशि हो। १२ वें भाव में मंगल के कारण वृषभ और तुला को छोड़कर अन्य सभी राशियों में दोष लगता है। चौथे भाव में मंगल के कारण मेष और वृश्चिक राशि को छोड़ कर अन्य सभी राशियों में दोष लगता है, जब सप्तम भाव में मकर और कर्क को छोड़कर कोई अन्य राशि हो तो यह दोष लगता है। धनु और मीन को छोड़कर अष्टम का मंगल सभी राशियों में बुरा प्रभाव देता है। जब मंगल सिंह या कुम्भ राशि में हो तो उसका कोई दोष नहीं लगता। मंगल और बृहस्पति या मंगल और चन्द्रमा की युक्ति से दोष समाप्त हो जाता है।

मंगल दोष अचर नहीं है। इसकी तीव्रता में ऊपर दिये गये अपवादों के अनुसार और अन्तर्ग्रस्त राशि अर्थात् मित्र, उच्च, स्वराशि, शत्रु राशि आदि, के अनुसार अन्तर हो सकता है। अतः हम बुरे प्रभाव को निम्न प्रकार से निर्धारित कर सकते

हैं–इसमें हम मंगल को सबसे खराब मारक, शनि राहु और केतु को कम मारक और सूर्य को सबसे कम मारक मान लेते हैं, नीच स्थिति में मारक प्रवृत्ति सबसे अधिक और उच्च स्थिति में सबसे कम होती है।

	अष्टम और सप्तम			चतुर्थ, द्वादश और द्वितीय		
	मंगल	शनि राहु केतु	सूर्य	मंगल	शनि राहु केतु	सूर्य
नीच राशि	१००	७५	५०	५०	३७·५०	२५
शत्रु राशि	९०	६७·५०	४५	४५	३३·७५	२२·५०
तटस्थ	८०	६०·	४०	४०	३०·	२०
मित्र राशि	७०	५२·५०	३५	३५	२६·२५	१७·५०
स्वराशि	६०	४५	३०	३०	२२·५०	१५·
उच्च राशि	५०	३७·५०	२५	२५	१८·७५	१२·५०

इस सारणी से कुण्डली में कुल दोष के निर्धारण में सहायता मिलती है ताकि यदि दोनों जन्म कुण्डलियों में दोष बराबर है या आस पास है तो उत्तम मिलान कहा जा सकता है। जहां पुरुष की कुण्डली में दोष स्त्री की कुण्डली में विद्यमान दोष से २५ प्रतिशत अधिक हो वहां इसे पारित किया जा सकता है। यदि पुरुष की कुण्डली में दोष इस प्रतिशतता से अधिक हो या यदि स्त्री की कुण्डली में अधिक दोष हो तो कुण्डली का मेल नहीं हो सकता है।

अपारम्परिक विवाह

आजकल की युवक पीढ़ी जो अपनी इच्छा से काम करना चाहती है, अपारम्परिक विवाह की लहर में है। यहां पर अपारम्परिक विवाह शब्द का प्रयोग प्रेम विवाह, अन्तर्जातीय अथवा जिन विवाहों को पारम्परिक क्रम से और सामान्यतः अनुमोदित नहीं किया जाता है, के लिये किया गया है।

कुण्डली सं० २८

जन्म तारीख २३–६–१८९४ जन्म समय–१० बजे संध्या (स्थान. सं०) देशा० अक्षांश ५१° ३० उत्तर, ०° ५′ पश्चिम।

राशि   नवांश

राहु की दशा शेष-९ वर्ष ५ महीने १२ दिन

सप्तम भाव—कुण्डली संख्या २८ में सप्तम भाव कर्क पर किसी ग्रह की दृष्टि नहीं है।

सप्तमेश—सप्तमेश चन्द्रमा किसी दृष्टि या युक्ति द्वारा पीड़ित नहीं है।

कलत्र कारक—शुक्र अपनी ही राशि में तृतीयेश और द्वादशेश बृहस्पति से युक्त होकर स्थित है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव सिंह पर कोई प्रभाव नहीं है किन्तु सप्तमेश सूर्य पंचम भाव में पीड़ित मंगल से दृष्ट है और लग्नेश शनि भी उसी प्रकार पीड़ित है। चन्द्र लग्न से अष्टम भाव मंगल, राहु, केतु और शनि के मिले-जुले प्रभावों से बुरी तरह पीड़ित है।

निष्कर्ष—जातक बृटिश सरकार का ड्यूक था और उसने तलाकशुदा साधारण स्त्री से विवाह किया। इस प्रस्तावित विवाह ने देश में रोष पैदा कर दिया किन्तु जातक ने अपनी पसन्द की स्त्री से शादी की जिसके लिए उसे गद्दी का परित्याग करना पड़ा। वैवाहिक बन्धन का कारक अष्टम भाव नवांश में भी पीड़ित है क्योंकि वहाँ पर राहु स्थित है और उसपर शनि की दृष्टि है।

कुण्डली सं० २९

जन्म तारीख १०-९-१९३८   जन्म समय ९ बजे प्रातः (आई एस टी)
देशा० १३° उत्तर, ७७°२३′ पूर्व।

राशि   नवांश

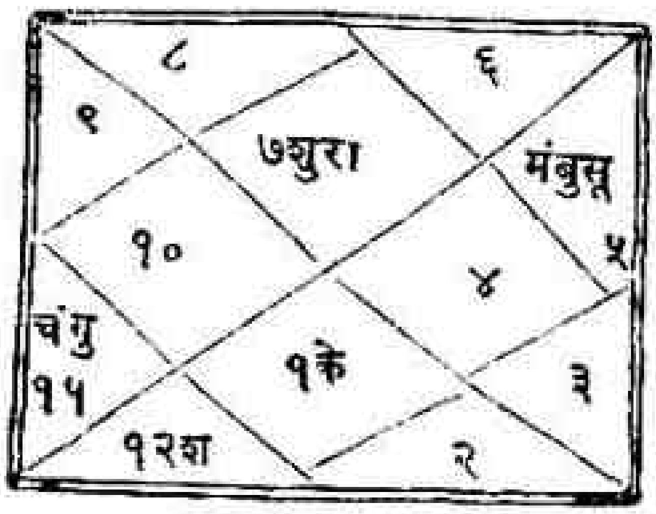
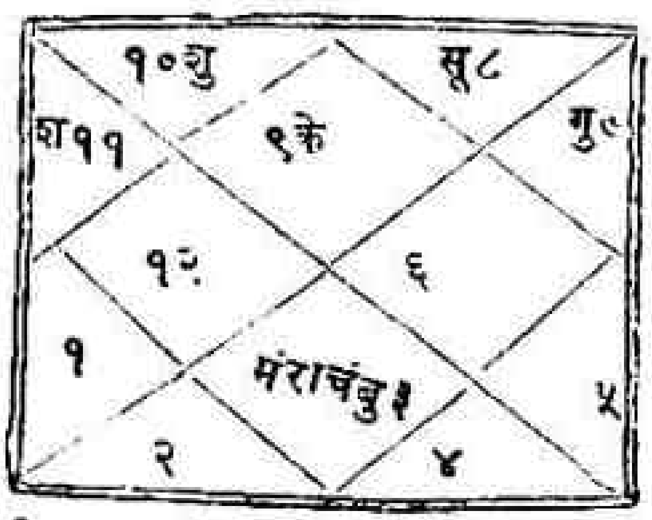

बृहस्पति की दशा शेष—५ वर्ष

सप्तम भाव—कुण्डली सं० २९ में सप्तम भाव में मेष राशि है। इस राशि में केतु स्थित है और उसपर लग्नेश शुक्र और राहु की दृष्टि है।

सप्तमेश—सप्तमेश मंगल एकादश भाव में एकादशेश सूर्य और नवमेश तथा द्वादशेश बुध के साथ युक्त है और उसपर दशमेश चन्द्रमा तथा तृतीयेश और षष्ठेश बृहस्पति की दृष्टि है।

कलत्र कारक—शुक्र अपनी ही राशि में राहु से युक्त और तृतीयेश तथा षष्ठेश बृहस्पति से दृष्ट है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तम भाव में सिंह राशि है और मंगल, बुध और सूर्य स्थित है तथा बृहस्पति से दृष्ट है। अष्टम भाव एक ओर मारक मंगल और सूर्य तथा दूसरी ओर राहु से घिरा हुआ है और साथ ही उसपर शनि की दृष्टि है।

निष्कर्ष—सप्तम भाव में राहु की स्थिति, शुक्र पर राहु का बुरा प्रभाव और चन्द्रमा से अष्टम भाव पर पाप कर्तरी योग के परिणामस्वरूप जातक ने जो एक हिन्दू है, अपने एक सहयोगी, ईसाई से शादी की। सप्तम भाव और नवांश में अष्टमेश चन्द्रमा दोनों ही राहु केतु, बुध और मंगल से बुरी तरह पीड़ित हैं।

कुण्डली सं० ३०

जन्म तारीख २३-१-१८९७ लगभग   समय १२ बजे दोपहर (स्था. स.)
देशा० अक्षांश २०°२८ उत्तर, ५ ४४' पूर्व।

राशि

नवांश

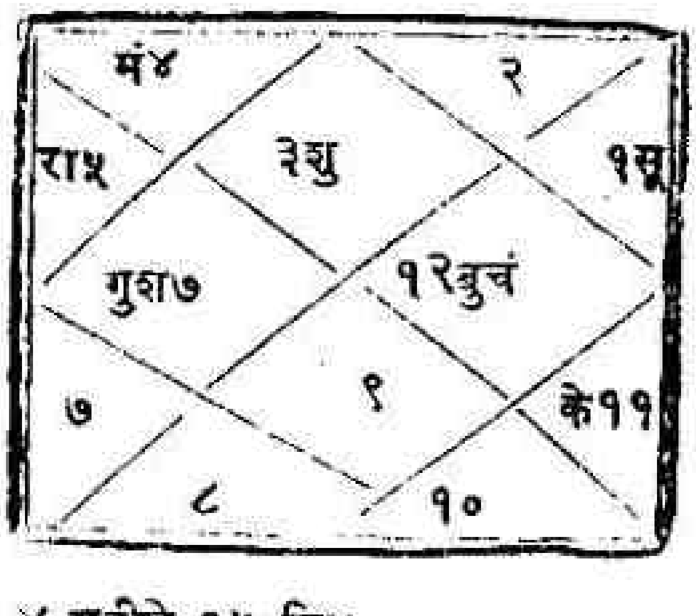

सूर्य की दशा शेष—० वर्ष ४ महीने १५ दिन

सप्तम भाव—कुण्डली सं० ३० में सप्तम भाव तुला में न तो कोई ग्रह स्थित है और न ही उसपर किसी ग्रह की दृष्टि है।

सप्तमेश—सप्तमेश शुक्र, ग्यारहवें भाव में स्थित है और उस पर नवमेश तथा द्वादशेश बृहस्पति की दृष्टि है।

कलत्र कारक—शुक्र ग्यारहवें भाव में स्थित होकर बृहस्पति से दृष्ट है।

चन्द्रमा से विचार—चन्द्रमा से सप्तम भाव में न तो कोई ग्रह स्थित है और न ही उस पर किसी ग्रह की दृष्टि है। सप्तमेश बृहस्पति बारहवें भाव में स्थित है और शुक्र, मंगल तथा शनि से दृष्ट है।

निष्कर्ष—चन्द्रमा से सप्तमेश मारक और शनि की दृष्टि से पीड़ित है। लग्न से अष्टम भाव में शनि स्थित है और उस पर मंगल की दृष्टि है। चन्द्रमा से अष्टमेश मंगल शनि की दृष्टि से पीड़ित है। नवांश में अष्टम भाव नीच के मंगल और बृहस्पति से पीड़ित है। राशि में कारक और सप्तमेश शुक्र पर नवमेश के रूप में बृहस्पति के प्रभाव, अष्टमेश मंगल (चन्द्रमा से) नवम भाव में और अष्टम भाव (राशि और नवांश दोनों में लग्न से) पर जलीय राशि में मारक द्वारा बुरे प्रभाव के परिणामस्वरूप जातक ने एक विदेशी से शादी की।

कुण्डली सं० ३१

जन्म तारीख २२/२३-११-१९०२ जन्म समय ५-१६ बजे प्रातः (स्था. स.)
देशा० २३°६′ उत्तर, ७२°४०′ पूर्व।

राशि

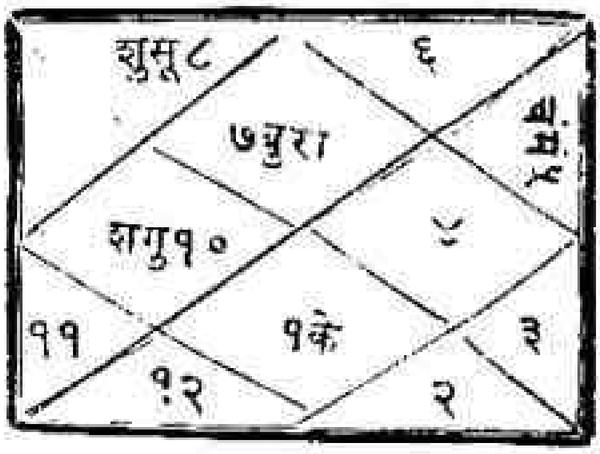

नवांश

शुक्र की दशा शेष—१३ वर्ष ११ महीने १२ दिन

सप्तम भाव—सप्तम भाव मेषराशि में वर्गोत्तम केतु स्थित है और वह नवमेश तथा द्वादशेश बुध से पीड़ित है।

सप्तमेश—सप्तमेश मंगल एकादश भाव में स्थित है और उस पर अच्छी या बुरी कोई दृष्टि नहीं है किन्तु वह दसमेश चन्द्रमा से युक्त है।

कलत्र कारक—शुक्र दूसरे भाव में स्थित है तथा द्वितीयेश मंगल से दृष्ट और एकादशेश सूर्य से युक्त है।

चन्द्रमा से विचार—चन्द्रमा से सप्तम भाव कुम्भ पर चतुर्थेश और नवमेश मंगल की दृष्टि है। सप्तमेश शनि अपनी राशि में स्थित है किन्तु वह छठा भाव है और नीच के बृहस्पति से युक्त है।

निष्कर्ष—अष्टम भाव पर अष्टमेश शुक्र की दृष्टि है जिस पर मंगल की दृष्टि है। चन्द्रमा से अष्टमेश बृहस्पति शनि के साथ छठे भाव में स्थित है। चन्द्रमा से अष्टम भाव पर शनि और मंगल की दृष्टि है। राशि में लग्न से सातवें भाव में केतु स्थित है। नवांश में अष्टम भाव मंगल और शनि से घिरा हुआ है और पाप कर्तरी योग में है। जातक ऊँची जाति का हिन्दू है और उसने एक पारसी विधवा के साथ शादी की जिसके बच्चे थे। इस शादी से उस कास के लोगों को बहुत दुख पहुंचा। राशि और नवांश में अष्टम भाव और अष्टमेश पर राहु, केतु, मंगल और शनि के बुरे प्रभाव के फलस्वरूप ऐसी शादी होती है जिसे समाज स्वीकार नहीं करता।

कुण्डली संख्या ३२

जन्म तारीख २४–७–१९५३, जन्म समय १·३० बजे संध्या (आई एस टी) अक्षांश १३° ५′ उत्तर, ८० १५° पूर्व।

राशि

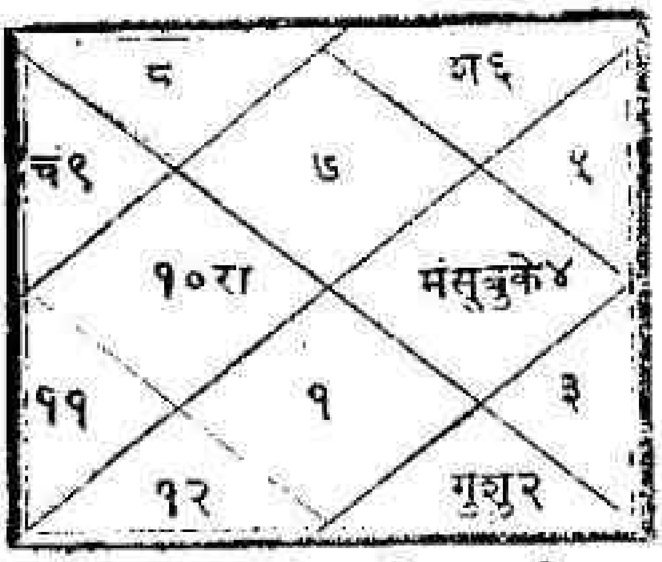

नवांश

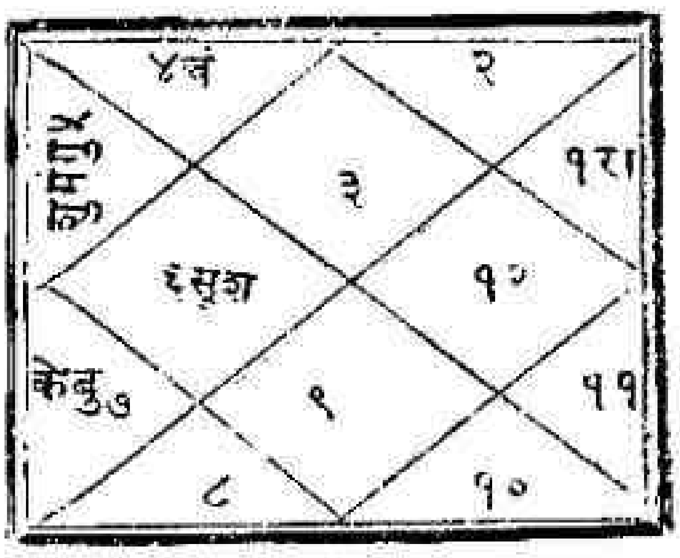

केतु की दशा शेष—० वर्ष ११ महीने १० दिन

सप्तम भाव—कुण्डली सं० ३२ में सप्तम भाव मेष राशि किसी ग्रह की दृष्टि और स्थिति दोनों से मुक्त है।

सप्तमेश—सप्तमेश मंगल १० वें भाव में नीच का है। चूंकि उसकी उच्च राशि का स्वामी शनि चन्द्रमा से केन्द्र में स्थित है अतः उसका नीच भंग हो जाता है। मंगल एकादशेश सूर्य, नवमेश और द्वादशेश बुध और केतु से युक्त है।

कलत्र कारक—चन्द्रमा से सप्तमेश बुध अष्टम भाव में नवमेश सूर्य, केतु और पंचमेश तथा द्वादशेश मंगल से युक्त है। चन्द्रमा से सप्तम भाव पर द्वितीयेश और तृतीयेश शनि की दृष्टि है।

निष्कर्ष—चन्द्रमा से अष्टम भाव में सभी कारक ग्रहों की स्थिति और सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि के फलस्वरूप जातक ने जो एक ब्राह्मण है, इसाई युवा के साथ शादी की। नवांश में सप्तमेश बृहस्पति मंगल से युक्त है और अष्टमेश शनि दबाव में है।

अष्टम भाव

अष्टम भाव से आयु, पैत्रिक सम्पति, उपहार और अनर्जित धन, मृत्यु के स्वरूप, अपयश, अपमान और मृत्यु से सम्बन्धित विवरण का विचार किया जाता है।

आठवें भाव के महत्त्व पर विचार करने के लिए निम्नलिखित बातें महत्त्वपूर्ण होती है अर्थात (क) भाव (ख) उसका अधिपति (ग) स्थित ग्रह (घ) कारक। आठवें भाव में जो योग बनते है वे अपना प्रभाव देंगे। नवांश कुण्डली से भी यही विचार करना चाहिये। यद्यपि अष्टम भाव के अनेक महत्त्व हैं किन्तु हम मृत्यु के साधन और स्वरूप, समय और स्थान पर विचार करेंगे :

अष्टमेश का विभिन्न भावों में फल

प्रथम भाव में—जिस व्यक्ति की कुण्डली में अष्टमेश लग्न में लग्नेश के साथ स्थित हो वह व्यक्ति दरिद्र होगा और अभाव में रहेगा। हर कदम पर उसका भाग्य उसका साथ नहीं देगा। यदि अष्टमेश निर्बल हो या नवांश लग्न से छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो दुर्भाग्य की तीव्रता कम हो जाती है। यदि अष्टमेश बुरी तरह पीड़ित हो तो जातक शारीरिक कष्ट से पीड़ित होगा अर्थात् रोग और विकृति। उसके शरीर की बनावट कमजोर होगी और उसे शारीरिक सुख प्राप्त नहीं होगा। उसके वरिष्ठ उससे खुश नहीं रहेंगे। सरकार की ओर से कष्ट के कारण उसे चिन्ता रहेगी।

द्वितीय भाव में—यदि अष्टमेश द्वितीयेश के साथ दूसरे भाव में स्थित हो तो वह व्यक्ति सभी प्रकार के कष्ट और समस्याओं से घिरा रहेगा। जातक आंख और दांत के कष्ट से पीड़ित रहता है। उसे अस्वास्थ्यकर तथा स्वादहीन भोजन करना पड़ता है। उसका घरेलू जीवन असन्तोष और झगड़ों से भरा रहेगा। उसकी पत्नी उसे समझ नहीं पाएगी। इसके परिणाम स्वरूप आपस में मनमुटाव होगा और दोनों अलग भी हो सकते है। यदि आयु ठीक है तो उसे गम्भीर बीमारी लग सकती है। यदि अष्टमेश नवांश लग्न से ६, ८ या १२ वें भाव में हो तो इस परिणाम की तीव्रता कम हो जाएगी।

तृतीय भाव में—यदि अष्टमेश तृतीयेश के साथ तीसरे भाव में स्थित हो तो तीसरे भाव के फल में कमी आती है। जातक को कान की बीमारी हो सकती है या वह बहरा हो सकता है। भाई बहनों के साथ मतभेद होगा जिससे कलह होगा। जातक सभी प्रकार के भय और मानसिक चिन्ताओं से घिरा रहेगा। वह वस्तुओं

की कल्पना कर सकता है और मायामोह में फंसा रह सकता है। वह कर्ज में जा सकता है और इससे उसे कष्ट होगा। यदि तृतीयेश से युक्त तीसरे भाव में स्थित अष्टमेश किसी कारक ग्रह से पीड़ित हो तो जातक का उत्पीड़न बर्दाश्त से बाहर होगा। किन्तु यदि अष्टमेश षष्ठेश या द्वादशेश से युक्त हो तो उससे परिणाम शुभ हो सकते हैं। वह लेखन या एजेन्सी के माध्यम से धन प्राप्त कर सकता है।

चतुर्थ भाव में—यदि अष्टमेश चतुर्थेश से युक्त होकर चौथे भाव में स्थित हो तो जातक की मानसिक शान्ति छिन्न भिन्न रहेगी। घरेलू कलह, वित्तीय और अन्य समस्याएँ बढ़ेंगी। मां का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है और इससे क्षति हो सकती है। जातक अपने मकान, भूमि और सवारी के सम्बन्ध में समस्याओं से घिरा रह सकता है। यदि बुरे प्रभाव अधिक हों तो उसकी भूमि और अचल सम्पत्ति उसके हाथ से जा सकती है जिस पर वह नियन्त्रण नहीं कर पाएगा। उसकी सवारियां गुम हो सकती हैं या नष्ट हो सकती हैं। उसके पालतू पशु बीमार हो सकते हैं या मर सकते हैं। अत्यधिक बुरा प्रभाव होने पर वह विदेश में अपने भाग्योदय के लिये जा सकता है जहां उसे सभी प्रकार की हानियों और कष्ट का सामना करना पड़ेगा। पेशे में विपरीत स्थिति और अपने वरिष्ठों की नाराजगी की सम्भावना है।

पंचम भाव में—यदि अष्टमेश पंचमेश के साथ पंचम भाव में स्थित हो तो जातक के बच्चे कष्ट पा सकते हैं। वे अपराध कर सकते हैं और ऐसी स्थिति पैदा कर सकते हैं जिसका जातक की प्रसिद्धि पर प्रभाव पड़ेगा। अथवा जातक और उसके पिता के बीच मतभेद हो सकता है। जातक का बच्चा बीमार हो सकता है और उससे वह पीड़ित होगा। यदि बुरे प्रभाव अधिक हों तो एक बच्चे की जन्म लेते ही मृत्यु हो सकती है या शारीरिक उत्पीड़न अथवा मानसिक बाधा के कारण जातक की चिन्ता बढ़ सकती है। जातक अपने स्वास्थ्य से भी पीड़ित रह सकता है। यदि अष्टमेश नवांश लग्न से ६, १२ या ८ वें भाव में हो तो बुरे फल काफी कम हो जाते हैं। परन्तु यदि केन्द्र या त्रिकोण में बली हो तो परिणाम और गहन हो जाते हैं। चूंकि पंचम भाव बुद्धि का स्थान होता है अत: जातक उत्तेजना या मानसिक खराबी से पीड़ित हो सकता है।

जब नवमेश पंचम भाव में अष्टमेश से युक्त हो और लग्नेश नीच का हो तो जातक को न तो ज्ञान होगा और न ही धन। वह प्रतिपक्षी, कामुक और चिड़चिड़ा होगा। वह धूर्त, ईश्वर और पवित्रात्मा को गाली देता है तथा अपनी पत्नी और बच्चों से निन्दा पाता है।

छठे भाव में—यदि अष्टमेश षष्ठेश से युक्त होकर छठे भाव में स्थित हो तो राजयोग बनता है। इसके परिणाम-स्वरूप अपार धन, प्रसिद्धि और इच्छित वस्तु की

प्राप्ति होती है। किन्तु चूँकि छठा भाव रोग स्थान होता है अतः जातक का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। यदि पीड़ित हो तो जातक को चोरों से धन की हानि होगी और न्यायालय तथा पुलिस से कष्ट होगा। यदि अष्टमेश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो बुरे प्रभाव और तीव्र हो जाते हैं। जातक के मामा को काफी कष्ट हो सकता है। यदि षष्ठेश बली हो तो वह उसके कष्टों पर काबू पा लेता है और जातक को विजयी बनाता है। उसका बुरा चाहने वालों और शत्रुओं का प्रयास विफल हो जाता है।

सप्तम भाव में—यदि अष्टमेश सप्तमेश के साथ सप्तम भाव में स्थित हो तो इससे आयु कम हो जाती है। जातक की पत्नी का स्वास्थ्य खराब रहता है। यदि पीड़ित हो तो जातक भी बीमारियों का शिकार हो जाता है। वह विदेश जा सकता है जहाँ पर उसका स्वास्थ्य बिगड़ेगा और उसके सामने समस्याएँ आएँगी। यदि सप्तमेश और अष्टमेश बली हों तो जातक राजनयिक उद्देश्यों से विदेश की यात्रा करेगा और स्वयं विख्यात होगा।

अष्टम भाव में—यदि अष्टमेश बली होकर अष्टम भाव में स्थित हो तो जातक की आयु लम्बी होती है और सुख प्राप्त करता है। वह पूर्व जीवन में प्राप्त गुण के आधार पर भूमि, सवारी, अधिकार और स्थिति प्राप्त करेगा। यदि अष्टमेश निर्बल हो तो उसे गम्भीर कष्ट नहीं होगा किन्तु उत्तम भाग्य का आनन्द भी नहीं मिल सकता है। जातक के पिता की मृत्यु हो सकती है या वे संकट में पड़ सकते हैं। यदि अष्टमेश पीड़ित हो तो जातक अपने बचन में असफल रहेगा। गलत काम करने में तत्पर रहेगा और उससे उसे हानि होगी।

नवम भाव में—यदि अष्टमेश नवमेश के साथ नवम भाव में स्थित हो और उस पर अनिष्ट प्रभाव हों तो जातक अपने पिता की सम्पत्ति से वंचित रह सकता है। पिता के साथ मतभेद हो सकता है। यदि पिता का नैसर्गिक कारक सूर्य पीड़ित हो तो नवमेश के दशाकाल में पिता की मृत्यु हो सकती है। यदि शुभ प्रभाव से युक्त हो तो जातक को उसके पिता की सम्पत्ति मिलती है। पिता के साथ सम्बन्ध सौहार्द पूर्ण होता है। यदि नवमेश निर्बल हो तो जातक सभी प्रकार की आर्थिक कठिनाइयों दुख और दुर्भाग्य से पीड़ित रहता है। उसके मित्र और सगे सम्बन्धी उसे छोड़ जाएँगे और वरिष्ठ अधिकारी उसमें गल्ती निकालेंगे। यदि नवांश में अष्टमेश ६, ८ या १२ वें भाव में हो तो बुरे प्रभाव काफी कम हो जायेंगे।

दशम भाव में—यदि अष्टमेश दसमेश के साथ दसम भाव में स्थित हो तो जीवन में जातक की प्रगति धीमी रहेगी। उसे अपने कार्यों में बाधाओं और अड़चनों

का सामना करना पड़ेगा। समुचित अवधि में उसके अधीनस्थ उससे पहले पदोन्नत हो जाएँगे और उसकी योग्यता पर ध्यान नहीं दिया जाएगा। वह अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिये धोखा और अनुचित साधनों का सहारा ले सकता है। उसके विचार धुन्धले होंगे और उसके कार्यों से सरकार का रोष बढ़ेगा। वह दरिद्रता से पीड़ित हो सकता है। यदि द्वितीयेश भी पीड़ित हो और अष्टमेश से युक्त हो तो अत्यधिक कर्ज और उसे अदा करने में असमर्थ होने के कारण उसकी प्रसिद्धि में कमी आ सकती है। यदि अष्टमेश नवांश लग्न से ६, ८ या १२ वें भाव में स्थित हो तो बुरे प्रभाव में काफी कमी हो जाती है। यदि अष्टमेश दशम भाव में स्थित हो तो बड़ों की मृत्यु के बाद अप्रत्याशित धन की प्राप्ति भी हो सकती है।

एकादश भाव में—यदि अष्टमेश एकादशेश के साथ एकादश भाव में स्थित हो तो निकट मित्रों को कष्ट हो सकता है। बड़े भाई के ऊपर विकट समय आ सकता है। उसके साथ सम्बन्ध बिगड़ सकता है। अथवा बड़ा भाई अपने अनैतिक व्यवहार और आचरण द्वारा जातक और उसके परिवार के लिए यन्त्रणा का कारण बन सकता है। कारोबार में हानि हो सकती है और वह कर्ज में जा सकता है। यदि इस योग पर शुभ ग्रहों का प्रभाव हो तो कष्ट होगा किन्तु इसपर काबू पाने के लिए जातक को मित्रों और बड़े भाई से सहायता मिलती है। बुरे प्रभावों से अशुभ परिणामों में वृद्धि हो जाती है।

द्वादश भाव में—यदि अष्टमेश १२ वें भाव के स्वामी के साथ १२ वें भाव में स्थित हो तो राजयोग बनता है। यदि कोई शुभ ग्रह अष्टमेश से युक्त हो तो विपरीत परिणाम की आशा की जा सकती है। मित्र के विश्वासघात के फलस्वरूप अनेक समस्याएँ और दुख आ सकता है। अप्रत्याशित व्यय होगा और आर्थिक हानि होगी। यदि अष्टमेश १२ वें भाव में हो और द्वादशेश त्रिकोण या केन्द्र में अनुकूल स्थिति में हो तो जातक को धार्मिक अध्ययन और धर्मपरायणता में लाभ होगा। उसपर प्राधिकार सम्बन्धी कुछ पद और स्थान थोप दिया जाएगा। यदि अशुभ ग्रहों से पीड़ित हो तो जातक गुप्त रूप से अनैतिक कार्यों का सहारा ले सकता है। इस प्रकार के कार्यों में बलात्कार, व्यभिचार, धन की जालसाजी (बारहवाँ भाव गुप्त और धोखाधड़ी का भाव होता है। अष्टम भाव अचानक धन की प्राप्ति का द्योतक होता है) और व्यापार शामिल होगा।

ये फल साधारण होते हैं, लग्न, चन्द्रमा और चालू दशा के बल के आधार पर इनमें कमी बेसी हो सकती है। जहाँ फल अपराध कार्य से सम्बन्धित हो वहाँ लग्न, चन्द्रमा और दसम भाव (कर्मस्थान) के बल पर विचार करके ही भविष्यवाणी करनी चाहिए। यदि ये तथ्य अनुकूल हों तो जातक कुछ और ढंग से कार्य करने को

लालायित होगा किन्तु वह अपनी लालसा पर काबू पा लेगा और स्वयं को नियन्त्रित कर लेगा। इस प्रकार के मामले में मस्तिष्क की स्थिति पर कार्य निर्भर करेगा और इसे कार्य में व्यक्त नहीं करेगा।

अन्य महत्त्वपूर्ण योग

यदि अष्टम भाव में मारक ग्रह स्थित हो तो जातक की अप्राकृतिक मृत्यु होती है जैसे आत्महत्या, हत्या या दुर्घटना। यदि अष्टम भाव पर शुभ ग्रहों के प्रभाव हों तो स्वाभाविक मृत्यु होती है अर्थात् बीमारी से या बुढ़ापे से। यदि अष्टमेश का आपस में सम्बन्ध हो तो स्वास्थ्य खराब होने से मृत्यु होती है, यदि इस मामले में छठा भाव और आठवाँ भाव बुरी तरह पीड़ित हों तो लम्बी बीमारी के बाद मृत्यु होती है जैसा कि चिरकालिक रोग के मामले में होता है।

आयु (जीवन काल) को चार भागों में बाँटा जा सकता है—

१. **बालारिष्ट या शीघ्र मृत्यु**—४ वर्षों तक

२. **अल्पायु**—८ से ३२ वर्षों तक

३. **मध्यम आयु**—६२ से ७५ वर्षों तक

४. **पूर्ण आयु**—७५ से १२० वर्षों तक

जीवन काल के विभाजन के सम्बन्ध में प्राचीन अधिकृत पुस्तकों से निम्नलिखित योगों को छाँट कर निकाला गया है।

बालारिष्ट

निम्नलिखित योगों से बालारिष्ट का संकेत मिलता है—

१. यदि चन्द्रमा ८,१२ या ६ ठे भाव में स्थित हो और उसपर अशुभग्रह राहु की दृष्टि हो तो बालक की मृत्यु शीघ्र हो जाती है।

२. चन्द्रमा शनि से युक्त हो, सूर्य १२वें भाव में हो और मंगल चौथे भाव में हो तो बच्चा और उसकी माँ दोनों की मृत्यु हो जाती है।

३. यदि चन्द्रमा लग्न में हो और उसपर शुभ दृष्टि न हो और यदि दोनों अशुभ ग्रहों से घिरे हुए हों तो बच्चा और उसकी माँ दोनों की मृत्यु हो जाती है।

४. यदि ६,८ और १२वें भाव में अशुभ ग्रह स्थित हों और शुभ ग्रह की युक्ति न हो और शुक्र या बृहस्पति अशुभ ग्रहों के बीच में पड़े हों तो बच्चा और उसकी माँ दोनों की मृत्यु हो जाती है।

५. यदि लग्न से १, ४, ७, और ८ वें भाव में अशुभ ग्रह स्थित हों तो बच्चा और उसकी माँ दोनों की मृत्यु हो जाती है ।

६. यदि ग्रस्त चन्द्रमा लग्न में शनि से युक्त हो और मंगल अष्टम भाव में स्थित हो तो बच्चा और उसकी माँ दोनों की मृत्यु हो जाएगी ।

७. यदि लग्न से छठे और बारहवें भाव में अशुभ ग्रह स्थित हों तो जन्म से तुरन्त बाद बच्चा मर जाता है ।

८. यदि क्षीण चन्द्रमा लग्न में स्थित हो और लग्न से केन्द्र या अष्टम भाव में अशुभ ग्रह स्थित हो तो बच्चे की मृत्यु शीघ्र होती है ।

९. यदि लग्न से ६ या ८ वें भाव में शुभ ग्रह हो और उस पर अशुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो बच्चा एक महीने के भीतर मर जाता है ।

१०. यदि लग्न से ६ या ८ वें भाव में सूर्य, मंगल और शनि युक्त हों और किसी शुभ ग्रह की युक्ति या दृष्टि न हो तो बच्चा शीघ्र मर जाता है ।

११. यदि लग्न से पंचम भाव में सूर्य, मंगल और शनि स्थित हों तो बच्चे की मृत्यु हो जाती है ।

१२. यदि लग्नेश नीच का हो और शनि लग्न से ७ या ८ वें भाव में स्थित हो तो बच्चा काफी बीमार रहता है और शीघ्र मर जाता है।

१३. यदि लग्नेश सूर्य से युक्त हो और अष्टमेश दबा हुआ हो तो बच्चा शीघ्र मर जाता है ।

१४. यदि चन्द्रमा अशुभ राशि या नवांश में स्थित हो और उस पर कोई शुभ दृष्टि न हो और पाँचवें तथा नवम भाव में अशुभ ग्रह स्थित हो तो बच्चा शीघ्र मर जाता है ।

१५. यदि, ८, ९ और १२ वें भाव में क्रमशः चन्द्रमा, मंगल, सूर्य और शनि स्थित हों तो बच्चा शीघ्र मर जाता है ।

१६. चन्द्रमा अशुभ ग्रह से युक्त होकर ५,९,१२,७ और लग्न भाव में स्थित होता है और उसपर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि या युक्ति नहीं होती तो उसके कारण बच्चे की मृत्यु हो जाती है ।

१७. जब चन्द्रमा लग्न या लग्न से ६, ८ या १२ वें भाव में स्थित हो और उसपर अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तथा किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न हो और केन्द्र में कोई शुभ ग्रह न हो तो बच्चा शीघ्र मर जाता है ।

१८. जब लग्न भाव में जलीय राशि हो और वहाँ पर चन्द्रमा स्थित हो और

शनि स्थित हो या शनि शुभ ग्रहों के साथ केन्द्र में स्थित हो तो बच्चा शीघ्र मर जाता है ।

१९. यदि लग्न और सप्तम भाव में अशुभ ग्रह स्थित हो और अशुभ ग्रह से युक्त चन्द्रमा पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो बच्चा शीघ्र मर जाता है ।

२०. यदि क्षीण चन्द्रमा १२ वें भाव में हो, सभी अशुभ ग्रह अष्टम भाव में हों और केन्द्र में कोई शुभ ग्रह न हो तो बच्चा जल्द ही मर जाता है ।

२१. चन्द्रमा और राहु अशुभ ग्रह से युक्त होकर मंगल के साथ अष्टम भाव में स्थित हों तो बच्चा जल्द ही मर जाता है यदि इस मामले में लग्न में सूर्य स्थित हो तो आपेरशन से मृत्यु होती है ।

२२. यदि वक्री ग्रह छठे या आठवें भाव में या मंगल की राशि में केन्द्र में स्थित हो और उसपर मंगल की दृष्टि भी हो तो बच्चा तीन वर्षों तक जीवित रहता है ।

२३. यदि कर्क लग्न में चन्द्रमा और मंगल स्थित हों और ४, ८ तथा १० वें भावों में कोई ग्रह न हो तो बच्चे की तीन वर्ष में मृत्यु हो जाती है ।

२४. यदि छठे और आठवें भाव में कर्क राशि हो वहां पर बुध स्थित हो तथा चन्द्रमा से दृष्ट हो तो बच्चे की चार वर्ष में मृत्यु हो जाती है ।

२५. यदि लग्न में राहु हो और उसपर किसी एक अशुभ ग्रह की दृष्टि या युक्ति हो तो बच्चा पांच वर्ष में मर जाता है ।

२६. यदि शुक्र ६ या १२ वें भाव में कर्क राशि में स्थित हो और अशुभ ग्रह द्वारा द्रष्ट हो तो बच्चे की छः वर्ष में मृत्यु हो जाती है ।

२७. यदि लग्न मंगल या शनि से पीड़ित हो और सातवें भाव में क्षीण चन्द्रमा स्थित हो तो बच्चे की छठे या सातवें वर्ष में मृत्यु हो जाती है ।

२८. यदि शनि, मंगल और शुक्र लग्न में स्थित हों और उनपर बृहस्पति की दृष्टि न हो और क्षीण चन्द्रमा सप्तम भाव में हो तो बच्चे की सातवें वर्ष में मृत्यु हो जाती है ।

२९. यदि छठे और आठवें भाव में शुभ ग्रह स्थित हों और पंचम तथा नवम भाव में अशुभ ग्रह स्थित हों तो बच्चे की आठवें वर्ष में मृत्यु हो जाती है ।

बालारिष्ट के लिए प्रतिकारक

शुभ ग्रहों और चन्द्रमा की कुछ स्थितियों में बाल्यकाल में मृत्यु से रक्षा हो सकती है । कुछ मानक योग नीचे दिये जाते हैं ।

यदि पूर्ण चन्द्रमा हो और उच्च स्थिति, शुभ राशि या नवांश में हो तो बाल्यकाल में मृत्यु का खतरा टल जाता है। जब लग्नेश केन्द्र में बली हो और शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो और उस पर किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो बालारिष्ट योग निष्प्रभाव हो जाता है। यदि बृहस्पति, शुक्र या बुध अशुभ ग्रह की दृष्टि से मुक्त होकर केन्द्र में स्थित हो तो कुण्डली में अन्य बुरे प्रभावों के बावजूद बच्चा काफी समय तक जीवित रहता है। लग्न से ३, ६ या ११ वें भाव में राहु स्थित होने पर शीघ्र मृत्यु का योग कट जाता है। केन्द्र में बली बृहस्पति बाल्यकाल में मृत्यु से बच्चे को बचाता है। यदि चान्द्रमास के शुक्ल पक्ष में रात का जन्म हो या चान्द्रमास के कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो तो शुभ और अशुभ दोनों ग्रहों से दृष्ट चन्द्रमा के छठे या आठवें भाव में स्थित होने के बावजूद बच्चे की आयु लम्बी होती है। शुक्र से दृष्ट उच्च का चन्द्रमा, या चन्द्रमा जिस राशि में है उसका स्वामी शुभ ग्रहों से दृष्ट होकर लग्न में स्थित होने पर बाल्यकाल में मृत्यु से रक्षा होती है। यदि जन्म समय तीन ग्रह उच्च के हों या स्वगृही हों तो आयु के लिए अलाभप्रद अशुभ ग्रहों के अन्य योग पर काबू पाने में बच्चे को सहायता मिलती है। यदि लग्नेश केन्द्र या त्रिकोण में बली होकर स्थित हो तो बुरे प्रभाव समाप्त हो जाते हैं। शुभ ग्रहों से दृष्ट मेष, वृषभ या कर्क लग्न में राहु बच्चे की रक्षा करता है।

अल्पायु

८ और ३२ वर्षों के बीच मृत्यु हो जाने पर उसे अल्पायु कहा जाता है।

अल्पायु के लिए कुछ निम्नलिखित योग होते हैं—

(१) लग्न से पंचम भाव में सूर्य, चन्द्रमा और मंगल स्थित होने पर ९ वर्ष में मृत्यु हो सकती है।

(२) यदि लग्नेश अशुभ ग्रह हो और चन्द्रमा से १२ वें स्थान पर हो और उसपर अशुभ ग्रह की दृष्टि भी हो तो नवें वर्ष में मृत्यु हो जाती है।

(३) यदि चन्द्रमा सिंह राशि में हो, सूर्य और शनि लग्न से आठवें भाव में हों और शुक्र दूसरे भाव में हो तो बच्चे की मृत्यु १२ वें वर्ष में हो जाती है।

(४) यदि सूर्य वृषभ के नवांश में हो और शनि वृश्चिक के नवांश में हो तो १२ वें वर्ष में जीवन का अन्त हो जाता है।

(५) यदि शनि नवांश में सिंह में हो और उसपर राहु की दृष्टि हो तो बच्चे की १५ वर्ष की आयु में मृत्यु हो सकती है।

(६) यदि लग्नेश उच्च का हो किन्तु उस पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न हो

और शनि नवांश में मीन या धनु में स्थित हो और उसपर राहु की दृष्टि हो तो जातक की आयु १९ वर्ष होती है।

(७) जब चन्द्रमा लग्न से छठे या आठवें भाव में स्थित हो और केन्द्र में अशुभ ग्रहों पर कोई शुभ दृष्टि न हो तो २० वर्ष में मृत्यु हो जाती है।

(८) यदि मंगल और बृहस्पति लग्न में हों, चन्द्रमा सप्तम भाव में हो और अष्टम भाव में शुभ या अशुभ ग्रह स्थित हो तो २२ वर्ष की उम्र में जीवन का अन्त हो जाता है।

(९) यदि लग्नेश लग्न में हो, अष्टमेश नवम भाव में हो और अष्टम भाव के ग्रह पर अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो जातक २४ वर्षों तक जीवित रहता है।

(१०) यदि अष्टमेश और द्वादशेश निर्बल हो और शनि लग्न में द्विस्वभाव राशि में स्थित हो तो २५ वर्ष की आयु में मृत्यु होती है।

(११) यदि लग्न में मंगल हो और सूर्य तथा शनि केन्द्र में स्थित हों तो २० वर्ष की आयु में जीवन का अन्त हो जाता है।

(१२) यदि लग्न से अष्टमेश या चन्द्रमा १२ वें भाव में केन्द्र में स्थित हो तो जातक २४ वर्षों तक जीवित रहता है।

(१३) यदि शनि लग्न में शत्रु राशि में हो और ३, ६, ९ या १२ वें भावों में शुभ ग्रह हों तो जातक की आयु २६ या २७ वर्ष की होती है।

(१४) जब सूर्य, चन्द्रमा और शनि अष्टम भाव में युक्त हों तो जातक २९ वर्षों तक जीवित रहता है।

(१५) यदि अष्टमेश केन्द्र में हो और लग्नेश कमजोर हो तो जातक ३२ वर्षों तक जीवित रहता है।

(१६) यदि बली बुध केन्द्र में स्थित हो और अष्टम भाव में कोई ग्रह न हो तो ३० वर्ष की आयु में जातक की मृत्यु हो जाती है।

(१७) यदि लग्नेश और चन्द्रमा कमजोर हों और आपोक्लिम (३, ६, ९, १२) में स्थित हों और उनपर अशुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक ३२ वर्षों तक जीवित रहता है।

(१८) यदि सूर्य लग्न में स्थित हो और दोनों ओर से अशुभ ग्रहों से घिरा हुआ हो तो जातक ३१ वर्षों तक जीवित रहता है।

(१९) जब केन्द्र में कोई शुभ ग्रह न हो और अष्टम भाव में एक ग्रह स्थित हो तो जातक ३० वर्षों तक जीवित रहता है।

(२०) जब अष्टमेश शनि हो या किसी अन्य अशुभ ग्रह से युक्त होकर कोई अशुभ ग्रह बुरे षष्ठ्यंश में स्थित हो तो जातक की आयु कम होगी।

(२१) जब लग्न में अशुभ ग्रह स्थित हो और चन्द्रमा भी अशुभ ग्रहों से युक्त हो तथा उस पर कोई शुभ दृष्टि न हो तो इससे अल्पायु होती है।

मध्यम आयु

मध्यम आयु ३२ से ७५ वर्षों की होती है।

निम्नलिखित योगों से मध्यम आयु का संकेत मिलता है।

(१) यदि बृहस्पति लग्नेश होकर कमजोर हो और ६, ८ या १२ वें भाव में, केन्द्र और त्रिकोण में अशुभ ग्रह स्थित हो तो जातक की मध्यम आयु होगी।

(२) यदि अष्टम भाव में अशुभ ग्रह स्थित हो, शनि छठे भाव में हो और त्रिकोण या केन्द्र में शुभ ग्रह स्थित हो तो मध्यम आयु का संकेत मिलता है।

३, यदि २, ३, ४, ८ और ११ वें भाव में अशुभ ग्रह स्थित हों तो जातक की आयु, मध्यम होगी।

४. यदि लग्नेश कमजोर हो, ६, ८ और १२वें भाव में अशुभ ग्रह हों, बृहस्पति केन्द्र या मूल त्रिकोण में हो और अशुभ ग्रह लग्न से युक्त हो तो जातक की आयु मध्यम होती है।

५. केन्द्र में शुभ ग्रह, चन्द्रमा उच्च का और बली लग्नेश से ६० वर्षों की आयु होती है।

६. यदि शुभ ग्रह केन्द्र में स्थित हों, बृहस्पति लग्न में हो और चन्द्रमा या लग्न से अष्टम भाव में अशुभ ग्रह की युक्ति हो तो जातक ७० वर्ष तक जीवित रहता है।

७. यदि बुध केन्द्र में बली हो, अष्टम भाव में कोई ग्रह न हों किन्तु उसपर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो जातक ४० वर्ष तक जीवित रहता है।

८. यदि शुभ ग्रह सप्तम भाव में स्थित हो और चन्द्रमा लग्न या कर्क राशि में हो तो जातक ६० वर्ष तक जीवित रहता है।

९. यदि बृहस्पति केन्द्र में हो, लग्न और और चन्द्रमा अशुभ ग्रहों की दृष्टि या युक्ति से मुक्त हो, अष्टम भाव रिक्त हो और शुभ ग्रह केन्द्र में हो इसका परिणाम मध्यम आयु होती है।

१०. यदि अष्टमेश केन्द्र में हो और सूर्य तथा शनि तीसरे या छठे भाव में स्थित हो जो मकर राशि हो तो जातक ३४ वर्ष तक जीवित रहता है।

११. यदि अष्टमेश लग्न में हो तो जातक ४० वर्ष तक जीवित रहता है ।

१२. यदि चन्द्रमा लग्न या अष्टम या द्वादश भाव में स्थित हो यदि बुध चौथे या दसवें भाव में हो, यदि शुक्र और बृहस्पति किसी भाव में युक्त हों तो जातक की आयु ५० वर्ष होती है ।

१३. यदि लग्नेश ६,८ या १२ वें भाव में चन्द्रमा से युक्त हो परन्तु अन्यथा बली हो और लग्नेश नवांश में मकर या कुंभ राशि में हो तो जातक ५८ वर्ष तक जीवित रहता है ।

१४. यदि सभी ग्रह पंचम भाव में स्थित हों तो जातक ६० वर्ष तक जीवित रहता है ।

१५. यदि शुभ ग्रह अपनी ही राशि में स्थित हों और चन्द्रमा लग्न में उच्च का हो तो जातक ६० वर्ष तक जीवित रहता है ।

पूर्णायु

यदि केन्द्र में शुभ ग्रह स्थित हो और लग्नेश शुभ ग्रहों से युक्त हो या बृहस्पति से दृष्ट हो तो पूर्ण आयु (७५ से १२० वर्ष) का संकेत मिलता है । जब अष्टम भाव में तीन ग्रह हों और वे क्रमशः उच्च राशि, मित्र राशि और स्वराशि में हों तो आयु पूर्ण होती है । यदि शनि या अष्टमेश उच्च ग्रह के साथ युक्त हों तो पूर्णायु होती है । निम्नलिखित मामलों में पूर्ण आयु होती है ।

१. यदि सूर्य शनि और मंगल चर नवांश में स्थित हों, बृहस्पति और शुक्र स्थिर नवांश में हों और चन्द्रमा तथा बुध द्विस्वभाव नवांश में हों तो जातक १०० वर्ष तक जीवित रहता है ।

२. यदि लग्नेश केन्द्र में स्थित हो और १२ वें तथा छठे भावों में अशुभ ग्रह हों तो जातक की आयु लम्बी होती है ।

३. यदि दसमेश उच्च का हो और अष्टम भाव में अशुभ ग्रह हों तो इससे जातक की आयु लम्बी होती है ।

४. यदि अशुभ ग्रह ३, ६ और ११ वें भाव में हों और शुभ ग्रह लग्न से ६,७ और ८ वें भाव में स्थित हों तो जातक की आयु लम्बी होती है ।

५. जब लग्नेश शुक्र और बृहस्पति के साथ युक्त हो या शुक्र और बृहस्पति से दृष्ट हो और स्वयं केन्द्र में स्थित हो तो जातक की आयु लम्बी होती है ।

६. यदि लग्नेश या अष्टमेश आठवें या ग्यारहवें भाव में स्थित हो तो जातक की आयु लम्बी होती है ।

७. यदि शनि केन्द्र में प्रथम, दसम और अष्टम भाव के स्वामी के साथ युक्त हो तो इससे लम्बी आयु का संकेत मिलता है।

८. यदि अष्टमेश अपनी स्वराशि में स्थित हो या शनि अष्टम भाव में स्थित हो तो जातक की लम्बी आयु होती है।

९. यदि बृहस्पति उच्च का हो, शुभ राशि अपनी मूलत्रिकोण राशि में हों और लग्नेश बली हो तो सम्बन्धित व्यक्ति ८० वर्ष तक जीवित रहता है।

१०. यदि पंचम या नवम भावों में शुभ ग्रह हों और लग्न कर्क राशि हो, तथा उसमें बृहस्पति स्थित हो तो जातक की आयु ८० वर्ष होती है।

११. यदि सभी ग्रह नवम भाव में स्थित हों तो जातक की आयु पूर्ण होगी।

१२. यदि सभी ग्रह केन्द्र में स्थित हों और वे अशुभ नवांश में हों तो जातक की आयु ८० वर्ष होगी।

१३. यदि अशुभ ग्रह वक्रकर शुभ नवांश में उपचय (३,६,१०,११) में स्थित हों तो जातक की पूर्ण आयु होगी।

१४. यदि लग्न में धनु का दूसरा भाग उदय हो रहा हो, सभी ग्रह अपने उच्च के हों और बुध वृषभ में २४° का हो तो जातक की आयु पूर्ण होती है।

१५. यदि शनि प्रथम या नवम भाव में स्थित हो और चन्द्रमा १२ वें या नवम भाव में स्थित हो तो जातक को पूर्ण आयु का आनन्द मिलता है।

लग्नेश और सभी शुभ ग्रहों के क्रमशः केन्द्र (१,४,७,१०), पनफर (२,५,८,११) और आपोक्लिम (३,६,९,१२) में स्थित होने के अनुसार जातक का जीवन काल लम्बा, मध्यम या कम निर्धारित किया जा सकता है। यदि केन्द्र, पनफर या आपोक्लिम में अष्टमेश या अशुभ ग्रह स्थित हों तो जीवन काल क्रमानुसार कम, मध्यम, या लम्बा होगा।

कुण्डली में ग्रहों की उपरोक्त स्थिति मात्र देखकर आयु के बारे में शीघ्र निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए। आयु का सही निर्धारण करने से पूर्व ग्रहों के सापेक्ष बलों को संतुलित कर लेना चाहिए।

अष्टम भाव में स्थित ग्रह

सूर्य—यदि अष्टम भाव में उच्च का सूर्य स्थित हो तो जातक की आयु लम्बी होती है। वह आकर्षक और कुशल वक्ता होता है। यदि सूर्य पीड़ित हो तो वह चेहरे और सिर में घाव से कष्ट पाएगा और जीवन में असंतुष्ट रहेगा। उसकी आँखें कमजोर होंगी। वह दरिद्रता से पीड़ित होगा और शान्त जीवन

बिताएगा। यदि अष्टमेश या एकादशेश से युक्त हो तो उसे सट्टा के माध्यम से अचानक धन प्राप्त हो सकता है। उसे संतान कम और अधिकतर पुरुष होंगे। यदि सूर्य अष्टम भाव में हो चन्द्रमा या राहु द्वादश भाव में हो और शनि त्रिकोण में हो तो जातक दाँत की बीमारी से पीड़ित रहता है।

चन्द्रमा—अष्टम भाव में चन्द्रमा के स्थित होने पर जातक मानसिक रूप से भ्रमित होता है। वह भयभीत होता है और मनोदशा से पीड़ित रहता है। वह हास्यास्पद और अस्वस्थ होगा। जातक के बाल्यकाल में ही माता की मृत्यु हो सकती है। उसका शरीर पतला होगा और आँखें कमजोर होंगी। वह विरासत में आसानी से धन प्राप्त करता है। वह लड़ाई और मनोविनोद का शौकीन होगा तथा उदार दिल वाला होगा। जातक को अधिक पसीना आएगा। यदि मंगल और शनि युक्त हों और चन्द्रमा अष्टम भाव में हो तो जातक की आँख की रोशनी प्रभावित होगी।

मंगल—यदि कोई अन्य उपशमन तथ्य न हों तो जातक की आयु कम होगी और उसकी पत्नी (या पति) की मृत्यु हो सकती है। उसके बच्चे कम होंगे। वह विवाहेतर जीवन का सहारा लेकर अपनी काम वासना को संतुष्ट करना चाहेगा। वह अपने संबन्धियों से घृणा करेगा। उसके घरेलू जीवन में कलह रहेगा और वह बवासीर जैसे खून की बीमारी से पीड़ित रहेगा। वह अनेक लोगों पर शासन करेगा।

यदि मंगल अष्टम भाव में हो, लग्न अचर राशि हो, शुक्र नवम भाव में हो और बृहस्पति द्वितीयेश हो तो जातक दास का जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य होगा।

बुध—जब अष्टम भाव में हो तो जातक में अनेक उत्तम गुण होंगे। वह अपनी सौजन्यता और शिष्टता के लिए प्रख्यात होगा। वह पूर्वजों की अपेक्षा स्वअर्जन से काफी धन प्राप्त करेगा। वह विद्वान होगा और अनेक विषयों में अपनी विद्वत्ता के लिए विख्यात होगा। काफी समय तक जीवित रहेगा किन्तु उसका शरीर कमजोर होगा।

बृहस्पति—जातक दुखी किन्तु उदार हृदय वाला होगा। वह काफी समय तक जीवित रहेगा। उसे बोलने में कठिनाई होगी। वह नीच काम कर सकता है किन्तु उच्च बनने का नाटक करेगा। वह विधवाओं के साथ सम्पर्क रख सकता है। उसकी आदतें गन्दी होंगी और वह वृक्कदंत्र शोथ से पीड़ित होगा। उसकी मृत्यु बिना दर्द के होगी। यदि बृहस्पति नीच का हो और चन्द्रमा लग्न से चौथे भाव में होतो जातक नौकर होगा और हमेशा आज्ञा का पालन करेगा।

शुक्र—अष्टम भाव में शुक्र की स्थिति से अनेक लाभ हैं। जातक के पास काफी धन होगा। वह आराम का जीवन बिताएगा और उसके पास जीवन की सारी सुविधाएँ होंगी। जातक की माँ को खतरा हो सकता है। जातक को जीवन के आरम्भ में भावनात्मक विरक्ति हो सकती है जिससे वह बाद के जीवन में साधुता का सहारा ले सकता है। यदि शुक्र अष्टम भाव में उच्च का हो तो जातक को काफी धन प्राप्त होता है। यदि राशि में शुक्र अष्टम भाव में नीच का हो या नवांश में शनि की राशि में स्थित हो और शनि से दृष्ट हो तो जातक सहायक बनता है और अपनी माँ के साथ कड़ी मजदूरी करता है।

शनि—अष्टम भाव में शनि स्थित होने पर आयु अच्छी होती है किन्तु जीवन में अनेक उत्तरदायित्व होते हैं। जातक अनेक कठिनाइयों के साथ अति अध्यवसाय के माध्यम से अपना कार्य करेगा। उसकी आँखें दोष पूर्ण होंगी। उसके बच्चे कम होंगे। वह तोंद वाला होगा तथा अपनी जाति से बाहर की स्त्री की संगति का इच्छुक होगा। वह दमा और फेंफड़े के रोग से पीड़ित रह सकता है। यदि अशुभ ग्रहों से पीड़ित हो तो अपने बच्चों के कारण उसे कष्ट और दुख होगा। जातक बेइमान और निर्दयी होगा। जब शनि अष्टम भाव में मंगल के साथ हो, राहु लग्न में हो और गुलिका त्रिकोण में स्थित हो तो जातक अपने प्रजनन अंग में रोग से पीड़ित होता है। यदि अष्टम भाव में शनि के साथ चन्द्रमा युक्त हो तो इससे उदर वायु और प्लीहा का कष्ट होता है।

राहु—जातक लोक निन्दा से पीड़ित होगा। वह अनेक बीमारियों से कष्ट पाएगा। वह दुष्ट, झगड़ालू और चरित्रहीन होगा। यदि अशुभ ग्रह से युक्त हो और राहु ८, १२ या पंचम भाव में हो तो जातक मानसिक अव्यवस्था से पीड़ित होगा।

केतु—यदि अष्टम भाव में केतु शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो जातक के पास काफी धन होगा और बहुत समय तक जीवित रहेगा। यदि केतु पीड़ित हो तो जातक दूसरों के धन और स्त्री की आकांक्षा करता है। वह मलवाहिनी प्रणाली में अव्यवस्था के कारण और चरित्रहीनता तथा आधिक्य के कारण रोगों से पीड़ित रहेगा।

अष्टम भाव उत्पीड़न और बुरे प्रभावों को नियन्त्रित करता है। यह चिरकालीन या असाध्य शारीरिक या मानसिक रोगों का कारण होता है।

अष्टम भाव में अशुभ ग्रह से युक्त शनि या लग्न में राहु के कारण पेट का रोग होता है यदि लग्न पर अशुभ ग्रह की दृष्टि हो, अष्टमेश कमजोर हो और अष्टम भाव पर शनि की दृष्टि हो या शनि वहां स्थित हो तो इससे ऐसा रोग होता है जिससे भोजन का अन्तर्ग्रहण रुक जाता है। बुरे प्रभाव के वास्तविक स्वरूप के

आधार पर रोग भीषण सर्दी या कर्णमूल शोथ जैसी साधारण बीमारी अथवा कैंसर जैसी गंभीर बीमारी हो सकती है।

मृत्यु का स्वरूप

सप्तम भाव में स्थित ग्रह और उस भाव पर बुरे प्रभाव मृत्यु के स्वरूप का संकेत देते हैं। यदि नवांश में मांदि से सप्तम भाव में शुभ ग्रह स्थित हों तो बिना किसी कष्ट के मृत्यु होगी। इसी स्थिति में यदि अशुभ ग्रह हों तो कष्ट से मृत्यु होती है। यदि नवांश में मांदि जिस राशि में है उस राशि से सप्तम भाव में शनि स्थित हो तो सर्प या चोर या अप्राकृतिक जन्तुओं से मृत्यु होती है। यदि इस राशि में मंगल स्थित हो तो जातक की मृत्यु लड़ाई या युद्ध में होती है। यदि इस राशि में कोई रोशनी वाला ग्रह हो तो न्यायालय द्वारा मृत्युदण्ड या राजनैतिक मृत्यु होती है। विशेष रूप से चन्द्रमा के होने पर जलीय जानवरों द्वारा भिड़न्त से मृत्यु हो सकती हैं।

यदि अष्टम भाव में एक या अधिक अशुभ ग्रह हों तो गम्भीर बीमारी या दुर्घटना, हत्या या आत्महत्या जैसे प्रचण्ड कारणों से कष्ट से मृत्यु होती है। परन्तु यदि अष्टम भाव में शुभ ग्रह स्थित हों तो जातक की स्वाभाविक और शान्त मृत्यु होती है।

यदि अष्टम भाव में चन्द्रमा स्थित हो और साथ में मंगल, शनि या राहु हों तो मिरगी से मृत्यु हो सकती है। किसी भी भाव में क्षीण चन्द्रमा यदि अशुभ ग्रहों से पीड़ित हो तब भी इसी प्रकार से मृत्यु होती है। यदि अष्टम भाव में मंगल हो और उस पर बली शनि की दृष्टि हो तो सर्जरी या गुदा की बीमारी या आँख की बीमारी मृत्यु का कारण बन सकती है। यदि क्षीण चन्द्रमा मंगल, शनि या राहु से युक्त होकर अष्टम भाव में स्थित हो तो जायदाद या डूबकर या अग्नि या हथियार से मृत्यु हो सकती है। यदि चन्द्रमा, सूर्य मंगल और शनि ८, ५ या ९ भाव में स्थित हों तो ऊंचाई से गिरकर, डूबकर या तूफान या बिजली गिरने से मृत्यु होती है। यदि चन्द्रमा अष्टम में, मंगल नवम में, सूर्य लग्न में, और शनि पंचम में हो तो वज्रपात या पेड़ से गिरकर मृत्यु होती है। जब क्षीण चन्द्रमा छठे या आठवें भाव में हो और चौथे तथा दसवें भाव में अशुभ ग्रह स्थित हों तो ऊर्जा के षड़यन्त्र से मृत्यु होती है।

यदि सूर्य अष्टम में, चन्द्रमा लग्न में, बृहस्पति द्वादश में हो और चौथे भाव में अशुभ ग्रह स्थित हो तो वह व्यक्ति चारपाई से गिरकर मर सकता है। जब लग्नेश लग्न से ६४ वें नवांश में हो या दबा हुआ हो या छठे भाव में हो तो भुखमरी से मृत्यु होती है। यदि सूर्य चौथे भाव में, चन्द्रमा दसवें भाव में और शनि आठवें भाव

में हो तो जातक को लकड़ी के एक टुकड़े से चोट लगेगी और वह मर जाएगा। यदि सूर्य, चन्द्रमा और बुध सप्तम भाव में स्थित हों, शनि लग्न में हो और मंगल १२ वें भाव में हो तो जन्मभूमि से बाहर शान्त वातावरण में शान्ति से मृत्यु होती है। यदि सूर्य और चन्द्रमा आठवें या छठे भाव में स्थित हों तो जातक खूंखार जानवर द्वारा मारा जाता है।

यदि बुध और शुक्र अष्टम भाव में हों तो नींद में जातक की मृत्यु होती है। यदि अष्टम भाव में बुध और शनि स्थित हों तो जातक को फांसी की सजा मिलती है। यदि चन्द्रमा और बुध छठे या आठवें भाव में युक्त हों तो जहर से मृत्यु होगी।

यदि अष्टम भाव में चन्द्रमा, मंगल और शनि स्थित हों तो हथियार से मृत्यु होती है। बारहवें भाव में मंगल और आठवें भाव में शनि होने पर भी इसी प्रकार मृत्यु होती है। यदि छठे भाव में मंगल हो तो जातक की मृत्यु हथियार से होती है। यदि राहु चतुर्थेश के साथ छठे भाव में हो तो डकैती या चोरी के कारण उग्रता द्वारा मृत्यु होती है। यदि चन्द्रमा मेष या वृश्चिक राशि में हो और पापकर्तरी योग में हो तो जातक जलकर या हथियार से मरता है। यदि अष्टम में चन्द्रमा, दसम में मंगल, चतुर्थ में शनि और लग्न में सूर्य हो तो कुन्द वस्तु से मृत्यु होती है। यदि सप्तम में मंगल और लग्न में चन्द्रमा तथा शनि हो तो जातक की मृत्यु संताप से होती है।

यदि मंगल और सूर्य राशि परिवर्तन में हों और अष्टमेश से केन्द्र में स्थित हों तो जातक को सरकार द्वारा मृत्यु दण्ड मिल सकता है। यदि लग्नेश और अष्टमेष कमजोर हों और मंगल षष्ठेश से युक्त हो तो जातक की युद्ध में मृत्यु हो सकती है। जब शनि लग्न में हो, राहु क्षीण चन्द्रमा के साथ सप्तम भाव में हो और शुक्र नीच का हो तो जातक हाथ और पैर के अंगोच्छेदन से पीड़ित रहेगा। यदि लग्न का स्वामी मंगल हो (यदि नवांश स्वामी मंगल हो) और वहां सूर्य और राहु स्थित हों, सिंह में बुध और क्षीण चन्द्रमा स्थित हो तो पेट के आपरेशन से जातक की मृत्यु होती है। जब शनि लग्न में हो और उसपर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तथा सूर्य, राहु और क्षीण चन्द्रमा युक्त हों तो जातक की मृत्यु छुरा मारने या गोली से होती है।

साधारण नियम यह है कि शनि, मांदि और राहु से युक्त लग्नेश द्वारा दृष्ट चन्द्रमा यदि दुःस्थान में स्थित हो तो अस्वाभाविक मृत्यु होती है।

यदि नवांश लग्न से सप्तमेश शनि से युक्त हो या ६, ८ या १२ वें भाव में स्थित हो तो जातक की मृत्यु जहर से होती है। यदि वही स्वामी राहु या केतु से युक्त हो तो वह फांसी लगाकर जीवन का अन्त कर लेता है। यदि चन्द्रमा से पंचम

या नवम राशि पर अशुभ ग्रह की दृष्टि या युक्ति हो और जब अष्टम भाव अर्थात २२ वें द्रेष्काण में सर्प, निगड़, पाश या आयुध द्रेष्काण का उदय हो तो फांसी लगाकर आत्महत्या करने से मृत्यु होती है। जब चौथे और दसवें या त्रिकोण भाव में अशुभ ग्रह स्थित हों और जब अष्टमेश लग्न में मंगल से युक्त हो तो जातक फांसी लगाकर आत्महत्या करता है।

२२ वां द्रेष्काण लग्न के द्रेष्काण से लिया जाता है। यदि लग्न कुम्भ में २७° अंश पर है तो कुम्भ का तीसरा द्रेष्काण होगा। यहां से २२ वां द्रेष्काण तुला का पहला द्रेष्काण होगा।

जिस द्रेष्काण से आत्महत्या, हत्या, फांसी, दुर्घटना आदि जैसी अस्वाभाविक मृत्यु का संकेत मिलता है उन विभिन्न प्रकार के द्रेष्काणों का विवरण द्रेष्काण की सारणी में देखें।

यदि शुक्र ॥॥ राशि में, सूर्य लग्न में और चन्द्रमा सप्तम भाव में अशुभ ग्रह से युक्त हो तो मृत्यु का कारण एक स्त्री होगी। यदि मीन राशि में सूर्य, चन्द्रमा और अशुभ ग्रह हों और वही राशि लग्नमें हो और यदि अष्टम भाव में अशुभ ग्रह स्थित हों तो एक दुष्ट स्वामिनी के कारण मृत्यु होती है। यदि अष्टम भाव में चन्द्रमा और शनि स्थित हों और मंगल चौथे भाव में हो या सूर्य सप्तम में या चन्द्रमा और बुध छठे भाव में हों तो जातक की मृत्यु खाने में जहर के कारण होती है।

जब लग्नेश या सप्तमेश द्वितीयेश और चतुर्थेश से युक्त हों तो अपच के कारण मृत्यु होती है। जब चन्द्रमा अष्टम भाव में जलीय राशि में हो तो खाने के कारण मृत्यु होती है। जब बुध सिंह राशि में अशुभ ग्रह से दृष्ट हो तो बुखार से मृत्यु होती है। जब शुक्र अष्टम भाव में स्थित हो और अशुभ ग्रह से दृष्ट हो तो खाने, गठिया या मधुमेह से मृत्यु होती है। जब बृहस्पति अष्टम भाव में जलीय राशि में हो तो फेफड़े में खराबी से मृत्यु होती है। यदि राहु अष्टम भाव में अशुभ ग्रह से दृष्ट हो तो चेचक, घाव, सांप के काटने, गिरने या पित्त दोष से मृत्यु होती है। जब मंगल छठे भाव में सूर्य से दृष्ट हो तो हैजा से मृत्यु होती है। यदि मंगल और शनि अष्टम भाव में स्थित हों तो महाधमनी में खराबी के कारण मृत्यु होती है। नवम भाव में बुध और शुक्रके स्थित होने पर भी हृदय रोग से मृत्यु होती है। जब चन्द्रमा कन्या राशि में हो और अशुभ ग्रहों के घेरे में हो तो रक्त की कमी के कारण मृत्यु होती है। जब कुण्डली में ये विशेष योग न हों तो मृत्यु के कारण का पता लगाने के लिए प्राचीन पुस्तकों के अनुसार २२ वें द्रेष्काण के स्वामी को देखा जाता है। अष्टम भाव में स्थित ग्रह जिस द्रेष्काण में स्थित है वहाँ से भी इसका अवधारण किया जाता है।

विभिन्न राशियों में स्थित २२ वें द्रेष्काण से मृत्यु के कारण का पता लगता है—

मेष

प्रथम द्रेष्काण (स्वामी मंगल)—प्लीहा और पित्त की शिकायत या जहर।

दूसरा द्रेष्काण (स्वामी सूर्य)—जलीय रोग।

तीसरा द्रेष्काण (स्वामी बृहस्पति)—जल में डूब कर।

वृषभ

प्रथम द्रेष्काण (स्वामी शुक्र)—गधा, घोड़ा, खच्चर।

दूसरा द्रेष्काण (स्वामी बुध)—पित्त रोग, अग्नि, हत्या।

तीसरा द्रेष्काण (स्वामी शनि)—घोड़ा या भवन से गिरकर।

मिथुन

प्रथम द्रेष्काण (स्वामी बुध)—खाँसी, फेफड़े के रोग, क्षय।

दूसरा द्रेष्काण (स्वामी शुक्र)—टायफायड।

तीसरा द्रेष्काण (स्वामी शनि)—किसी सवारी या ऊँचाई से गिरकर।

कर्क

प्रथम द्रेष्काण (स्वामी चन्द्रमा)—पेय, शूल।

दूसरा द्रेष्काण (स्वामी मंगल)—जहर।

तीसरा द्रेष्काण (स्वामी बृहस्पति)—ट्यूमर, मतिभ्रम या दृष्टिभ्रम, मूर्च्छा।

सिंह

पहला द्रेष्काण (स्वामी सूर्य)—संदूषित जल पीने के कारण।

दूसरा द्रेष्काण (स्वामी बृहस्पति)—फेफड़े का पानी, जलोदर।

तीसरा द्रेष्काण (स्वामी मंगल)—बीमारी में यात्रा, सर्जरी।

कन्या

प्रथम द्रेष्काण (स्वामी बुध)—सिरदर्द, वायु रोग।

दूसरा द्रेष्काण (स्वामी शनि)—ऊँचाई से गिरकर।

तीसरा द्रेष्काण (स्वामी शुक्र)—विस्फोट, ग्लास, डूबकर।

तुला

प्रथम द्रेष्काण (स्वामी शुक्र)—स्त्री, गिरकर, पशु।

दूसरा द्रेष्काण (स्वामी शनि)—अपच, पेचिस।

तीसरा द्रेष्काण (स्वामी बुध) जल, साँप।

वृश्चिक

प्रथम द्रेष्काण (स्वामी मंगल)—जहर, हथियार।

दूसरा द्रेष्काण (स्वामी बृहस्पति)—गिरने, भारी बोझ-ढोने, पुठ्ठे में शिकायत।
तीसरा द्रेष्काण (स्वामी चन्द्रमा)—भूमि (खान), पत्थर।

धनु

प्रथम द्रेष्काण (स्वामी बृहस्पति)—बृहदंत्र।
दूसरा द्रेष्काण (स्वामी मंगल)—जहर, तीर, तेज हथियार।
तीसरा द्रेष्काण (स्वामी सूर्य)—पेट की शिकायत, जल या जल के पशु।

मकर

प्रथम द्रेष्काण (स्वामी शनि)—शेर या जंगली जानवर द्वारा भिड़न्त, विच्छू, दंस।
दूसरा द्रेष्काण (स्वामी शुक्र)—साँप के काटने से।
तीसरा द्रेष्काण (स्वामी बुध)—चोर, बन्दूक से, बुखार से।

कुंभ

प्रथम द्रेष्काण (स्वामी शनि)—स्त्री, पेल्वी की अव्यवस्था, रतिज रोग।
दूसरा द्रेष्काण (स्वामी बुध)—प्रजनन अंग में रोग।
तीसरा द्रेष्काण (स्वामी शुक्र)—संक्रामक रोग।

मीन

प्रथम द्रेष्काण (स्वामी बृहस्पति)—पेचिस, जलोदर, भोजन नली में विकार।
दूसरा द्रेष्काण (स्वामी चन्द्रमा)—जलोदर, भोजन नली में विकार।
तीसरा द्रेष्काण (स्वामी मंगल)—पेट का फूलना।

द्रेष्काण की सारणी

आयुध	पाश	निगड़	पक्षी	सर्प	चतुष्पाद
सिंह का तीसरा	वृश्चिक	मकर	सिंह का	वृश्चिक का	कर्क का
मेष का तीसरा	का दूसरा	का पहला	पहला,	पहला	पहला
धनु का तीसरा			कुम्भ का		
तुला का तीसरा			पहला	कर्क का	मेष का
			वृषभ का	तीसरा	दूसरा
मिथुन का तीसरा			तीसरा	मीन का	वृषभ का
				तीसरा	दूसरा
धनु का पहला			तुला का		सिंह का
मेष का पहला			दूसरा		पहला
कन्या का दूसरा					वृश्चिक का
मिथुन का दूसरा					तीसरा

यदि अष्टम भाव पर दृष्टि या स्थिति द्वारा प्रभाव डालने वाले ग्रह हैं तो वे उस भाव के स्वामी से सम्बन्धित शरीर के अंग में बीमारी या घाव के कारण होते हैं। यदि अष्टम भाव पर एक से अधिक ग्रहों की दृष्टि या युक्ति है तो दो या उससे अधिक रोगों से मृत्यु हो सकती है।

यदि अष्टम भाव में अशुभ ग्रह स्थित हो तो दर्दनाक मृत्यु होती है भले ही स्वाभाविक हो या प्रचंड। किन्तु यदि अष्टम भाव उत्तम स्थिति में हो तो जातक की मृत्यु अचानक और शीघ्र होती है।

इस प्रकार जहाँ अष्टम भाव में कोई ग्रह स्थित न हो या उसपर किसी ग्रह की दृष्टि न हो तो २२ वें द्रेष्काण का स्वामी मृत्यु के कारणों का संकेत देता है। अष्टम भाव में स्थित या दृष्टि डालने वाले ग्रह मृत्यु के कारण का संकेत देते हैं। अष्टम भाव पर सूर्य का प्रभाव होने पर अग्नि से, चन्द्रमा का प्रभाव होने पर जल से, मंगल का प्रभाव होने पर हथियार से, बुध का प्रभाव होने पर बुखार से, बृहस्पति का प्रभाव होने पर ऐसे कारणों से जिनका निदान नहीं है, शुक्र का प्रभाव होने पर अधिक मैथुन से और शनि का प्रभाव होने पर भुखमरी; अपोषक भोजन आदि से मृत्यु होती है।

मृत्यु के स्थान का संकेत नवांश लग्न का स्वामी जिस राशि में स्थित हो उसके द्वारा, या नवांश लग्न के स्वामी पर दृष्टि डालने वाला ग्रह जिस राशि में स्थित है उसके द्वारा, या नवांश लग्न का स्वामी नवांश में जिस राशि में स्थित हैं उस राशि के स्वामी द्वारा मिलता है।

यदि अष्टम भाव चर राशि है तो जातक की मृत्यु विदेश में या जन्म स्थान से काफी दूर होगी। जब यह अचर राशि हो तो जन्म स्थान पर मृत्यु होती है। यदि इस प्रकार की स्थिति हो और ग्रह भी इसी प्रकार स्थित हों जिससे जन्म स्थान पर मृत्यु का संकेत मिलता हो तो जातक चाहे कहीं पर भी रहता हो या कारोबार करता हो, मृत्यु के समय वह अपने जन्म स्थान पर खींचकर चला जाएगा।

यदि अष्टम भाव द्विस्वभाव राशि हो तो जातक की मृत्यु यात्रा के दौरान या जब वह एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा कर रहा हो तब होती है।

आयु का निर्धारण करने वाले अष्टम भाव के परिणामों का समय और फल

जातक की आयु विभिन्न पद्धतियों से निर्धारित की जा सकती है। किन्तु प्राचीन पुस्तकों के अनुसार जन्म के बाद बारह वर्ष की आयु से पूर्व जीवन की

अवधि अवधारित करना संभव नहीं है। ऐसा इसलिए है कि नवजात शिशु का जीवन उसके ग्रहों के कर्म द्वारा विनियमित होता है। यदि शिशु जन्म से पहले चार वर्षों के भीतर मर जाता है तो कहा जाता है कि ऐसा माँ के बुरे कर्म के कारण हुआ। चार से आठ वर्षों के भीतर मृत्यु के कारण पिता के बुरे कर्म होते हैं। हैं। यदि बच्चा आठ से बारह वर्षों के बीच मरता है तो ऐसा उसके अपने पिछले जीवन के पापों के कारण होता है।

आयु का सही अवधारण हमेशा ही एक कठिन काम रहा है। ज्योतिष और ज्योतिष सम्बन्धी गणित दोनों के अनुसार अनेक पद्धतियाँ प्रचलित हैं। हम लोगों के अनुभव में विंशोत्तरी दशा के आधार पर मारक विचार काफी संतोष जनक पाया है क्योंकि ग्रह के आधार पर किसी व्यक्ति के संभावित जीवनकाल पर सही-सही विचार करने में इससे सहायता मिलती है। गणित सम्बन्धी पद्धतियों में से पिण्डायु और अंशायु विशेषकर अंशायु पर प्रख्यात प्राचीन लेखकों का ध्यान आकर्षित हुआ है। बारहमिहिर कहते हैं कि सत्याचार्य का यह मत कि किसी ग्रह द्वारा दी गई आयु नवांश की स्थिति पर निर्भर करती है, ज्योतिष के अधिकतर लेखकों के मत के अनुरूप है। आयु से सम्बन्धित शुद्ध गणितीय पद्धतियों के आधार पर कोई निष्कर्ष निकालने से पूर्व उनकी सत्यता की जाँच के लिए उसे हजारों कुण्डलियों पर लागू करना चाहिए। कुछ उदाहरणों पर निष्कर्षों के आधार पर इसे अस्वीकार नहीं कर देना चाहिए। हम इन विभिन्न पद्धतियों की जाँच कर रहे हैं और उनमें से कुछ से, विशेषकर अंशायु से काफी सही परिणाम मिला है।

पिण्डायु पद्धति

पिण्डायु को ग्रहदत्तायु भी कहा जाता है क्योंकि यह जब ग्रह पूरी उच्च स्थिति में हो तो उन सभी ग्रहों द्वारा स्वीकृत कुल जीवन काल होता है।

प्रत्येक ग्रह जब वह पूरी उच्च स्थिति में हो तो कुल जीवन काल देता है और जब वह पूरे नीच स्थिति में हो तो जीवन की आधी अवधि प्रदान करता है। मध्यवर्ती स्थिति में ग्रह आधा जीवनकाल और इसकी नीच स्थिति से ग्रह की दूरी के अनुपात में जीवन काल प्रदान करता है।

अपनी पूरी उच्च स्थिति में ग्रहों द्वारा दिया जाने वाला जीवन काल निम्न प्रकार होता है—

सूर्य—१९ वर्ष
चन्द्रमा—२५ वर्ष
मंगल—१५ वर्ष
बुध—१२ वर्ष
बृहस्पति—१५ वर्ष
शुक्र—२१ वर्ष
शनि—२० वर्ष

वही ग्रह नीच स्थिति में निम्नलिखित अवधि प्रदान करते हैं—

सूर्य—९ वर्ष ६ महीने
चन्द्रमा—१२ वर्ष ६ महीने
मंगल—७ वर्ष ६ महीने
बुध—६ वर्ष
बृहस्पति—७ वर्ष ६ महीने
शुक्र—१० वर्ष ६ महीने
शनि—१० वर्ष

ये वे जीवन काल हैं जो प्रत्येक ग्रह जातक को प्रदान करते हैं कि वे ग्रह युक्ति या दृष्टि द्वारा अन्यथा पीड़ित न हों। किन्तु ऐसा शायद ही किसी कुण्डली में पाया जाता हो कि वह विपरीत ग्रह स्थिति से किसी न किसी प्रकार पीड़ित न हो। इस जीवन काल में से बुरी दृष्टि और अन्य बुरे प्रभावों के कारण कुछ कटौती करनी होती है। उस प्रयोजन के लिए कटौती की जाती हैं जिसे हरन कहा जाता है। हरन के अनेक प्रकार होते हैं जिन्हें सावधानीपूर्वक लागू करना होता है और जो किसी विशेष कुण्डली में बुरे प्रभावों की गहनता पर निर्भर करता है।

चार प्रकार के हरन या कटौतियां लागू करनी चाहिए जो नीचे दिये जाते हैं—

१. चक्रपथ हरन
२. शत्रुक्षेत्र हरन
३. अस्तंगत हरन
४. क्रूरोदय हरन

चक्रपथ हरन

लग्न आरोही होता है। यहाँ से सप्तम भाव अर्थात् १८०° अंश अवरोही होता है। अवरोही क्षितिज है। लग्न से क्षितिज की ओर पश्चिम दिशा में १२, ११, १०, ९, ८ और ७ वें भाव आते हैं। लग्न से पश्चिम की ओर १८० अंश के भीतर पाये जाने वाले ग्रह कटौती करते हैं जबकि जो ग्रह जन्म के समय क्षितिज के नीचे होते हैं अर्थात् प्रथम छः भावों में स्थित ग्रह, कटौती से मुक्त रहते हैं। जो ग्रह पश्चिम दिशा में लग्न के निकटतम हैं वे जीवन काल के अधिकांश भाग का नाश करते हैं, जबकि जो ग्रह लग्न से काफी दूरी पर स्थित होते हैं वे इतना नाश नहीं करते हैं। ग्रह के स्वभाव के अनुसार भी इस कटौती में अन्तर होता है। शुभ ग्रहों के मामले में बुरे ग्रहों की अपेक्षा आधा हरन होता है। चन्द्रमा, बृहस्पति, शुक्र और शुभ ग्रहों से युक्त बुध शुभ ग्रह होते हैं जबकि सूर्य, मंगल, शनि और बुरी तरह से पीड़ित बुध बुरे ग्रह होते हैं—

चक्रपथ हरन

लग्न से पश्चिम की ओर

ग्रह	१२ वां भाव	११ वां भाव	१० वां भाव	९ वां भाव	८ वां भाव	७ वां भाव
अशुभ	१	१/२	१/३	१/४	१/५	१/६
शुभ	१/२	१/४	१/६	१/८	१/१०	१/१२

यदि इन छः भावों में से किसी एक में दो या दो से अधिक ग्रह स्थित हों तो प्रत्येक भाव में प्रबल ग्रह पर कटौती लागू करनी चाहिये।

शत्रु क्षेत्र हरन

चक्र पथ हरन लागू करने के बाद शत्रु क्षेत्र हरन लागू करना चाहिये। यह अपने शत्रु भावों में ग्रहों की स्थिति पर लागू होता है। जब कोई ग्रह शत्रु राशि में स्थित हो तो चक्रपथ हरन से प्राप्त एक तिहाई अवधि अवश्य कम कर देनी चाहिये। यदि ग्रह वक्र हो तो यह कटौती नहीं करनी चाहिये। कुछ लेखक कहते हैं कि मंगल को शत्रु क्षेत्र हरन से छूट है जबकि अन्य कहते हैं कि केवल वक्र ग्रहों पर ही विचार करना चाहिये। वक्र शब्द संस्कृत का है। इसका अर्थ मंगल और वक्री दोनों ही होता है। किन्तु सभी प्रकार के व्यावहारिक प्रयोजनों के लिए बक्री ग्रह और मंगल शत्रुक्षेत्र हरन के भीतर नहीं आते।

अस्तंगत हरन

अस्त का अर्थ दाह होता है। जब कोई ग्रह सूर्य के बहुत निकट हो तो सूर्य की दहन शक्ति द्वारा दब जाने के कारण वह अपनी सारी शक्ति खो देता है। वह व्यावहारिक रूप से प्रायः बेकार हो जाता है। अतः जब कोई ग्रह सूर्य से कुछ अंश के भीतर दूरी पर हो तो इसे दबा हुआ कहा जाता है और चक्र पथ तथा शत्रु क्षेत्र हरन के बाद प्राप्त जीवन काल में से आधा कम कर देना चाहिये। जब चन्द्रमा सूर्य से १२° आगे या पीछे हो तो वह अस्तंगत होता है। जब मंगल, बुध, बृहस्पति शुक्र और शनि सूर्य के आगे या पीछे क्रमशः १७°, १४°, ४°, और ५° पर हों तो वे दाह में होते हैं। यदि बुध और शुक्र वक्री हों तो सूर्य से क्रमश १२° और ८° पर दाह में होते हैं। किन्तु यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिये कि शुक्र और शनि अस्तंगत हरन से मुक्त हैं भले ही वे दाह में हों। इस पर लगभग सभी लेखक एक मत हैं।

क्रूरोदय हरन

जब लग्न में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित हों तो चक्रपथ, शत्रु क्षेत्र और अस्तंगत हरन के कारण कटौती के बाद पहले प्राप्त अवधि में उनकी विद्यमानता के कारण कटौती करनी चाहिये। लग्न जितना अंश पार कर गया है उसके साथ ग्रहों की कुल अवधि से गुणा करके यह निकाला जाता है। परिणाम में १०८ का भाग दिया जाता है। भागफल जो आता है उसे जीवन काल के जोड़ में से घटा दिया जाता है। शेष को महीना, दिन आदि में परिवर्तित करके भागफल में जोड़ दिया जाता है जो वर्ष होता है।

यदि लग्न में स्थित क्रूर ग्रह पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो इस प्रकार प्राप्त हरन अन्यथा प्राप्त हरन का आधा हो जाएगा। यदि लग्न में दो या अधिक ग्रह स्थित हों तो जो ग्रह लग्न के अंश से निकटतम हो उसको हिसाब में लेना चाहिये। इस प्रकार यदि लग्न राशि के १५° पर हो और उसी राशि में मंगल २०° पर और शनि २५° पर हो तो निकटतम ग्रह अर्थात् मंगल को अधिमान्यता दी जानी चाहिए—

पिण्डायु पद्धति को एक उदाहरण द्वारा सर्वोत्तम ढंग से स्पष्ट किया जा सकता है।

कुण्डली सं० ३३

जन्म तारीख ८-८-१९१२ समय ७-३५ बजे संध्या (आई. एस. टी.) बंगलौर

जन्म समय ग्रहों का देशान्तर—

ग्रह	अंश	कला
सूर्य	११४	२६
चन्द्रमा	५५	०३
मंगल	१४१	४९
बुध	१३५	२५
बृहस्पति	२२४	२५
शुक्र	१२३	४२
शनि	४१	३६
राहु	३५४	१५
केतु	१७४	१५

राशि

नवांश

मंगल की दशाशेष—६ वर्ष १ महीना ६ दिन

कुण्डली संख्या ३३ के लिए ग्रहों का निरयण देशान्तर दिया गया है। आयु का चाप ग्रह के देशान्तर में उच्च स्थान के देशान्तर को घटाकर प्राप्त किया जाता है। यदि अन्तर १८०° से अधिक हो तो इसे ज्यों का त्यों अलग रखें। यदि अन्तर १८०° से कम हो तो इसे ३६०° से घटाकर इसमें संशोधन कर लें। यह आयु का चाप प्रदान करता है। जब कोई ग्रह पूरी उच्च स्थिति में हो तो वह जीवन का पूरा काल प्रदान करता है। यदि इसकी स्थिति भिन्न हो तो वह जो वर्षों की संख्या प्रदान करता है उसे तीन के नियम द्वारा अवधारित किया जाता है।

$$\text{किसी ग्रह द्वारा प्रदान की जाने वाली अवधि} \;\; \text{ग्रह का} \frac{\text{पूर्ण जीवन काल} \times \text{आयु का चाप}}{३६०^{\circ}}$$

अब हम विभिन्न ग्रहों की आयु का चाप अवधारित करेंगे—

ग्रह	उसका देशान्तर	उसकी पूर्ण उच्च स्थिति
सूर्य	११४° २६′	१०°
चन्द्रमा	५५° ३′	३३°
मंगल	१४१° ४९′	२९८°
बुध	१३५° २५′	१६५°
बृहस्पति	२२४° २५′	९५°
शुक्र	१२३° ४२′	३५७°
शनि	४१° ३६′	२००°

इस कुण्डली में आयु का निम्नलिखित चाप पाया जाता है।

ग्रह	आयु का चाप	
	अंश	कला
सूर्य	२५५	३४
चन्द्रमा	३३७	५७

ग्रह	आयु का चाप	
	अंश	कला
मंगल	२०३	४९
बुध	३३०	२५
बृहस्पति	२३०	३५
शुक्र	२३३	३४
शनि	२०१	२६

स्फुट आयु वर्ष (प्रत्येक ग्रह के देशान्तर द्वारा अंशदत्त अवधि)

सूर्य $\frac{२५५^{\circ}३४' \times १९}{३६०^{\circ}}$ = १३ वर्ष ५ महीने २६ दिन

चन्द्रमा $\frac{३३७^{\circ}५७' \times २५}{३६०^{\circ}}$ = २३ वर्ष ५ महीने १९ दिन

मंगल $\frac{२०३^{\circ}४९' \times १५}{३६०^{\circ}}$ = ८ वर्ष ५ महीने २६ दिन

बुध $\frac{३३०^{\circ}२५' \times १२}{३६०^{\circ}}$ = ११ वर्ष ० महीने ० दिन

बृहस्पति $\frac{२३०^{\circ}३५' \times १५}{३६०^{\circ}}$ = ९ वर्ष ७ महीने ६ दिन

शुक्र $\frac{२३३^{\circ}३४' \times २१}{३६०^{\circ}}$ = १३ वर्ष ७ महीने १३ दिन

शनि $\frac{२०१^{\circ}२६' \times २०}{३६०^{\circ}}$ = ११ वर्ष २ महीने ८ दिन

अबतक प्राप्त जीवन काल में हरन को लागू करने पर हमें निम्नलिखित परिणाम मिलता है—

ग्रह	स्फुटवर्ष			चक्रपथ	शत्रुक्षेत्र	अस्तंगत
	वर्ष	महीना	दिन			
सूर्य	१३	५	२६	—	—	—
चन्द्रमा	२३	५	१९	—	—	—
मंगल	८	५	२६	$\frac{१}{२}$	—	—
बुध	११	०	०	—	—	—
बृहस्पति	९	७	१०	$\frac{१}{२}$	—	—
शुक्र	१३	७	१३	—	$\frac{१}{३}$	—
शनि	११	२	८	—	—	—

सप्तम भाव में मंगल, बुध और शुक्र में से मंगल बली होने के कारण कटौती करेगा। क्रूरोदय हरन आवश्यक नहीं है क्योंकि लग्न में कोई क्रूर ग्रह स्थित नहीं है।

सभी प्रकार की कटौतियां लागू करने के बाद निम्नलिखित अवधि प्राप्त हुई—

ग्रह	ग्रह आयुर्दाय		
	वर्ष	महीना	दिन
सूर्य	१३	५	२६
चन्द्रमा	२३	५	१९
मंगल	६	२	२९
बुध	११	०	०
बृहस्पति	८	०	०
शुक्र	९	०	२९
शनि	११	२	०
ग्रहों द्वारा स्वीकृत कुल अवधि	८२	५	१९

अभी हमें, लग्न जो कुम्भ ९°४२′ है, द्वारा स्वीकृत जीवन काल अवधारित करना चाहिए। यह दो नवांश (६° ४०′) पार कर गया है जो दो वर्ष प्रदान करता है और शेष ३° २′ को परिवर्तित करके ५ महीने १५ दिन प्राप्त हुआ। अतः लग्न २ वर्ष ५ महीने १५ दिन प्रदान करता है। कुल आयु ८२ वर्ष ५ महीने १९ दिन+२ वर्ष ५ महीने १५ दिन = ८४ वर्ष ११ महीने ४ दिन होगी।

आयु = ८४ वर्ष ११ महीने ४ दिन

अंशायु पद्धति

अंशायु (नवांश के कारण आयु) के बारे में भट्टोत्पल ने कहा है कि यह एक मात्र सही पद्धति है। मनीथ और सारावली यह सुझाव देते हैं कि जब लग्नेश सूर्य और चन्द्रमा की अपेक्षा अधिक बली हो तभी अंशायु को लागू करना चाहिए। जिन परिस्थितियों में आयु निर्धारण की विभिन्न पद्धतियां लागू की जाती हैं उनके बारे में अलग-अलग मतों के बावजूद यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि वराहमिहिर और उनके विशिष्ट टीकाकार भट्टोत्पल ने अंशायु पद्धति को अतिमहत्त्वपूर्ण पद्धति के रूप में स्वीकार किया है। श्रीपति ने अपनी पद्धति में अंशायु का उल्लेख किया है किन्तु यथा पूर्व औसत पाठक इस पद्धति को समझने में कठिनाई महसूस करते हैं। इसे व्यवहार में लागू करने में कठिनाई महसूस करते हैं क्योंकि इसमें प्रयुक्त भाषा और शब्दावली काफी कठिन है।

सत्याचार्य के अनुसार सर्व प्रथम ग्रह के देशान्तर (स्फुट) को मिनट (कला) में परिवर्तित किया जाता है। इसमें २०० से भाग दिया जाता है। भाग फल से मेष के प्रथम बिन्दु से ग्रह जितना नवांश पार कर गया है उसकी संख्या ज्ञात होती है। भागफल में पुन: १२ का भाग करने पर नवांश की वह संख्या प्राप्त होती है जो वह ग्रह विचाराधीन राशि में पार कर चुका है। इस संख्या से वर्षों का संकेत मिलता है। शेष से उस विशेष ग्रह द्वारा स्वीकृत वर्ष का भिन्न ज्ञात होता है।

लग्न के देशान्तर का भी इसी प्रकार से हिसाब किया जाता है ताकि इसके द्वारा स्वीकृत अवधि का पता लग सके।

किसी ग्रह द्वारा इस प्रकार स्वीकृत अवधि में निम्न प्रकार से वृद्धि और कटौती की जाती है।

(क) जब कोई ग्रह उच्च स्थिति में हो या वक्री हो तो वह उपरोक्त गणित को प्राप्त वर्षों की संख्या तीन गुनी कर देता है।

(ख) जब कोई ग्रह वर्गोत्तम में या स्वनवांश में या स्वराशि में या स्वद्रेष्काण में हो तो वह वर्षों की संख्या दुगुनी कर देता है।

(ग) जहाँ ऊपर (क) और (ख) दोनों के अनुसार अपनी स्थिति के कारण ग्रह को दुगुना या तीन गुना करना है वहां प्रबल कारक द्वारा केवल एक बार ही गुणा करना है। उसी प्रकार की कटौती की जाती है जो पिण्डायु पद्धति में निर्धारित है।

(घ) **चक्रपथ हरन**—चक्रपथ के सम्बन्ध में कटौती पिण्डायु के सम्बन्ध में पृष्ठ ७५ पर दिए गये विवरण के अनुसार की जाती है।

(ङ) **शत्रुक्षेत्र हरन**—शत्रु भाव में स्थित प्रत्येक ग्रह से चक्रपथ कटौती के बाद बचे जीवन काल की एक तिहाई की हानि होती है। यद्यपि वह कटौती मंगल तथा वक्री ग्रहों पर लागू नहीं होती है।

(च) **अस्तंगत हरन**—जब कोई ग्रह सूर्य के दाह में हो तो वह चक्रपथ और शत्रुक्षेत्र की स्थिति के कारण कटौती के बाद शेष में से आधी अवधि कम कर देता है। जब मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि सूर्य के आगे या पीछे क्रमश: १७° १४°, ११°, १०° और ५° के भीतर हो। शुक्र और शनि के लिए यह कटौती नहीं की जाती है।

(छ) **क्रूरोदय हरन**—लग्न में क्रूर ग्रहों के स्थित होने के बावजूद पिण्डायुर्दशा जैसी कटौती नहीं की जाती है।

यह पद्धति नीचे उदाहरण द्वारा स्पष्ट की जाती है।

कुण्डली सं० ३४

जन्म तारीख २९/३०–१२–१८७९ जन्म समय १–० बजे प्रात: (स्थानीय समय) अक्षांश ९° ५०′ उत्तर, देशा० ७८° १५′ पूर्व ।

राशि

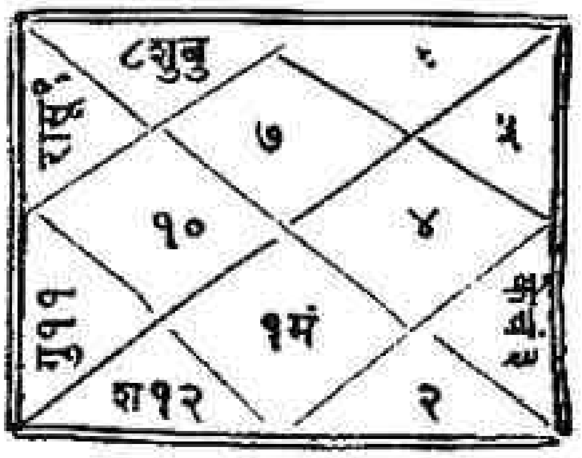

नवांश

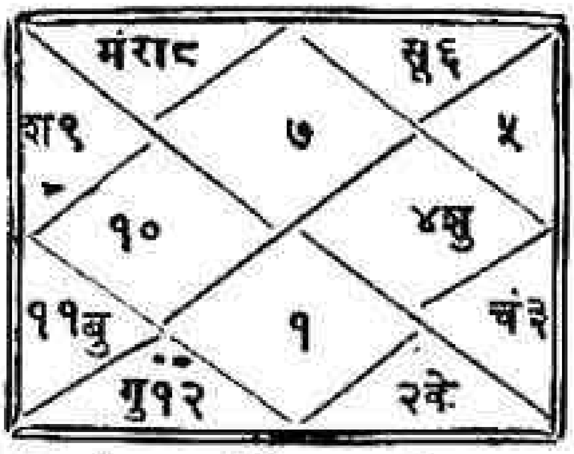

बृहस्पति की दशा शेष—४ वर्ष १ महीने २० दिन

ग्रह	देशान्तर	देशान्तर मिनट (कला) में
सूर्य	२५७° ४′	१५४२४
चन्द्रमा	८९° ५८′	५३९८
मंगल	२३° २६′	१४०६
बुध	२३४° ३६′	१४०७६
बृहस्पति	३१७° ५७′	१९०७७
शुक्र	२११° ५७′	१२७१७
शनि	३४८° ३२′	२०९१२
लग्न	१८२° १८	१०९३८

एक राशि में जितना नवांश पार कर चुका है उसे प्राप्त करने के लिए किसी ग्रह के देशान्तर (अंश में परिवर्तित करके) में २०० का भाग दें (इससे प्रत्येक ग्रह द्वारा स्वीकृत वर्षों की संख्या ज्ञात होती है)

$$\text{सूर्य} = \frac{१५४२४}{२००} = ७७\frac{२४}{२००}$$

भाग फल ७७ में पुन: १२ का भाग करने पर शेष ५ बचता है जो उस नवांश की संख्या है जो सूर्य मेष के प्रथम बिन्दु से पार कर गया है। दूसरे शब्दों में सूर्य का योगदान ५ वर्ष और एक वर्ष का $\frac{२४}{२००}$ भाग अर्थात् १ महीने १३ दिन है। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह द्वारा स्वीकृत अवधि निकालें।

ग्रह	स्वीकृत अवधि		
	व०	म०	दि०
सूर्य	५	१	१३
चन्द्रमा	२	११	२६

मंगल	७	०	१०
बुध	१०	४	१७
बृहस्पति	११	४	२०
शुक्र	३	७	२
शनि	८	६	२१
लग्न	६	८	८

भरन और हरन—

चन्द्रमा वर्गोत्तम में है, मंगल राशि और नवांश में अपनी राशि में स्थित है। और बृहस्पति नवांश में अपनी राशि में स्थित है। अतः उनकी अवधि दुगुनी हो जाती है।

		व०	म०	दि०		व०	म०	दि०
चन्द्रमा	=	२	११	२६×२	=	५	११	२२
मंगल	=	७	०	१८×२	=	१४	०	२०
बृहस्पति	=	११	४	२०×२	=	२३	९	१०

हरन—

चक्र पथ—क्रूर ग्रह सप्तम भाव में स्थित है अतः भरना के बाद अपनी अवधि में $\frac{1}{2}$ की कटौती करेगा।

शुभ ग्रह चन्द्रमा नवम भाव में स्थित है और वह भरना के बाद प्राप्त अपनी अवधि में $\frac{1}{2}$ की कटौती करेगा।

चक्रपथ हरन के बाद की स्थिति—

मंगल = ११ वर्ष ८ महीने १७ दिन

चन्द्रमा = ५ वर्ष २ महीने २३ दिन

शत्रु क्षेत्र—चन्द्रमा और बुध शत्रु राशि में स्थित हैं अतः वे अपनी अपनी अवधि में $\frac{1}{3}$ की कटौती करेंगे। चक्रपथ हरन के बाद चन्द्रमा की अवधि = ५ वर्ष २ महीने २३ दिन है $\frac{1}{3}$ कटौती के बाद चन्द्रमा की अवधि = ३वर्ष ५ महीने २५ दिन, बुध की अवधि = १० वर्ष ४ महीने १७ दिन $\frac{1}{3}$ कटौती के बाद बुध की अवधि = ६ वर्ष ११ महीने १ दिन।

अतंगत हरन—

कोई ग्रह दाह में नहीं है—

सभी ग्रहों द्वारा स्वीकृत अवधि का जोड़—

ग्रह	जीवन काल		
	वर्ष	मास	दिन
सूर्य	५	१	१३
चन्द्रमा	३	५	२५
मंगल	११	८	१७
बुध	६	११	१
बृहस्पति	२२	९	१०
शुक्र	३	७	२
शनि	८	६	२१
लग्न	६	८	८
जोड़	६८	१०	७

कुण्डली संख्या ३४ के जातक की मृत्यु १५-४-१९५० की हुई अर्थात् ७० वर्ष ३ महीने १५ दिन की आयु में, जो अंशायुर्दाय के आधार पर प्राप्त जीवन काल के काफी निकट है।

अन्य पद्धतियां

जीवासर्मायु आदि जैसी आयु के अवधारण की अन्य अनेक गणित सम्बन्धी पद्धतियां हैं किन्तु हम समझते हैं कि इस पुस्तक में उनकी व्याख्या करना आवश्यक नहीं है। हमारे विचार में गणित सम्बन्धी पद्धति में सबसे विश्वस्त 'जैमिनी ज्योतिष का अध्ययन' नामक हमारी पुस्तक में व्याख्यात्मक रूप में इसकी चर्चा की गई है। यदि पाठक जैमिनी पद्धति के अध्ययन में रुचि रखते हैं तो वे इस पुस्तक को पढ़ें।

अष्टक वर्ग पद्धति समान रूप से महत्त्वपूर्ण है। किन्तु यह पद्धति काफी विश्वस्त प्रतीत नहीं होती। 'भविष्यवाणी की अष्टक वर्ग प्रणाली' नामक हमारी पुस्तक में आयु निर्धारण की अष्टक वर्ग पद्धति पर विस्तार में चर्चा की गई है।

फिर भी प्राचीन पुस्तकों में एक अन्य पद्धति दी गई है। इसमें शनि, वृहस्पति सूर्य और चन्द्रमा के देशान्तर को जोड़ना होता है। हमारे अनुभव में यह पद्धति काफी सरल है। इससे १२^{0} के गुणक में ब्रह्माण्ड में एक विन्दु प्राप्त होती है। लघु मध्यम और दीर्घ जीवन के मामले में जब शनि क्रमशः प्रथम, दूसरे या तीसरे चक्र में गोचर में इस विन्दु पर होता है।

यद्यपि जैमिनी पद्धति, पिण्डायुर्दशा और अंशायुर्दशा से काफी सही परिणाम मिलते हैं, कुण्डली और दशा तथा भुक्ति के बल के आधार पर आयु का अवधारण

करने में अधिक होशियारी है। पहला कदम यह होगा कि प्रस्तुत कुण्डली में पहले दिए गए योगों के आधार पर बालारिष्ट, अल्पायु, मध्यम आयु या पूर्णायु योग है। उसके बाद अति प्रबल मारक ग्रह की अवधारणा करके आयु का निर्धारण किया जा सकता है।

मृत्यु की अवधि का अवधारण

इस पुस्तक के प्रथम भाग में हमने शीर्षक 'आयु का निर्धारण' के भीतर मारक ग्रहों के अवधारण के सिद्धान्त पर संक्षेप में चर्चा की है। इस अध्याय में हम उसी विषय पर कुछ विस्तार में चर्चा करेंगे। इसमें पुनरावृत्ति होगी किन्तु उद्देश्य यह है कि पाठक विषय को पूर्णतः समझ लें।

मारक ग्रहों को तीन भागों में बांटा जा सकता है।

(क) मृत्यु के मूल निर्धारक
(ख) मृत्यु के गौण निर्धारक
(ग) मृत्यु के तृतीय निर्धारक

मृत्यु के मूल निर्धारक—तीसरा और आठवां भाव जीवन भाव होते हैं। इन दोनों भावों से १२वां भाव अर्थात् दूसरा और सातवां भाव मृत्यु भाव होते हैं।

(क) द्वितीयेश और सप्तमेश मृत्यु के कारण होते हैं।
(ख) दूसरे और सातवें भाव में स्थित ग्रह विशेषकर मारक ग्रह।
(ग) द्वितीयेश और सप्तमेश से युक्त ग्रह विशेषकर मारक। इनमें से द्वितीयेश से युक्त ग्रह मृत्यु देने के लिए अति प्रबल होते हैं।

मृत्यु के गौण निर्धारक

(क) द्वितीयेश और सप्तमेश से युक्त शुभ ग्रह मारक ग्रहों की अपेक्षा मृत्यु के लिए कम बली होते हैं।
(ख) तृतीयेश और अष्टमेश
(ग) द्वितीयेश या सप्तमेश से युक्त तृतीयेश और अष्टमेश।

मृत्यु के तृतीय निर्धारक

(क) मृत्यु के मूल या गौण निर्धारकों में से किसी से युक्त या दृष्ट शनि।
(ख) षष्ठेश या अष्टमेश।
(ग) कुण्डली में सबसे कमजोर ग्रह।

निम्नलिखित ग्रह छिद्र-ग्रह कहलाते हैं और उनमें से सबसे बली ग्रह अपनी दशा में मृत्यु का कारण बन सकता है।

(क) अष्टमेश
(ख) अष्टम भाव में स्थित ग्रह
(ग) अष्टम भाव पर दृष्टि डालने वाला ग्रह
(घ) २२ वें द्रेष्काण का स्वामी
(ङ) अष्टमेश से युक्त ग्रह
(च) ६४ वें नवांश में जहाँ चन्द्रमा स्थित हो उसका स्वामी
(छ) अष्टमेश का कटु शत्रु

अष्टम भाव जीवन भाव होता है और वह यदि पीड़ित हो तो जीवन समाप्त कर देता है। यदि अष्टमेश ६, ८ या १२ वें भाव में स्थित हो तो उस व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है,

१. अष्टमेश की दशा और भुक्ति में, या
२. शनि जिस राशि में स्थित हो उसके स्वामी की दशा में अष्टमेश की भुक्ति में, या
३. अष्टमेश की दशा और नवमेश की भुक्ति में दृष्टि, युक्ति या स्थिति से मारक गुण द्वारा अति पीड़ित ग्रह मृत्यु के कारण होंगे।

यदि लग्नेश ६, ८ या १२ वें भाव में राहु या केतु से युक्त हो तो लग्नेश से युक्त ग्रह या अष्टमेश की दशा में मृत्यु हो जाती है। यदि लग्नेश किसी ग्रह से युक्त न हो तो लग्नेश या अष्टमेश जिस राशि में स्थित है उसका स्वामी मृत्यु का कारण होगा। यदि सही समय पर राहु की दशा आती है (जब जीवन लघु, मध्यम या दीर्घ रूप में अवधारित किया गया है) तो यह मारक हो सकता है। जातक-पारिजात के अनुसार यदि शनि, लग्नेश, अष्टमेश या दशमेश में से सबसे निर्बल ग्रह राहु से युक्त हो तो वह ग्रह अपनी दशा में मृत्यु का कारक बन सकता है। यदि अष्टमेश बली हो तो लग्नेश अपनी दशा में मृत्यु दे सकता है। यदि लग्नेश और अष्टमेश अन्य ग्रह के साथ केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हों तो अष्टम भाव में स्थित ग्रह की दशा में मृत्यु होती है। यदि अष्टम भाव में कोई ग्रह स्थित न हो तो लग्नेश की दशा में मृत्यु हो जाती है जबकि शनि गोचर में लग्न से अष्टम भाव में होता है। यदि लग्न शीर्षोदय (मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक और कुम्भ) राशि हो तो लग्न के चर, अचर, द्विस्वभाव राशि में होने के अनुसार द्वितीयेश या राहु की दशा में मृत्यु हो जाती है। यदि लग्न पृष्टोदय (मेष, वृषभ, कर्क, धनु और मकर) राशि हो तो क्रमशः द्रेष्काण लग्न के स्वामी, द्रेष्काण लग्न द्वारा दृष्ट ग्रह और द्रेष्काण लग्न के स्वामी से युक्त ग्रह की दशा में मृत्यु होती है यदि उदय राशि चर, अचर या द्विस्वभाव राशि हो।

मृत्यु कारक गोचर

ज्योतिष की मानक प्राचीन पुस्तकों में कुछ ग्रहों के गोचर के आधार पर अनेक पद्धतियाँ दी गई हैं जिनके द्वारा मृत्यु के समय का माप किया जा सकता है उसमें काफी सही परिणाम मिलता है। गोचरों के आधार पर मृत्यु का जो संकेत मिलता है वह तभी घटित होता है यदि जन्म कुण्डलियों में निदेशात्मक प्रभावों में ऐसा संकेत हो। अन्यथा अस्वस्थता, धन की हानि, सगे सम्बन्धियों से मनमुटाव और पृथक होने जैसी दुर्भाग्यपूर्ण बातें हो सकती हैं। गोचरों के आधार पर निम्नलिखित योगों पर विचार करते समय पाठक इसका पूरा ध्यान रखें।

आयुष्कारक शनि मृत्यु कारक भी है। जब अष्टमेश जिस भाव में स्थित हो उस राशि में गोचर में शनि आता है या लग्न से द्वादशेश जिस राशि में स्थित हो उस राशि में शनि गोचर में आता है तो मृत्यु होती है। इन भावों या कुण्डली में किसी अन्य भाव के सम्बन्ध में अपने त्रिकोण में गोचर में शनि हो तो उस भाव का नाश कर देता है।

२२ वें द्रेष्काण या मान्दी का स्वामी जिस राशि में स्थित हो उस राशि (या अपने त्रिकोण) में शनि के गोचर में आने पर मृत्यु होती है।

जब मान्दी के देशान्तर से शनि का देशान्तर घटाने के बाद प्राप्त अन्तर से जो राशि प्राप्त होती है उस राशि (राशि और नवांश) में गोचर में शनि के आने पर मृत्यु की संभावना होती है। अष्टमेश, द्वादशेश और षष्ठेश का देशान्तर जोड़ें और उससे प्राप्त राशि में जब शनि गोचर में हो तो मृत्यु का संकेत मिलता है। उस राशि में गोचर के शनि का मान्दी से निराकरण हो जाता है क्योंकि अष्टमेश से मान्दी भी भाग्यशाली होता है।

जब अष्टमेश जिस राशि में स्थित है वहाँ से गोचर में बृहस्पति त्रिकोण में पहुँचता है तो मृत्यु का संकेत देता है। लग्न, सूर्य और मान्दी के देशान्तर से प्राप्त राशि (या अपने मूल त्रिकोण) में गोचर में बृहस्पति के पहुँचने पर वह मृत्यु का कारण बनता है। बृहस्पति और राहु के देशान्तर को जोड़कर जो राशि प्राप्त होती है उस राशि में या अपने मूल त्रिकोण से जब गोचर में बृहस्पति गुजरता है तो मृत्यु की आशा की जा सकती है।

सूर्य राशि में जहाँ स्थित है या अष्टमेश नवांश में जहाँ स्थित है या लग्नेश जिस नवांश में स्थित है उसके द्वादशांश या इनमें से किसी भी राशि के त्रिकोण में सूर्य गोचर में रहता है तो मृत्यु हो सकती है। जब शुक्र से ६,७ या १२ वें भाव में गोचर का सूर्य हो तो मृत्यु की संभावना हो सकती है।

अष्टमेश या सूर्य जिस राशि या नवांश में स्थित है या वहाँ से त्रिकोण में जब चन्द्रमा गोचर में हो तो मृत्यु की संभावना हो सकती है। मान्दी और चन्द्रमा का देशान्तर जोड़ें इससे प्राप्त राशि में जब गोचर का चन्द्रमा हो तो भी मृत्यु हो सकती है। चन्द्रमा से २२ वें द्रेष्काण का स्वामी जिस राशि में स्थित है वहाँ या इन भावों से त्रिकोण में जब चन्द्रमा गोचर में हो तो मृत्यु की संभावना होती है। लग्न, अष्टम या द्वादश भाव में गोचर का चन्द्रमा मृत्यु का कारण बन सकता है।

मांदि का नवांश, द्वादशांश और द्रेष्काण निकालें। शनि नवांश में जिस राशि में स्थित है वहाँ और द्वादशांश में जिस राशि में स्थित है वहाँ जब गोचर में वृहस्पति हो और द्रेष्काण में शनि जिस राशि में स्थित है वह या अपने त्रिकोण में जब सूर्य हो तो इससे मृत्यु का संकेत मिलता है। लग्न, चन्द्रमा और मान्दी को जोड़ने पर जो लग्न आता है उससे मृत्यु के समय का संकेत मिलता है।

कुण्डली संख्या ३५

जन्म तारीख ३०–३१–१–१८९६ जन्म समय ४–३० बजे प्रात: (स्थान सं०) अक्षांश २२° उत्तर, देशान्तर ७३° १६′ पूर्व।

राशि

नवांश

बुध की दशा शेष–५ वर्ष १ महीने ६ दिन

जैसा कि पहले ही सावधान किया गया है, लग्न चंद्रमा और अन्य ग्रहों के बलाबल के आधार पर मारक दशा और भुक्ति का अवधारण करने के बाद ही इन गोचरों पर विचार करना चाहिए। गोचर को हमेशा ही कम महत्त्व दिया जाता है। वे उत्प्रेरणात्मक एजेन्ट के जैसे होते हैं। सभी प्रकार के निष्कर्ष मूलत: दशा विचार के आधार पर निकालने चाहिए।

अष्टम भाव—कुण्डली संख्या ३५ में अष्टम भाव कर्क में अष्टमेश चन्द्रमा उच्च.के वृहस्पति से युक्त होकर स्थित है। इसपर पंचमेश और द्वादशेश मंगल और तृतीयेश तथा आयुष्कारक उच्च शनि की दृष्टि है।

अष्टमेश—अष्टमेश चन्द्रमा अपनी ही राशि में लग्नेश बृहस्पति जो उच्च का है, से युक्त होकर स्थित है। इसके अतिरिक्त अष्टमेश बहुत बली है। उसपर उच्च के तृतीयेश शनि और द्वादशेश मंगल की दृष्टि है।

तीसरा भाव और स्वामी—तृतीयेश शनि है और वह उपचय अर्थात् ग्यारहवें भाव में उच्च का होकर स्थित है। वह आयुष्कारक भी है और प्रबल स्थिति में है। तीसरे भाव में सप्तमेश बुध राहु से पीडित है। चन्द्रमा से अष्टम भाव कुम्भ में तृतीयेश तथा द्वादशेश बुध पीड़ित होकर स्थित है। अष्टमेश शनि चौथे भाव में उच्च का है तृतीयेश बुध आयुस्थान में राहु से युक्त है।

निष्कर्ष—लग्नेश, अष्टम और तृतीय भाव तथा उसके सम्बन्धित अधिपतियों की लग्न तथा चन्द्रमा दोनों से बली स्थिति के कारण जातक पुर्णायु की श्रेणी में आता है।

मृत्युकाल—कुण्डली संख्या ३५ में लग्न धनुराशि है। तृतीयेश शनि ग्यारहवें भाव में उच्च का है। अष्टमेश चन्द्रमा अपनी ही राशि कर्क में उच्च के बृहस्पति से युक्त है। पुन: द्वितीयेश शनि ग्यारहवें भाव में उच्च का है जबकि सप्तमेश तीसरे भाव में राहु से युक्त है। चन्द्रमा से द्वितीयेश सूर्य है और वह सप्तम भाव में स्थित हैं जबकि तृतीयेश बुध अष्टम भाव में राहु से युक्त है। चन्द्रमा से सप्तमेश और अष्टमेश शनि है। राहु अशुभ ग्रह है और लग्न से सप्तमेश से युक्त है।

नवांश कुण्डली पर विचार करने पर यह देखने में आएगा कि शुक्र और मंगल क्रमश: द्वितीयेश और तृतीयेश हैं जबकि सप्तमेश और अष्टमेश क्रमश: बृहस्पति और मंगल हैं। चन्द्रमा से दूसरे और तीसरे भाव का स्वामी क्रमश: बृहस्पति और मंगल हैं। द्वितीयेश के साथ अशुभ ग्रह शनि युक्त है। नीचे एक सारणी दी जाती है जिसमें स्वामित्व, स्थिति और युक्ति के कारण प्रत्येक ग्रह का कारक बल यूनिटों में दर्शाया गया है। इससे ज्योतिष के विद्यार्थी समस्त क्रिया विधि को बेहतर ढंग से समझ सकेंगे।

निम्नलिखित से प्राप्त मारक बल यूनिटों की संख्या

ग्रह	स्वामित्व	स्थिति	युक्ति	सं०
सूर्य	चन्द्रमा से द्वितीयेश नवांश में चन्द्रमा से सप्तमेश	लग्न से दूसरे भाव में, चन्द्रमा से सप्तम भाव में	नवांश में द्वितीयेश के साथ	५
चन्द्रमा	अष्टमेश	लग्न से आठवें भाव में	—	२

मंगल	नवांश में अष्टमेश, नवांश में तृतीयेश नवांश में चन्द्रमा से तृतीयेश	—	—	३
बुध	सप्तमेश, चन्द्रमा से तृतीयेश, नवांश में चन्द्रमा से अष्टमेश	लग्न से तृतीयेश, चन्द्रमा से अष्टमेश, नवांश में लग्न से तृतीयेश	—	[illegible]
बृहस्पति	नवांश में सप्तमेश, नवांश में चन्द्रमा से द्वितीयेश	नवांश में लग्न से दूसरे भाव में	लग्न से अष्टमेश के साथ	४
शुक्र	नवांश में द्वितीयेश	—	नवांश में चन्द्रमा से सप्तमेश के साथ	२
शनि	द्वितीयेश तृतीयेश चन्द्रमा से अष्टमेश चन्द्रमा से सप्तमेश	—	नवांश में द्वितीयेश के साथ, नवांश में चन्द्रमा से सप्तमेश के साथ	६
राहु	—	लग्न से तीसरे भाव में, चन्द्रमा से अष्टम भाव में	सप्तमेश के साथ अशुभ युक्ति	३
केतु	—	चन्द्रमा से दूसरे भाव में	नवांश में अष्टमेश के साथ, नवांस में तृतीयेश के साथ नवांश में चन्द्रमा से तृतीयेश के साथ	४

मारक के कुल ३५ यूनिटों में से शनि और बुध दोनों के छः छः यूनिटें हैं जबकि सूर्य ५ यूनिटें प्राप्त करके दूसरे स्थान पर है। नवमेश होने और बृहस्पति की प्रबल दृष्टि के कारण सूर्य की दशा में उसका मारक बल समाप्त हो गया किन्तु अन्य अशुभ ग्रह की दशा में सूर्य की युक्ति में वह मारक बन जाएगा। बुध की दशा जीवन में काफी देर से आएगी (क्योंकि जन्म समय यही दशा मिली हुई है) अतः उसकी दशा में मृत्यु की संभावना बिल्कुल नहीं है। जातक की १० वर्ष की आयु में शनि की दशा आएगी। यह दशा भी काफी देर से आएगी। शनि राहु के साथ

अपनी परम्परागत अशुभता (शनि के बाद राहु) के कारण वह अपना मारक बल राहु को दे देगा।

यह देखने में आएगा कि राहु तीसरे भाव में स्थित है और लग्न से सप्तमेश बुध से युक्त है तथा बुध नवांश में चन्द्रमा से अष्टम भाव का स्वामी है। चूंकि राहु सप्तमेश की अशुभ युक्ति में है अतः उसमें अपनी दशा में मृत्यु का कारण बनने के सभी गुण हैं। जैसा कि हमने पहले ही देखा है कि बुध के बाद मारक की सबसे अधिक यूनिटें शनि के पास हैं। बुध अपना कार्य नहीं कर सकता है। और शनि स्वयं भी मृत्यु का कारण नहीं बन सकता है अतः स्वभावतः वह अपना बल उस ग्रह को दे देगा जो उसकी राशि में स्थित है। वह ग्रह राहु होगा।

राहु चन्द्रमा से अष्टम भाव में स्थित है। अतः राहु को अपनी दशा में मारक बल प्राप्त है। जन्म समय बुध की दशा प्राप्त थी जिसमें ५ वर्ष १ महीने ६ दिन शेष थे। उसके बाद केतु, शुक्र, चन्द्रमा और मंगल की दशा ५२ वर्षों तक चलती रही और तब तक जातक की आयु ५५ वर्ष १ महीने ६ दिन हो गई। यह ७–३–१९५१ तक था। उसके बाद राहु की दशा आरम्भ हुई। इस दशा में उसकी मृत्यु कब होगी। राहु की दशा १८ वर्ष की होती है। क्या इन १८ वर्षों में राहु उसे छोड़ देगा। केतु संभावित उम्मीदवार है। केतु में सूर्य की विशेषताएँ होनी चाहिये। किन्तु चूंकि सूर्य के पास स्वयं ही ५ यूनिटें हैं और केतु के पास मारक बल की केवल ४ यूनिटें हैं अतः सूर्य स्वयं ही यह उत्तरदायित्व लेगा केतु को इसका अवसर नहीं देगा।

गोचर के प्रभाव भी मृत्यु के समय के तुल्य कालिक होने चाहिये। राहु की दशा में राहु, बृहस्पति, शनि, बुध, केतु और शुक्र की अन्तर्दशा १४ वर्ष ६ महीने १८ दिन तक रही। तब तक जातक की आयु लगभग ६९ वर्ष ७ महीने २४ दिन की हो गई। राहु दशा में शुक्र की भुक्ति २५–९–६५ को समाप्त हो गई। उसके बाद सूर्य की दशा आरम्भ होती है। जैसा कि हमने देखा है, सूर्य चन्द्र लग्न से द्वितीयेश है और चन्द्रमा से सप्तम मारक भाव में स्थित है जबकि वह लग्न से द्वितीय भाव में है। पुनः नवांश में वह चन्द्रमा से सप्तम भाव का स्वामी है और लग्न से द्वितीयेश के साथ युक्त है। इसके अतिरिक्त वह राहु का कटु शत्रु है और राशि में दशानाथ और भुक्तिनाथ द्विर्द्वादश (२/१२) में हैं जबकि नवांश में वे षडष्टक (६/८) में हैं। इस प्रकार सूर्य अपनी भुक्ति में मृत्यु देने के लिए पूरी तरह बली है। सूर्य की भुक्ति २५–९–१९६५ से १९–८–१९६६ तक रही।

जब मारक दशा चल रही हो तो मृत्यु के लिए अन्तिम संकेत का संवेग आयुष्कारक शनि अपने गोचर में देता है। जब शनि जन्म समय राशि और नवांश में

जिस में स्थित था उसी राशि में गोचर में हो या अपने मूल त्रिकोण में हो तो मृत्यु होती है। शनि राशि में तुला में और नवांश में मिथुन में था। इन दोनों राशियों में त्रिकोण में कुम्भ राशि है। शनि ने फरवरी १९६४ में कुम्भ में प्रवेश किया। वह कुम्भ राशि और मिथुन नवांश में फरवरी मार्च १९६६ तक रहेगा। जातक की मृत्यु ७–२–१९६६ की हुई।

बालारिष्ट

साधारणत: बच्चों की आयु के बारे में भविष्यवाणी नहीं करनी चाहिये। यदि कोई कुण्डली अत्यधिक पीड़ित हो तो वह जातक बाल्यकाल में बीमार रह सकता है या उसकी बार बार दुर्घटना हो सकती है। किन्तु यह उत्तम होगा कि मृत्यु के प्रश्न पर विचार न किया जाए। तथापि बाल्यकाल में मृत्यु से सम्बन्धित कुछ कुण्डलियाँ नीचे दी जाती हैं।

कुण्डली सं० ३६

जन्म तारीख १६–१२–१९५० जन्म समय १०–३० बजे संध्या (आई. एस. टी.)
अक्षांश २२°५४' उत्तर, देशा० ८८°२४' पूर्व।

राशि

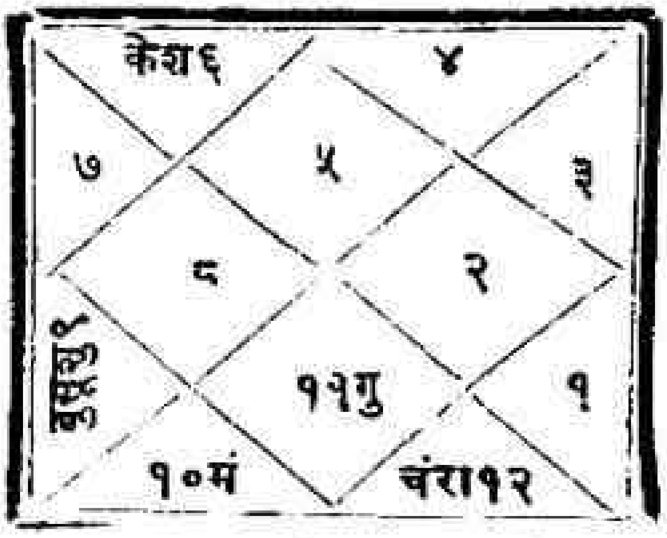

नवांश

शनि की दशा शेष–१२ वर्ष ४ महीने ६ दिन

कुण्डली संख्या ३६ में चन्द्रमा अष्टम भाव में राहु से युक्त है और उस पर अशुभ ग्रह शनि की दृष्टि है। लग्न पर मंगल की विपरीत दृष्टि है। इसमें संदेह नहीं है कि लग्न पर वृहस्पति की दृष्टि है परन्तु अष्टमेश होकर उसका सप्तम भाव में स्थित होना ठीक नहीं है। (सप्तम भाव अष्टम भाव का १२ वां होता है)। चन्द्रमा और लग्न के पीड़ित होने पर साधारणत: बाल्यकाल में मृत्यु हो जाती है। इस बच्चे की मृत्यु २½ वर्ष की उम्र में हो गई।

कुण्डली सं० ३७

जन्म तारीख २–२–१८७१, जन्म समय ५–२१ बजे संध्या (स्थानीय समय)
अक्षांश ५४°–५६' उत्तर, देशा० १°–२५' पूर्व।

राशि

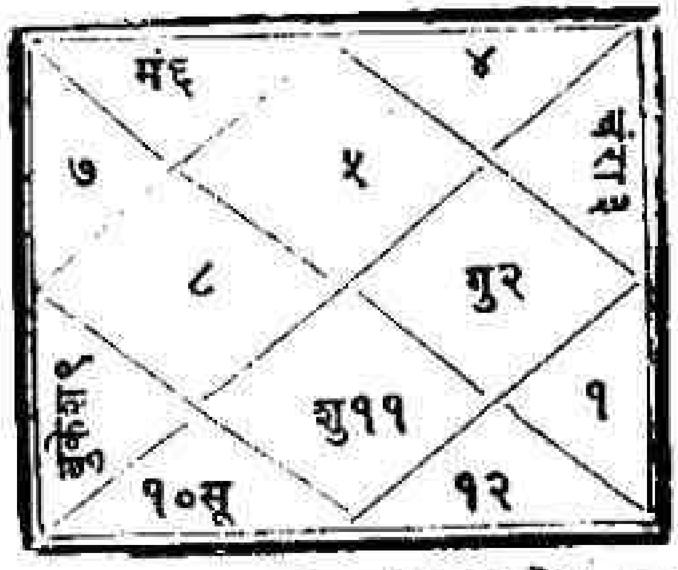

नवांश

राहु की दशा शेष–० वर्ष २ महीने २१ दिन

कुण्डली सं० ३७ में चन्द्रमा राहु और शनि से पीड़ित है। उस पर कोई शुभ दृष्टि नहीं है। राहु और चन्द्रमा दोनों ही गोचर में १२ वें भाव में हैं। बच्चे की ३ वर्ष की उम्र में मृत्यु हो गई।

कुण्डली सं० ३८

जन्म तारीख ७–८–१८७३ जन्म समय ९–५ बजे प्रात: (स्थानीय समय)

अक्षांश ५४°५६ उत्तर, देशा० १°२५′ पश्चिम।

राशि

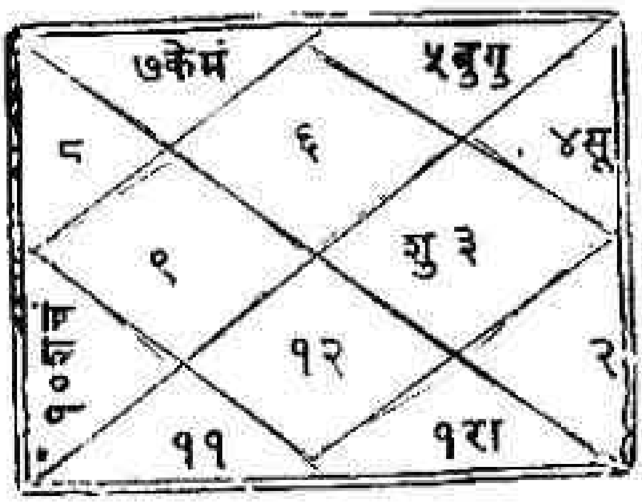

नवांश

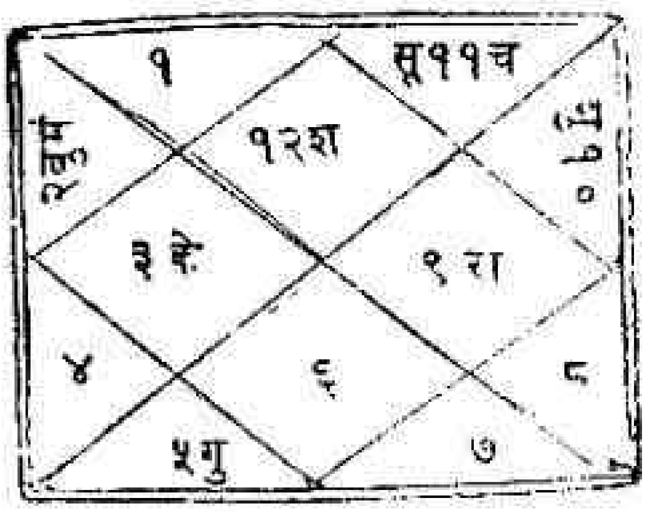

सूर्य की दशा शेष–१ वर्ष ६ महीने २७ दिन

कुण्डली सं० ३८ में चन्द्रमा अशुभ राशि मंगल और शनि से पीड़ित है। एक विशेष योग होता है जिसमें यदि चन्द्रमा अशुभ राशि और नवांश में स्थित हो और उस पर कोई शुभ दृष्टि न हो और ५ वें तथा ९ वें भाव में अशुभ ग्रह स्थित हो तो बच्चा शीघ्र ही मर जाता है। यहाँ चन्द्रमा न केवल अशुभ राशि और नवांश में स्थित है बल्कि दो प्रबल नैसर्गिक तथा कार्यात्मक अशुभ ग्रह मंगल और शनि से पीड़ित है। पंचम भावमें एक अशुभ ग्रह शनि स्थित है। यह बच्चा १५–८–१८७३ को मर गया जबकि मुश्किल से एक सप्ताह का था।

कुण्डली सं० ३९

जन्म तारीख २२-१०-१९६० जन्म समय २२-३२ बजे (प्रात: स्था. स.)
अक्षांश ३३° १७' उत्तर, देशा० ८८°५५' पश्चिम।

राशि

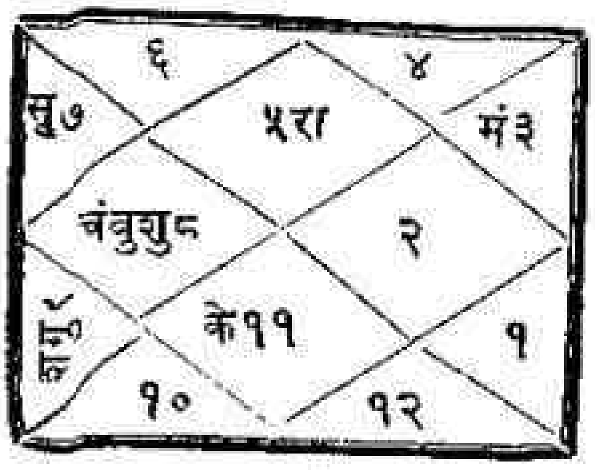

नवांश

बृहस्पति की दशा शेष-२ वर्ष ७ महीने १३ दिन

लग्न और सप्तम भाव में अशुभ ग्रह हो, चन्द्रमा अशुभ ग्रह से युक्त हो और उस पर कोई शुभ दृष्टि न हो तो बच्चे की शीघ्र मृत्यु हो जाती है। कुण्डली सं० ३९ में राहु लग्न में स्थित है। और केतु सातवें भाव में मंगल से दृष्ट है। चन्द्रमा चौथे भाव में शुभ ग्रह से युक्त है किन्तु अशुभ ग्रह शनि और सूर्य के घेरे में है उसपर कोई शुभ दृष्टि नहीं है। बच्चे की मृत्यु शनि की दशा केतु की भुक्ति में हुई। कुण्डली सं० ३८ में जो बालारिष्ट योग है वह यहाँ भी लागू होता है। चन्द्रमा राशि में एक अशुभ राशि में स्थित है और उस पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं है। अशुभ ग्रह शनि अशुभ ग्रह मंगल से दृष्ट होकर पंचम भाव में स्थित है।

कुण्डली सं० ४०

जन्म तारीख १४-४-१९२० जन्म समय १-० बजे रात्रि (ई एस टी)
अक्षांश १४°३१ उत्तर, देशा० ५१° पूर्व।

राशि

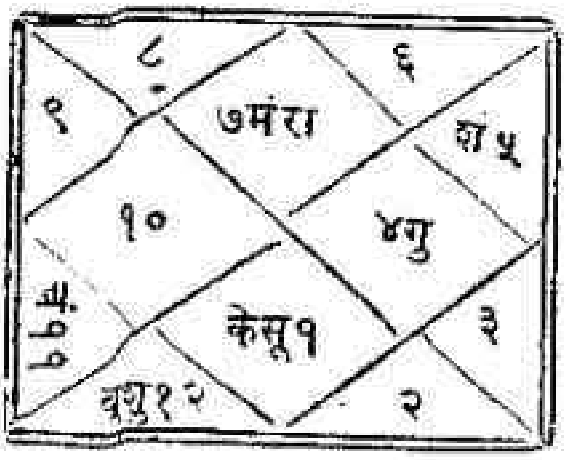

नवांश

राहु की दशा शेष-१२ वर्ष २ महीने २ दिन

कुण्डली सं० ४० में लग्न और सप्तम भाव में क्रमश: मंगल और राहु तथा सूर्य और केतु स्थित हैं। चन्द्रमा कुम्भ राशि में अशुभ ग्रह शनि से दृष्ट है और उस पर

कोई शुभ दृष्टि नहीं है। लग्न मंगल और राहु के बीच घेरे में है। यद्यपि तीनों ही एक राशि में हैं। इस लड़की की मृत्यु अप्रैल १९२९ में हुई जबकि बालारिष्ट की अवधि का अन्तिम था।

कुण्डली सं० ४१

जन्म तारीख १-९-१९६८ जन्म समय १०–३० बजे प्रातः
अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ७७°५५′ पूर्व।

राशि

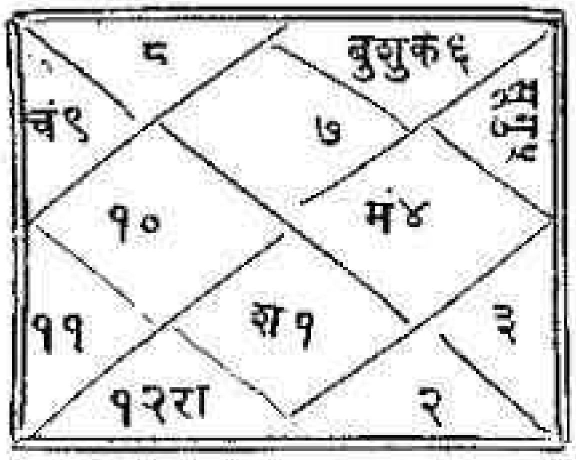

नवांश

केतु की दशा शेष–५वर्ष ४ महीने १४ दिन

कुण्डली सं० ४१ में चन्द्रमा अधिक पीड़ित नहीं है और उसपर बृहस्पति की दृष्टि है जो दाह में है किन्तु मुख्य केन्द्रों में प्रबल अशुभ ग्रह स्थित हैं। अर्थात् शनि सप्तम में और मंगल दशम में और दोनों ही लग्न पर दृष्टि डाल रहे हैं। प्राचीन पुस्तकों के अनुसार "यदि लग्नेश नीच का हो और लग्न से सातवें या आठवें भाव में शनि स्थित हो तो बच्चा काफी बीमार रहता है और शीघ्र मर जाता है।" लग्नेश शुक्र है और वह न केवल नीच का है बल्कि वह १२ वें भाव में केतु से युक्त भी है। नीच का शनि सप्तम भाव में स्थित है। बच्चा आठवें वर्ष में सितम्बर १९७५ में मर गया।

कुण्डली सं० ४२

जन्म तारीख २१–२–१९२५, जन्म समय ५·१५ बजे संध्या (सी.ई.टी.)
अक्षांश १४° ३१′ उत्तर, देशा० ५१° पूर्व।

राशि

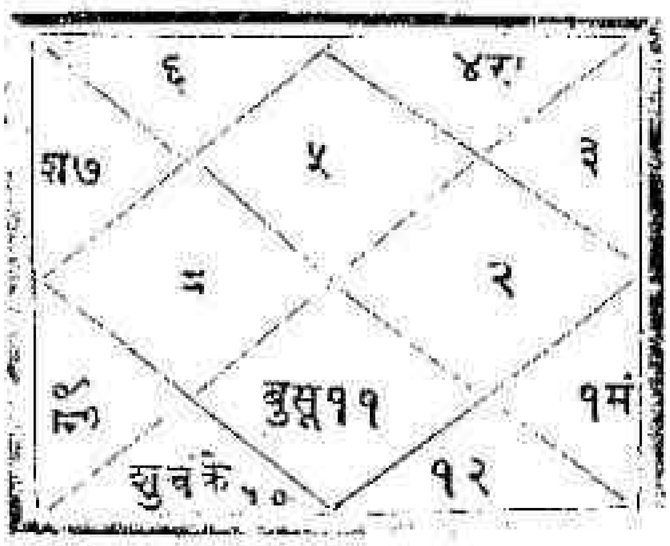

नवांश

चन्द्रमा की दशा शेष–१ वर्ष १० महीने १० दिन

कुण्डली संख्या ४२ में चन्द्रमा दुःस्थान में केतु से पीड़ित है। यदि छठे और बारहवें भाव में अशुभ ग्रह स्थित हों और उनपर कोई शुभ दृष्टि न हो तो बालारिष्ट योग होता है। यहाँ पर छठे भाव में केतु स्थित है और शनि मंगल से दृष्ट होकर राहु १२ वें भाव में स्थित है। इस बच्चे की मार्च १९२९ में मृत्यु हो गई।

अल्पायु

अल्पायु के अधिकतर मामले में लग्न तथा अष्टम भाव तथा उनके अधिपति अपनी स्थिति, दृष्टि या अन्य प्रभावों से कमजोर होते हैं। शुभ ग्रह भी कमजोर हो सकते हैं जबकि अशुभ ग्रह केन्द्र में बली हो सकते हैं।

कुण्डली संख्या ४३

जन्म तारीख १९–१०–१९५९ जन्म समय ११–४५ बजे रात्रि (आई एस टी) अक्षांश २०° ५६′ उत्तर, ७७° ४८′ पूर्व।

राशि नवांश

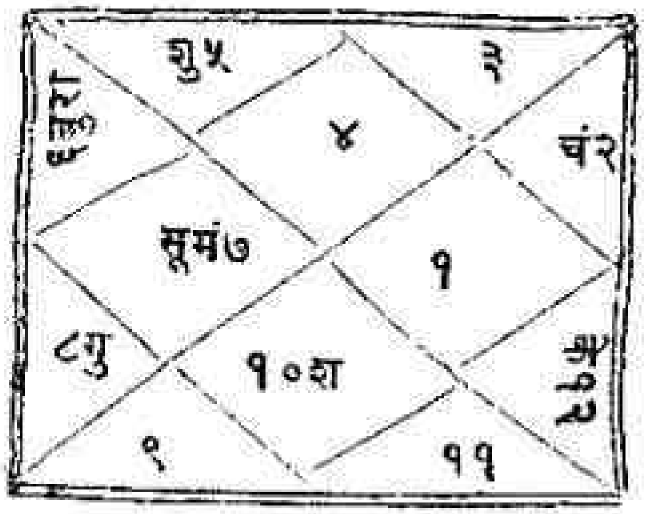

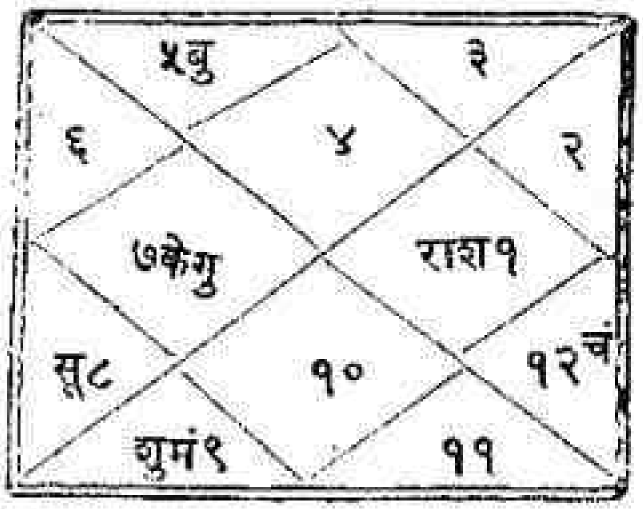

सूर्य की दशा शेष–० वर्ष १० महीने २१ दिन

अष्टम भाव (कुण्डली सं० ४३)–अष्टम भाव में कुम्भ राशि है जहाँ पर कोई ग्रह स्थित नहीं है या किसी की दृष्टि नहीं है। यह अशुभ ग्रह शनि और केतु के घेरे में है।

अष्टमेश—सप्तम भाव केन्द्र में शनि स्थित है किन्तु यह अष्टम भाव से बारहवां भाव है उस पर दाह वाले मंगल की दृष्टि है।

आयुष्कारक—शनि अपनी ही राशि में है किन्तु वह मारक स्थान है और उसपर अशुभ ग्रह मंगल की दृष्टि है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टमेश अष्टम भाव से बारहवें भाव में है।

निष्कर्ष—वर्गोत्तम होने के कारण लग्न पूरी तरह बली है और लग्नेश उच्च का है किन्तु द्वितीयेश सूर्य से अष्टम भाव में है। केन्द्र में बली अशुभ ग्रह पड़े हैं।

मंगल जो दाह में है, लग्नेश पर विपरीत दृष्टि डाल रहा है। जातक की मृत्यु ५६ वर्ष की आयु में मंगल की दशा केतु की भुक्ति में हुई।

अल्पायु की अवधि में सूर्य, चन्द्र, मंगल और राहु (आंशिक) की दशा आई। मंगल चन्द्रमा से सप्तमेश है और लग्न से द्वितीयेश अर्थात सूर्य से युक्त है। उस पर सप्तमेश शनि की दृष्टि है। केतु मंगल और बृहस्पति का फल देगा। बृहस्पति चन्द्रमा से अष्टमेश है और चन्द्रमा से सप्तम भाव में स्थित है। वह यहाँ पर मारक बन जाता है।

कुण्डली सं० ४४

जन्म तारीख ४-४-१९४८ जन्म समय ६-० बजे प्रातः (आई. एस. टी.)

अक्षांश २६°१८' उत्तर, देशा० ७३°४' पूर्व।

राशि

नवांश

चन्द्रमा की दशा शेष—१ वर्ष ११ महीने ७ दिन

अष्टम भाव (कुण्डली सं० ४४)—तुला राशि में अशुभ ग्रह केतु स्थित है और उस पर अशुभ ग्रह मंगल की दृष्टि है।

अष्टमेश—शुक्र अपनी राशि वृषभ में उत्तम स्थिति में है किन्तु वह षष्ठेश सूर्य के नक्षत्र में है।

आयुष्कारक—शनि पंचम भाव में पंचमेश से दृष्ट है किन्तु वह नीच के मंगल से काफी निकट से युक्त है। वह सप्तमेश बुध के नक्षत्र में है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव पर तृतीयेश तथा द्वादशेश बृहस्पति की पातीय नक्षत्र से दृष्टि है। अष्टमेश तीसरे भाव में षष्ठेश और नवमेश बुध से युक्त है। चन्द्रमा दो बली अशुभ ग्रहों से पीड़ित है।

निष्कर्ष—लग्न भाव में षष्ठेश सूर्य स्थित है और मारक ग्रह बुध से युक्त है। लग्नेश बृहस्पति केन्द्र में है किन्तु एक पात ग्रह के नक्षत्र में है जो अष्टम भाव में पीड़ित होकर स्थित है।

लग्नेश, अष्टमेश और तृतीयेश जिन अशुभ नक्षत्रों में स्थित हैं उनके कारण और चन्द्रमा के अत्यधिक पीड़ित होने के कारण अल्पावस्था में ही आयु समाप्त हो जाएगी।

राहु की दशा शनि की भुक्ति में मृत्यु हुई। राहु मंगल की राशि में दूसरे भाव में प्रबल मारक है। क्योंकि जहाँ राहु स्थित है वहां का स्वामी मंगल द्वितीयेश है और चन्द्रमा से सप्तम भाव में द्वितीयेश शनि से युक्त है। भुक्ति नाथ शनि भी मारक है विशेषकर राशि और नवांश दोनों में चन्द्रमा से।

टिप्पणी—इस पुस्तक के भाग १ या भाग २ में हमने अवतक नक्षत्रों के महत्त्व पर विचार नहीं किया है क्योंकि यह स्वयं ही एक अलग विषय है। नक्षत्र स्वामियों के महत्त्व पर सत्याचार्य द्वारा प्रकाश डाला गया है। अत: इसके महत्व को छोड़ा नहीं जा सकता है। नक्षत्रों के स्वामी ग्रहों को विंशोतरी दशा के स्वामियों के अनुसार बाँटा गया है (कृतिका, उत्तरा फाल्गुनी और उत्तराषाढ़—सूर्य; रोहिणी, हस्त और श्रवण-चन्द्रमा; मृगसिरा, चित्रा और धनिष्ठा—मंगल, आर्द्रा, स्वाती और शतभिषा—राहु, पुनर्वसु, विशाखा और पूर्वा भाद्रपदा—बृहस्पति; पुष्य, अनुराधा और उत्तरभाद्रपदा—शनि, अश्लेषा, जेष्ठा और रेवती-बुध, मघा, मूल और अश्विनी—केतु, और पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ और भरणी-शुक्र)

इस प्रकार इस कुण्डली में तृतीयेश बृहस्पति मूल नक्षत्र में है जिसका स्वामी पात ग्रह केतु है।

कुण्डली सं० ४५

जन्म तारीख २६-५-१९५० **समय ६-३० बजे प्रात: (आई एस टी)**

अक्षांश १६°५२′ उत्तर, देशा० ८२° १३′ पूर्व।

राशि

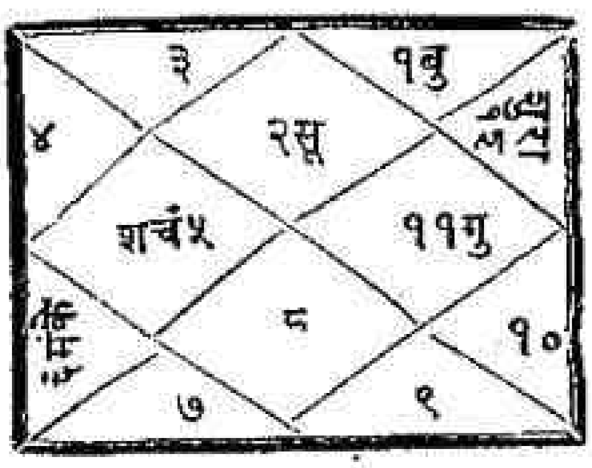

नवांश

शुक्र की दशा शेष—२ वर्ष १ महीने १५ दिन

अष्टम भाव—अष्टम भाव में धनु राशि है उस पर सप्तमेश मंगल की दृष्टि है। अष्टमेश बृहस्पति चन्द्रमा और शनि से दृष्ट होकर केन्द्र में स्थित है। बृहस्पति

राहु के नक्षत्र में है जो यद्यपि एकादश भाव में स्थित है, उसपर सप्तमेश ग्रस्त मंगल की दृष्टि है।

आयुष्कारक—शनि अपनी शत्रु राशि सिंह में तृतीयेश चन्द्रमा से युक्त और अष्टमेश बृहस्पति से दृष्ट है।

चन्द्रमा से विचार—सप्तमेश शनि चन्द्र राशि में स्थित है जबकि अष्टम भाव में उच्च का शुक्र वर्गोत्तम में स्थित है किन्तु वह ग्रस्त मङ्गल से पीड़ित है। अष्टमेश बृहस्पति अष्टम भाव से १२ वें भाव में केन्द्र में स्थित है।

निष्कर्ष—लग्न और चन्द्रमा दोनों से अष्टमेश उत्तम स्थिति में है। किन्तु लग्नेश शुक्र यद्यपि कि उच्च का है, द्वितीयेश बुध कारक के नक्षत्र में है तथा राहु और मंगल से पीड़ित है और १२ वें भाव में स्थित है। इससे लग्नेश की तुलना में अष्टमेश बली होगा और इससे अल्पायु होगी। चन्द्रमा की दशा और शुक्र की भुक्ति में जातक की मृत्यु हुई। शुक्र राहु स युक्त और मंगल से दृष्ट होकर मीन राशि में और द्वितीयेश बुध के नक्षत्र में स्थित है। चन्द्रमा कारक शनि से युक्त होकर चौथे भाव में स्थित है (शनि चन्द्रमा से सप्तमेश है) और अष्टमेश बृहस्पति से दृष्ट है। इससे मारक बन जाता है।

कुण्डली सं० ४६

जन्म तारीख २९–१–१९५५, जन्म समय १०–० बजे सन्ध्या (आई.एस.टी.) अक्षांश ९°५८′ उत्तर, देशा० ७६° १७′ पूर्व।

राशि

नवांश

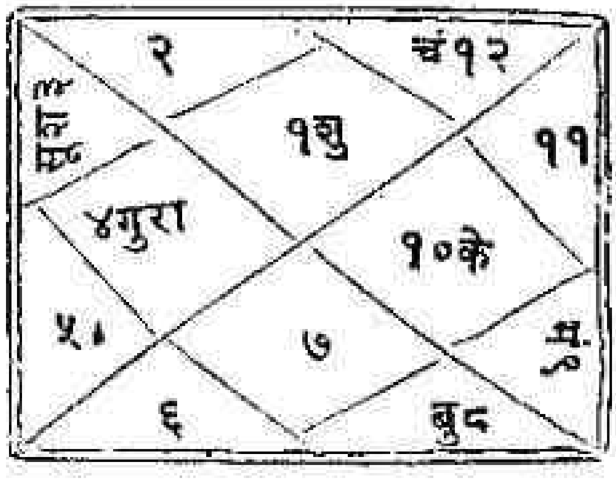

बुध की दशा शेष–३ वर्ष ५ महीने ९ दिन

अष्टम भाव—अष्टम भाव पर उच्च के आयुष्कारक शनि की दृष्टि है जो सप्तमेश के नक्षत्र में है।

अष्टमेश—कुण्डली सं० ४६ में मङ्गल एकादशेश चन्द्रमा से युक्त और उच्च के सप्तमेश बृहस्पति से दृष्ट होकर सप्तम भाव (अष्टम भाव से १२ वें में) स्थित है।

आयुष्कारक—शनि दूसरे भाव में उच्च का है और उसपर अष्टमेश मङ्गल की विपरीत दृष्टि है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव में उच्च का शनि स्थित है और उस पर द्वितीयेश मङ्गल की दृष्टि है। अष्टमेश दसवें भाव में ग्रस्त है और उस पर शनि की दृष्टि है।

निष्कर्ष—अष्टमेश केन्द्र में स्थित है जबकि लग्नेश कमजोर होकर छठे भाव में स्थित है और सूर्य तथा मङ्गल के कारण पाप कर्तरी योग में है। इसके अतिरिक्त वह अष्टमेश के नक्षत्र में है।

कुण्डली संख्या ४७

जन्म तारीख २–११–१९३५ जन्म समय ५·४० बजे प्रात: (आई. एस. टी.)
अक्षांश १३° २८′ उत्तर, देशान्तर ७७° २२′ पूर्व।

राशि

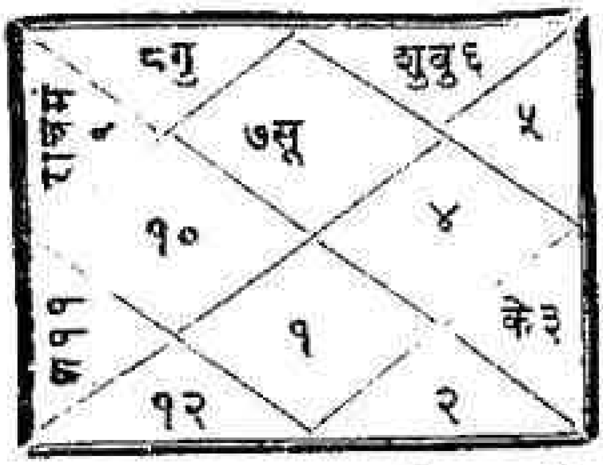

नवांश

शुक्र की दशा शेष–६ वर्ष १ महीने २४ दिन

अष्टम भाव—कुण्डली संख्या ४७ में अष्टम भाव वृषभ राशि पर तृतीयेश और षष्ठेश वृहस्पति की दृष्टि है।

अष्टमेश—अष्टमेश शुक्र द्वादशेश बुध से युक्त होकर १२ वें भाव में नीच का है।

आयुष्कारक—शनि अपने मूलत्रिकोण राशि कुम्भ में स्थित है किन्तु वह राहु के नक्षत्र में है।

चन्द्रमा से बिचार—अष्टम भाव पर पीड़ित मङ्गल और चन्द्रमा जिस राशि में स्थित है उसके स्वामी ग्रह वृहस्पति की विपरीत दृष्टि है। वृहस्पति द्वादशेश मङ्गल के साथ स्थान परिवर्तन में है तथा उसपर द्वितीयेश और तृतीयेश शनि की दृष्टि है। अष्टमेश चन्द्रमा स्वयं है और मङ्गल से पीड़ित है।

निष्कर्ष—लग्नेश और अष्टमेश शुक्र १२ वें भाव में नीच का है। लग्न में मारक ग्रह सूर्य नीच का होकर स्थित है। चन्द्रमा भी अशुभ ग्रहों से बुरी तरह पीड़ित है। अत: यह कुण्डली अल्पायु की श्रेणी में आती है।

मंगल की दशा शुक्र की भुक्ति में मृत्यु हो गई। शुक्र बुध से युक्त है जो चन्द्रमा से सप्तमेश है। वह नवांश लग्न से दूसरे भाव में द्वितीयेश शनि से युक्त है। वह पीड़ित अष्टमेश भी है। दशानाथ मङ्गल लग्न से द्वितीयेश और सप्तमेश है और नवांश में चन्द्रमा से द्वितीयेश और सप्तमेश है। वह नवांश में नीच का है और द्वितीयेश तथा तृतीयेश शनि से दृष्ट है जो उसे प्रथम श्रेणी का मारक बना देता है।

कुण्डली सं० ४८

जन्म तारीख ३-४-१९४९ जन्म समय ८ बजे प्रातः (आई.एस.टी.)

अक्षांश १३° उत्तर, देशान्तर ७७° ३५′ पूर्व।

राशि

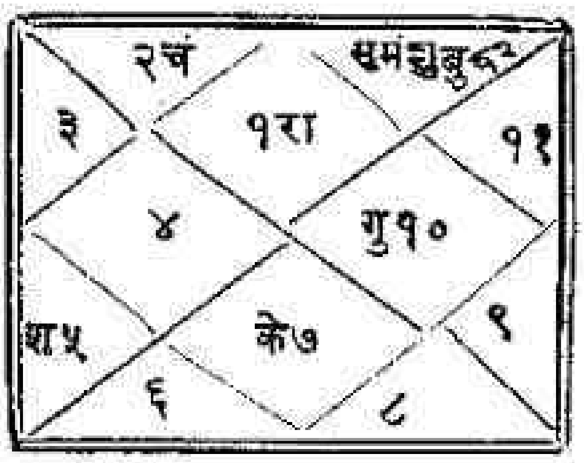

नवांश

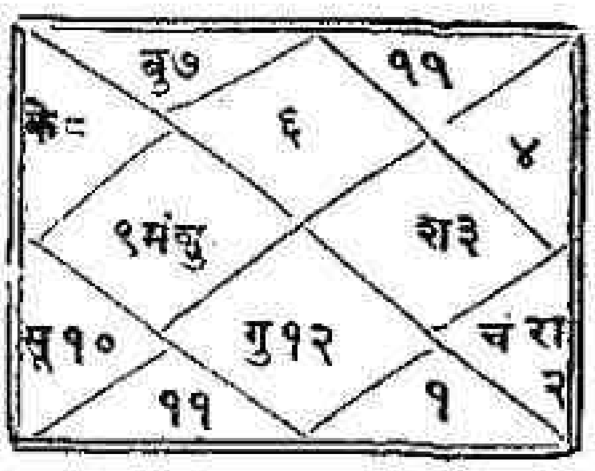

चन्द्रमा की दशा शेष—९ वर्ष ६ महीने २३ दिन

अष्टम भाव—अष्टम भाव में बृहस्पति है। उसपर उच्च के चन्द्रमा की दृष्टि है।

अष्टमेश—मङ्गल १२ वें भाव में द्वितीयेश और सप्तमेश शुक्र से युक्त है और सूर्य से दाह में भी है। वह तृतीयेश और षष्ठेश बुध से युक्त है।

आयुष्कारक—शनि पांचवें भाव में शत्रु राशि में तथा केतु के नक्षत्र में है जो मारक स्थान सप्तम भाव में स्थित है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव पर कोई दृष्टि नहीं है और वहाँ पर कोई ग्रह नहीं है। अष्टमेश बृहस्पति नवम भाव में नीच का है।

निष्कर्ष—लग्न में राहु है तथा लग्नेश १२ वें भाव में है और वह मारक शुक्र से युक्त है तथा तृतीयेश और षष्ठेश बुध के नक्षत्र में है जो १२ वें भाव में स्थित है। इसके अतिरिक्त लग्नेश और अष्टमेश दोनों ग्रह सूर्य के दाह में पड़े हैं। चन्द्रमा उच्च का है किन्तु उस पर मारक शनि और नीच के बृहस्पति की दृष्टि है जिससे अल्पायु का संकेत मिलता है।

जातक की मृत्यु राहु दशा शुक्र भुक्ति में हुई। राहु लग्न में मारक राशि में स्थित है। मंगल चन्द्रमा से सप्तमेश है। राहु शनि के जैसा फल देगा जो मारक केतु के नक्षत्र में मृत्यु का नैसर्गिक कारक होता है। राहु नवांश में चन्द्रमा से दूसरे भाव में स्थित है। भुक्तिनाथ शुक्र लग्न, नवांश लग्न और नवांश चन्द्रमा से मारक है क्योंकि वह इन सभी स्थानों से द्वितीयेश और सप्तमेश है।

कुण्डली सं० ४६

जन्म तारीख २४-८-१९४४ समय ५-१५ बजे प्रात: (डब्ल्यू टी)

अक्षांश ४१° उत्तर, देशा० ४१° २०′ पश्चिम।

राशि

नवांश

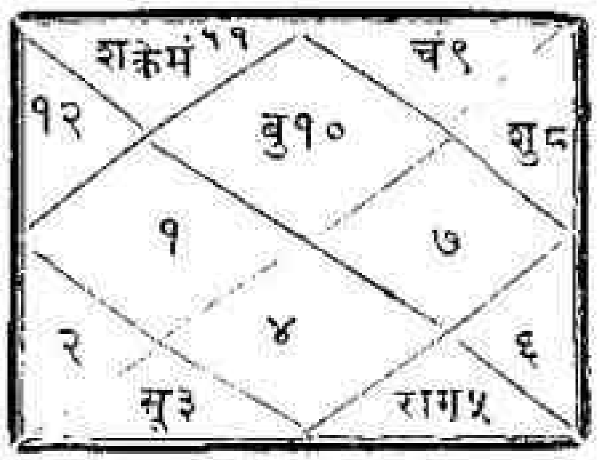

राहु की दशा शेष—१३ वर्ष ७ महीने २७ दिन

अष्टम भाव—अष्टम भाव में कुम्भ राशि है। इसपर द्वितीयेश सूर्य, षष्ठेश और नवमेश बृहस्पति और चतुर्थेश तथा एकादशेश शुक्र की दृष्टि है।

अष्टमेश—अष्टमेश शनि १२ वें भाव में स्थित है। आयुष्कारक शनि सप्तमेश और अष्टमेश है और १२ वें भाव दु:स्थान में है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव में वृषभ राशि है और उस पर कोई दृष्टि नहीं है जबकि अष्टमेश शुक्र ११ वें भाव में मंगल और राहु के घेरे में है।

लग्न में एक छायाग्रह स्थित है और लग्नेश केन्द्र में स्थित है। परन्तु लग्नेश चन्द्रमा छाया ग्रह के नक्षत्र में है। केन्द्र में कोई और ग्रह नहीं है। तृतीयेश बुध भी पीड़ित है क्योंकि वह मारक मंगल से युक्त है। आयुष्कारक शनि १२ वें भाव में हानिस्थान में है। अत: इस कुण्डली में अधिक आयु का संकेत नहीं है।

शनि की दशा और शनि की भुक्ति में मृत्यु हुई। शनि यहां प्रथम श्रेणी का मारक है। वह नवांश लग्न और नवांश चन्द्रमा दोनों से ही द्वितीयेश है।

कुण्डली सं० ५०

जन्म तारीख २५-१२-१९१७ समय ११-५५ बजे रात्रि (जी एम टी)

अक्षांश ५१°३१′ उत्तर, देशा० ०°०५′ पश्चिम।

राशि

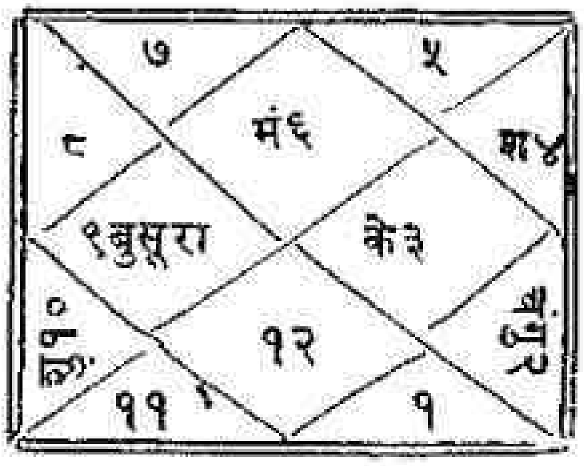

नवांश

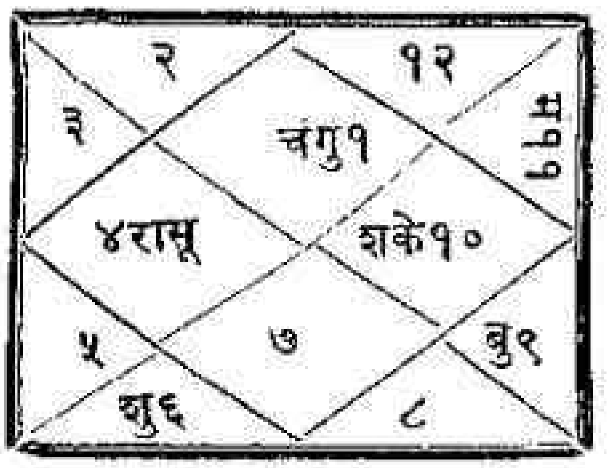

चन्द्रमा की दशा शेष—७ वर्ष ७ महीने ६ दिन

अष्टम भाव—अष्टम भाव में मेष राशि है जिस पर लग्नेश मंगल और पंचमेश तथा षष्ठेश की विपरीत दृष्टि है।

अष्टमेश—अष्टमेश मंगल लग्न में केन्द्र में स्थित है और उसपर सप्तमेश बृहस्पति तथा शनि की दृष्टि है।

आयुष्कारक—शनि ११ वें भाव में स्थित है और उसपर द्वितीयेश तथा नवमेश की दृष्टि है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव धनु में द्वितीयेश और पंचमेश बुध, चतुर्थेश सूर्य और राहु स्थित है तथा सप्तमेश मंगल से दृष्ट है। अष्टमेश बृहस्पति चन्द्रमा जिस राशि में है उसी राशि में केन्द्र में स्थित है।

निष्कर्ष—लग्नेश केन्द्र में पीड़ित और ग्रस्त है। अष्टमेश भी केन्द्र में सप्तमेश बृहस्पति से दृष्ट है। परन्तु बृहस्पति शुभ चन्द्रमा के नक्षत्र में है। इसी प्रकार शनि भी लग्नेश के नक्षत्र में है। यहाँ त्रिकोण और केन्द्र में शुभ और अशुभ ग्रह दोनों ही स्थित हैं जिससे मध्य आयु का संकेत मिलता है। इस कुण्डली में एक और योग भी है। यदि अष्टमेश केन्द्र में हो और अष्टम भाव में कोई ग्रह न हो तो जातक ४० वर्ष तक जीवित रहता है।

बृहस्पति की दशा और बुध की भुक्ति में मृत्यु हुई। बृहस्पति लग्न से सप्तमेश है अतः वह मारक है। यद्यपि बुध लग्नेश है, वह बुरी तरह पीड़ित है अतः मारक है।

कुण्डली सं० ५१

जन्म तारीख १२–७–१८७७ जन्म समय १०–० बजे प्रात: (स्था० स०)
अक्षांश ४६°१३ उत्तर, ६° ७′ पूर्व

राशि

नवांश

बुध की दशा शेष–१२ वर्ष ५ महीने २८ दिन

अष्टम भाव—कुण्डली सं० ५१ में अष्टम भाव मेष पर षष्ठेश शनि और सप्तमेश बृहस्पति की दृष्टि है।

अष्टमेश—मंगल राहु और शनि से पीड़ित है।

आयुष्कारक—शनि अपनी मूल त्रिकोण राशि में स्थित है किन्तु राहु और मंगल से पीड़ित है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव में अशुभ ग्रह मंगल, शनि और राहु स्थित हैं जबकि अष्टमेश शनि भी बुरी तरह पीड़ित है।

निष्कर्ष—यदि लग्नेश कमजोर हो, ६, ८ और १२ वें भाव में अशुभ ग्रह हों, बृहस्पति त्रिकोण या केन्द्र में स्थित हो और लग्न में अशुभ ग्रह स्थित हो तो जातक-पारिजात के अनुसार मध्य आयु होती है। यहाँ लग्नेश अपनी राशि में केन्द्र में स्थित है जबकि वह १२ वें भाव के स्वामी सूर्य से युक्त सप्तमेश बृहस्पति से दृष्ट है जो उसे कमजोर बनाते हैं। अशुभ ग्रह मंगल, राहु और शनि छठे भाव में स्थित हैं और केतु १२ वें भाव में है। बृहस्पति चौथे भाव में केन्द्र में स्थित है और अशुभ ग्रह मंगल की विपरीत दृष्टि लग्न पर है। यहाँ पर लग्न में अशुभ ग्रह को छोड़कर योग की सारी शर्तें पूरी हो रही हैं। इसकी बजाये लग्न पर अशुभ ग्रह मंगल की दृष्टि है। दूसरी ओर लग्नेश केन्द्र में स्थित है, और अष्टमेश पीड़ित और कमजोर है। अत: मध्य आयु की आशा की जा सकती है।

सूर्य की दशा और शुक्र की भुक्ति में मृत्यु हुई। सूर्य द्वादशेश है और सप्तमेश

बृहस्पति से दृष्ट है। वह चन्द्रमा से द्वितीयेश भी है और चन्द्रमा से १२ वें भाव में तृतीयेश और द्वादशेश बुध के साथ स्थित है।

नवांश में वह लग्न और चन्द्रमा दोनों से ही अष्टमेश है और द्वितीयेश शनि के साथ स्थित है। शुक्र न केवल प्रत्यक्ष मारक है बल्कि बुध के नक्षत्र में होने के कारण दो मारक–बृहस्पति और सूर्य से प्रभावित है, शुक्र मारक शक्ति रखता है।

कुण्डली सं० ५२

जन्म तारीख १७–१०–१८६७ जन्म समय २–३० बजे सन्ध्या (स्था. स.)

अक्षांश ४६°१३′ उत्तर, देशा० ६°०७′ पूर्व।

राशि

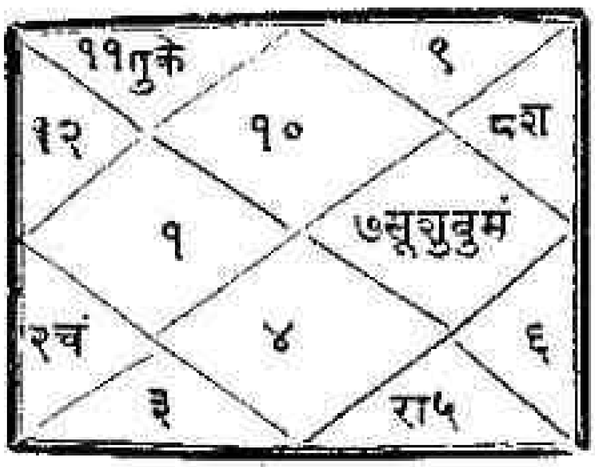

नवांश

मंगल की दशा शेष–५ वर्ष ७ महीने ० दिन

अष्टम भाव—कुण्डली सं० ५२ में अष्टम भाव में राहु स्थित है और उस पर तृतीयेश और द्वादशेश बृहस्पति और लग्नेश शनि की दृष्टि है।

अष्टमेश—सूर्य केन्द्र में स्थित है और चतुर्थेश तथा एकादशेश मंगल, षष्ठेश और नवमेश बुध, और पंचमेश तथा दसमेश शुक्र से युक्त है।

आयुष्कारक—शनि उपचय ११ वें भाव में स्थित है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव धनु राशि है जिसका स्वामी बृहस्पति केतु के साथ द्वितीय भाव में स्थित है।

निष्कर्ष—लग्नेश और अष्टमेश दोनों ही पूरी तरह बली हैं परन्तु अष्टमेश सूर्य लग्नेश शनि की तुलना में स्थिति और युक्ति दोनों ही कारणों से अधिक बली है। अष्टम भाव राहु से पीड़ित है किन्तु उसपर लग्नेश शनि की दृष्टि भी है। त्रिकोण और केन्द्र में शुभ और अशुभ दोनों ही ग्रह स्थित है जिससे मध्य आयु का संकेत मिलता है।

शनि की दशा और राहु की भुक्ति में जातक की मृत्यु हुई। दशानाथ शनि एक

प्रबल मारक है क्योंकि वह लग्न से द्वितीयेश है, चन्द्रमा से सप्तम भाव में स्थित है और नवांश में लग्न तथा चन्द्रमा दोनों से ही सप्तमेश है। अष्टमेश सूर्य के स्वामित्व वाली राशि में राहु स्थित होने पर शनि का फल देता है और वह बली बन जाता है।

कुण्डली सं० ५३

जन्म तारीख २९-५-१९१७ जन्म समय ३-० बजे संध्या (ई. एस. टी.)
अक्षांश ४२°०५' उत्तर, ७°१८ पश्चिम।

राशि

नवांश

शुक्र की दशा शेष—१ वर्ष ० महीने ० दिन

अष्टम भाव—कुण्डली सं० ५३ में अष्टम भाव में मंगल और लग्नेश बुध स्थित है। इस पर पंचमेश और षष्ठेश शनि की दृष्टि है।

अष्टमेश—अष्टमेश मंगल लग्नेश बुध से युक्त होकर अपनी मूलत्रिकोण राशि मेष में स्थित हैं और शनि से दृष्ट है।

आयुष्कारक—शनि १० वें भाव में अष्टमेश चन्द्रमा से युक्त है। वह सप्तमेश और दशमेश बुध के साथ राशि परिवर्तन में है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव मीन राशि किसी ग्रह की दृष्टि या स्थिति के कारण बुरे प्रभाव से मुक्त है। अष्टमेश बृहस्पति चन्द्रमा जिस राशि में है वहां के अधिपति सूर्य से युक्त होकर और १० वें भाव के अधिपति शुक्र से युक्त होकर १० वें भाव में स्थित है। वह मंगल और केतु के कारण पाप कर्तरी योग है।

निष्कर्ष—लग्नेश और अष्टमेश एक साथ हैं और शनि से पीड़ित हैं। चन्द्रमा भी १२ वें भाव में है परन्तु त्रिकोण में दो शुभ ग्रह बृहस्पति और शुक्र स्थित हैं। बृहस्पति की दृष्टि लग्न पर है। इन ग्रहों की स्थिति से मध्य आयु का संकेत मिलता है।

बृहस्पति की दशा और शनि की भुक्ति में जातक की मृत्यु हुई। चूंकि लग्न कन्या है अतः बृहस्पति बली मारक बन जाता है। शनि नवांशमें लग्न और राशि में चन्द्रमा दोनों से ही सप्तमेश है अतः वह अपनी दशा में मारने के लिए सक्षम, है।

कुण्डली सं० ५४

जन्म तारीख १२-१-१८६३ जन्म समय ६–३३ बजे संध्या (स्था० स०)

अक्षांश २२°४०′ उत्तर, ८८°३०′ पूर्व।

राशि

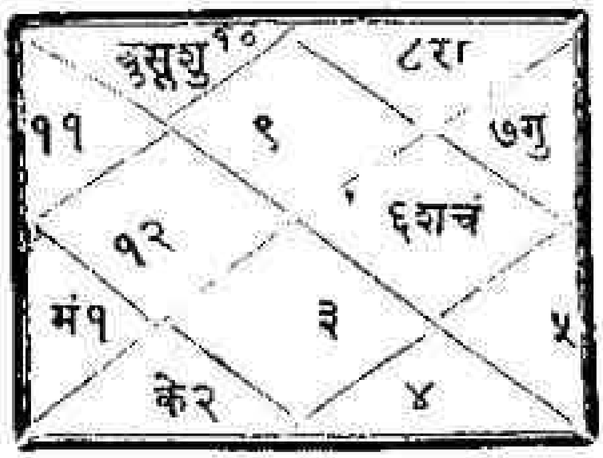

नवांश

चन्द्रमा की दशा शेष —७ वर्ष ३ महीने

अष्टम भाव—कुण्डली सं० ५४ में अष्टम भाव में कर्क राशि है। उस पर नवमेश सूर्य, षष्ठेश और एकादशेश शुक्र और सप्तमेश तथा दसमेश बुध की दृष्टि है।

अष्टमेश—अष्टमेश चन्द्रमा द्वितीयेश तथा तृतीयेश शनि से युक्त होकर दसम भाव में स्थित है।

आयुष्कारक—शनि अष्टमेश से युक्त होकर दसम भाव में स्थित है। वह सप्तमेश और दसमेश के साथ राशि परिवर्तन योग में है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव में अष्टमेश मंगल स्थित है और उस पर सप्तमेश बृहस्पति की दृष्टि है। अष्टम भाव में वहाँ का अधिपति स्वयं मंगल स्थित है।

निष्कर्ष—लग्नेश ग्यारहवें भाव में बली है किन्तु वह राहु और शनि के कारण पापकर्तरी योग में है जबकि अष्टमेश केन्द्र में स्थित है। लग्नेश और सभी शुभ ग्रह पणफर (२,५,८,११) में या उसके बाद वाले भावों में स्थित हैं जिससे मध्य आयु का संकेत मिलता है।

बृहस्पति की दशा और शुक्र की भुक्ति में मृत्यु हुई। बृहस्पति बली मारक है क्योंकि वह चन्द्रमा से सप्तमेश है और चन्द्रमा से दूसरे भाव में स्थित है और पाप

कर्तरी योग में है। नवांश में वह चन्द्रमा से सप्तमेश है। भुक्ति नाथ सूर्य सप्तमेश बुध से युक्त होकर दूसरे भाव में स्थित है। नवांश में भी वह द्वितीयेश है।

कुण्डली संख्या ५५

जन्म तारीख २४-३-१८८३ जन्म समय ६-० बजे प्रातः (स्था० स०)
अक्षांश १३°- उत्तर, देशा० ७७°-३५′ पूर्व ।

राशि नवांश

चन्द्रमा की दशा शेष—६ वर्ष

अष्टम भाव—कुण्डली सं० ५५ में अष्टम भाव में राहु स्थित है और उसपर लग्नेश तथा दसमेश बृहस्पति की दृष्टि है।

अष्टमेश—अष्टमेश के रूप में शुक्र ११ वें भाव में उत्तम स्थिति में है।

आयुष्कारक—शनि तीसरे भाव में द्वितीयेश तथा नवमेश मंगल से दृष्ट है और तृतीयेश शुक्र के साथ राशि परिवर्तन में है।

चन्द्रमा से विचार—चन्द्रमा से अष्टम भाव में केतु स्थित है और वह सूर्य तथा शनि के कारण पाप कर्तरी योग में है। चन्द्रमा जिस राशि में है वहाँ का अधिपति बुध और अष्टमेश मंगल छठे भाव में युक्त हैं तथा उनपर सप्तमेश बृहस्पति की दृष्टि है।

निष्कर्ष—लग्नेश बृहस्पति केन्द्र में बली है, अष्टमेश शुक्र भी ११वें भाव में उत्तम स्थिति में है और आयुष्कारक शनि तीसरे भाव में उचित स्थिति में है। ये सब अधिक आयु के पक्ष में हैं। परन्तु लग्न अशुभ ग्रह मंगल और केतु के घेरे में है। इसी प्रकार चन्द्रमा से अष्टम भाव भी सूर्य और शनि के प्रभाव में है। अशुभ ग्रह सूर्य लग्न में स्थित होकर मध्य आयु का संकेत देता है।

शनि की दशा और मंगल की भुक्ति में मृत्यु हुई। शनि तीसरे भाव में स्थित है और उसपर द्वितीयेश मंगल की दृष्टि है। भुक्तिनाथ मंगल द्वितीयेश होने

के कारण मारकेश है और वह सप्तमेश बुध से युक्त है। अतः मंगल यहाँ पर मारक है।

कुण्डली सं० ५६

जन्म तारीख ९-३-१८९४ जन्म समय लगभग ३–० बजे प्रातः (सी.ई.टी.)
अक्षांश ५१° उत्तर, १३°४२′ पूर्व।

राशि

नवांश

शनि की दशा शेष–१ वर्ष ९ महीने १९ दिन

अष्टम भाव—कुण्डली सं० ५६ में अष्टम भाव कर्क पर पंचमेश और द्वादशेश मंगल की विपरीत दृष्टि है। इसपर द्वितीयेश शनि की प्रबल दृष्टि है और कारक उच्च का है। अष्टम भाव पर वर्गोत्तम शनि, षष्ठेश और एकादशेश शुक्र की भी दृष्टि है।

अष्टमेश—चन्द्रमा सप्तमेश बुध और राहु से युक्त होकर केन्द्र में स्थित है। उसपर मंगल की दृष्टि है।

आयुष्कारक—शनि वर्गोत्तम उच्च स्थिति में ११ वें भाव में काफी प्रबल है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव तुला में बली कारक स्थित है। अष्टमेश शुक्र ११ वें भाव में शनि के साथ राशि परिवर्तन में है। वह चन्द्र राशि के स्वामी बृहस्पति से तीसरे भाव से दृष्ट है।

निष्कर्ष—लग्न, अष्टमेश और चन्द्रमा अशुभ ग्रहों से बुरी तरह पीड़ित हैं। लग्नेश अशुभ भाव ६ में स्थित है। चन्द्रमा से अष्टम भाव थोड़ी सी उत्तम स्थिति में है। इससे बालारिष्ट या अल्पायु भी हो सकती है किन्तु कारक शनि के बली होने के कारण जातक को मध्य आयु ग्रुप में ले गया।

शुक्र की दशा और केतु की भुक्ति में मृत्यु हुई। शुक्र दूसरे भाव में स्थित है और द्वितीयेश शनि के साथ राशि परिवर्तन में है। केतु बुध की राशि में है। बुध लग्न और चन्द्रमा दोनों से ही सप्तमेश के रूप में प्रबल मारक है और उसने अपनी मारक शक्ति केतु को दे दी। केतु भुक्ति में मारक बन गया।

कुण्डली सं० ५७

जन्म तारीख १२-२-१८८० समय ०–४० बजे प्रातः (स्था० स०)

अक्षांश ४१°२′ उत्तर, ९३°२५′ पश्चिम।

राशि

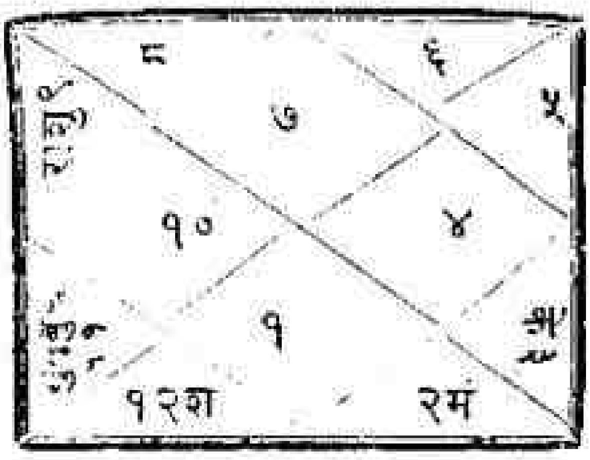

नवांश

बृहस्पति की दशा शेष–९ वर्ष १० महीने १७ दिन

अष्टम भाव—कुण्डली सं० ५७ में वृषभ राशि में द्वितीयेश और सप्तमेश मंगल स्थित है और उस पर योगकारक शनि की दृष्टि है।

अष्टमेश—शुक्र लग्नेश भी है और राहु के साथ तीसरे भाव में स्थित है। उसपर चतुर्थेश और पंचमेश शनि की दृष्टि और सप्तमेश मंगल की विपरीत दृष्टि है।

आयुष्कारक—शनि छठे भाव में स्थित है किन्तु वह षष्ठेश बृहस्पति के साथ राशि परिवर्तन के कारण बली है। वह नवांश में अपनी ही राशि में स्थित है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव पर चन्द्रराशि के स्वामी ग्रह शनि की दृष्टि है जब कि अष्टमेश चन्द्रमा चन्द्रराशि में द्वितीयेश बृहस्पति, सप्तमेश सूर्य और षष्ठेश चन्द्रमा से युक्त है।

निष्कर्ष—लग्नेश और अष्टमेश शुक्र राहु से पीड़ित है। किन्तु दोनों ही ग्रह शुक्र के नक्षत्र में हैं जिसका स्वामी लग्नेश है। इस प्रकार लग्नेश और अष्टमेश के अपने ही नक्षत्र में होने और शनि जो समान रूप से उत्तम स्थिति में है, से दृष्ट होने के कारण जातक पूर्ण आयु ग्रुप में चला गया।

मंगल की दशा और राहु की भुक्ति में जातक की ९० वर्ष की आयु में मृत्यु हुई। साधारणतः जब अष्टमेश अपनी ही राशि में हो या शनि अष्टम भाव में हो और किसी प्रकार के प्रभाव से मुक्त हो तो पूर्ण आयु देता है। दशानाथ मंगल द्वितीयेश और सप्तमेश होकर अष्टम भाव में स्थित होने के कारण मारक है। वह राशि में चन्द्रमा से तृतीयेश और नवांश में चन्द्रमा से सप्तमेश होने के कारण प्रथम श्रेणी का मारक है। राहु शुक्र से युक्त होकर और शनि तथा मंगल से दृष्ट होकर तीसरे भाव में स्थित है। राहु शुक्र (जिस ग्रह से वह युक्त है), बृहस्पति (जिस राशि में वह स्थित है उसका स्वामी) और शनि (शनिवाद राहु) का फल देता है। अष्टमेश शुक्र नवांश में चन्द्रमा से सातवें भाव में है, बृहस्पति लग्न से तृतीयेश है, राशि में चन्द्रमा से द्वितीयेश है, नवांश लग्न से सप्तमेश है और नवांश में चन्द्रमा से दूसरे भाव में स्थित है जबकि शनि नैसर्गिक मृत्यु कारक है। अतः राहु मारक बन जाता है।

कुण्डली संख्या ५८

जन्म तारीख २४–५–१८१९ जन्म समय ५–०४ बजे प्रातः (स्था० स०)

अक्षांश ५१° ३०′ उत्तर, देशा० ०° ५′ पश्चिम।

राशि नवांश

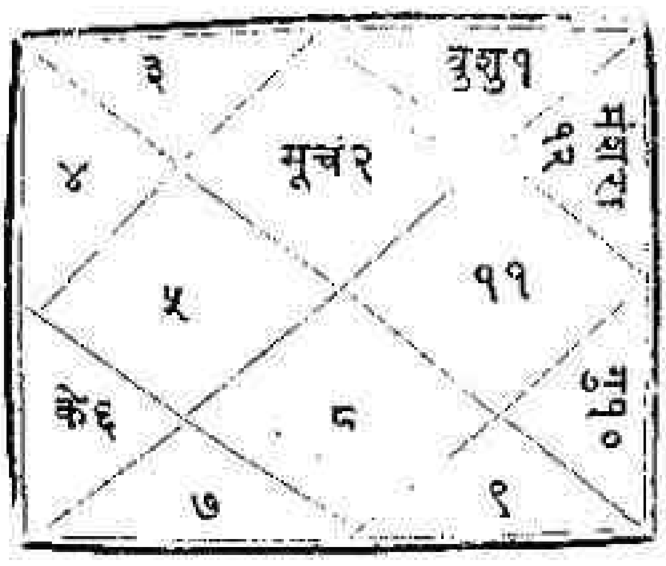

चन्द्रमा की दशा शेष—७ वर्ष ३ महीने

अष्टम भाव—कुण्डली सं० ५८ में अष्टम भाव में धनु राशि उदय हो रही है उसपर नवमेश और दसमेश शनि की दृष्टि है।

अष्टमेश—बृहस्पति नवम भाव में नीच का है। किन्तु नवमेश शनि के साथ राशि परिवर्तन में है।

आयुष्कारक—शनि एकादशेश के साथ राशि परिवर्तन में एकादश भाव और अपने ही नक्षत्र में स्थित है। इससे उसे बल मिलता है। वह सप्तमेश मंगल और राहु से युक्त है जो दोनों ही वर्गोत्तम में हैं।

चन्द्रमा से विचार—चूँकि चन्द्रमा लग्न में है अतः ग्रह स्थिति वही रहेगी।

निष्कर्ष—लग्नेश शुक्र १२ वें भाव में केतु के नक्षत्र में स्थित है जो पंचम भाव में है। केतु वर्गोत्तम में है और वह चतुर्थेश सूर्य के नक्षत्र में है। सूर्य केन्द्र में स्थित है और नवांश में उच्च स्थिति में है। सूर्य अप्रत्यक्ष रूप से लग्नेश शुक्र को बली बनाता है। लग्न स्वयं ही प्रबल स्थिति में है जहाँ सूर्य और उच्च का चन्द्रमा स्थित है, दोनों ही चन्द्रमा के नक्षत्र में हैं (यह नक्षत्र विशेष रूप से बली है क्योंकि इसका स्वामी चन्द्रमा बली है), लग्न पर अष्टमेश और एकादशेश बृहस्पति की दृष्टि है जो मूलतः बली शनि का फल देता है। लग्न पर शनि की भी दृष्टि है और वह दो कारणों से बली है (१) अपने ही नक्षत्र में स्थित होकर (२) एकादशेश बृहस्पति के साथ राशि परिवर्तन करके। लग्न के इस प्रकार असाधारण रूप से बली होने के कारण यह कुण्डली पूर्ण आयु की श्रेणी में है।

बुध की दशा और शनि की भुक्ति में १९०३ में जातक की मृत्यु हुई। बुध द्वितीयेश होकर १२ वें भाव में स्थित है। वह नवांश लग्न से तृतीयेश और नवांश चन्द्रमा से द्वितीयेश है। उसकी दशा मृत्यु कारक हो गई। भुक्तिनाथ शनि राशि में मारक मंगल से युक्त है और नवांश में उसी मारक से दृष्ट है जिससे वह स्वयं मारक बन गया।

कुण्डली सं० ५९

जन्म तारीख ७–५–१९६१ जन्म समय २–५१ बजे प्रातः (स्था स०)
देशान्तर ८०°३०′ पूर्व।

राशि

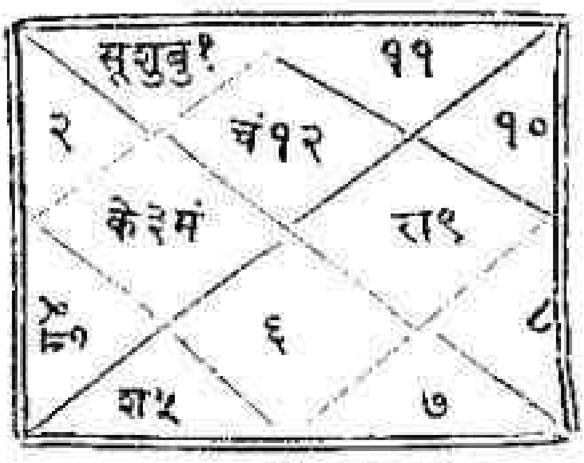

नवांश

बुध की दशा शेष—१० वर्ष २ महीने २० दिन

अष्टम भाव—कुण्डली सं० ५९ में अष्टम भाव में तुला राशि है जिसपर अष्टमेश शुक्र, षष्ठेश सूर्य और सप्तमेश बुध की दृष्टि है। इसपर शनि की भी दृष्टि है।

अष्टमेश—अष्टमेश शुक्र षष्ठेश सूर्य और सप्तमेश बुध से युक्त होकर दूसरे भाव में स्थित है।

आयुष्कारक—शनि छठे भाव में शत्रु राशि में स्थित है।

चन्द्रमा से विचार—चूँकि चन्द्रमा लग्न में स्थित है अतः वही स्थिति रहेगी।

निष्कर्ष—अष्टम भाव, अष्टमेश और शनि की स्थिति से समान्यतः इस कुण्डली में पूर्ण आयु का संकेत नहीं मिलता है। किन्तु गहराई से देखने पर यह पता लगेगा कि अष्टमेश शुक्र अपने ही नक्षत्र में स्थित है, इसी प्रकार षष्ठेश भी जिसके साथ वह युक्त है। लग्न में पंचमेश चन्द्रमा स्थित है और लग्नेश की उच्च दृष्टि लग्न और चन्द्रमा दोनों पर है। प्राचीन सिद्धान्त के अनुसार यदि दशमेश उच्च का हो और अष्टम भाव में अशुभ ग्रह स्थित हो तो जातक की आयु लम्बी होगी। यहाँ पर लग्नेश और दसमेश बृहस्पति उच्च का है और यद्यपि अष्टम भाव खाली है उसपर अशुभ ग्रह सूर्य और शनि की दृष्टि है। एक अन्य सिद्धान्त के अनुसार यदि बृहस्पति उच्च का हो, अपनी मूल त्रिकोण राशि में शुभ ग्रह स्थित हो और लग्नेश बली हो तो जातक ८० वर्ष तक जीवित रहता है। बृहस्पति उच्च का है। नैसर्गिक शुभ ग्रह शुक्र अपने ही नक्षत्र में है। भाव कारक द्वितीयेश और नवमेश मंगल भी अपने ही नक्षत्र में है जब कि पंचमेश चन्द्रमा बहुत ही उत्तम स्थिति में है और उसपर मूल त्रिकोण राशि से बृहस्पति की उच्च दृष्टि है। सभी व्यावहारिक प्रयोजनों के लिए इस योग की शर्तें पूरी हो रही हैं।

बृहस्पति की दशा और बृहस्पति की भुक्ति में जातक की मृत्यु हुई। लग्नेश के रूप में बृहस्पति साधारण तथा मारक फल नहीं देता है किन्तु यहाँ वह बुध के नक्षत्र में स्थित है, जो स्वामित्व और स्थिति दोनों कारणों से प्रबल मारक है। अतः बृहस्पति मृत्यु देने की शक्ति रखता है।

कुण्डली सं० ६०

जन्म तारीख १२–७–१८५६ जन्म समय लगभग अर्द्धरात्रि

अक्षांश ५३° २' उत्तर, देशान्तर ६° १६' पश्चिम।

राशि

नवांश

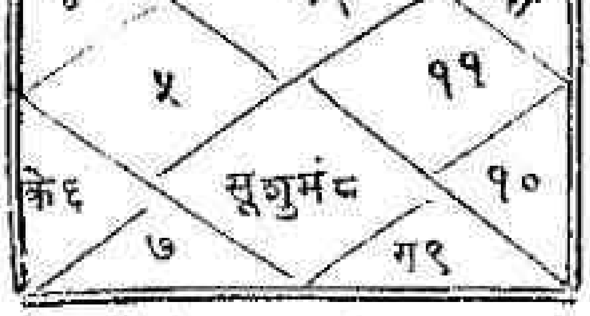

चन्द्रमा की दशा शेष–६ वर्ष ६ महीने १८ दिन

अष्टम भाव—कुण्डली सं० ६० में अष्टम भाव में धनु राशि है उस पर द्वितीयेश वर्गोत्तम बुध तथा शनि की दृष्टि है जो नवमेश और दसमेश है।

अष्टमेश—बृहस्पति अपनी ही राशि में वर्गोत्तम राहु से युक्त होकर और शनि से दृष्ट होकर स्थित है।

आयुष्कारक—शनि बुध से युक्त होकर दूसरे भाव में स्थित है किन्तु वह राहु के नक्षत्र में है। दूसरी ओर राहु ११ वें भाव में अष्टमेश बृहस्पति से युक्त होकर वर्गोत्तम में स्थित है।

चन्द्रमा से विचार—ग्रह स्थिति वही रहेगी क्योंकि चन्द्रमा लग्न में स्थित है।

निष्कर्ष—लग्न वर्गोत्तम में है और वहां पर तृतीयेश चन्द्रमा उच्च और वर्गोत्तम में स्थित है। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा लग्नेश के साथ राशि परिवर्तन योग में है जिससे लग्न और तीसरा भाव दोनों ही बली हो जाते हैं। अष्टम भाव पर बली कारक की दृष्टि है जिसकी दृष्टि अष्टमेश बृहस्पति पर भी है। नवांश में अपने मूलत्रिकोण में स्थित होने के कारण बृहस्पति काफी बली है और वह राशि में राहु से युक्त भी है। राहु ११ वें भाव में वर्गोत्तम है। ये सभी स्थितियाँ पूर्ण आयु के पक्ष में हैं।

शुक्र की दशा और शुक्र की भुक्ति में जातक की मृत्यु हुई। शुक्र तीसरे भाव में बुध के नक्षत्र में स्थित है और वह अष्टमेश बृहस्पति से दृष्ट है। नवांश में शुक्र लग्न और चन्द्रमा दोनों से सप्तमेश से युक्त होकर सप्तम भाव में स्थित है।

कुण्डली सं० ६१

जन्म तारीख १२–२–१८५६ जन्म समय १२–२२ बजे रात्रि (स्था० स०)
अक्षांश १८° उत्तर, देशान्तर ८४° पूर्व।

राशि

नवांश

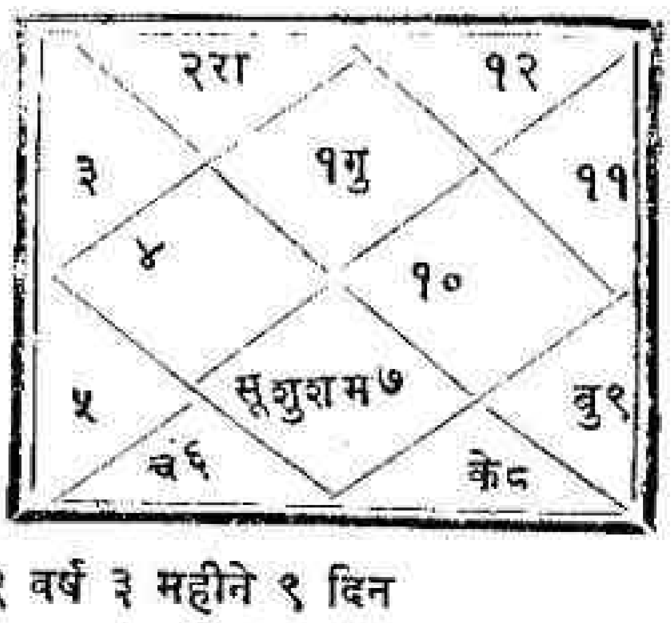

शुक्र की दशा शेष–१२ वर्ष ३ महीने ९ दिन

अष्टम भाव—कुण्डली सं० ६१ में अष्टम भाव में धनु राशि है वहां पर लग्नेश शुक्र स्थित है जिस पर नवमेश और दशमेश की दृष्टि है।

अष्टमेश—बृहस्पति द्वितीयेश और पंचमेश बुध तथा चतुर्थेश सूर्य से युक्त होकर १० वें भाव में स्थित है।

आयुष्कारक–शनि दूसरे भाव में स्थित है और वह लग्नेश शुक्र तथा अष्टमेश बृहस्पति से दृष्ट है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव में वृश्चिक राशि है और वहां न तो कोई ग्रह स्थित है और न ही उस पर किसी ग्रह की दृष्टि है। अष्टमेश मंगल अशुभ ग्रह केतु से युक्त होकर सप्तम भाव में स्थित है जो अष्टम भाव से १२ वां भाव है और उस पर नवमेश तथा द्वादशेश बृहस्पति की दृष्टि है।

निष्कर्ष—लग्नेश शुक्र अष्टम भाव में दु:स्थान में है, अष्टमेश बृहस्पति केन्द्र में है, चन्द्रमा से अष्टमेश सप्तम भाव से १२ वें भाव में पीडित और कमजोर होने के कारण अल्पायु दे सकता है किन्तु वास्तव में यह कुण्डली पूर्णायु की श्रेणी में है। लग्नेश शुक्र यद्यपि दु:स्थान में हैं, वह राशि में अपने ही नक्षत्र में है और नवांश में वह अपने मूल त्रिकोण राशि में है। अष्टमेश बृहस्पति भी १० वें भाव में अपने ही नक्षत्र में स्थित है। मंगल भी अपने नक्षत्र में वर्गोत्तम में है और चन्द्र राशि से स्वामी के रूप में चन्द्रमा पर दृष्टि डाल रहा है। आयुष्कारक शनि दूसरे भाव में है और अष्टमेश जो उत्तम स्थिति में है, से दृष्ट है। इन सभी तथ्यों से आयु बढ़ गई।

शनि की दशा और चन्द्रमा की भुक्ति में जातक की मृत्यु हुई। शनि अपनी दशा में मारक है क्योंकि वह लग्न से दूसरे भाव और चन्द्रमा से तीसरे भाव में स्थित है। शनि नवांश लग्न से ७ वें भाव में है। चन्द्रमा तृतीयेश होकर १२ वें भाव में स्थित है। अत: वह अपनी भुक्ति में मृत्यु देने में सक्षम है।

कुण्डली सं० ६२

जन्म तारीख १५–८–१८७२ जन्म समय ५–७ बजे प्रात: (स्था० स०)
अक्षांश २२°५१′ उत्तर, देशान्तर ८८°३०′ पूर्व।

राशि

नवांश

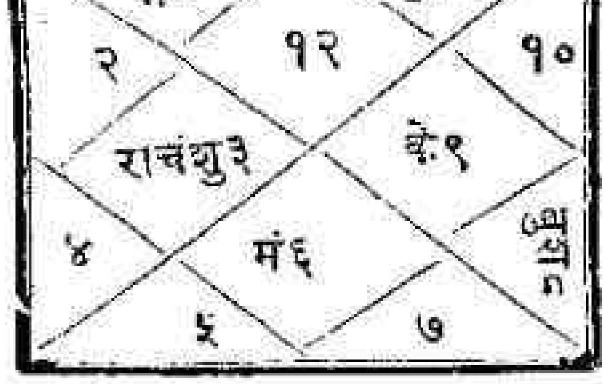

केतु की दशा शेष–३ वर्ष २ महीने २२ दिन

अष्टम भाव—कुण्डली सं० ६२ में अष्टम भाव में कुम्भ राशि है उसपर द्वितीयेश सूर्य चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र और तृतीयेश तथा द्वादशेश बुध की दृष्टि है। इस पर नीच के मंगल की भी दृष्टि है।

अष्टमेश—अष्टमेश शनि लग्नेश चन्द्रमा से युक्त होकर छठे भाव में स्थित है।

आयुष्कारक—शनि अष्टमेश होने के साथ साथ कारक भी है और लग्नेश चन्द्रमा से युक्त होकर छठे भाव में स्थित है।

चन्द्रमा से विचार-अष्टम भाव में उच्च का बृहस्पति और नीच का चन्द्रमा स्थित हैं। चन्द्रमा स्वयं ही अष्टमेश है और द्वितीयेश तथा तृतीयेश शनि से युक्त है।

निष्कर्ष—लग्न से अष्टम भाव की स्थिति से पूर्ण आयु का संकेत नहीं मिलता है परन्तु लग्नेश और अष्टमेश चन्द्रमा तथा शनि की युक्ति उत्तम है। उनका राशि स्वामी बृहस्पति लग्न में और उच्च स्थिति में है जिससे उनको बल मिलता है। मंगल लग्न में नीच का है किन्तु अष्टमेश के नक्षत्र में स्थित होने के कारण यह समाप्त हो जाता है। लग्न में उच्च के बृहस्पति की विद्यमानता और लग्न से प्राप्त बल तथा अष्टमेश के कारण यह कुण्डली अप्रत्यक्ष रूप से पूर्णायु श्रेणी में है।

बृहस्पति की दशा और राहु की भुक्ति में जातक की मृत्यु हुई। दशानाथ बृहस्पति बुध के नक्षत्र में है जो द्वितीयेश सूर्य से युक्त होकर दूसरे भाव में स्थित है। बुध चन्द्रमा से सप्तमेश भी है। राहु शुक्र की राशि वृषभ में स्थित है जो द्वितीयेश सूर्य के साथ दूसरे भाव में स्थित है। राहु को शनि का भी फल देना चाहिए जो लग्न से सप्तमेश भी है और चन्द्रमा से द्वितीयेश तथा तृतीयेश है। अतः अपनी दशा में राहु मृत्यु का कारण बन गया।

कुण्डली सं० ६३

जन्म तारीख २३–११–१९०२ जन्म समय ५–१६ बजे प्रातः (स्था. स.)

अक्षांश २३°६′ उत्तर, देशा० ७२°४०′ पूर्व।

राशि

नवांश

शुक्र की दशा शेष–१३ वर्ष ११ महीने ११ दिन

अष्टम भाव—कुण्डली सं० ६३ में अष्टम भाव में वृषभ राशि है उस पर लग्नेश और अष्टमेश शुक्र की दृष्टि है और एकादशेश सूर्य की भी दृष्टि है। इस पर नीच के बृहस्पति की भी दृष्टि है।

अष्टमेश—शुक्र द्वितीयेश मंगल से दृष्ट होकर दूसरे भाव में स्थित है।

आयुष्कारक--शनि वर्गोत्तम में अपनी ही राशि मकर में चौथे भाव केन्द्र में स्थित है। वह तृतीयेश और सप्तमेश नीच के बृहस्पति से युक्त है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टमेश बृहस्पति बली आयुष्कारक से युक्त होकर छठे भाव में स्थित है। चतुर्थेश और नवमेश मंगल और आयुष्कारक शनि दोनों की अष्टम भाव पर दृष्टि है।

निष्कर्ष—लग्न में नवमेश और द्वादशेश बुध और वर्गोत्तम राहु स्थित है। आयुष्कारक शनि जो बली है, लग्न पर दृष्टि डाल रहा है। लग्नेश शुक्र शनि के नक्षत्र में है और राशि स्वामी से दृष्ट है। लग्न और चन्द्रमा दोनों से अष्टम भाव का बल और आयुष्कारक के बल से और लग्न से पूर्ण आयु का संकेत मिलता है।

शनि की दशा और बुध की भुक्ति में जातक की मृत्यु हुई। शनि चन्द्रमा से एक बली मारक है। लग्न से वह तृतीयेश बृहस्पति से युक्त है और वह मारक बन जाता है। भुक्ति नाथ बुध द्वादशेश है और लग्न से दूसरे भाव में स्थित है। बुध चन्द्रमा से द्वितीयेश भी है।

अप्राकृतिक मृत्यु

प्राचीन लेखकों द्वारा दिए गए नियम अव्यावहारिक नहीं हैं। उनमें से अनेक ऐसे हैं जिनमें कुछ संशोधन करके उन्हें लागू किया जाता है। अप्राकृतिक मृत्यु वह है जो बाहरी साधनों की मदद से होती है। वह अचानक और अप्रत्याशित हो सकती है जैसे कि अग्नि दुर्घटना, पानी में डूबकर या परिवहन से दुर्घटना और हत्या आदि। वे पूर्व विचारित भी हो सकती हैं जैसे कि आत्महत्या के मामले में। तथापि अप्राकृतिक मृत्यु के कारण बीमारी या बुढ़ापा नहीं हो सकते। यद्यपि यह संभव है कि एक बीमार व्यक्ति किसी कार के नीचे आ सकता है या एक बूढ़ी महिला किसी ऊँचाई से छलांग लगाकर आत्महत्या कर सकती है। मृत्यु का कारण वह है जो यह बताता है कि यह अप्राकृतिक मृत्यु है। अधिकतर मामले में अप्राकृतिक मृत्यु एक भयंकर मृत्यु होती है।

यह देखने में आएगा कि अधिकतर मामलों में ८ वें भाव, २२ वें द्रेष्काण आदि के प्रभावों के बावजूद मंगल, राहु और शनि अति अशुभ कार्य करते हैं। आयुकाल और मृत्यु के स्वरूप का निर्णय करने के लिए नक्षत्रों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

कुण्डली सं० ६४

जन्म तारीख ४-४-१९४४ जन्म समय ६-० बजे प्रातः (आई एस टी.)
अक्षांश २६°१८′ उत्तर, देशा० ७३°४′ पूर्व ।

राशि

नवांश

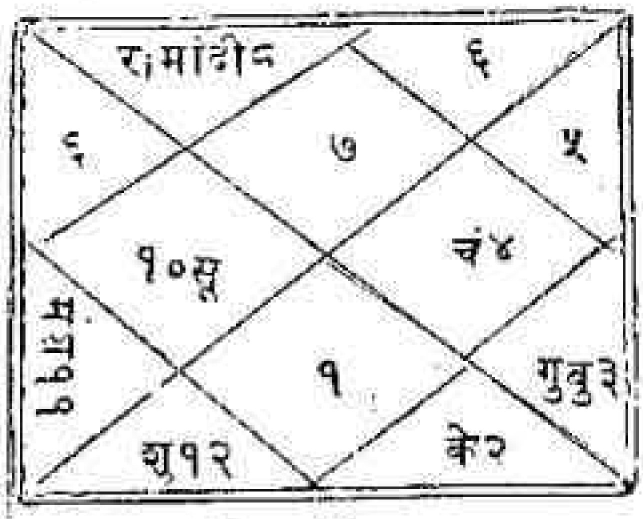

चन्द्रमा की दशा शेष—२ वर्ष ११ महीने ७ दिन

अष्टम भाव—कुण्डली सं० ६४ में अष्टम भाव तुला में केतु स्थित है और उसपर द्वितीयेश तथा नवमेश नीच के मंगल की दृष्टि है।

अष्टमेश—शुक्र राशि में लग्न से तीसरे भाव में अपनी ही राशि में स्थित है और वह नवांश में उच्च का है।

आयुष्कारक—शनि त्रिकोण में स्थित है किन्तु वह मंगल से युक्त और चन्द्रमा से दृष्ट है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव पर तृतीयेश और द्वादशेश बृहस्पति की दृष्टि है जबकि अष्टमेश सूर्य तृतीय भाव में स्थित है।

निष्कर्ष—लग्नेश दसवें भाव में स्थित है परन्तु वह केतु के नक्षत्र में है जो ८ वें भाव में स्थित है। अष्टमेश शुक्र प्रत्यक्षतः उत्तम स्थिति में है किन्तु वह षष्ठेश सूर्य के नक्षत्र में है। चन्द्रमा पर दो अशुभ ग्रह शनि और मंगल का प्रभाव है। दोनों ही बहुत निकट स्थित हैं और उनपर कोई शुभ दृष्टि नहीं है। राहु की दशा और शनि की भुक्ति में जातक की मृत्यु ५-१०-१९६४ को हुई। राहु दूसरे भाव में स्थित है और वह मंगल की राशि में है। मंगल एक मारक है क्योंकि वह लग्न से द्वितीयेश है और चन्द्रमा से ७ वें भाव में शनि के साथ स्थित है। शनि चन्द्रमा से द्वितीयेश है। इसके अतिरिक्त राहु पर पीड़ित शनि की दृष्टि है। राहु भरणी नक्षत्र में है जिसका स्वामी शुक्र है जो अष्टमेश है। शनि सप्तमेश बुध के नक्षत्र में है और वह द्वितीयेश मंगल के साथ युक्त होने के कारण मारक है क्योंकि वह चन्द्रमा से द्वितीयेश होकर वहाँ से सप्तम भाव में स्थित है। नवांश में भी राहु और शनि दोनों स्थिति और स्वामित्व के कारण बली मारक स्थिति में है।

इस लड़की की मृत्यु बस दुर्घटना में हुई। अष्टम भाव में केतु स्थित है और उसपर मंगल की दृष्टि है। दशानाथ मेष राशि (दूसरा भाव चेहरे का द्योतक होता है) में शुक्र के नक्षत्र में स्थित है जो वाहन का कारक होता है। दुर्घटना में चेहरा विकृत हो गया और मौके पर ही मृत्यु हो गई।

कुण्डली संख्या ६५

जन्म तारीख १५–७–१९४२ समय २–३० बजे संध्या (आई. एस. टी.)
अक्षांश ८° ११' उत्तर, देशा० ७७°, २९' पूर्व।

राशि नवांश

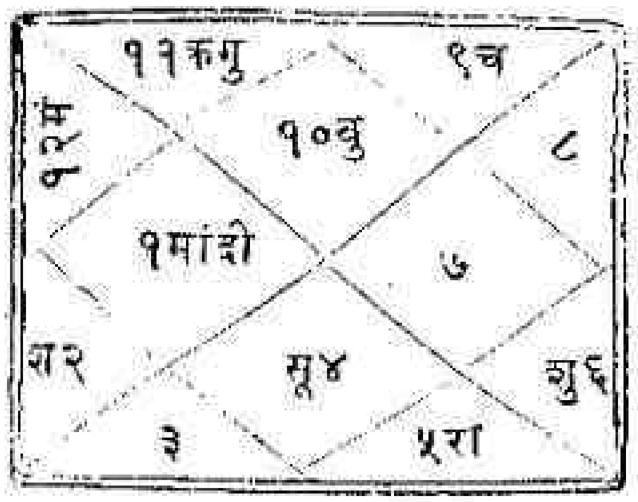

शनि की दशा शेष–२ वर्ष २ महीने ० दिन

अष्टम भाव—कुण्डली संख्या ६५ में अष्टम भाव में अग्नि राशि धनु है और उसपर अष्टमेश बृहस्पति और द्वितीयेश तथा पंचमेश बुध की दृष्टि है।

अष्टमेश—दूसरे भाव में द्वितीयेश बुध से युक्त होकर अष्टमेश बृहस्पति स्थित है।

आयुष्कारक—शनि लग्नेश शुक्र से युक्त होकर केन्द्र में लग्न में स्थित है और उसपर किसी की भी दृष्टि नहीं है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव कुम्भ में केतु स्थित है और उस पर पंचमेश और दसमेश नीच के मंगल और अष्टमेश तथा नवमेश बृहस्पति की दृष्टि है।

निष्कर्ष—सभी केन्द्र भाव अशुभ ग्रहों से पीड़ित हैं। लग्न पर शनि, चौथे भाव पर राहु, १० वें भाव पर मंगल, केतु और शनि तथा ७ वें भाव पर शनि का प्रभाव है। यद्यपि नवांश का लग्नेश लग्न भाव में स्थित है, वह नीच का है। वह राशि में मंगल के नक्षत्र में है। अष्टम भाव आयुध द्रेष्काण में है।

ता० १६–११–१९६४ को जातक के कपड़ों में आग लग गई और ता० १९–१२–१९६४ को उसकी मृत्यु हो गई। यह केतु की दशा और राहु की भुक्ति में हुआ। राहु चन्द्रमा से मारक स्थान में स्थित है और वह शुक्र के नक्षत्र में है जो लग्नेश

होकर लग्न भाव में शनि के साथ स्थित है। दशानाथ केतु चन्द्रमा से अष्टम भाव में मंगल और शनि से दृष्ट है। सिद्धान्त के अनुसार केतु मंगल के जैसा कार्य करता है। अतः जलकर मृत्यु हुई।

कुण्डली सं० ६६

जन्म तारीख ३-४-१९४९   जन्म समय ८-० बजे प्रातः (आई एस टी)
अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ७७°३५′ पूर्व।

राशि

नवांश

चन्द्रमा की दशा शेष—९ वर्ष ६ महीने २३ दिन

अष्टम भाव—कुण्डली संख्या ६६ में अष्टम भाव वृश्चिक पर चतुर्थेश चन्द्रमा की दृष्टि है।

अष्टमेश—अष्टमेश मंगल १२ वें भाव में सूर्य के दाह में है और द्वितीयेश तथा सप्तमेश शुक्र और तृतीयेश तथा षष्ठेश बुध से युक्त है।

आयुष्कारक—शनि ५ वें भाव में शत्रु राशि में स्थित है और वह चन्द्रमा पर दृष्टि डाल रहा है।

चन्द्रमा से विचार—चन्द्रमा से अष्टमेश बृहस्पति नवम भाव में नीच का है जबकि अष्टम भाव पर किसी की दृष्टि नहीं है।

निष्कर्ष—चूँकि लग्नेश और अष्टमेश १२ वें भाव में सूर्य के दाह में है और मारक ग्रहों से युक्त है अतः अधिक आयु का संकेत नहीं मिलता है। यद्यपि चन्द्रमा उच्च का है, उसपर अशुभ ग्रह शनि की दृष्टि है। चन्द्रमा पर बृहस्पति की भी दृष्टि है। अष्टम भाव वृश्चिक राशि के दूसरे द्रेष्काण में है जिसे निगूढ़ द्रेष्काण कहते हैं।

मोटर साइकिल में दुर्घटना होने के परिणामस्वरूप एक महीने बाद ता० २-१२-१९७७ को जातक की मृत्यु हो गई। यह राहु की दशा और शुक्र की भुक्ति

में हुआ। राहु मेष राशि में स्थित है जिसका स्वामी मंगल है और मंगल मारक १२ वें भाव में स्थित है। मंगल चन्द्रमा से भी मारक है। भुक्तिनाथ शुक्र प्रथम श्रेणी का मारक है क्योंकि वह लग्न से द्वितीयेश और सप्तमेश है। सप्तमभाव अष्टमेश मंगल की दृष्टि और केतु की स्थिति से पीड़ित है। केतु मंगल के जैसा फल देता है और मंगल अष्टमेश होकर १२ वें भाव में वाहन कारक शुक्र के समान डिग्री पर है। चूँकि यह राशि द्विस्वभाव राशि है अतः सड़क पर दुर्घटना हुई।

कुण्डली सं० ६७

जन्म तारीख २६-११-१९५९ जन्म समय ४-३० बजे संध्या (आई.एस.टी)
अक्षांश २९°२३′ उत्तर, देशा० ७९°३३′ पूर्व।

राशि

नवांश

चन्द्रमा की दशा शेष—४ वर्ष ५ महीने ६ दिन

अष्टम भाव—कुण्डली संख्या ६७ में अष्टम भाव धनु राशि में नवमेश और दसमेश शनि स्थित है।

अष्टमेश—बृहस्पति सप्तम भाव में, जो अष्टम भाव से १० वां भाव है सप्तमेश मंगल, चतुर्थेश सूर्य और द्वितीयेश तथा पंचमेश बुध से युक्त है।

आयुष्कारक—शनि अष्टम भाव में स्थित है जिसका अधिपति वहाँ से १२ वें भाव में स्थित है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव में मेष राशि है जो किसी प्रकार की दृष्टि से मुक्त है किन्तु अष्टमेश बारहवें भाव के स्वामी सूर्य से युक्त होकर तीसरे भाव में स्थित है। चतुर्थेश और सप्तमेश बृहस्पति और चन्द्र राशि का अधिपति बुध भी तीसरे भाव में स्थित है।

निष्कर्ष—लग्न पर अशुभ ग्रहों की दृष्टि है बृहस्पति शुभ ग्रह है किन्तु अष्टमेश के रूप में सप्तम भाव में स्थित होकर वह निर्बल है। लग्नेश शुक्र राहु और शनि की दृष्टि के कारण निर्बल है। चन्द्रमा भी अस्त है और शनि की दृष्टि से प्रभावित है।

राहु की दशा और शनि की भुक्ति में १९-११-१९७८ को यह लड़की चलते हुए ट्रक के नीचे दबकर मर गई। अष्टम भाव में अशुभ ग्रह स्थित है जबकि अष्टमेश अशुभ ग्रह मंगल से युक्त है और सूर्य निगूढ़ द्रेष्काण में है।। लग्नेश शुक्र राहु से युक्त और शनि से दृष्ट है। जिससे प्रचंड मृत्यु का संकेत मिलता है।

दशानाथ राहु पंचम भाव में बुध की राशि में स्थित है जो द्वितीयेश होकर सप्तम भाव में मंगल के साथ स्थित है। अतः राहु एक बली मारक बन जाता है। भुक्तिनाथ शनि अष्टम भाव में स्थित है और एक नैसर्गिक मृत्यु कारक है। दशानाथ राहु शुक्र से युक्त होकर द्विस्वभाव राशि में स्थित है जिससे यात्रा के दौरान मृत्यु का संकेत मिलता है। इसके अतिरिक्त और जाँच करने पर यह प्रकट होता है कि राहु चन्द्रमा से युक्त है अतः जन परिवहन से मृत्यु का संकेत मिलता है।

कुण्डली सं० ६८

जन्म तारीख २४-५-१९०६ जन्म समय ४-० बजे संध्या

अक्षांश ५१° ३० उत्तर, देशा ०° ०५' पश्चिम।

राशि

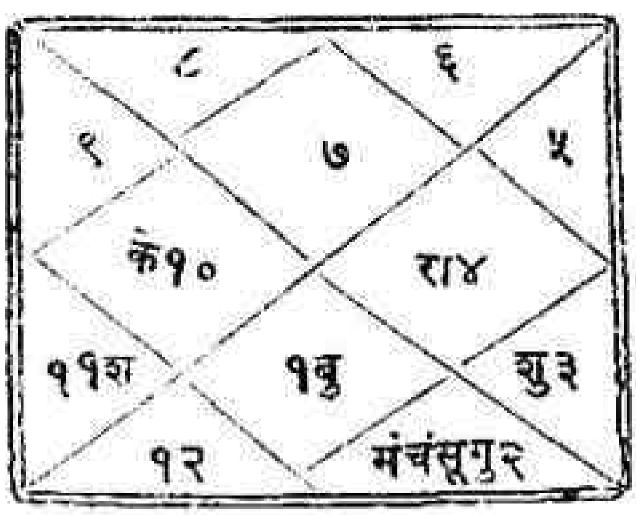

नवांश

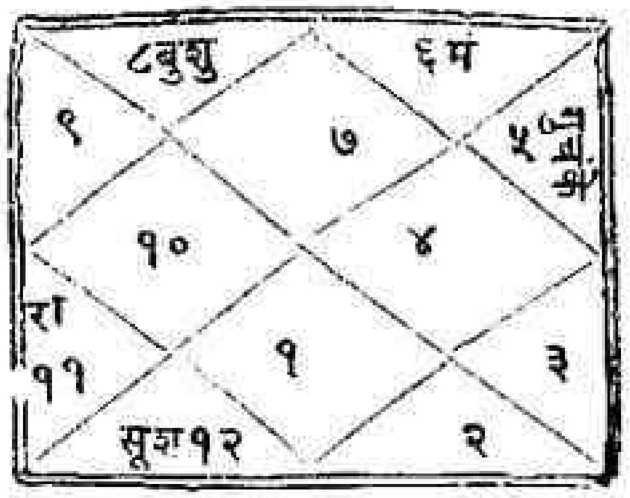

मंगल की दशा शेष-५ वर्ष ७ महीने ३ दिन

अष्टम भाव—कुण्डली सख्या ६८ में अष्टम भाव वृषभ में द्वितीयेश और सप्तमेश मंगल, तृतीयेश और षष्ठेश बृहस्पति, एकादशेश सूर्य और दसमेश चन्द्रमा स्थित है।

अष्टमेश—शुक्र ९ वें भाव में मंगल और राहु के घेरे में है।

आयुष्कारक—शनि पंचम भाव में अपनी ही राशि कुम्भ में स्थित है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव पर मंगल और चन्द्रराशि के स्वामी शुक्र की विपरीत दृष्टि है जबकि अष्टमेश बृहस्पति लग्न में मंगल और शनि से युक्त है जो दोनों ही मारक हैं।

निष्कर्ष—अष्टम भाव में चन्द्रमा, षष्ठेश बृहस्पति और मारक ग्रह सूर्य

और मंगल स्थित हैं। अष्टमेश पापकर्तरी योग में है। केन्द्र में पीड़ित बुध पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं है।

राहु की दशा और शुक्र की भुक्ति में मई १९२६ में जातक की पानी में डूबकर मृत्यु हो गई। राहु कर्क राशि में दसवें भाव में स्थित है जिसका अधिपति चन्द्रमा मारक है क्योंकि वह द्वितीयेश और सप्तमेश मंगल से युक्त है। राहु चन्द्रमा से तीसरे भाव में है। भुक्तिनाथ मारक ग्रहों के घेरे में पापकर्तरी योग में है और वह राशि में चन्द्रमा से दूसरे भाव में स्थित है और नवांश में लग्न से दूसरे भाव में स्थित है। अष्टम भाव में नया चन्द्रमा, मंगल और सूर्य के स्थित होने के कारण पानी या अन्य प्राकृतिक साधनों से मृत्यु का संकेत मिनता है। यहाँ पर दशानाथ जलीय राशि में है और भुक्तिनाथ शुक्र पीड़ित जलीय चन्द्रमा और जलीय राशि में स्थित राहु के घेरे में है जिससे पानी के गढ्ढे का संकेत मिलता है।

कुण्डली सं० ६९

जन्म तारीख १०-११-१८९७ समय १-१५ बजे दोपहर (स्था. स.)
अक्षांश ४५° उत्तर, देशा० ९३' पश्चिम।

राशि

नवांश

सूर्य की दशा शेष–१वर्ष ३ महीने १७ दिन

अष्टम भाव—लग्न में सिंह राशि है अत: अष्टम भाव में मीन राशि है जिसपर उसके अधिपति वृहस्पति की दृष्टि है।

अष्टमेश—वृहस्पति दूसरे भाव में स्थित है, उसपर किसी भी ग्रह की दृष्टि या युक्ति नहीं है।

आयुष्कारक—शनि चन्द्रमा से ७ वें भाव में मंगल से युक्त होकर मंगल की जलीय राशि में स्थित है। नवांश में यद्यपि वह उच्च का है और वृहस्पति से दृष्ट है, उसपर नीच के पीड़ित मंगल की दृष्टि है।

चन्द्रमा से विचार—एक ओर राहु और दूसरी ओर मंगल तथा शनि के स्थित होने के कारण अष्टम भाव पाप कर्तरी योग में है। पुन: अष्टमेश वृहस्पति

है, वह राशि में दृष्टि या युक्ति द्वारा पीड़ित नहीं है किन्तु नवांश में वह शनि से दृष्ट है।

निष्कर्ष—चन्द्रमा से सप्तम भाव पाप ग्रह मंगल और शनि से पीड़ित है जबकि चन्द्रमा से अष्टम भाव पाप ग्रहों के घेरे में है, उनमें से एक सेट जलीय राशि में है और दूसरा राहु है जो शनि का फल देगा क्योंकि वह मकर राशि में स्थित है। दूसरी ओर शनि वृश्चिक राशि में है। क्षीण चन्द्रमा मंगल, शनि या राहु के प्रभाव में है जिससे जायदाद के कारण, पानी में डूबकर या अग्नि से मृत्यु होती है। यहाँ पर मंगल और शनि का जलीय राशि से प्रभाव है। जातक एक नाविक था जिसकी मृत्यु ता० २५-९-१९२५ को अपने जहाज के टक्कर होने के कारण हुई।

इस अवधि में राहु की दशा में बुध की भुक्ति चल रही थी । बुध द्वितीयेश होकर तीसरे भाव में अष्टमेश के नक्षत्र में स्थित है। चन्द्रमा से वह राशि में द्वितीयेश है और नवांश में सप्तमेश है। दशानाथ राहु है। उसे शनि का फल देना चाहिए क्योंकि शनि उस राशि का स्वामी है जहाँ राहु स्थित है और 'शनिवाद राहु' इस सिद्धान्त के कारण भी। शनि लग्न से सप्तमेश होकर चन्द्रलग्न से सप्तमेश के साथ चन्द्रमा से सातवें भाव में स्थित है। उसका अन्त प्रचण्ड हुआ। २२ वां द्रेष्काण मीन राशि का तीसरा डिकानेट है और सर्प द्रेष्काण है।

कुण्डली संख्या ७०

जन्म तारीख १९-१०-१८९१, जन्म समय १०-३० बजे रात्रि (जी एम टी)
अक्षांश ५३° १२′ उत्तर, देशान्तर ०′-३०° पश्चिम।

राशि

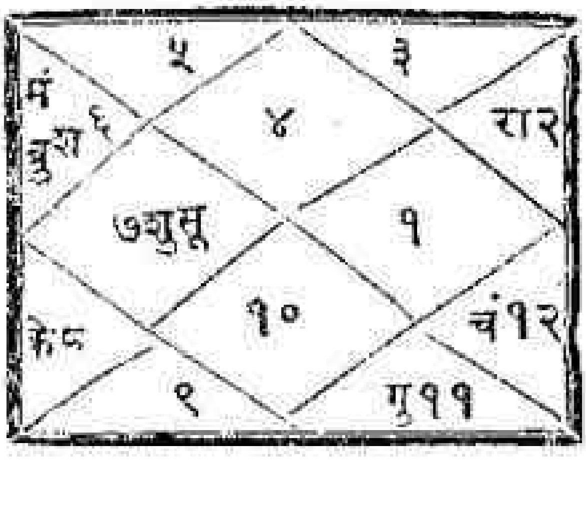

नवांश

बृहस्पति की दशा शेष—१२ वर्ष २ महीने १६ दिन

अष्टम भाव—कुण्डली संख्या ७० में अष्टम भाव में कुम्भ राशि है जहाँ षष्ठेश और नवमेश बृहस्पति स्थित है।

अष्टमेश—शनि अष्टमेश होकर पंचमेश और दसमेश मंगल तथा तृतीयेश

और द्वादशेश बुध के साथ तीसरे भाव में स्थित है। उस पर लग्नेश चन्द्रमा की दृष्टि है।

आयुष्कारक—शनि लग्न से तीसरे भाव में और चन्द्रमा से सातवें भाव में स्थित है और मंगल तथा बुध से युक्त है। नवांश में वह अपनी ही राशि में मंगल के साथ स्थित है।

चन्द्रमा से विचार—आठवें भाव में षष्ठेश नीच का सूर्य और शुक्र स्थित है। यह एक ओर केतु और मंगल तथा दूसरी ओर शनि और बुध के घेरे में है। चन्द्रमा से अष्टम भाव पर चन्द्रमा के बारहवें भाव से बृहस्पति की दृष्टि है।

निष्कर्ष—चन्द्रमा से सप्तम भाव मंगल और शनि से पीड़ित है जबकि अष्टम भाव में अग्नि प्रकृति ग्रह सूर्य स्थित है जो अष्टमेश शुक्र को भी पीड़ित कर रहा है। यदि सूर्य अष्टम भाव में है चन्द्रमा दसम भाव में है और शनि अष्टम भाव में है तो जातक लकड़ी के टुकड़ों से दुर्घटनाग्रस्त हो सकता है और मर सकता है। इस मामले में सूर्य चौथे भाव में है, चन्द्रमा यद्यपि नवम भाव में है, उसपर अग्नि प्रकृति वाले दसमेश मंगल की दृष्टि है और शनि अष्टमेश है जिससे ये शर्तें अप्रत्यक्ष पूरी होती हैं। जातक को गोली लगी और २-१-१९३० को मर गया। मंगल के प्रभाव और चन्द्रमा से अष्टम भाव के केतु (कुजवत् केतु) और मंगल और शनि के पाप कर्तरी में होने के कारण अग्नि के हथियार से मृत्यु हुई। शनि अकेले ही लकड़ी के टुकड़ा जैसी वस्तुओं से मृत्यु का कारण बन सकता था जैसाकि विशेष योग में दर्शाया गया है। बुध की दशा और शनि की भुक्ति में मृत्यु हुई। सूर्य लग्न से द्वितीयेश होकर चन्द्रमा से अष्टम भाव में स्थित है। वह अष्टमेश शुक्र के साथ युक्त है और मंगल के नक्षत्र में है। दूसरी ओर मंगल चन्द्रमा से सातवें में स्थित है। दशानाथ बुध तीसरे भाव में है और चन्द्रमा से सातवें में द्वादशेश सप्तमेश शनि से युक्त है।

कुण्डली सं० ७१

जन्म तारीख २५-१०-१९०४ समय ८-५७ बजे रात्रि (जी एम टी)
अक्षांश १५°३०′ उत्तर, देशा० ०°०५′ पश्चिम।

राशि

नवांश

सूर्य की दशा शेष—५ वर्ष १० महीने ३ दिन

अष्टम भाव—अष्टम भाव मकर राशि में वहाँ का स्वामी शनि स्थित है। इस पर किसी अन्य ग्रह का प्रभाव नहीं है।

अष्टमेश—शनि अपनी ही राशि में स्थित है।

आयुष्कारक—शनि अपनी ही राशि में अष्टम भाव में स्थित है।

चन्द्रमा से विचार—वृश्चिक राशि में द्वितीयेश और सप्तमेश शुक्र स्थित है और उसपर अग्नि राशि से मंगल की दृष्टि है। मंगल राहु से युक्त है अतः उसकी दृष्टि अत्यधिक मारक है।

निष्कर्ष—लग्न या चन्द्र राशि से अष्टम भाव पर कोई भारी बुरा प्रभाव नहीं है। परन्तु चन्द्रमा से पंचम भाव मंगल और राहु से पीड़ित है। पाप ग्रह शनि अष्टम भाव में स्थित है जब कि चन्द्रमा से अष्टम भाव में मंगल से पीड़ित शुक्र स्थित है। नवांश लग्न से सप्तम भाव भी मंगल और राहु द्वारा पीड़ित है। मंगल की दशा और चन्द्रमा की भुक्ति में एक मोटर दुर्घटना में जातक की मृत्यु हुई।

राशि में चन्द्रमा द्वितीयेश है और नवांश में तृतीयेश है तथा नवांश लग्न से अष्टम भाव में स्थित है। लग्न से तीसरे भाव में मंगल और राहु स्थित हैं। मंगल उस राशि के स्वामी सूर्य का फल दे रहा है और राहु शनि का फल दे रहा है। सूर्य तृतीयेश होकर चन्द्रमा से सप्तम भाव में और शनि लग्न से अष्टम भाव में है और नवांश में चन्द्रमा से द्वितीयेश है।

कुण्डली संख्या ७२

जन्म तारीख २–११–१७५५ जन्म समय लगभग ८–० बजे रात्रि
अक्षांश ४०' उत्तर, देशान्तर ३०° ३०' पूर्व।

राशि

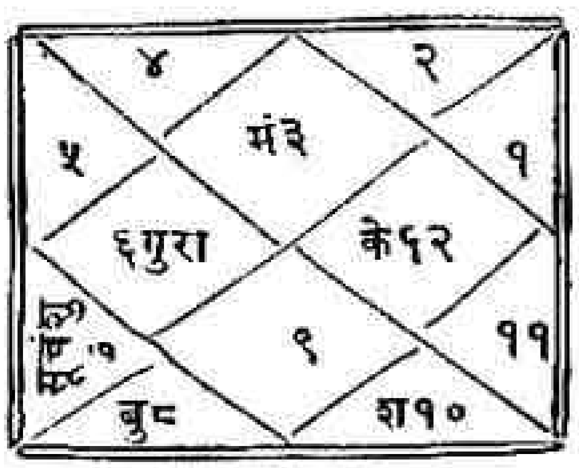

नवांश

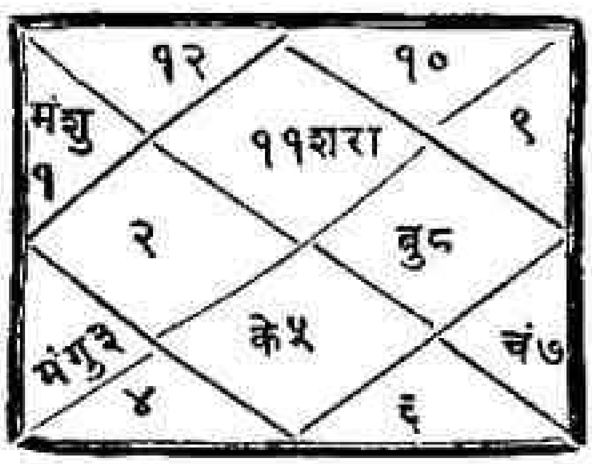

मंगल की दशा शेष–२ वर्ष ५ महीने १ दिन

अष्टम भाव—कुण्डली सं० ७२ में अष्टम भाव में अष्टमेश शनि स्थित

है और उसपर षष्ठेश तथा एकादशेश मंगल की विपरीत दृष्टि है और सप्तमेश बृहस्पति से पीड़ित है।

अष्टमेश—अष्टमेश शनि अपनी ही राशि में स्थित है और यह मंगल तथा बृहस्पति द्वारा दृष्ट है।

आयुष्कारक—शनि कारक भी है और सप्तमेश तथा पीड़ित बृहस्पति और षष्ठेश तथा एकादशेश से दृष्ट है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव में वृष राशि है और वह तृतीयेश तथा षष्ठेश बृहस्पति से दृष्ट है। अष्टमेश नीच के सूर्य के साथ चन्द्र राशि में स्थित है और मकर राशि के शनि से दृष्ट है।

निष्कर्ष—जब २२ वां द्रेष्काण निगड, सर्प या पाश हो तो जेल में मृत्यु होती है। इस मामले में २२ वा द्रेष्काण मकर का प्रथम है अतः निगड द्रेष्काण है। जेल में मृत्यु हुई क्योंकि १९९१ के फांस के आन्दोलन की नायिका इस जातक का गला घोंट दिया गया। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि है और आयुष्कारक शनि भी निगड द्रेष्काण में है। जब चन्द्रमा से पंचम या नवम भाव पर पाप ग्रह की दृष्टि हो या वहां पाप ग्रह स्थित हो और जब अष्टम भाव में सर्प, निगड या पाश द्रेष्काण का उदय होता है तो फांसी द्वारा, मृत्यु होती है जो इस मामले में शब्दशः पूरा हो रहा है। मंगल चन्द्रमा से नवम भाव में स्थित है और निगड द्रेष्काण में अष्टम भाव का उदय हो रहा है।

शनि की दशा और शनि की भुक्ति में मृत्यु हुई। शनि अष्टमेश होकर अष्टम भाव में स्थित है और नवांश में राहु के साथ युक्त होकर सप्तम भाव पर प्रबल दृष्टि डाल रहा है।

कुण्डली संख्या ७३

जन्म तारीख १२–२–१८०९ जन्म समय ७–३२ बजे प्रातः (स्था० स०)
अक्षांश ३५° उत्तर, देशान्तर ८९′ पूर्व।

राशि

नवांश

सूर्य की दशा शेष—२ वर्ष १ महीने ६ दिन

अष्टम भाव—कुण्डली संख्या ७३ में अष्टम भाव में कन्या राशि का उदय हो रहा है जिसपर बृहस्पति और उच्च के शुक्र की दृष्टि है।

अष्टमेश—अष्टमेश बुध सप्तमेश सूर्य के साथ लग्न भाव में अच्छी स्थिति में है।

आयुष्कारक—शनि दसवें भाव में वृश्चिक राशि में स्थित है और अपनी ही राशि से बृहस्पति से दृष्ट है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव पर शनि की दृष्टि है जबकि अष्टमेश सूर्य दूसरे भाव में बुध के साथ स्थित है।

निष्कर्ष—२२ वां द्रेष्काण एक आयुध द्रेष्काण है क्योंकि यह कन्या में दूसरा है। अष्टमेश बुध राहु के नक्षत्र में है जो दूसरी ओर खूनी मंगल से युक्त है।

१४–८–१८९५ को जातक की हत्या हो गई। गौतम संहिता के एक योग में यह कहा गया है कि यदि अष्टमेश लग्न में हो और क्षीण चन्द्रमा पर मंगल की दृष्टि हो तो हथियार से मृत्यु होगी। अष्टमेश बुध लग्न में है और क्षीण चन्द्रमा १२ वें भाव में है और वह मंगल से दृष्ट है। जातकतत्त्व और अन्य प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार जब शनि सूर्य और मंगल क्रमशः दसवें भाव में, ७ वें भाव में और ४थे भाव में हों तो हत्या के कारण मृत्यु होती है। इस कुण्डली में शनि १० वें भाव में है, चौथे भाव पर मंगल की दृष्टि है और सूर्य सातवें भाव को देख रहा है।

शनि की दशा और बुध की भुक्ति में जातक को गोली लगने से मृत्यु हुई। दशम भाव में स्थित होने के कारण दशानाथ शनि मृत्यु योग बना रहा है और मारक बन जाता है। वह चन्द्रमा से द्वितीयेश भी है और द्वितीयेश बृहस्पति से दृष्ट है। भुक्ति नाथ बुध राशि में चन्द्रमा से दूसरे भाव में स्थित है और राशि तथा नवांश से अष्टमेश है।

कुण्डली सं० ७४

जन्म तारीख २–१०–१८६९ जन्म समय ७–४५ बजे प्रातः (स्था. स.)
अक्षांश २१°३७' उत्तर, देशा० ६९°४९' पूर्व।

राशि

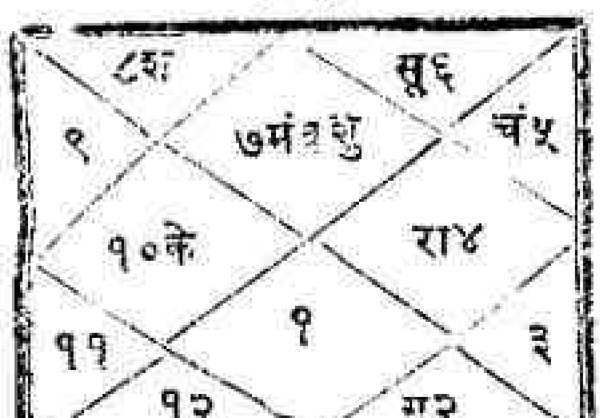

नवांश

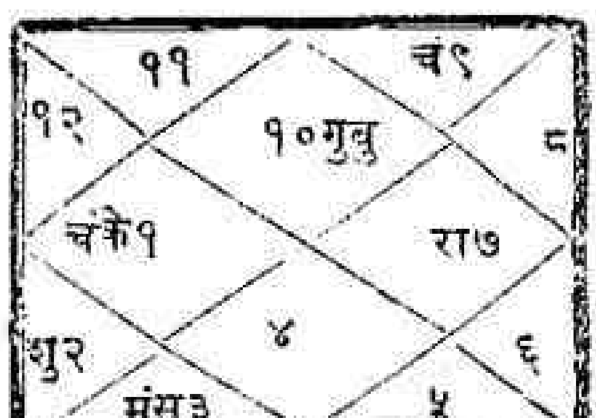

केतु की दशा शेष—६ वर्ष १० महीने २८ दिन

अष्टम भाव—अष्टम भाव में तृतीयेश और षष्ठेश बृहस्पति स्थित है और उस पर शनि और मंगल की दृष्टि है।

अष्टमेश—अष्टमेश शुक्र अपनी ही राशि में स्थित है किन्तु वह मंगल से युक्त है और पापग्रह शनि तथा सूर्य के घेरे में है।

आयुष्कारक—शनि वृश्चिक राशि में है और तृतीयेश तथा षष्ठेश बृहस्पति से दृष्ट है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव पर सूर्य की दृष्टि है और अष्टमेश बृहस्पति पर मंगल और शनि की दृष्टि।

निष्कर्ष—यद्यपि बृहस्पति अष्टम भाव में स्थित है वह सूर्य के नक्षत्र कृतिका में है। वह मंगल और शनि से दृष्ट है। गौतम संहिता में पाए गए एक प्राचीन योग के अनुसार यदि मंगल लग्न में हो और उसपर कोई शुभ दृष्टि न हो और क्षीण चन्द्रमा ११ वें भाव में हो तो हथियार से घायल होकर जातक की मृत्यु होती है। जातक अहिंसा का पुजारी था और कट्टर साम्यवादी जवान द्वारा उसकी हत्या कर दी गई।

हत्या बृहस्पति की दशा और सूर्य की भुक्ति में हुई। बृहस्पति अष्टम भाव में है और मंगल द्वारा दृष्ट है जो द्वितीयेश और सप्तमेश है। सूर्य चन्द्रमा से दूसरे भाव में स्थित है और लग्न से १२ वें भाव में है।

कुण्डली संख्या ७५

जन्म तारीख २९-५-१९१७ जन्म समय ३-० बजे संध्या (ई एस टी)

अक्षांश ४२°०५' उत्तर, देशा० ७१°८' पश्चिम।

राशि

नवांश

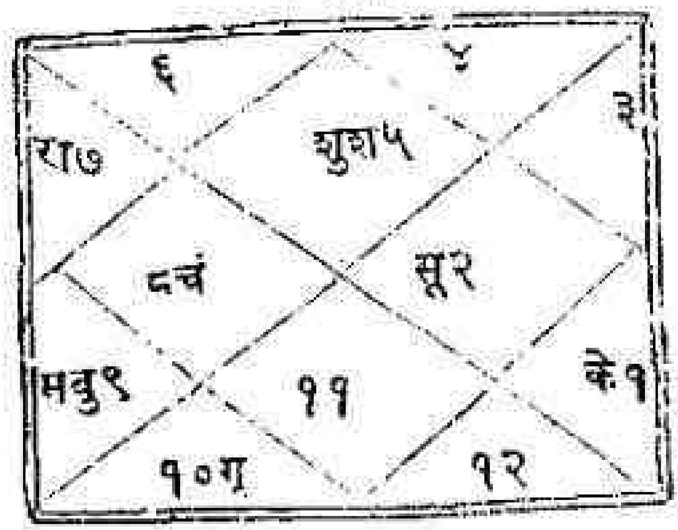

शुक्र की दशा शेष—१-० वर्ष

अष्टम भाव—कुण्डली सं० ७५ में अष्टम भाव में अग्निराशि मेष का उदय हो रहा है और वहाँ पर लग्नेश और दशमेश बुध तथा तृतीयेश और अष्टमेश मंगल स्थित है और उस पर पंचमेश तथा षष्ठेश शनि की दृष्टि है।

अष्टमेश—मंगल अपनी ही राशि में बुध के साथ स्थित है और शनि से दृष्ट है।

आयुष्कारक—शनि ११ वें भाव में स्थित है और उसपर अष्टम भाव से दृष्टि डाल रहा है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव में मीन राशि है जो दृष्टि और युक्ति से मुक्त है। परन्तु अष्टमेश बृहस्पति शुक्र और सूर्य के साथ है। जो मंगल और केतु के कारण पाप कर्तरी योग में है।

निष्कर्ष—जातक संयुक्त राज्य अमरिका का राष्ट्रपति था और उसे २२-११-१९६३ को गोली मारकर उसकी हत्या कर दी गई। लग्न और चन्द्रमा दोनों से अष्टम भाव और अष्टमेश पापग्रहों से पर्याप्त रूप से पीड़ित है अष्टम भाव में मंगल के होने के कारण अचानक मृत्यु होगी। बृहस्पति की दशा और शनि की भुक्ति में उसकी मृत्यु हुई। बृहस्पति सप्तमेश है जबकि शनि चन्द्रमा और नवांश दोनों से सप्तमेश है।

कुण्डली संख्या ७६

जन्म तारीख २०-११-१९२५   जन्म समय १-० बजे दिन (ई एस टी)
अक्षांश ४०°०५′ उत्तर, देशान्तर ७१°८′ पश्चिम।

राशि

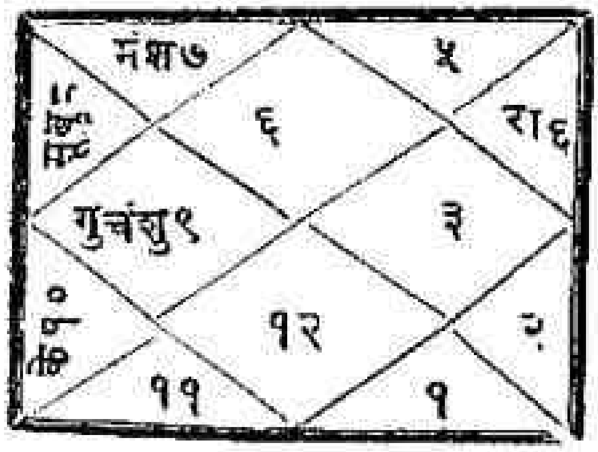

नवांश

सूर्य की दशा शेष—४ वर्ष ९ महीने ७ दिन

अष्टम भाव—कुण्डली संख्या ७६ में अष्टम भाव में मेष राशि है। यहाँ भी अष्टमेश मंगल, उच्च के शनि और सप्तमेश बृहस्पति से दृष्ट है।

अष्टमेश—मंगल दूसरे भाव में उच्च के शनि से युक्त होकर अपनी राशि को देख रहा है।

आयुष्कारक—शनि उच्च का होकर दूसरे भाव में तृतीयेश और अष्टमेश मंगल के साथ है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव पर शनि की दृष्टि है और वहाँ राहु स्थित है। अष्टमेश और चन्द्रमा स्वयं वर्गोत्तम में है चन्द्र राशि स्वामी बृहस्पति और षष्ठेश एकादशेश शुक्र के साथ वर्गोत्तम में स्थित है। वह मंगल द्वारा पीड़ित शनि से दृष्ट है। सूर्य और केतु के कारण चन्द्रमा पापकर्तरी योग में है।

निष्कर्ष—इस जातक को भी राजनैतिक कारणों से गोली लगने से ४-६-७८ को मृत्यु हुई। लग्न और चन्द्रमा से अष्टम भाव और अष्टमेश पाप ग्रहों से बुरी तरह पीड़ित हैं। बृहस्पति की दशा और शनि की भुक्ति में मृत्यु हुई जो प्रथम श्रेणी के मारक हैं। बृहस्पति सप्तमेश और शनि तृतीयेश है और अष्टमेश मंगल के साथ दूसरे भाव में स्थित है।

कुण्डली सं० ७७

जन्म तारीख २९-७-१९८३ जन्म समय २ बजे संध्या (स्था० स०)

अक्षांश ४०° उत्तर, देशा० १६°पूर्व।

राशि

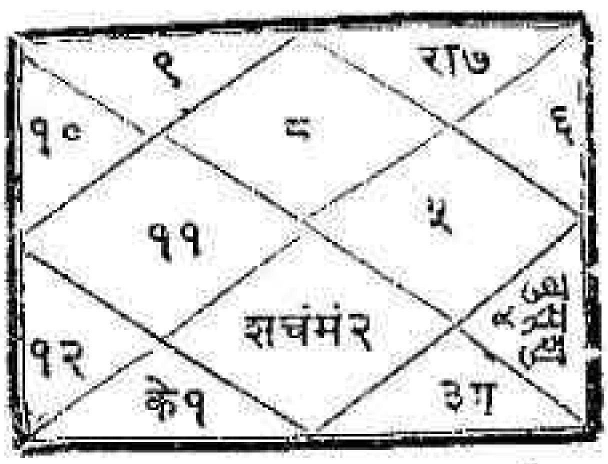

नवांश

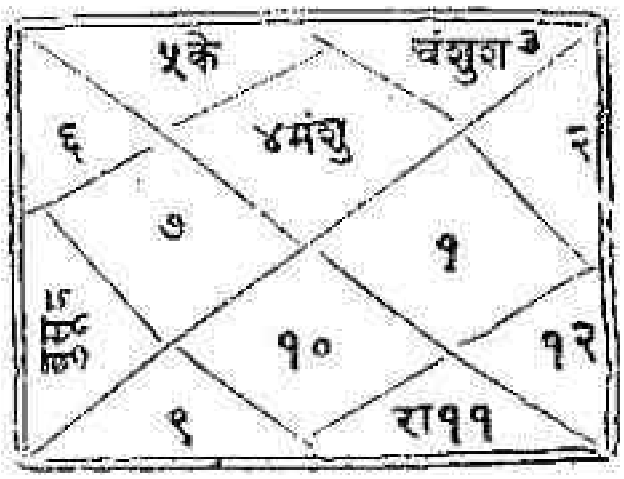

चन्द्रमा की दशा शेष-३ वर्ष ८ महीने २६ दिन

अष्टम भाव—कुण्डली संख्या ७७ में द्वितीयेश और पंचमेश बृहस्पति अष्टम भाव में स्थित है।

अष्टमेश—बुध सप्तमेश शुक्र और दसमेश सूर्य के साथ नवम भाव में स्थित है और पाप ग्रह मंगल से दृष्ट है।

आयुष्कारक—शनि मंगल और उच्च के चन्द्रमा के साथ उत्तम भाव में स्थित है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव में धनु राशि है। और उसपर राशि स्वामी बृहस्पति और ८ वें तथा १२ वें भाव के स्वामी मंगल की दृष्टि है।

निष्कर्ष—शनि की दशा और बृहस्पति की भुक्ति में जातक की प्रचण्ड मृत्यु हुई। लग्न से सप्तम भाव में दो पापग्रह और चन्द्रमा से अष्टम भाव पर बृहस्पति

की दृष्टि के कारण दर्दनाक मृत्यु हुई। लग्न से तीसरे भाव का स्वामी शनि है और वह लग्न से सप्तम भाव में स्थित है जो मारक भाव है। नवांश में वह नवांश लग्न से सप्तमेश है और द्वितीयेश चन्द्रमा से युक्त है। भुक्तिनाथ बृहस्पति लग्न से द्वितीयेश है और अष्टम भाव में स्थित है। नवांश में वह मारक शनि के साथ युक्त है और चन्द्रमा से सप्तमेश है।

कुण्डली संख्या ७८

जन्म तारीख २०-४-१८८९ जन्म समय ६–३० बजे संध्या (स्था० स०)
अक्षांश ४८° उत्तर, देशा० १३ पूर्व।

राशि

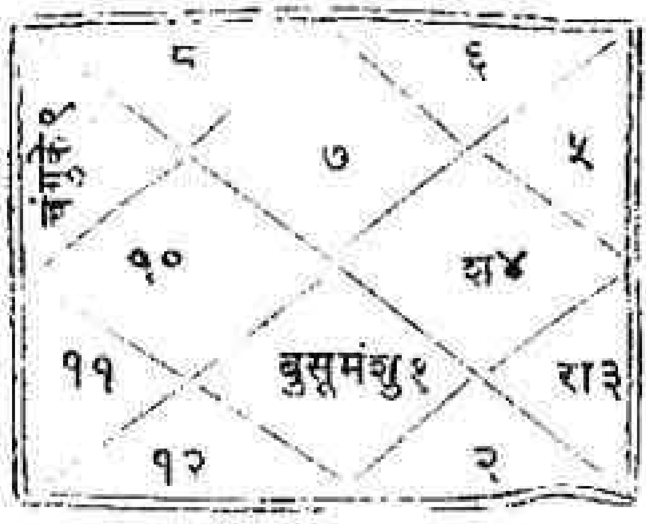

नवांश

शुक्र की दशा शेष–१६ वर्ष ४ महीने ६ दिन

अष्टम भाव—कुण्डली संख्या ७८ में अष्टम भाव में वृषभ राशि है जो राहु और मंगल के कारण पाप कर्तरी योग में है।

अष्टमेश—शुक्र अग्नि प्रकृति वाली राशि में मंगल, बुध और शुक्र के साथ स्थित हैं और शनि से दृष्ट है।

आयुष्कारक—शनि १० वें भाव में है और बली मंगल से दृष्ट है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव में शनि स्थित है और वह मंगल से दृष्ट हैं यद्यपि अष्टमेश चन्द्रमा बृहस्पति के साथ है परन्तु केतु भी वहीं विद्यमान है।

निष्कर्ष—लग्न और चन्द्रमा दोनों से ही अष्टम भाव और अष्टमेश शनि और मंगल के प्रभाव से बुरी तरह पीड़ित है। जातक ने आत्महत्या की थी जो अष्टम भाव पर बुरे प्रभाव और केतु द्वारा चन्द्रमा के पीड़ित होने के कारण हुआ। राहु की दशा और चन्द्रमा की भुक्ति में मृत्यु हुई। राहु बुध की राशि में चन्द्रमा से सप्तम भाव में है और नवांश लग्न से सप्तम भाव में है। उसकी राशि का स्वामी बुध जिसका वह फल देगा लग्न से सप्तम भाव में और चन्द्रमा से सप्तमेश है। भुक्तिनाथ चन्द्रमा लग्न से तीसरे भाव में है। और दशानाथ से सप्तम भाव में है।

कुण्डली संख्या ७९

जन्म तारीख २५-९-१९१६ जन्म समय ९-५८ बजे संध्या (स्था० स०)

अक्षांश २७°२८ उत्तर, देशा० ७७° पूर्व ।

राशि

नवांश

शुक्र की दशा शेष—१७ वर्ष ३ महीने २७ दिन

अष्टम भाव—कर्क राशि में शुक्र, केतु और शनि स्थित हैं ।

अष्टमेश—चन्द्रमा नवम भाव में शनि और सूर्य के घेरे में है ।

आयुष्कारक—शनि अष्टम भाव में केतु से पीड़ित और शुक्र से युक्त है ।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव मीन राशि पर सूर्य और बुध की दृष्टि है जबकि अष्टमेश बृहस्पति अग्नि राशि में स्थित है और पापग्रह मंगल से दृष्ट तथा शनि से पीड़ित है ।

निष्कर्ष—जातक राष्ट्रीय राजनैतिक दल का नेता था और उसकी हत्या कर दी गई । यह बताया गया कि मृत शरीर को रेल पर फेंक दिया गया था । अष्टम भाव पर मंगल, राहु, शनि और केतु के प्रभाव और अष्टमेश से हत्या का संकेत मिलता है ।

राहु की दशा और केतु की भुक्ति में १०/११–२–१९६८ को मृत्यु हुई । वे जिन भावों में स्थित हैं उनके कारण दोनों ही मारक हैं । राहु पर मंगल की दृष्टि है और केतु शनि के साथ स्थित है । नवांश में भी वे मारक भाव में हैं ।

कुण्डली सं० ८०

जन्म तारीख ६–१०–१८८५ जन्म समय १–३६ बजे प्रातः (स्था० स०)

अक्षांश २०°२०′ उत्तर, देशा० ७२°५८ पूर्व ।

राशि

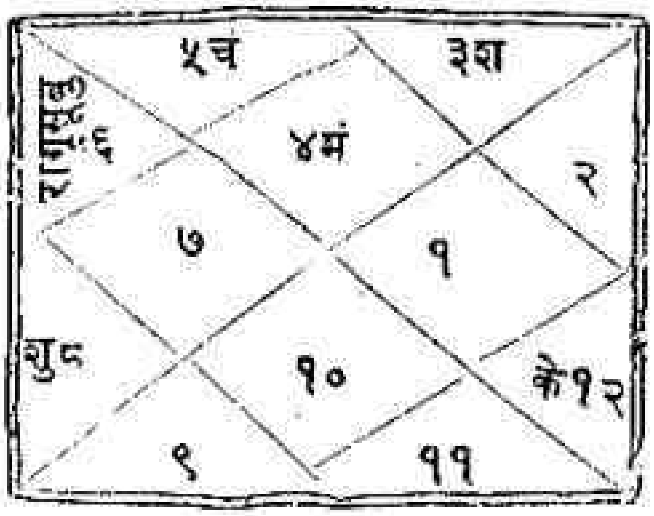

नवांश

शुक्र की दशा शेष—९ वर्ष ९ महीने ९ दिन

अष्टम भाव—कर्क लग्न से अष्टम भाव में कुम्भ राशि है इस पर नीच के मंगल की दृष्टि है।

अष्टमेश—अष्टम भाव का स्वामी शनि है जो १२ वें भाव मे स्थित है।

आयुष्कारक—शनि १२ वें भाव में मित्र राशि में स्थित है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव में केतु स्थित है और उसपर सूर्य, राहु, बृहस्पति, बुध और शनि की दृष्टि है। अष्टमेश बृहस्पति दूसरे भाव में राहु, बुध और सूर्य के साथ स्थित है। राहु का अष्टमेश बृहस्पति के साथ निकट सम्बन्ध पर विशेष रूप से विचार करना है।

निष्कर्ष—यह भी एक अस्वाभाविक मृत्यु का मामला है किन्तु पिछली कुण्डली से भिन्न है, उसमें यह स्वयं पीड़ित है। इस जातक ने चलती रेलगाड़ी के सामने कूदकर अपना प्राण दे दिया।

मृत्यु के स्वरूप के बारे में लग्नेश चन्द्रमा से संकेत मिलता है जो आयुध द्रेष्काण में है केतु सर्प द्रेष्काण में है और सप्तमेश तथा अष्टमेश शनि भी आयुध द्रेष्काण में है। आत्महत्या का कारण सदा ही उत्पीड़न और जीवन से हतोत्साह होना है जिसका अर्थ है कि मस्तिष्क, शरीर और आत्मा का कारक (चन्द्रमा और सूर्य) अवश्य ही पीड़ित होता है। इस मामले में चन्द्रमा पाप द्रेष्काण में स्थित है और अष्टमेश शनि से दृष्ट है। सूर्य ग्रस्त है।

बृहस्पति की दशा और केतु की भुक्ति में मृत्यु हुई। दशानाथ बृहस्पति मारक ग्रह अर्थात् द्वितीयेश सूर्य के साथ स्थित है और वहीं पर राहु और तृतीयेश बुध भी स्थित है। वह चन्द्रमा से दूसरे भाव में है। भुक्तिनाथ केतु चन्द्रमा से अष्टम भाव मे बली मारक ग्रह शनि के नक्षत्र में है।

कुण्डली संख्या ८१

जन्म तारीख २१–१०–१९५३ जन्म समय २–० बजे प्रातः (भा.से.स.)

अक्षांश १८°३१′ उत्तर, देशा० ७३°५५′ पूर्व।

राशि नवांश

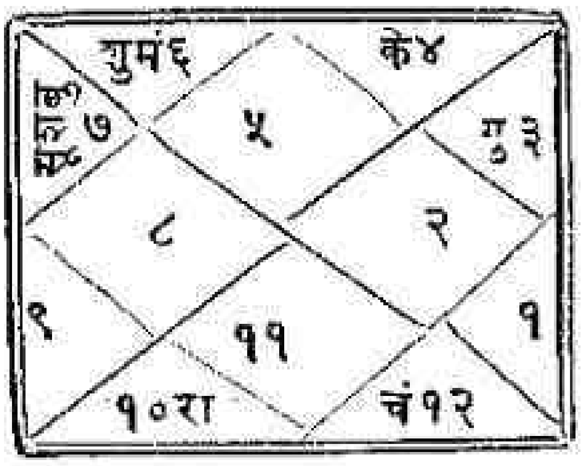

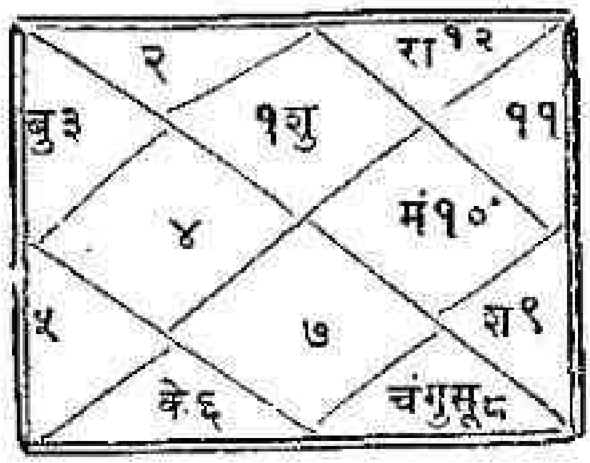

शनि की दशा शेष–१ वर्ष २ महीने १६ दिन

अष्टम भाव—कुण्डली संख्या सं० ८१ में मीन राशि में चन्द्रमा स्थित है उसपर मंगल और शुक्र की दृष्टि हैं।

अष्टमेश—बृहस्पति ११वें भाव में है और बुरे प्रभाव से मुक्त है,

आयुष्कारक—शनि तीसरे भाव में उच्च का है परन्तु वह सूर्य के दाह में है और द्वितीयेश बुध के साथ है। उस पर अष्टमेश बृहस्पति की दृष्टि है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव में पापग्रह सूर्य और शनि स्थित है परन्तु उसपर चन्द्र राशि स्वामी बृहस्पति की दृष्टि है। अष्टमेश शुक्र मंगल के साथ स्थित है।

निष्कर्ष—विष का पान करने के बाद ४–४–१९७२ को जातक की मृत्यु हो गई। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि है जो चन्द्रमा से ७ वें भाव में है। चन्द्रमा से ८ वें भाव में पापग्रह भी विद्यमान हैं। मस्तिष्क का कारक चन्द्रमा भी दुःस्थान में स्थित है और उसपर पापग्रह मंगल और नीच के शुक्र की दृष्टि है। सूर्य न केवल नीच का है बल्कि अपने कटुशत्रु शनि के साथ स्थित है और राहु के नक्षत्र में है।

केतु की दशा और केतु की भुक्ति में जातक की मृत्यु हुई। केतु बारहवें भाव में स्थित है। उसे उस राशि स्वामी का फल देना है जहाँ वह स्थित है। और मंगल (कुजवत्) का फल देना है। उसकी राशि का स्वामी चन्द्रमा राशि और नवांश दोनों में ही अष्टम भाव में स्थित है। मंगल लग्न से दूसरे भाव में और चन्द्रमा से सप्तम भाव में द्वितीयेश के रूप में है। अतः वह प्रबल मारक बन गया है।

कुण्डली संख्या ८२

जन्म तारीख १२—७—१८७७ जन्म समय १०—० बजे प्रातः (स्था० स०)
अक्षांश ४६°१३′ उत्तर, देशा० ६°०७′ पूर्व।

राशि

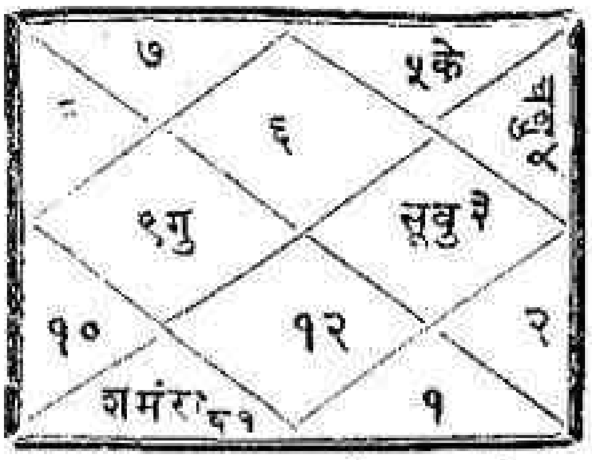

नवांश

बुध की दशा शेष—१२ वर्ष ५ महीने २८ दिन

अष्टम भाव—कुण्डली संख्या ८२ में अष्टम भाव में कोई ग्रह स्थित नहीं है परन्तु इसपर षष्ठेश शनि और सप्तमेश बृहस्पति की दृष्टि है।

अष्टमेश—अष्टमेश मंगल छठे भाव में षष्ठेश शनि और राहु के साथ स्थित है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव में बुरी तरह पीड़ित सप्तमेश और अष्टमेश शनि, मंगल और राहु स्थित हैं। शनि अष्टमेश भी है और पाप ग्रह मंगल तथा राहु के साथ स्थित है।

निष्कर्ष—चन्द्रमा से ८ वें भाव में पाप ग्रह के होने और लग्न तथा चन्द्रमा से दोनों अष्टमेश पर बुरे प्रभाव के परिणामस्वरूप जातक ने विषपान किया और आत्महत्या कर ली। चन्द्रमा सूर्य और केतु के कारण पाप कर्तरी योग में है। सूर्य की दशा और शुक्र की भुक्ति में ३०—६—१९२२ को जातक की मृत्यु हुई। सूर्य लग्न से द्वादशेश है। वह चन्द्रमा से द्वितीयेश तथा नवांश लग्न से अष्टमेश है। भुक्तिनाथ शुक्र लग्न से द्वितीयेश तथा नवांश लग्न से द्वादशेश है।

कुण्डली संख्या ८३

जन्म तारीख १७—१०—१८६७ जन्म समय २—३० बजे संध्या (स्था. स.)
अक्षांस ४६°१३′ उत्तर, देशा० ६°०७′ पूर्व।

राशि

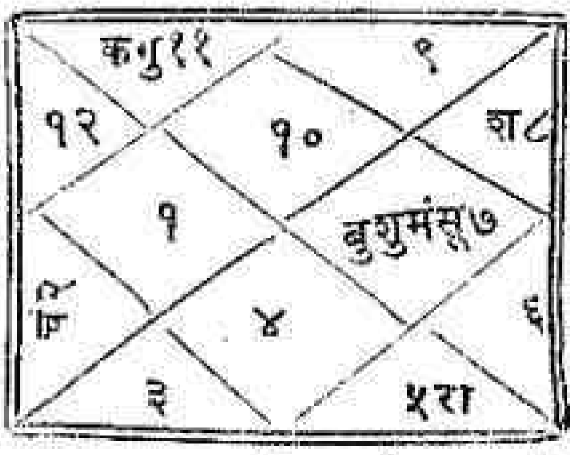

नवांश

मंगल की दशा शेष—५ वर्ष ७ महीने।

अष्टम भाव—अष्टम भाव में सिंह राशि है और उसपर पीड़ित तृतीयेश और द्वादशेश बृहस्पति की दृष्टि है और लग्नेश तथा द्वितीयेश शनि की भी दृष्टि है।

अष्टमेश—अष्टम भाव का स्वामी सूर्य नीच का होकर १० वें भाव में मंगल, बुध और शुक्र के साथ स्थित है। वह ग्रसित बृहस्पति से दृष्ट है।

आयुष्कारक—शनि ११ वें भाव में सप्तमेश चन्द्रमा से दृष्ट है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव शनि की दृष्टि और युक्ति से मुक्त है परन्तु अष्टमेश बृहस्पति केतु के साथ दसम भाव में है।

निष्कर्ष—शनि चन्द्रमा से सप्तम भाव में स्थित है और चन्द्रमा पापग्रह शनि और मंगल से पीड़ित है, अष्टम भाव में राहु स्थित है जबकि चन्द्रमा से अष्टमेश केतु द्वारा ग्रस्त है। जातक ने ७–७–१९२२ को विषपान करके आत्महत्या कर ली। यह शनि की दशा और राहु की भुक्ति में हुआ। राहु लग्न से अष्टम भाव में है और शनि के समान (शनिवद् राहु) फल दे रहा है। शनि प्रथम श्रेणी का मारक है। वह लग्न से द्वितीयेश होकर चन्द्रमा से ७ वें भाव में स्थित है और नवांश लग्न तथा नवांश चन्द्रमा से सप्तमेश है।

कुण्डली संख्या ८४

जन्म तारीख २५–१२–१९१७ जन्म समय ११–५५ रात्रि (जी.एम.टी)
अक्षांश ५१°३१ उत्तर, देशा० ०°०५′ पश्चिम।

राशि

नवांश

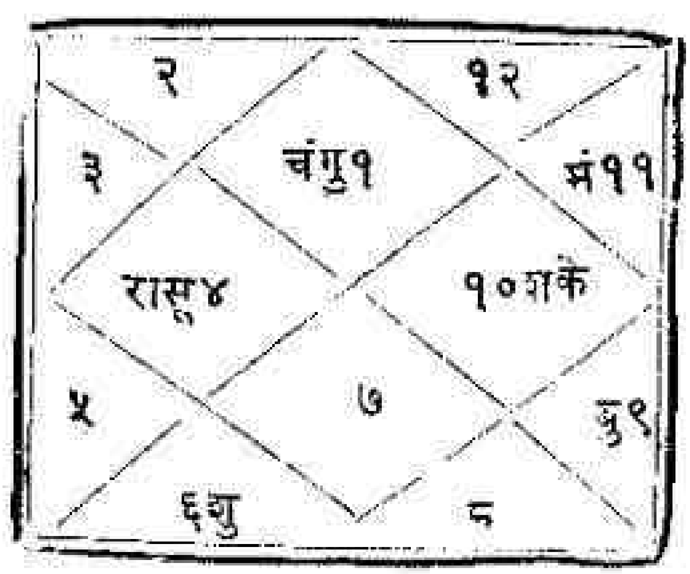

चन्द्रमा की दशा शेष—७ वर्ष ७ महीने ६ दिन।

अष्टम भाव—अष्टम भाव में पाप राशि मेष का उदय हो रहा है। इसपर मंगल और पापग्रह शनि की विपरीत दृष्टि है।

अष्टमेश—अष्टमेश मंगल लग्न में पापग्रह शनि से दृष्ट है।

आयुष्कारक—शनि ११ वें भाव में द्वितीयेश और नवमेश शुक्र से दृष्ट है।

चन्द्रमा से विचार—अष्टम भाव में धनु राशि है जहाँ द्वितीयेश और पंचमेश बुध, चतुर्थेश पापग्रह शनि और राहु स्थित हैं। तथा इस पर सप्तमेश और द्वादशेश पापग्रह मंगल की दृष्टि है। अष्टमेश बृहस्पति चन्द्र राशि वृषभ में स्थित है।

निष्कर्ष—लग्न से और चन्द्रमा से अष्टम भाव पर पापग्रह या तो दृष्टि डाल रहे हैं अथवा वहाँ पर स्थित हैं। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा से अष्टम भाव राहु से ग्रस्त है। बृहस्पति की दशा और बुध की भुक्ति में अधिक नींद की गोली खाने के कारण २०–१–१९५७ को जातक की मृत्यु हो गई। बृहस्पति लग्न से द्वितीयेश है और चन्द्रमा से अष्टमेश है। बुध चन्द्रमा से द्वितीयेश है और अष्टम भाव में स्थित है। अतः वह मारक है।

नवम भाव

नवम भाव पिता, धर्मपरायणता, गुरु, पोते पोतियां, अन्तर्ज्ञान, धर्म, सहानुभूति, प्रसिद्धि, दानशीलता, नेतृत्व, लम्बी यात्रा और आत्मा के साथ बातचीत का द्योतक होता है।

नवम भाव के भीतर आने वाली घटनाओं पर विचार करते समय निम्नलिखित तथ्यों को अवश्य हिसाब में लेना चाहिए। अर्थात् (क) भाव (ख) उसका अधिपति (ग) वहां स्थित ग्रह और (घ) कारक। पिता का कारक सूर्य है। नवम भाव या नवम भाव के अधिपति से सम्बन्धित योग अपना फल देते हैं। इनपर नवांश कुण्डली से भी विचार करना चाहिए। यद्यपि नवम भाव से अनेक चीजें देखी जाती हैं, यह भाव मुख्य रूप से पिता और लम्बी यात्रा से सम्बधित होता है।

विभिन्न भावों में नवमेश का फल

प्रथम भाव में—जब नवमेश प्रथम भाव में स्थित हो तो जातक अपना भविष्य स्वयं बनाता है। वह अपने प्रयासों से काफी धन कमाता है। यदि नवमेश प्रथम भाव में लग्नेश से युक्त हो और शुभग्रह की संगति में हो अथवा शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक अमीर और सुखी हो सकता है।

द्वितीय भाव में—जब नवमेश शुभ होकर दूसरे भाव में स्थित हो तो जातक का पिता धनी और काफी प्रभावी व्यक्ति होता है। जातक को अपने पिता से धन प्राप्त होता है। दूसरे भाव में नवमेश पर पाप ग्रहों का प्रभाव होने पर पैतृक सम्पत्ति का नाश होता है।

तृतीय भाव में—यदि नवमेश तीसरे भाव में स्थित हो तो जातक अपने लेखन, भाषणों और वक्तृत्व क्षमता से धन लाभ करता है। जातक का पिता सामान्य साधनों वाला होगा जबकि जातक अपने भाई बहनों के माध्यम से धन अर्जित करेगा। यदि तीसरे भाव में नवमेश पर पाप ग्रह का प्रभाव हो तो जातक अपने लेखन से कष्ट में पड़ सकता है जो उस बुरे प्रभाव के अनुसार अविवेकी और अशिष्ट भी हो सकता है। उसके लेखन के कारण उसपर आई विपत्ति के कारण वह अपनी पैतृक सम्पत्ति बेचने पर बाध्य हो जाएगा।

चतुर्थ भाव में—नवमेश यदि चौथे भाव में स्थित हो तो जातक को काफी भू सम्पत्ति और सुन्दर मकान की प्राप्ति होती है अथवा जातक सम्पदा और भूमि के व्यापार से धन अर्जित कर सकता है। उसकी मां अमीर और भाग्यशाली स्त्री

होगी। उसे अपने पिता की अतुल सम्पत्ति प्राप्त होगी। यदि नवमेश चौथे भाव में पीड़ित हो तो जातक को घरेलू सुख की प्राप्ति नहीं भी हो सकती है। पिता के कठोर हृदय या माता पिता के बीच असामंजस्य के कारण आरंभिक जीवन में कष्ट होगा। यदि राहु का प्रभाव हो तो मां तलाकशुदा हो सकती है और पिता से अलग रहेगी।

पंचम भाव में—जब नवमेश पंचम भाव में हो तो जातक के पिता सम्पन्न और प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे। जातक के पुत्र भी जीवन में काफी भाग्यशाली होंगे और सफल तथा विशिष्ट होंगे।

षष्ठ भाव में—यदि नवमेश छठे भाव में हो तो पिता रोगी रहते हैं और वे चिरकालिक रोग से ग्रस्त रहते हैं। यदि छठे भाव पर शुभ ग्रह का प्रभाव हो तो पिता को कानूनी समस्याओं के समाप्त होने पर और क्षति पूर्ति के माध्यम से धन की प्राप्ति होती है। यदि छठे भाव में नवमेश पर पाप ग्रह का प्रभाव हो तो जातक के प्रयासों में मुकदमा के कारण उदासीनता आएगी जिसमें उसका पिता शामिल होगा या पिता द्वारा लिया गया ऋण शामिल होगा।

सप्तम भाव में—जातक विदेश में जाकर सम्पन्न होगा। उसके पिता भी विदेश में सफलता प्राप्त करेंगे। उसकी पत्नी उत्तम और भाग्यशाली होगी। यदि कुण्डली में वैराग योग विद्यमान हो तो जातक आध्यात्मिक मार्ग निर्देशन प्राप्त करने का प्रयास करेगा और उसे विदेश में पूरा करेगा। अशुभ योग नवमेश का नाश करता है और पिता की विदेश में मृत्यु होती है।

अष्टम भाव में—जातक के पिता की मृत्यु जल्दी हो जाती है। यदि इस स्थिति में अष्टम भाव पर पाप ग्रह का प्रभाव हो तो वह काफी दरिद्र हो सकता है और पिता की मृत्यु के कारण उसपर काफी उत्तरदायित्व आ सकता है। यदि नवमेश पर शुभ ग्रह का प्रभाव हो तो जातक को काफी पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होती है। इस पर बुरे प्रभाव के कारण जातक पुरानी परम्परा को छोड़ सकता है या धार्मिक संस्थाओं को क्षति पहुँचा सकता है या अपने परिवार द्वारा स्थापित न्यासों को तोड़ सकता है।

नवम भाव में—यदि नवमेश नवम भाव में हो तो पिता दीर्घायु और सम्पन्न होते हैं। जातक की प्रवृत्ति धार्मिक और दानशील होगी। वह विदेश की यात्रा करेगा और धन अर्जित करेगा तथा विशिष्टता प्राप्त करेगा। यदि पाप ग्रहों से पीड़ित हो अथवा यदि नवमेश नवांश लग्न से ६, ८ या १२ वें भाव में हो तो जातक के पिता की शीघ्र मृत्यु हो जाती है।

दसम भाव में—यदि नवमेश दसम भाव में हो तो जातक काफी प्रसिद्ध और

प्रभाव शाली होता है। वह उदार होगा और अधिकार वाले पद पर होगा। वह काफी धन अर्जित करेगा और हर प्रकार का आराम प्राप्त करेगा। उसके जीवन यापन का साधन उचित मार्ग होगा और वह कानून का पालन करने वाला नागरिक होगा।

एकादश भाव में—जातक काफी धनी होगा। उसके मित्र बली और प्रभावशाली होंगे। उसके पिता विख्यात और सम्पन्न होंगे। यदि पीड़ित हो तो स्वार्थ भरी योजना बनाकर या अपवंचन द्वारा उसके मित्र जातक के धन का नाश करेंगे।

द्वादश भाव में—यदि नवमेश बारहवें भाव में स्थित हो तो जातक गरीब होगा। जातक को बहुत उत्पीड़न होगा और उसे जीवन में काफी मिहनत करनी होगी। तिसपर भी उसे सफलता नहीं मिलेगी। वह धार्मिक और उत्तम होगा किन्तु हमेशा ही अभाव में रहेगा। जातक को गरीबी में छोड़कर उसके पिता का शीघ्र देहान्त हो सकता है।

ये योग सामान्य हैं। और कारक तथा कुण्डली में अन्य ग्रहों की स्थिति पर विचार किए बिना इसे लागू नहीं किया जा सकता है। यदि नवमेश काफी बली हो तो वह धन लाभ देने में सक्षम होता है भले ही वह अशुभ भाव में पड़ा हो। यदि नवमेश पीड़ित हो किन्तु नवम भाव शुभ हो तो अशुभ फल की मात्रा काफी कम हो जाती है। भाव की व्याख्या करने में काफी कौशल की आवश्यकता होती है और किसी भी हालत में ऊपर लिखे गए फलों को ज्यों का त्यों लागू करना वांछित नहीं है।

अन्य महत्वपूर्ण योग

निम्नलिखित योग प्राचीन पुस्तकों से लिए गए हैं—

जब सूर्य ९, ८, ११ या १२ वें भाव में स्थित हो जो अचर राशि हो और लग्न चन्द्रमा से दृष्ट न हो तो बालक के जन्म के समय पिता विद्यमान नहीं रहेंगे। वे अपने शहर में हो सकते हैं। यदि इसी स्थिति में सूर्य चर राशि में हो तो बालक के जन्म के समय पिता विदेश में होंगे। यदि सूर्य, मंगल और शनि चौथे या १० वें भाव में एक साथ हों तो बालक का जन्म पिता के मरणोपरान्त होगा।

जब लग्न से ५ वें या ९ वें भाव में अशुभ राशि हो और वहां पर सूर्य स्थित हो तो बालक के पिता की शीघ्र मृत्यु हो जायगी। चन्द्रमा से १० वें भाव में सूर्य और पाप ग्रह के स्थित होने पर भी पिता की शीघ्र मृत्यु का संकेत मिलता है। यदि शनि और मंगल मेष, सिंह या कुम्भ राशि में युक्त हों जो सूर्य से ५, ७ या

९ वां भाव होना चाहिये तो बालक के जन्म के समय उसके पिता को किसी प्रकार के बन्धन में होना चाहिए। जब पाप ग्रहों की युक्ति से सूर्य पीड़ित हो तो बालक के पिता के जीवन पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। यदि चन्द्रमा, मंगल, बुध और शनि एक साथ हों तो जातक के दो पिता और दो मां होंगी। दूसरे शब्दों में वह गोद ले लिया जायगा। लग्न पर सूर्य की दृष्टि से यह संकेत मिलता है कि जातक को पिता से सम्पत्ति विरासत में मिलेगी। यदि ९ वें भाव में चर राशि हो या नवमेश चर राशि में हो और वह शनि से युक्त या दृष्ट हो और १२ वें भाव का अधिपति बली हो तो जातक दूसरे द्वारा गोद ले लिया जायेगा।

यदि चतुर्थेश छठें भाव में नवमेश से युक्त हो तो जातक का पिता चरित्रहीन होगा। जब पंचमेश शुभ ग्रह हो और सूर्य भी शुभ स्थिति में हो तो जातक से पिता को सुख मिलेगा। यदि पंचमेश या सूर्य, शनि राहु या मंदी से पीड़ित हो तो जातक के लिए चिन्ता का कारण बनेगा। यदि जातक के लग्न में वही राशि हो जो पिता के दसम भाव में है तो जातक एक आज्ञाकारी पुत्र होगा। यदि बृहस्पति नवम भाव में अपने ही नवांश में हो तो जातक में सन्तानोचित कर्तव्य की उच्च भावना विद्यमान होगी। यदि जातक और उसके पिता के लग्न आपस में छठे और आठवें हों तो उन दोनों के विचारों में हमेशा भिन्नता रहेगी। यदि सूर्य शत्रु राशि में हो तो जातक अपने पिता के लिए दुःख का कारण बनेगा। यदि सूर्य और चन्द्रमा, मंगल और शनि से त्रिकोण में हों तो दोनों ही माता पिता बालक को छोड़ जायेंगे। लग्न से ११ वें या ९ वें भाव में शनि, मंगल और राहु होने पर पिता की मृत्यु हो जाती है। यदि सूर्य या चन्द्रमा चर राशि में केन्द्र में स्थित हों तो जातक अपने पिता का अन्तिम संस्कार नहीं करेगा।

यदि नवम भाव में पाप ग्रह स्थित हो तो जातक भाग्यशाली होता है। यदि नवमेश पर पाप ग्रह शत्रु ग्रह या नीच के ग्रह की दृष्टि हो और छठे भाव में हो तो जातक सब प्रकार से कष्ट पाता है। यदि नवमेश पाप ग्रह के षष्ठ्यंश में हो या नीच राशि में हो या नवांश में नीच में हो या कमजोर हो अथवा यदि नवम भाव में पाप ग्रह हो तो जातक जीवन में दुर्भाग्य पूर्ण होगा।

यदि नवम भाव में पापग्रह, ग्रसित ग्रह या नीच का ग्रह स्थित हो तो जातक दुर्भाग्यशाली, गरीब और सिद्धान्तहीन होगा। परन्तु यदि पाप ग्रह नवम भाव में उच्च का, अपनी राशि का या मित्र राशि में हो तो विपरीत फल होता है।

यदि एकादशेश नवम भाव में दसमेश से प्रभावित हो तो जातक जहां कहीं भी जायगा वह भाग्यशाली रहेगा। यदि दूसरे भाव में नवमेश पर दसमेश की दृष्टि हो तब भी दूसरी प्रकार के फल का संकेत मिलता है। यदि द्वितीयेश ग्यारहवें

भाव में हो, एकादशेश नवम भाव में हो और नवमेश दूसरे भाव में हो तो वह व्यक्ति अति भाग्यशाली होता है और वह काफी धन कमाता है। यदि तृतीयेश और नवमेश युक्त हों या उनपर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो या शुभ राशि अथवा नवांश में स्थित हों तो किसी भाई के माध्यम से जातक का भाग्य बनता है। यदि पंचमेश और नवमेश युक्त हों या दृष्टि अथवा युक्ति से लाभ प्रद स्थिति में हो तो जातक के बच्चे उसे सम्पन्न बनाते हैं। यदि नवम भाव में शुक्र या बृहस्पति हो अथवा नवमेश पर उनकी दृष्टि हो तो भाग्य शाली जीवन का संकेत मिलता है। लग्नेश और नवमेश के बीच राशि परिवर्तन होने पर जातक हर प्रकार से भाग्यशाली होता है।

यदि नवमेश शुभ ग्रह से दृष्ट हो और केन्द्र में जलीय राशि में स्थित हो तो जातक दीर्घ यात्रा पर जाता है और पवित्र नदी में स्नान करता है। यदि नवम भाव पर बृहस्पति की दृष्टि हो अथवा नवमेश और दशमेश की युक्ति हो तो जातक अनेक धर्म स्थान और धर्म केन्द्रों की यात्रा करता है। यदि चन्द्रमा से नवम भाव पर शुभ दृष्टि हो और वहां पर शुभ ग्रह स्थित हो तो जातक लम्बी तीर्थ यात्रा पर जायेगा। यदि बृहस्पति नवम भाव में हो और चन्द्रमा, बृहस्पति तथा लग्न पर शनि की दृष्टि हो तो जातक दार्शनिक विचारों की प्रणाली का संस्थापक होता है। यदि बृहस्पति, सूर्य और बुध ९ वें भाव में स्थित हों तो वह व्यक्ति विद्वान और धनी होता है।

यदि लग्नेश १२ वें भाव में हो और चन्द्रमा तथा मंगल १० वें भाव में युक्त हो जो पाप राशि है तो जातक विदेश जायगा किन्तु उसका भाग्य नहीं बनेगा। यदि सूर्य चन्द्रमा और शनि एक ही राशि में स्थित हों तो जातक दुष्ट होगा तथा धोखे बाज होगा और विदेश की यात्रा करने का प्रयास करेगा। यदि लग्नेश जिस राशि में स्थित है वहां से १२ वें भाव का अधिपति जलीय राशि में स्थित हो तो जातक विदेश में जाकर सम्पन्न होता है। यदि नवम भाव में ग्रह बुध और बृहस्पति से युक्त न हो तो जातक रोगी, परित्यक्त और दुखी होता है।

नवम भाव में ग्रह

सूर्य—यदि सूर्य पीड़ित हो तो जातक अपना धर्म बदल सकता है। वह अपने पिता के प्रति शत्रुता रखेगा अपने से बड़ों और धार्मिक गुरुओं का आदर नहीं करेगा परन्तु यदि सूर्य पीड़ित न हो तो वह व्यक्ति एक आज्ञाकारी पुत्र होगा और धर्म के अनुसरण में आदर रखेगा। नवम भाव में सूर्य के साथ चन्द्रमा युक्त हो तो आँख में कष्ट होता है। सूर्य के साथ शुक्र हो तो जातक रोगी होता है। स्वास्थ्य साधारण

रहेगा और जातक थोड़ी पैतृक सम्पत्ति प्राप्त करेगा। वह महत्त्वाकांक्षी और उद्यमी होगा।

चन्द्रमा—जातक भाग्यशाली और सम्पन्न होगा। उसके अनेक पुत्र, मित्र और सगे सम्बन्धी होंगे। वह सिद्धान्तवादी और उदार विचार वाला होगा। यदि चन्द्रमा पर शनि, मंगल और बुध की दृष्टि हो तो जातक शासक बनता है। यदि चन्द्रमा मंगल से युक्त हो तो वह अपनी मां को घायल कर सकता है। यदि नवम भाव में चन्द्रमा के साथ शुक्र हो तो जातक अनैतिक जीवन व्यतीत कर सकता है। वह अपनी सौतेली मां के कहने के अनुसार चलेगा। इस स्थिति में यदि शनि हो तो जातक को बहुत कष्ट होता है। जातक पूर्व संस्थाओं का निर्माण कर सकता है। वह काफी अचल सम्पत्ति प्राप्त करेगा और विदेश की यात्रा भी करेगा।

मंगल—जातक अधिकारी होगा और काफी धनी होगा। उसके बच्चे होंगे और सुखी रहेगा। वह कर्तव्य परायण पुत्र नहीं होगा किन्तु अन्यथा उदार होगा और अपने उत्तम गुणों के लिये विख्यात होगा। यदि मंगल के साथ बृहस्पति या बुध युक्त हो तो जातक धार्मिक और दैवी सिद्धान्त का विद्वान होगा। यदि इस स्थिति में शुक्र हो तो दो पत्नी होती हैं और विदेश में घर होता है। यह जातक को कानून में दक्षता देता है। नवम भाव में मंगल के साथ शनि के होने पर अन्य स्त्री के साथ सम्बन्ध का संकेत मिलता है और वह दुष्ट प्रकृति का होता है। वह स्वयं अन्वेषण करने वाला, परिश्रमी और उतावला होगा।

बुध—जातक अधिक शिक्षा और धन प्राप्त करेगा। वह काफी विद्वान होगा। वह अध्यात्म विद्या और तत्वमीमांसा में रुचि लेगा। यदि बुध के साथ शुक्र युक्त हो तो वह वैज्ञानिक मस्तिष्क वाला और संगीत तथा आमोद का शौकीन होगा। नवम भाव में बुध के साथ बृहस्पति हो तो ज्ञान और बुद्धिमत्ता प्रदान करता है। वह निमन्त्रण पर विदेश यात्रा कर सकता है और शैक्षिक संस्थाओं में व्याख्यान देने के लिए आमन्त्रित किया जा सकता है। पिता के साथ मित्रवत सम्बन्ध रखेगा।

बृहस्पति—जातक विधि, दर्शन आदि का प्रवक्ता हो सकता है। यदि बृहस्पति शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो वह काफी अचल सम्पत्ति प्राप्त करता है। वह अपने भाईयों का शौकीन होगा। यदि बृहस्पति पर चन्द्रमा और मंगल का प्रभाव हो तो वह सेना का नेता या कमान्डर होगा। यदि सूर्य और शुक्र बृहस्पति से युक्त हो तो जातक चरित्रहीन होता है। यदि बृहस्पति पर शनि की शुभ दृष्टि हो तो जातक अति संयमी जीवन बिताता है और दैवी संसार के लिए भूखा रहता है। वह व्याख्याता, उपदेशक आदि के साथ में विदेश जा सकता है। वह रूढ़िवादी और सिद्धान्त वाला होगा।

शुक्र—जातक जन्म से भाग्य शाली होता है और उसके पास प्रसिद्धि, विद्या, बच्चे, पत्नी और सामान्यतः सभी प्रकार के सुख होते हैं। शुक्र के साथ सूर्य होने पर जातक बात चीत में कुलीन होता है किन्तु उसे शारीरिक कष्ट रह सकता है। शनि के साथ शुक्र हो तो वह व्यक्ति राजनयिक होता है अथवा राजा या सरकार के अधीन इसी प्रकार का कार्य करता है। व्यक्तियों और मामलों पर अपने संतुलित विचारों के लिए वह विख्यात होगा। सूर्य और चन्द्रमा के साथ शुक्र स्थित होने पर स्त्रियों के साथ झगड़ा हो सकता है जिससे धन की हानि होगी। शुक्र के साथ सूर्य और शनि के स्थित होने पर हत्या की प्रवृत्ति होगी और अन्य योग हो तो वह व्यक्ति जेल जा सकता है। वह मुक्ति पाने के लिए दुष्ट भी हो सकता है।

शनि—जातक एकाकी जीवन बिताएगा और शादी नहीं भी कर सकता है। वह युद्ध के मैदान में अपनी वीरता के लिए विख्यात होगा। सूर्य के साथ शनि होने के कारण पिता और उसके पुत्रों के बीच गम्भीर विवाद रहता है। वह पेट की बीमारी से पीड़ित रह सकता है। बुध के साथ शनि के रहने पर जातक अविश्वासी और धोखेबाज होता है यद्यपि वह धनी होगा। पारिवारिक जीवन में कंजूस, कुछ हद तक नास्तिक होगा। वह पूर्त संस्थाओं का संस्थापक हो सकता है।

राहु—जातक की पत्नी तंग करने वाली और निरंकुश होगी। वह सख्त और कंजूस होगा और वह दुर्बलता से पीड़ित रहेगा तथा सामान्यतः अनैतिकता की प्रवृत्ति रहेगी। वह अपने पिता से घृणा करेगा और ईश्वर तथा धर्म की निंदा करेगा। परन्तु वह प्रसिद्ध व्यक्ति हो सकता है और काफी धन प्राप्त कर सकता है।

केतु—जातक तुनक मिजाजी होगा और साधारण बात पर अशान्त हो सकता है। वह बात करने में कुशल होगा किन्तु वह उसका प्रयोग दूसरों को धोखा देने के लिए करेगा। वह बाहरी दिखावा का शौकीन होगा और घमंडी तथा हेकड़ी बाज होगा। फिर भी वह साहसी होगा। वह अक्सर अपने माता पिता के साथ दुर्व्यवहार करेगा और उनके साथ शत्रुता रखेगा किन्तु किफायती रहन-सहन के कारण काफी धन इकट्ठा करेगा। उसकी पत्नी और बच्चे अच्छे होंगे।

नवम भाव के परिणामों के फलित होने का समय

नवम भाव से सम्बन्धित घटनाओं के समय पर विचार करने के लिए निम्नलिखित तथ्यों पर अवश्य विचार करना चाहिए—

(क) नवम भाव का अधिपति (ख) नवम भाव पर दृष्टि डालने वाले ग्रह

(ग) नवम भाव में स्थित ग्रह (घ) नवम भाव के अधिपति पर दृष्टि डालने वाले ग्रह (च) चन्द्रमा से नवमाधिपति और (घ) सूर्य जो पिता का कारक है।

ये ग्रह दशानाथ के रूप में या भुक्तिनाथ के रूप में नवम भाव को प्रभावित कर सकते हैं। (१) जो ग्रह नवम भाव पर प्रभाव डालने में सक्षम है उसके दशा काल में नवम भाव पर प्रभाव डालने के लिए सक्षम ग्रहों की भुक्ति में नवम भाव से सम्बन्धित फल उत्तम होता है। जो ग्रह नवम भाव से सम्बन्धित नहीं हैं उनके दशा काल में नवम भाव से सम्बन्धित ग्रहों की भुक्ति में नवम भाव से सम्बन्धित फल सीमित होता है। (३) जो ग्रह नवम भाव से सम्बधित हैं उनके दशा काल में जो ग्रह नवम भाव से सम्बन्धित नहीं हैं उनकी भुक्ति में नवम भाव से सम्बन्धित फल बहुत थोड़ा मिलता है।

कुण्डली सं० ८५

जन्म तारीख २४–३–१८८३, जन्म समय ६·० बजे प्रातः (स्था स.)
अक्षांश १४° १३′ उत्तर, देशा० ७७°३५′ पूर्व।

राशि

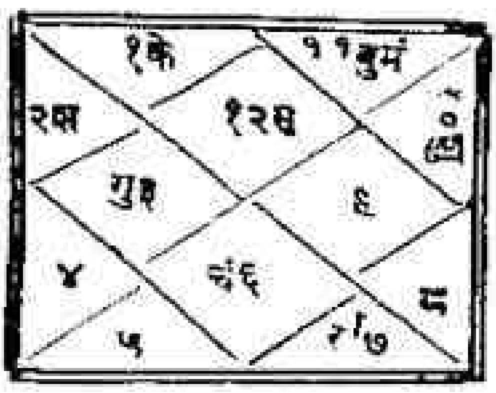

नवांश

चन्द्रमा की दशा शेष—६ वर्ष

कुण्डली संख्या ८५ में—(क) नवमाधिपति–मंगल (ख) नवम भाव पर दृष्टि डालने वाले ग्रह—शनि (ग) नवम भाव में स्थित ग्रह—कोई नहीं (घ) नवमाधिपति पर दृष्टि डालने वाले ग्रह—बृहस्पति (च) नवमाधिपति से सम्बधित ग्रह—बुध (च) चन्द्रमा से नवमाधिपति शुक्र (छ) सूर्य।

मंगल, शनि, बृहस्पति, बुध, शुक्र और सूर्य अपनी दशा और भुक्ति में नवम भाव को प्रभावित कर सकते हैं। अन्य ग्रहों की अपेक्षा मंगल और शनि अपनी दशा और भुक्ति के दौरान नवम भाव को अधिक प्रभावित कर सकते हैं। चूंकि केतु मंगल की राशि में स्थित है अतः कुजवत् केतु के सिद्धान्त के अनुसार वह भी अपनी दशा और भुक्ति काल में नवम भाव को समान रूप से प्रभावित करेगा। शनि के दशाकाल में केतु की भुक्ति नवम भाव के कारक के सम्बन्ध में जातक के जीवन में महत्वपूर्ण थी। इस अवधि में उसके पिता की मृत्यु हो गई।

नवम भाव मुख्यतः पिता, सम्पन्नता और लम्बी यात्रा से सम्बन्धित होता है। नवम भाव के स्वामी की दशा के दौरान नवम भाव से सम्बन्धित फल मिलता है। यदि जातक के जीवनकाल में यह दशा नहीं आती है तो दृष्टि, स्थिति या नवमाधिपति के साथ युक्त ग्रहों द्वारा नवम भाव को प्रभावित करने वाले ग्रह नवम भाव के कारक के फल देते हैं।

फल का स्वरूप

अबतक जिन सिद्धान्तों की व्याख्या की गई है उनके अधीन रहते हुए विभिन्न ग्रहों की दशा और भुक्तिकाल में नवम भाव से सम्बधित निम्नलिखित फल प्राप्त होते हैं

सूर्य—धार्मिक शिक्षा और आध्यात्मिक कार्य में प्रगति। पुत्रों से सुख और अपने परिश्रम से सम्पत्ति की प्राप्ति। गिल्टी बढ़जाने के कारण बीमारी। कृषि से आय।

चन्द्रमा—पठन और उच्च शिक्षा में अनुवृद्धि,। मानवता और सामाजिक महत्त्व की परियोजनाओं में भाग लेना। मातृभूमि और आवास के भीतर और बाहर की यात्रा। प्रसिद्धि और सफलता।

मंगल—कटुता और अशिष्टता की ओर झुकाव। पिता बीमार रहेंगे। कृषि सम्बन्धी उद्यम असफल रहता है किन्तु व्यापार और कारोबार में सफलता मिलती है। परिस्थितियों के कारण जीवन में निराशा। भाईयों के प्रति बुरे विचार और उनमें से एक की मृत्यु।

बुध—अनेक विषयों में ज्ञान प्राप्त करता है। और संगीत सीखता है। बच्चे होते हैं। साहित्य में रुचि बढ़ती है। वैज्ञानिक अन्वेषण और खोज के माध्यम से प्रसिद्धि प्राप्त होती है। जातक लोकप्रिय होता है।

बृहस्पति—धार्मिक और इसी प्रकार की संस्थाओं में रुचि लेता है। अनेक समारोहों का आयोजन करता है। पिता को काफी सुख देता है। दान में काफी धन देता है।

शुक्र—स्वार्थी होता है किन्तु धार्मिक होता है और आध्यात्मिक गुरुओं की देखरेख में अध्ययन करता है। कविता और कला के माध्यम से प्रसिद्ध होता है।

शनि—एक सफल वकील होता है और धार्मिक संस्थाओं का निर्माण करता है। कंजूस आदतों से बैंक में काफी धन जमा करता है। माता पिता के प्रति कृतघ्न होता है और नास्तिक होता है।

राहु—पारिवारिक दुख । व्यभिचार और अन्य कामों में लग जाता है । कंजूस और अशिष्ट हो जाता है । यदि राहु सम्मानित हो तो जातक आध्यात्मिक क्षेत्र में तीव्र प्रगति करता है । यदि राहु बुरी स्थिति में हो तो माता-पिता को काफी उत्पीड़न होता है ।

केतु—आँख की बीमारी से पीड़ित रहता है । बच्चे अधिक होते हैं और घरेलू सौहार्द रहता है । किन्तु जातक अविश्वासी और नास्तिक होता है ।

नवमाधिपति के दशा काल में निम्नलिखित फलों की आशा की जाती है—

यदि नवमाधिपति लग्नेश के साथ युक्त होकर लग्न भाव में स्थित हो तो जातक को हर प्रकार का आराम मिलता है । यदि नवमाधिपति पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो उसके दशाकाल में जातक को सवारी की प्राप्ति होती है । जातक अधिकारी बनता है । धन प्राप्ति होती है और अमीर बनता और सुखी जीवन व्यतीत करता है । वह सरकारी सेवा में उच्च पद पर काम कर सकता है और राजा या मंत्री के बराबर वाला पद प्राप्त कर सकता है । उसे पैतृक सम्पति की प्राप्ति होती है और अपने ही प्रयासों से उसका निर्माण करता है । अपने रहने और आश्रय के लिए अनेक सम्बधी उसके आतिथ्य पर निर्भर करते हैं । जातक अपनी उदारता और जीवन में उपलब्धियों के लिए प्रसिद्ध होता है । यदि नवमाधिपति निर्बल हो या ग्रसित हो या अशुभ नवांश में हो अर्थात नवांश लग्न से ६, ८, १२वें भाव में हो तो फल बिल्कुल विपरीत होंगे । जातक दरिद्र होगा और दूसरों को आश्रय देने की बजाए स्वयं दूसरों से भोजन मांगने पर बाध्य हो जाएगा । यदि राहु और नवमाधिपति युक्त हों और बली हों तो विदेशी शक्ति की सेवा करेगा । यदि यह मंगल है तो वह सेना या पुलिस बल में उच्च पद पर आसीन होगा । यदि नवमाधिपति शनि या बुध हो तो जातक कानून का अधिकारी अर्थात न्यायाधीश या बैंकर होगा ।

यदि नवमाधिपति द्वितीयेश के साथ दूसरे भाव में स्थित हो तो उसके दशा काल में पारिवारिक कारोबार या सम्पत्ति से असीमित धन लाभ होगा । वह बहुत उत्तम भोजन करेगा और बिलासिता का जीवन व्यतीत करेगा । उसके अनेक सम्बन्धी होंगे जो उसका आदर करेंगे और उसे प्यार करेंगे । उसकी मुखाकृति तेजस्वी होगी और उसके बचन कुशल हो जाएंगे । यदि नवमाधिपति के साथ पापग्रह युक्त हों तो पारिवारिक झगड़ा और मुकदमा के कारण जातक के साधनों और विरासत में ह्रास होगा । यदि नवमाधिपति द्वितीयेश और अष्टमाधिपति से युक्त हो तो जातक अपमान और तिरस्कार पाता है । उसे गलियों में भी फेंक दिया जाता है और अकाल्पनिक दरिद्रता तक पहुँच सकता है । यदि मारक दशा चल रही हो तो नवमाधिपति द्वारा संकेतित साधनों से जातक की मृत्यु हो सकती है । यदि

नवमाधिपति नवांश लग्न से ६, ८, या १२ वें भाव में स्थित हो तो भी शुभ फल की मात्रा में काफी कमी होगी।

यदि नवमाधिपति तीसरे भाव में तृतीयेश से युक्त हो तो भाई सम्पन्न होगा। जातक का धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों पर लेखन में झुकाव होगा। जातक संगीत और संगीत उपकरणों से धन कमाएगा। वह विदेश और पवित्र स्थानों तथा तीर्थ स्थानों की यात्रा करेगा। फिर भी यदि नवमाधितति नवांश में ६, ८ और बारहवें भाव में हो तो जातक साधारण भाग्य वाला होगा।

यदि नवमाधिपति चौथे भाव में चतुर्थेश के साथ युक्त हो तो जातक अति सुखी और विद्वान होता है। यदि शुक्र और बृहस्पति भी युक्त हों जो जातक अनेक सवारियां और भूमि प्राप्त करता है। यदि इस स्थिति में नवमाधिपति उच्च का हो तो जातक नवमाधिपति के दशाकाल में देश का राष्ट्रपति या शासक बनता है। तीसरे भाव में नवमाधिपति से शनि युक्त हो तो जातक विदेश जाता है, जहां पर वह सरकार या सेवक की सेवा करेगा। यदि बली बुध नवमाधिपति से युक्त हो और चतुर्थेश चौथे भाव में स्थित हो तो जातक अध्ययन या अनुसंधान केन्द्र का प्रधान होता है। यदि नवमाधिपति नवांश लग्न से ६, ८ या १२ वें भाव में स्थित हो तो ये फल न्यून हो जाते हैं।

यदि नवमाधिपति पंचम भाव में पंचमेश में युक्त हो तो जातक का विचार स्पष्ट होता है और वह शान्त रहता है। उसकी वृत्ति और अन्य हितों की उन्नति में उसके पिता धन और अन्य साधनों से सहायता करेंगे। जातक के बच्चे विशिष्टता प्राप्त करेंगे और इससे जातक को काफी सुख मिलेगा। एक पुत्र काफी प्रसिद्ध बनेगा और सरकार का संरक्षक होगा। जातक का पुत्र भी काफी सम्पन्न होगा और विलासिता का भोग करेगा।

यदि नवमाधिपति और षष्ठेश छठे भाव में स्थित हों तो नवमेश की दशा सामान्यत: अच्छी रहेगी। यदि उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक बहुत धन कमाएगा और जीवन में तरक्की करेगा। इस दशा काल में उसके पिता के स्वास्थ्य में सुधार होगा। यदि नवमाधिपति पर पापग्रहों की दृष्टि हो तो इस दशा काल में जातक के पिता की मृत्यु हो जाएगी। वह दूसरों का देनदार हो जाएगा और मुकदमा में फंस जाएगा, जिसका अन्त नहीं होगा। यदि दृष्टि द्वारा अच्छी स्थिति में हो तो नवमाधिपति के दशा काल में जातक न्यायाधीश या इसी प्रकार के पद पर आसीन होगा। उसके पास अनेक नौकर चाकर होंगे। यदि मंगल वहीं पर स्थित हो तो जातक को विरासत में भूमि मिलेगी। यदि नवमेश पर बुध का भी प्रभाव हो तो उसके दशा काल में कानून के माध्यम से पुस्तकों पर रायल्टी प्राप्त होगी। यदि वहां पर बृहस्पति स्थित हो तो जातक अपने अध्ययन के माध्यम से प्रचुर धन प्राप्त करता है।

यदि नवमाधिपति सप्तम भाव में सप्तमाधिपति के साथ हो तो जातक विदेश में धन अर्जित करेगा। उसे राजनयिक या इसी प्रकार के पद पर विदेश भेजा जाएगा। वह एक सम्पन्न परिवार में जन्म लेगा और उसे सभी प्रकार के भोग विलास का सुख मिलेगा। उसके इर्द गिर्द स्त्रियां घूमती रहेंगी और उसे सभी प्रकार के सांसारिक सुख का आनन्द प्राप्त होगा। यदि नवमाधिपति के साथ मंगल हो तो जातक को विदेश में भू सम्पत्ति प्राप्त होती है जबकि यदि शुक्र भी अन्तर्ग्रस्त हो तो वह स्त्रियों के माध्यम से धन अर्जित करेगा। विवाह के बाद भाग्योदय होता है और उसकी पत्नी उत्तम और धनी महिला होगी तथा उच्च परिवार से आएगी। यदि नवमाधिपति नवांश लग्न से ६, ८ या १२ वें भाव में स्थित हो तो फल काफी न्यून हो जायेंगे। पत्नी शालीन और नम्र होगी किन्तु वह रोगिणी रहेगी। यद्यपि जातक काफी धन कमाएगा किन्तु नवमाधिपति के दशा काल में देनदारी और मुकदमा पर काफी व्यय होगा।

यदि नवमाधिपति अष्टमेश के साथ अष्टम भाव में स्थित हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो काफी धन विरासत में छोड़कर जातक के पिता की मृत्यु हो जाएगी। जातक भी अपनी पत्नी की मृत्यु या तलाक के कारण अपनी पत्नी से अलग हो जाएगा और निर्वाह धन के वशीभूत के रूप में काफी धन प्राप्त करेगा। यदि पाप ग्रहों से बुरी तरह पीड़ित हो तो जातक न केवल कष्ट पायेगा बल्कि धन और भूमि का नाश भी होगा। वह भूखा प्यासा लक्ष्य विहीन घूमता रहेगा।

यदि नवमाधिपति नवम भाव में हो तो नवमाधिपति का दशाकाल जातक के लिए काफी भाग्यशाली होगा। वह अति योग्य और उत्तम स्वभाव वाले के साथ विवाह करेगा। वह पिता के कारोबार में अति सावधानी से निवेश करेगा और प्रत्याशा से अधिक उसका विकास करेगा। वह काफी धन अर्जित करेगा। यदि नवमाधिपति के साथ सूर्य युक्त हो और उसपर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक चुनाव जीतकर महान राजनीतिज्ञ बनता है। वह अपनी देश भक्ति और राजनैतिक सूझबूझ के कारण विख्यात होता है। यदि नवम भाव में राहु युक्त हो तो जातक के पिता विदेश में काफी प्रसिद्ध होते हैं। यदि शनि और मंगल जैसे पापग्रह नवम भाव और नवमाधिपति को प्रभावित करते हैं तो जातक व्यभिचारी बन जाता है और नीच कर्मों में फंस जाता है। यदि नवम भाव पर केवल शनि की दृष्टि हो तो जातक सम्पन्न होता है किन्तु पेट की बीमारी से ग्रस्त रहता है। यदि बुरे प्रभाव डालने वाले ग्रह सूर्य, चन्द्रमा और मंगल हों तो जातक अपने माता पिता और एक अंग खो देता है। यदि नवम भाव पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो नवमा-

धिपति के दशाकाल में जातक अपने माता पिता के प्रति कर्तव्य परायण हो जाता है और वह पवित्र मस्तिष्क वाला होता है।

यदि नवमाधिपति दसम भाव में दसमाधिपति से युक्त हो और शुभ स्थिति में हो तो जातक अपने अध्ययन के लिये प्रसिद्ध होता है। वह अपनी जीवन वृत्ति में स्थिर हो जाता है और काफी सफल जीवन बिताता है। उसके पास हर प्रकार की विलासिता-और आराम का साधन होगा। वह धर्मार्थं कार्य करेगा अर्थात विश्राम गृह और अस्पताल का निर्माण करेगा। वह सरकार की सेवा करके अधिक धन कमाएगा। वह अनेकों बार सम्मानित होगा। यदि नवमाधिपति पाप ग्रहों से पीड़ित हो तो फल बिल्कुल विपरीत होंगे। जातक अपनी नौकरी खो देगा। यदि किसी व्यवसाय में हो तो उसे लोगों का आक्रोश प्राप्त होगा और अपना व्यवसाय बन्द करने के लिए बाध्य हो जाएगा। वह अनुचित जीवन बिताएगा और गैर कानूनी तथा अनुचित साधनों से धन कमाने का प्रयास करेगा। उसकी सम्पत्ति उसके हाथ से चली जाएगी और शासक द्वारा उसे सजा भी मिल सकती है। यदि नवमाधिपति दसम भाव में उत्तम स्थिति में हो और नवमाधिपति नवाँश लग्न से ६, ८ या १२ वें भाव में हो तो फल अच्छे होंगे किन्तु उनका स्तर मध्मम होगा।

यदि नवमाधिपति एकादश भाव में एकादशेश के साथ युक्त हो तो जातक पारिवारिक कारोबार में सफलता प्राप्त करता है यदि जलीय राशि में चन्द्रमा भी उसी भाव में स्थित हो तो मछली, मच्छ की मोती और इसी प्रकार की वस्तुओं जैसे समुद्री उत्पादों से सम्बन्धित कारोबार होगा। यदि ग्यारहवें भाव में एकादशेश पर बृहस्पति या बुध की दृष्टि हो या एकादशेश इनमें से कोई ग्रह हो तो समाचारपत्र, पुस्तकों के प्रकाशन या शैक्षिक संस्थाओं से धन कमाएगा। यदि वह ग्रह शुक्र हो तो जातक होटल, सिनेमा, रेस्तरां से धन कमाएगा किन्तु यदि शुक्र पर राहु, शनि, मांदि और केतु के बुरे प्रभाव हों तो जातक वेश्यावृत्ति से धन कमाएगा। यदि नवमाधिपति पर पापग्रहों के बुरे प्रभाव हों तो जातक के मित्र उसके दुश्मन बन जाएंगे और उसे सारे धन सें वंचित कर देंगे। वह मात्र जीने के लिए भीख मांगने पर बाध्य हो जाएगा। यदि नवमाधिपति नवांश लग्न से ६, ८ या १२ वें भाव में हो तो जातक साधारण धन कमाएगा और वह साधारण रूप से सम्पन्न होगा।

यदि नवमाधिपति बारहवें भाव में द्वादशेश के साथ युक्त हो तो जातक का झुकाव अध्यात्म की ओर होगा और अपनी सारी सम्पत्ति धर्मार्थ पर खर्च कर देगा। वह एक पवित्र और ईमानदार का जीवन बिताएगा। नवमाधिपति के दशा काल में उसके पिता का देहान्त हो जाएगा या वह उनसे अलग रहने लगेगा। यदि बारहवें भाव में नवमाधिपति पीड़ित हो तो जातक को मूर्खतापूर्ण निवेश के कारण

धन की हानि होगी। यदि नवमाधिपति पर मंगल की विपरीत दृष्टि हो या वह नवमेश को प्रभावित करता हो तो चोरी या डकैती के कारण जातक को हानि हो सकती है। यदि १२ वें भाव में नवमाधिपति के साथ षष्ठाधिपति या अष्टमाधिपति युक्त हों तो जातक अपनी पैत्रिक भूमि और धन गँवा देगा। यदि १२ वें भाव में द्विपाद या चतुष्पाद राशि हो और नवमाधिपति पापग्रहों से पीड़ित हो और स्वयं नीच का या ग्रसित हो तो नवमेश के दशाकाल में जातक को अपने पालतू जानवरों और घोड़ों तथा नौकरों की हानि होगी।

फलों की भविष्य वाणी करते समय कारक सूर्य, नवमाधिपति और दृष्टि तथा भुक्ति द्वारा प्रभावित करने वाले अन्य ग्रहों, चालू दशा और भुक्ति का उचित निर्धारण अवश्य कर लेना चाहिए। समस्त कुण्डली का विश्लेषण कर लेने के बाद ही निष्कर्ष निकालना चाहिए। कोई भी ग्रह यदि पीडित हो अथवा शुभ स्थिति में हो, स्वयं नवम भाव के फलों को पूर्णतः प्रभावित नहीं कर सकता जब तक कि वह अन्य सुसंग तथ्यों से प्रभावित न हो।

पिता

पिता की आयु का विचार नवम भाव के बल, और नैसर्गिक कारक सूर्य की स्थिति के आधार पर किया जाता है। नवम भाव से सप्तम और अष्टम भाव और अन्य मारक भावों और वहाँ के ग्रह पिता की आयु का अनुमान लगाने में सहायता करते हैं। कभी-कभी कारक सूर्य के संदर्भ में मारक ग्रहों का भी पिता की मृत्यु पर विचार करने में प्रयोग किया जाता है। सूर्य पर बुरे प्रभाव या अशुभ भावों में सूर्य के स्थित होने के फलस्वरूप पिता की मृत्यु शीघ्र हो जाती है। यदि नवमाधिपति केन्द्र या एकादश भाव में हो या नवम भाव पर उसकी दृष्टि हो या वह अन्यथा बली हो तो जातक के पिता की आयु लम्बी होती है।

कुण्डली सं० ८६

जन्म तारीख १४–४–१८५७ जन्म समय १–४५ बजे संध्या (स्था. स.)

अक्षांश ५१°२०' उत्तर, देशा० ०°०५' पश्चिम।

राशि

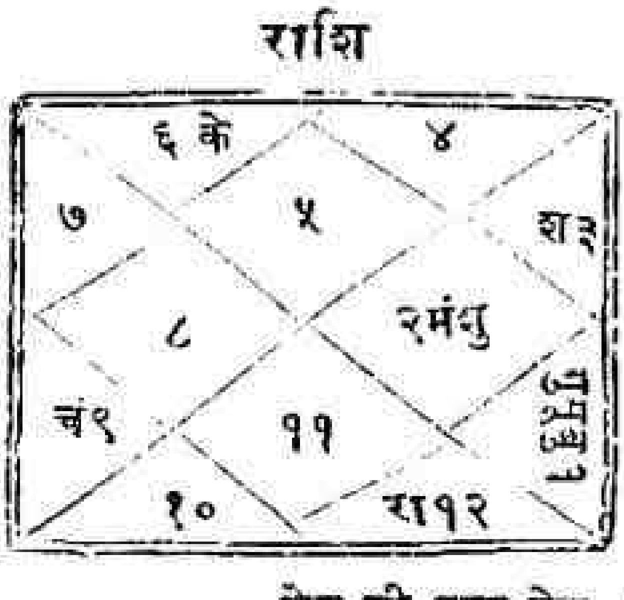

नवांश

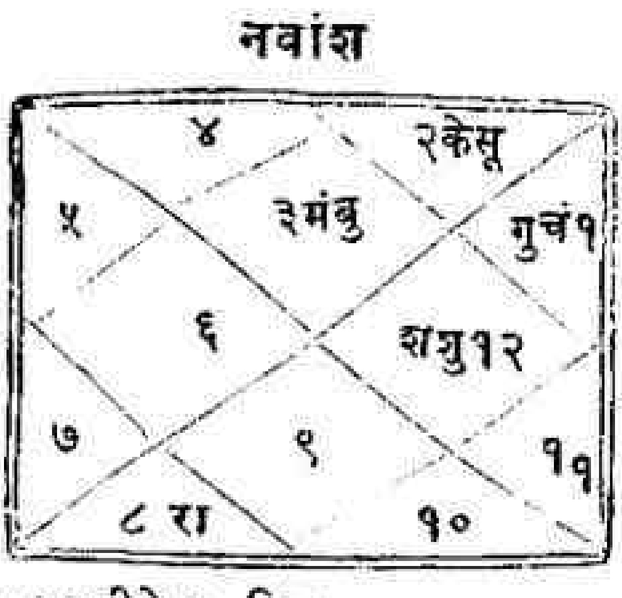

केतु की दशा शेष–६ वर्ष ८ महीने ७ दिन

नवम भाव—कुण्डली संख्या ८६ में नवम भाव में मेष राशि है जिसमें लग्नेश सूर्य उच्च का होकर स्थित है और वर्गोत्तम बृहस्पति जो पंचमेश और अष्टमेश है तथा द्वितीयेश और एकादशेश बुध भी स्थित है।

नवमेश—मंगल दशम भाव में दसमाधिपति शुक्र के साथ स्थित है।

पितृकारक—सूर्य नवम भाव में बृहस्पति और बुध के साथ उच्च का है। वह पापग्रह राहु और मंगल के घेरे में है।

चन्द्रमा से विचार—नवम भाव में सिंह राशि है जिसपर चन्द्र राशि स्वामी बृहस्पति द्वितीयेश शनि और पंचमेश तथा द्वादशेश मंगल की दृष्टि है। नवम भाव का स्वामी सूर्य है जो उच्च का है किन्तु पापग्रह राहु और मंगल के बीच घेरे में है।

निष्कर्ष—नवम भाव और नवमेश दोनों ही पीड़ित हैं। नवम भाव में कारक सूर्य का अष्टमेश बृहस्पति के साथ स्थित होना पिता की आयु के लिए लाभ प्रद नहीं है। निम्नलिखित ग्रह पिता के सम्बन्ध में नवम भाव के फल देंगे।

१. सूर्य—पितृकारक के रूप में
२. बृहस्पति—सूर्य के साथ युक्त होने के कारण
३. बुध—सूर्य के साथ युक्त होने के कारण
४. मंगल—नवमेश होने के कारण
५. शुक्र—नवमेश मंगल के साथ युक्त होने के कारण

सूर्य वर्गोत्तम बृहस्पति के साथ नवम भाव में उच्च का है और नवमाधिपति केन्द्र में है। जिससे पिता अति कुलीन होगा–जातक का जन्म राज घराने में हुआ। किन्तु नवम भाव के पापकर्तरी (राहु और मंगल से), नवमाधिपति के पाप कर्तरी (शनि और सूर्य से) योग में होने के कारण और उसी भाव में कारक के स्थित होने के कारण अल्पायु में ही जातक के पिता का देहान्त हो गया। चूंकि नवम भाव को प्रभावित करने वाले सभी ग्रह उत्तम स्थिति में हैं अतः जातक के पिता को राजयोग का फल प्राप्त हुआ किन्तु उनकी आयु कम हो गई। केतु की दशा और बृहस्पति की भुक्ति में फरवरी १९६१ में उनका देहान्त हो गया। भुक्तिनाथ बृहस्पति नवम भाव से द्वादशेश है। दशानाथ केतु बुध की राशि में है। बुध नवम भाव से तृतीयेश है जो द्वादशेश बृहस्पति के साथ युक्त है। 'कुजवत् केतु' के सिद्धान्त के अनुसार केतु मंगल के जैसा कार्य करेगा। मंगल नवम भाव से दूसरे स्थान में है और वहाँ से द्वितीयेश तथा सप्तमेश से युक्त है अर्थात् शुक्र। अतः वह एक बली मारक बन गया है।

इस कुण्डली में मुख्य बात यह है कि चन्द्रमा मूल नक्षत्र में है। यह बात

ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र की संधि पर है। इसे गडान्त कहा जाता है। यह स्थिति पिता की मृत्यु का कारण बन सकती है।

कुण्डली सं० ८७

जन्म तारीख २३-४-१८७७ जन्म समय १०–२५ बजे रात्रि (स्था० स०)
अक्षांश ५४°५६ उत्तर, देशा० १°२५' पश्चिम।

राशि

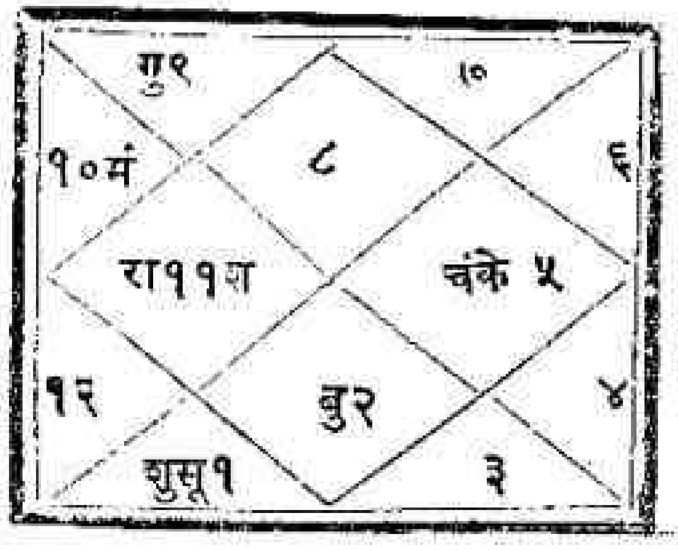

नवांश

शुक्र की दशा शेष–३ वर्ष ५ महीने १२ दिन

नवम भाव—कुण्डली संख्या ८७ में नवम भाव में कर्क राशि है। उसपर लग्नेश और षष्ठेश उच्च के मंगल की दृष्टि है।

नवमाधिपति—चन्द्रमा दसम भाव में स्थित है और उसपर पापग्रह शनि, लग्न और छठे भाव के स्वामी मंगल और दूसरे भाव के स्वामी बृहस्पति की दृष्टि है और केतु के साथ इसका निकट सम्बन्ध है। नवमाधिपति बुरी तरह पीड़ित है।

पितृकारक—यद्यपि सूर्य उच्च का है, वह छठे भाव दुःस्थान में है और सप्तमेश तथा द्वादशेश शुक्र से युक्त है। और उच्च के मंगल तथा पीड़ित शनि से दृष्ट है।

चन्द्रमा से विचार—नवम भाव में उच्च का सूर्य है किन्तु उसपर मंगल, शनि बृहस्पति की दृष्टि है।

निष्कर्ष—कारक सूर्य के दुःस्थान में होने और मारक ग्रह शुक्र के साथ युक्त होने तथा नवमेश चन्द्रमा के विशेषकर छायाग्रहों से पीड़ित होने के कारण सितम्बर १८७७ में ही जातक के पिता की मृत्यु हो गई। मृत्यु शुक्र की दशा और बुध की भुक्ति में हुई। बुध सूर्य से दूसरे भाव में स्थित है। दशानाथ शुक्र पितृकारक से द्वितीयेश और सप्तमेश है।

कुण्डली सं० ८८

जन्म तारीख ६–१०–१९५०   जन्म समय २–१८ बजे संध्या (भा.स्टै०.स०)
अक्षांश २७° ४१′ उत्तर, देशा० ७५° ′३३ पूर्व ।

राशि

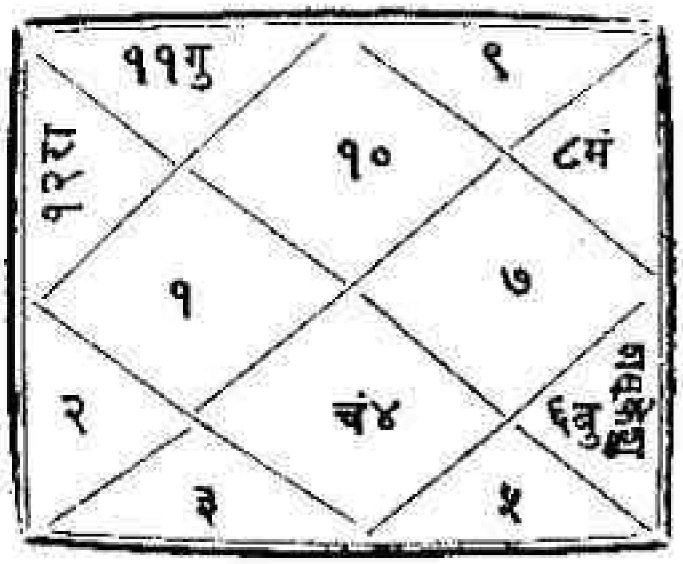

नवांश

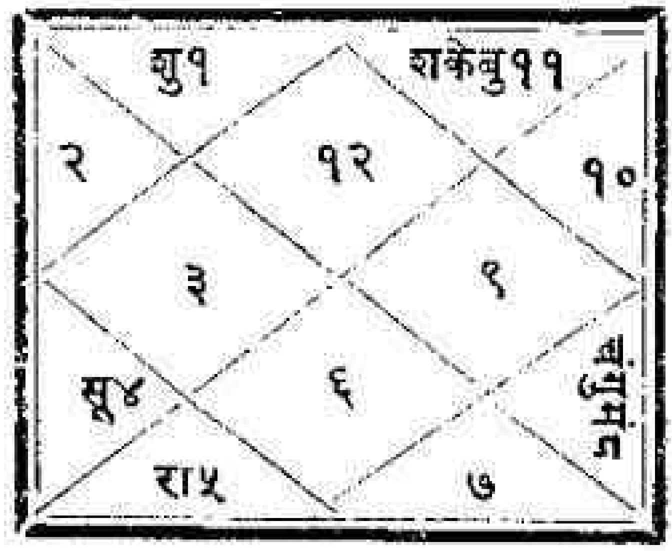

शनि की दशा शेष–३ वर्ष ७ महीने २७ दिन

नवम भाव—नवम भाव में पाँच ग्रह स्थित हैं। यहाँ पर लग्नेश शनि, नवामधिपति बुध, केतु, पंचमाधिपति शुक्र और अष्टमाधिपति सूर्य स्थित है।

नवमाधिपति—नवमाधिपति बुध है जो नवम भाव में उच्च का होकर स्थित है और शनि, केतु, शुक्र और सूर्य से युक्त है।

पितृकारक—सूर्य नवम भाव में नवमाधिपति बुध, केतु, शुक्र और शनि के साथ युक्त है।

चन्द्रमा से विचार—नवम भाव में चन्द्रमा स्थित है और इसपर अनेक ग्रहों—द्वितीयेश सूर्य, तृतीयेश और द्वादशेश बुध, सप्तमेश और षष्ठेश शनि और चतुर्थेश-तथा एकादशेश शुक्र की दृष्टि है। नवमेश बृहस्पति नवम भाव से १२ वें भाव में है और मंगल से दृष्ट है।

निष्कर्ष—नवमेश बुध उच्च का है किन्तु वह ग्रस्त है। इसके अतिरिक्त वह अष्टमेश के नक्षत्र में स्थित है। कारक का नवम भाव में स्थित होना बिल्कुल ही अच्छी स्थिति नहीं है। राहु और केतु का प्रभाव लग्न और चन्द्रमा दोनों से नवम भाव पर है। जातक जब दो वर्ष को थी तभी शनि की दशा और बृहस्पति की भुक्ति में जातक के पिता की मृत्यु हो गई। दशानाथ शनि नवम भाव से द्वितीयेश क्रमशः शुक्र और सूर्य के साथ नवम में स्थित है। वह चन्द्रमा से नवम भाव से सातवें भाव में भी स्थित है। भुक्तिनाथ बृहस्पति नवम भाव से मारक है।

कुण्डली सं० ८९

जन्म तारीख २-५-१९४७ जन्म समय ७-२० बजे संध्या (भा. स्टै.स.)
अक्षांश २३° २१' उत्तर, देशा० ८२°२१' पूर्व ।

राशि

नवांश

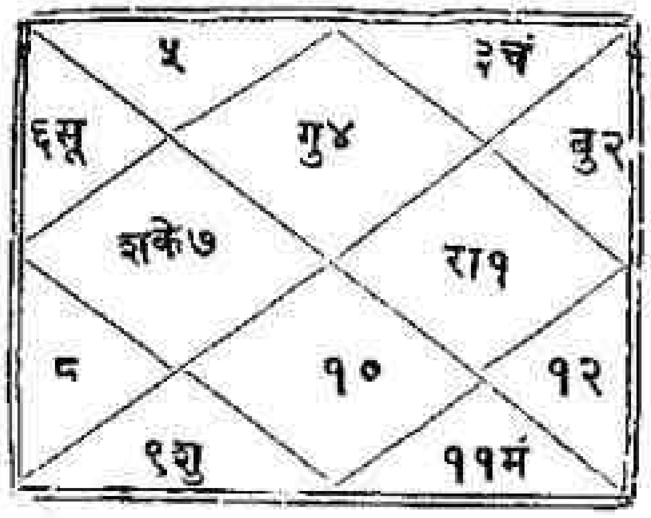

चन्द्रमा की दशा शेष—३ वर्ष ६ महीने २३ दिन

नवम भाव—कुण्डली सं० ८९ में लग्न में वृश्चिक राशि है। अत: नवम भाव कर्क है। नवम भाव में तृतीयेश और चतुर्थेश शनि स्थित है और वह द्वितीयेश तथा पंचमेश बृहस्पति से दृष्ट है।

नवमाधिपति—नवमाधिपति चन्द्रमा ११ वें भाव में है। और पापग्रह शनि, लग्नाधिपति मंगल और ७ वें तथा १२ वें के स्वामी शुक्र से दृष्ट है।

पितृकारक—सूर्य उच्च का है किन्तु अष्टमेश तथा एकादशेश बुध के साथ छठे भाव में दु:स्थान में स्थित है। वह पापकर्तरी योग में है, उसकी एक ओर मंगल और दूसरी ओर राहु विद्यमान है। इसके अतिरिक्त उसपर पापग्रह शनि की दृष्टि है।

चन्द्रमा से विचार—नवम भाव में राहु स्थित है जबकि नवमाधिपति शुक्र यद्यपि उच्च का है, वह तृतीयेश और अष्टमेश मंगल से युक्त है। कारक सूर्य चन्द्रमा से अष्टम भाव में है जो एक दु:स्थान है।

निष्कर्ष—सूर्य पर अत्यन्त बुरे प्रभाव के कारण जातक के पिता की बाल्यकाल में मृत्यु हो गई। नवम भाव, नवमाधिपति और पितृकारक बुरी तरह पीड़ित है। मंगल की दशा और बुध की भुक्ति में पिता की मृत्यु हो गई। नवम भाव पर प्रभाव डालने वाले ग्रह वहां का अधिपति चन्द्रमा और वहाँ पर स्थित शनि, नवमेश चन्द्रमा पर दृष्टि डालने वाले मंगल और शुक्र, चन्द्रमा से अष्टम नवम स्थान के स्वामी हैं, कारक सूर्य और बुध जो सूर्य के साथ है। मंगल की दशा और बुध की भुक्ति में पिता का देहान्त हुआ। मंगल कारक ग्रह सूर्य से १२ वें स्थित है जो स्वयं ही

दु:स्थान में है। दशानाथ मंगल चन्द्रमा से नवम भाव के सम्बन्ध में मारक है। भुक्तिनाथ बुध नवम भाव से द्वितीयेश है और चन्द्रमा से ८ वें भाव में स्थित है जो पिता के लिए मृत्यु का कारण बन जाता है। नवांश में भी नवमेश चन्द्रमा १२ वें भाव में स्थित है जिससे पिता की मृत्यु का संकेत मिलता है।

कुण्डली सं० ९०

जन्म तारीख २९–१०–१९५१, जन्म समय १२–४८ बजे दोपहर (भा. स्टैं. स.)
अक्षांश २२°–२३' उत्तर, देशा० ४५°–२३' पूर्व।

राशि

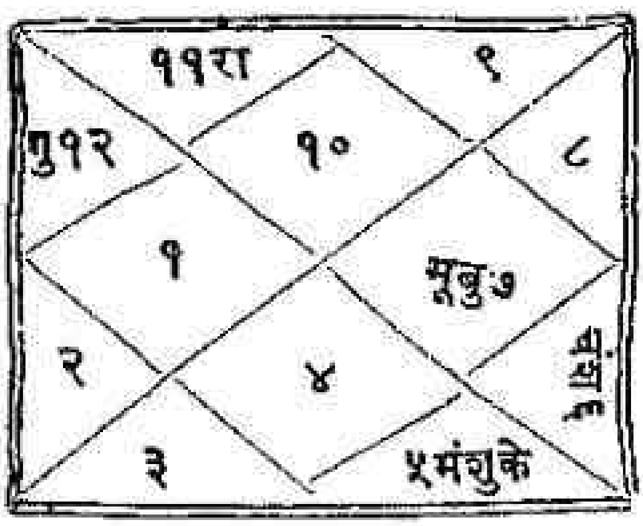

नवांश

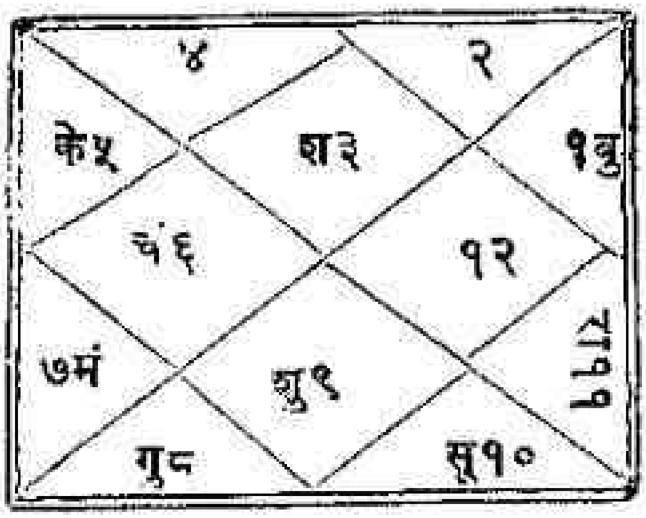

मंगल की दशा शेष–५ वर्ष ३ महीने

नवम भाव—कुण्डली सं० ९० में नवम भाव में सप्तमेश चन्द्रमा और लग्नाधिपति शनि स्थित है। इसपर तृतीयेश और द्वादशेश बृहस्पति की बली दृष्टि है।

नवमाधिपति—बुध नवमाधिपति है। वह अष्टमाधिपति नीच के सूर्य के साथ १० वें भाव में स्थित है। सूर्य का नीच भंग नहीं हो रहा है।

पितृकारक—सूर्य केन्द्र में स्थित है किन्तु नीच का होने के कारण काफी निर्बल है। इसके अतिरिक्त वह नवमेश बुध को पीड़ित कर रहा है।

चन्द्रमा से विचार—नवम भाव में वृषभ राशि है। इस राशि में न तो कोई ग्रह स्थित है और न ही किसी की दृष्टि जाती है। नवमाधिपति शुक्र १२ वें भाव में शत्रु राशि में केतु और अष्टमेश मंगल के साथ स्थित है।

निष्कर्ष—यद्यपि लग्न से नवम भाव बुरे प्रभाव से मुक्त है, पितृकारक नीच का होकर राहु के नक्षत्र में है। चन्द्रमा से नवमाधिपति बुरी तरह पीड़ित है। जातक के पिता का राहु की दशा और शनि की भुक्ति में १९६२ में देहान्त हुआ। भुक्तिनाथ शनि चन्द्रमा से नवमाधिपति शुक्र से दूसरे भाव में स्थित है और वह शुक्र से सप्तमाधिपति भी है। दशानाथ राहु शुक्र से सप्तम भाव में

स्थित है और वह शनि के नक्षत्र में है। अतः वह बली मारक की शक्ति प्राप्त कर रहा है।

कुण्डली संख्या ९१

जन्म तारीख १–८–१९४९ जन्म समय १२–४२ बजे दोपहर (भा.स्टै.स.)
अक्षांश २२° १८′ उत्तर, देशा० ७०°५६′ पूर्व।

राशि

नवांश

शनि की दशा शेष–८ वर्ष ३ महीने ३ दिन

नवम भाव—कुण्डली सं० ९१ में द्वितीयेश तथा सप्तमेश मंगल नवम भाव में स्थित है।

नवमाधिपति—नवमाधिपति बुध पितृकारक सूर्य के साथ १० वें केन्द्र में स्थित है। वह पापग्रह मंगल और शनि के घेरे में है और तृतीयेश तथा षष्ठेश बृहस्पति से दृष्ट है।

पितृकारक—सूर्य नवमाधिपति बुध के साथ कर्क राशि में दसम भाव में स्थित है। वह भी एक ओर मंगल दूसरी ओर शनि होने के कारण पाप कर्तरी योग में है और बृहस्पति से दृष्ट है।

चन्द्रमा से विचार—चूंकि चन्द्रमा लग्न में ही स्थित है अतः चन्द्रमा से विचार करने पर भी वही स्थिति होगी।

निष्कर्ष—नवमाधिपति केन्द्र में है और कारक सूर्य भी केन्द्र में है परन्तु दोनों ही बुरी तरह पीड़ित हैं। किन्तु नवमाधिपति बुध अपने ही नक्षत्र में होने के कारण बली है। जातक के पिता का बृहस्पति की दशा और राहु की भुक्ति में जनवरी १९७३ में देहान्त हुआ। चूंकि नवमाधिपति सूर्य के साथ पीड़ित है अतः पिता अधिक समय तक जीवित नहीं रह सके। किन्तु नवमाधिपति के केन्द्र में शुभ नक्षत्र में स्थित होने के कारण जातक के पिता का देहान्त काफी पहले नहीं हुआ।

नवमाधिपति को पीड़ित करनेवाला एक ग्रह शनि है क्योंकि वह पाप कर्तरी योग बना रहा है। इसका अर्थ यह है कि उसकी दशा में पिता का देहान्त होगा। जिनका शनि की दशा आरंभ होने से तुरन्त पहले देहान्त हुआ। दशानाथ बृहस्पति अपने स्वामित्व और क्रमशः नवम भाव और पितृकारक तथा नवमाधिपति से अपनी स्थिति के कारण मारक है। भुक्तिनाथ राहु बृहस्पति की राशि में स्थित है अतः वह अपनी भुक्ति में मारक बन गया।

पितृ कारक पर युक्ति, दृष्टि, स्थिति या अन्यथा बुरे प्रभाव जातक के पिता से जातक को अलग करने के लिए अति महत्त्वपूर्ण हैं। कुण्डली सं० ८६ में कारक सूर्य उच्च का होकर पाप कर्तरी योग द्वारा पीड़ित है और छायाग्रह के नक्षत्र में है अतः जब जातक ४½ वर्ष का था तो पिता का देहान्त हो गया। कुण्डली सं० ८७ में पितृ कारक पुनः उच्च का है किन्तु लग्न से दुःस्थान में तथा चन्द्रमा से नवम भाव में है और पापग्रहों की दृष्टि से पीड़ित है तथा केतु के नक्षत्र में स्थित है। अतः जातक के जन्म से छः महीने के भीतर उसके पिता की मृत्यु हो गई। कुण्डली संख्या ८८ में सूर्य (पितृकारक) पीड़ित है और छाया ग्रहों से प्रभावित होकर नवम भाव में स्थित है। दो वर्ष की आयु में जातक के पिता की मृत्यु हो गई। कुण्डली सं० ८९ में पुनः सूर्य उच्च का है परन्तु जन्म लग्न तथा चन्द्र लग्न दोनों से दुःस्थान में है और पाप कर्तरी में है तथा उस पर पापग्रह शनि की दृष्टि है। इसके परिणाम स्वरूप लगभग सात वर्ष की आयु में जातक के पिता का देहान्त हो गया। कुण्डली संख्या ९० में पितृकारक छाया ग्रह के नक्षत्र में नीच का होकर पड़ा है और नीच भंग नहीं हो रहा है। जिससे काफी कम उम्र में जातक अपने पिता के सुख से वंचित हो गई। कुण्डली संख्या ९१ में कारक सूर्य पापकर्तरी योग से पीड़ित है परन्तु वह नवमाधिपति के साथ केन्द्र में स्थित है। कुडली सं० ९० की जातक जब ११ वर्ष की थी तब उसके पिता का देहान्त हुआ जबकि कुण्डली संख्या ९१ के जातक के पिता का देहान्त तब हुआ जब जातक की आयु २४ वर्ष की थी। दोनों ही मामलों में कारक सूर्य और नवमाधिपति बुध १० वें भाव में हैं। कुण्डली संख्या ९० में सूर्य नीच का है और उसका नीच भंग नहीं हो रहा है और वह छाया ग्रह के नक्षत्र में राहु के साथ है और मारक भाव में नवमाधिपति बुध के साथ है जो विशाखा नक्षत्र में है जिसका स्वामी तृतीयेश और द्वादशेश बृहस्पति है। कुण्डली संख्या ९१ में सूर्य नवमाधिपति बुध के नक्षत्र में मित्र राशि में है जो अपने ही नक्षत्र में १० वें भाव में स्थित है। कुण्डली सं० ९० में सूर्य चन्द्रमा से दूसरे भाव में स्थित है जब कि कुण्डली संख्या ९१ में वह चन्द्रमा से १० वें भाव में स्थित है। हम देखते हैं कि कारक सूर्य कुण्डली

संख्या ९१ में पापकर्तरी योग से पीड़ित है फिर भी वह कुण्डली संख्या ९० से अपनी स्थिति की अपेक्षा अधिक बली है ।

कुण्डली सं० ९२

जन्म तारीख ३१–१–१९३८　　जन्म समय ०–२३ बजे प्रातः (भा० स्टैं०टा.) अक्षांश ८°४४′ उत्तर, देशा० ७७°४४′ पूर्व ।

राशि

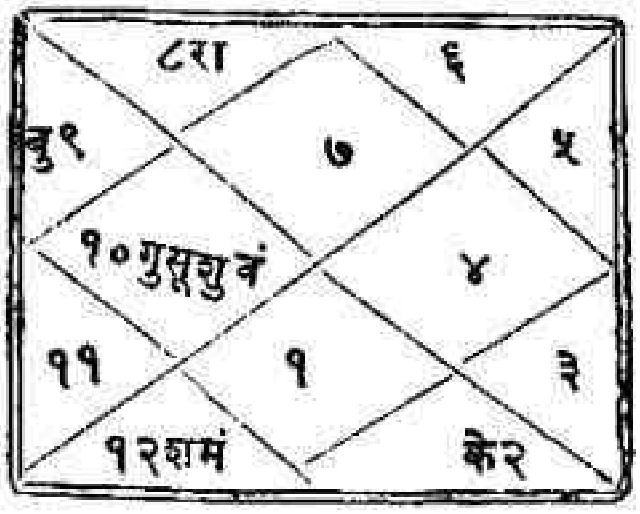

नवांश

सूर्य की दशा शेष–० वर्ष १ महीने २ दिन

नवम भाव—कुण्डली संख्या ९२ में नवम भाव पर नवमाधिपति बुध और द्वितीयेश तथा सप्तमेश मंगल की दृष्टि है ।

नवमाधिपति—नवमाधिपति बुध तीसरे भाव में स्थित है और चतुर्थेश तथा पंचमेश शनि से दृष्ट है ।

पितृकारक—सूर्य केन्द्र स्थान में चौथे भाव में स्थित है और दशमेश चन्द्रमा, लग्नेश शुक्र और तृतीयेश तथा षष्ठेश बृहस्पति से युक्त है । उस पर किसी अन्य ग्रह की दृष्टि नहीं है ।

चन्द्रमा से विचार—नवम भाव पर दो पाप ग्रह मंगल और शनि की दृष्टि और बृहस्पति (जिसका नीच भंग हो रहा है) की भी दृष्टि है और बुध १२ वें भाव में है जबकि कारक सूर्य केन्द्र में है ।

निष्कर्ष—लग्न से नवम भाव, नवमाधिपति और कारक सूर्य हल्के बुरे प्रभाव के साथ उत्तम स्थिति में हैं । नवमाधिपति लग्नेश के नक्षत्र में है और नवम भाव पर उसकी दृष्टि से पिता की लम्बी आयु का संकेत मिलता है । जब जातक की आयु ४१ वर्ष की थी तो बृहस्पति की दशा में बुध की भुक्ति में जातक के पिता का देहान्त हुआ । बुध नवम भाव से सप्तम में और सूर्य से १२ वें भाव में स्थित है । दशानाथ बृहस्पति नवम भाव से सप्तम में है और वहाँ से अष्टम भाव में है । अतः उसे मारक बल प्राप्त है ।

कुण्डली सं० ६३
जन्म तारीख ८-८-१९१२ जन्म समय ७-३५ बजे संध्या (भा. स्टै. टा.)
अक्षांश ३३° उत्तर, देशा० ७७° ३५' पूर्व।

राशि

नवांश

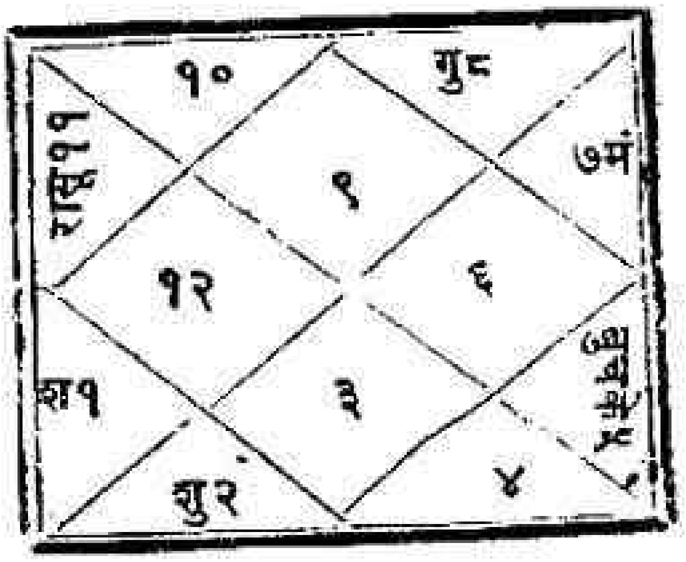

मंगल की दशा शेष-६ वर्ष १ महीने ६ दिन

नवम भाव—नवम भाव का स्वामी शुक्र तृतीयेश और दसमेश मंगल तथा पंचमेश और अष्टमेश बुध के साथ सातवें भाव में स्थित है।

नवमाधिपति—नवमाधिपति के रूप में शुक्र शत्रु राशि सिंह में मंगल और बुध के साथ स्थित है और दो पापग्रह सूर्य और केतु के घेरे में है।

पितृकारक—सूर्य मित्र राशि में छठे भाव में स्थित है और द्वितीयेश तथा एकादशेश बृहस्पति जो वर्गोत्तम में है, से दृष्ट है। उस पर लग्नेश शनि की भी दृष्टि है।

चन्द्रमा से विचार—नवम भाव में मकर राशि है। उस पर कारक सूर्य की दृष्टि है। चन्द्र से नवमाधिपति शनि केन्द्र में उच्च के चन्द्रमा के साथ है और अष्टमेश तथा एकादशेश वर्गोत्तम बृहस्पति से दृष्ट है।

निष्कर्ष—नवमाधिपति एक केन्द्र में स्थित है। चन्द्रमा से नवम भाव बली है जब कि लग्न से नवम भाव पर कोई बुरा प्रभाव नहीं है। मात्र नवमेश मंगल से पीड़ित है और कारक सूर्य दुःस्थान में है और शनि से पीड़ित है। किन्तु वास्तव में वह शनि से पीड़ित नहीं है क्योंकि वह लग्नाधिपति है। जब जातक की उम्र ३२ वर्ष थी तो बृहस्पति की दशा और केतु की भुक्ति में उसके पिता का देहान्त हुआ। दशानाथ बृहस्पति जो नवम भाव से तृतीयेश भी है, नवम भाव से दूसरे भाव (मारक स्थान) में स्थित है। भुक्तिनाथ केतु नवम भाव से १२ वें भाव में है और नवमाधिपति शुक्र से दूसरे भाव में है।

कुण्डली सं० ९४

जन्म तारीख २४–१०–१९४९ जन्म समय ३–३३ बजे संध्या (भा०स्टै०स०)
अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ७७° ३५′ पूर्व ।

राशि

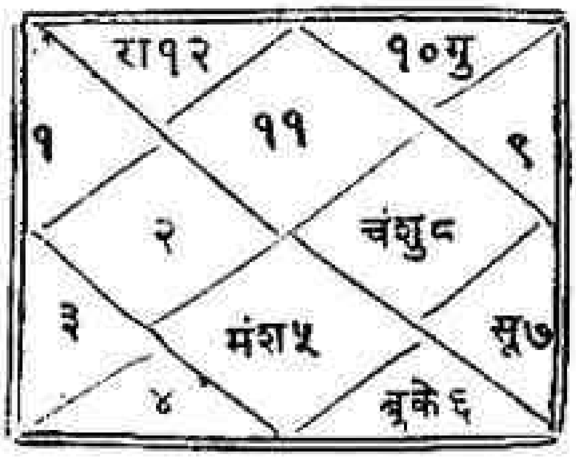

नवांश

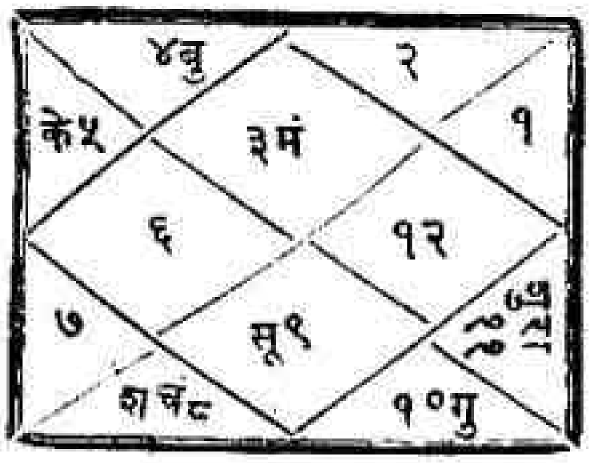

शनि की दशा शेष–२ वर्ष ३ महीने १८ दिन

नवम भाव—कुण्डली संख्या ९४ में नवम भाव में तुला राशि है और वहाँ पर पितृकारक सूर्य नीच का होकर स्थित है । सूर्य नीचभाग्य में है (नीच भंग हो रहा है क्योंकि वहाँ का स्वामी शुक्र लग्न से केन्द्र में स्थित है) । नवम भाव के एक ओर पापग्रह चन्द्रमा और शुक्र तथा दूसरी ओर बुध और केतु के होने के कारण घेरे में है । इसपर लग्नाधिपति शनि की दृष्टि भी है ।

नवमाधिपति—नवमाधिपति के रूप में शुक्र बली केन्द्र भाव के १० वें भाव में स्थित है और नीच के चन्द्रमा से युक्त है । इसका भी नीच भंग हो रहा है क्यों कि वहाँ का स्वामी मंगल लग्न से केन्द्र में स्थित है । उसपर राशि स्वामी मंगल की दृष्टि है ।

पितृकारक—सूर्य स्वयं नवम भाव में स्थित है और उसका नीच भंग हो रहा है । उसपर लग्नेश शनि की दृष्टि है और वह बुध तथा चन्द्रमा और शुक्र के कारण पापकर्तरी योग में है ।

चन्द्रमा से विचार—नवम भाव में कर्क राशि है और उसपर किसी ग्रह की दृष्टि नहीं है और नवम भाव में कोई ग्रह स्थित नहीं है । नवमेश चन्द्रमा नीच का होकर पंचम भाव में स्थित है और उसका नीच भंग हो रहा है और वह पंचमेश मंगल से दृष्ट है ।

निष्कर्ष—नवमाधिपति प्रबल है । पापग्रह मंगल की दृष्टि हानिकारक नहीं है क्योंकि वह उस राशि का स्वामी है जहाँ नवमाधिपति स्थित है । यह नवमाधिपति को बली बना रहा है । कारक सूर्य का नवम भाव में स्थित होना अच्छा नहीं है

परन्तु शुभ कर्तरी योग से इसकी रक्षा हो रही है। नवम भाव काफी प्रबल है सिवाय इसके कि वहाँ पर सूर्य स्थित है। अतः जातक के पिता की आयु लम्बी होनी चाहिए।

कुण्डली संख्या ९३ के साथ इसकी तुलना करें। कुण्डली संख्या ९३ के जातक के पिता की कोई वृत्ति नहीं थी और उनकी कोई आय नहीं थी। वे अपने पिता (जातक के दादा) के ऊपर निर्भर थे। उनकी मृत्यु के बाद उनके पुत्र (कुण्डली सं० ९३ के जातक) द्वारा उनका ध्यान रखा गया। कुण्डली संख्या ९३ में नवमाधिपति शुक्र मारक स्थान में स्थित है। उसका स्वामी केतु निकृष्ट दुःस्थान अष्टम भाव में स्थित है। अष्टमेश बुध वहां से १२ वें भाव में है। शुक्र सिंह राशि में है और वहाँ का स्वामी सूर्य पुनः उस स्थान से १२ वें भाव में है।

कुण्डली संख्या ९४ में नवमाधिपति शुक्र ज्येष्ठा नक्षत्र में है जिसका स्वामी बुध है जो स्वयं अष्टम भाव में स्थित है। किन्तु वह अष्टम भाव में उच्च का है। शुक्र वृश्चिक राशि में है जिसका स्वामी मंगल न केवल केन्द्र में है बल्कि वह शुक्र पर बली दृष्टि डाल रहा है। कुण्डली सं० ९४ के जातक के पिता अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान के व्यक्ति हैं। और वे अपने क्षेत्र के अग्रगण्य तथा जीवन में पूरी तरह से स्थापित हैं। इसके कारक पर विचार करने में ग्रह की स्थिति अति महत्त्वपूर्ण है। कुण्डली संख्या ९३ का जातक कुण्डली संख्या ९४ के जातक का पिता है।

प्रसंगवश दोनों कुण्डलियों में ज्योतिष सम्बन्धी विरासत के तथ्यों पर ध्यान दें। दोनों में लग्न में कुम्भ राशि है जिसपर केन्द्र से शनि की दृष्टि है, राहु दूसरे भाव में, मंगल ७वें भाव में और केतु अष्टम भाव में है। एक में पितृकारक सूर्य छठे भाव में है और दूसरे में नवम भाव में। दोनों में ही दसम भाव वर्गोत्तम ग्रह है, कुण्डली संख्या ९३ में बृहस्पति और कुण्डली संख्या ९४ में चन्द्रमा, कुण्डली संख्या ९४ में षष्ठेश चन्द्रमा का दसम भाव में नीच भंग हो रहा है। और कुण्डली संख्या ९३ में षष्ठेश उच्च का है और १० वें भाव पर उसकी दृष्टि है। दोनों में ही लग्नाधिपति शनि की सूर्य पर दृष्टि है। कुण्डली संख्या ९४ में नवमाधिपति शुक्र १० वें भाव केन्द्र में स्थित है और उसपर दसमाधिपति मंगल की सप्तम भाव से दृष्टि है। कुण्डली संख्या ९३ में नवमाधिपति शुक्र १० वें भाव केन्द्र में स्थित है और दसमाधिपति मंगल से युक्त है। कुण्डली सं० ९३ में वर्गोत्तम में होने के कारण बुध बली है और कुण्डली संख्या ९४ में वह अपनी ही राशि में उच्च का है। कुण्डली संख्या ९३ में द्वितीयेश और एकादशेश बृहस्पति वर्गोत्तम में है जब कि कुण्डली सं० ९४ में भी बृहस्पति वर्गोत्तम में है किन्तु नीच का है। और वहाँ के स्वामी शनि के लग्न से केन्द्र में स्थित होने के कारण नीच भंग हो रहा है।

कुण्डली सं० ६५

जन्म तारीख १२–५–१९२५ जन्म समय ७–३० बजे प्रात: (भा.स्टैं.टा.)
अक्षांश १३°०४′ उत्तर, देशान्तर ८०°१७ पूर्व ।

राशि

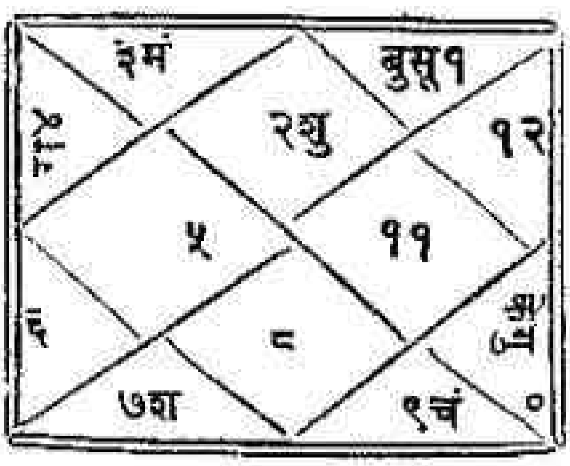

नवांश

शुक्र की दशा शेष–१३ वर्ष ९ महीने ९ दिन

नवम भाव—मकर राशि में अष्टमेश और एकादशेश बृहस्पति स्थित है। वह नीच का है। किन्तु उसका नीच भंग हो रहा है क्योंकि मंगल जो मकर राशि में उच्च का होता है चन्द्रमा से केन्द्र में स्थित है। नवम भाव में केतु भी है सप्तमेश तथा द्वादशेश मंगल से दृष्ट है ।

नवमाधिपति—शनि छठे भाव में है किन्तु उच्च का है और कारक सूर्य से दृष्ट है जो उच्च का है और पंचमेश बुध से दृष्ट है।

पितृकारक—सूर्य उच्च का है किन्तु लग्न से १२ वें भाव में है और द्वितीयेश तथा पंचमेश बुध से युक्त है। वह उच्च के नवमाधिपति शनि से दृष्ट भी है।

चन्द्रमा से विचार—नवम भाव में सिंह राशि है नवमेश सूर्य जो पितृकारक भी है, सप्तमेश और दसमेश बुध के साथ पंचम भाव में उच्च का है और द्वितीयेश तथा तृतीयेश शनि से दृष्ट है।

निष्कर्ष—मंगल के कुछ बुरे प्रभाव को छोड़कर नवम भाव काफी बली है। उच्च का होने के कारण नवमाधिपति भी काफी बली है और राहु के नक्षत्र में है, दूसरी ओर छाया ग्रह का प्रभाव तीसरे और नवम भाव पर भी है। दूसरी ओर राहु पर नवमेश उच्च के शनि की दृष्टि है। यद्यपि सूर्य १२ वें भाव में है, अपने नक्षत्र में होने के कारण वह बली है। जातक के पिता एक बहुत बड़े व्यापारी हैं और अभी भी ७५ वर्ष की आयु तक जीवित हैं। कारक और नवमाधिपति दोनों उच्च के हैं और लाभप्रद नक्षत्र में हैं। उनमें परस्पर दृष्टि परिवर्तन योग है जिससे उन्हें बल मिल रहा है। राहु की दशा और शनि की भुक्ति में जातक से पिता की मृत्यु

हो सकती थी। शनि पितृ स्थान से द्वितीयेश है और पितृ कारक से सप्तम भाव में है। दशानाथ राहु नवम भाव से सप्तम में है। राहु को शनि का फल देना चाहिये जो नवम भाव से मारक भी है।

कुण्डली सं० ९६

जन्म तारीख ४–८–१९५८ जन्म समय ६–४० बजे संध्या (भा. स्टैं. टा.)
अक्षांश ९°५५' उत्तर, ७८°७' पूर्व।

राशि नवांश

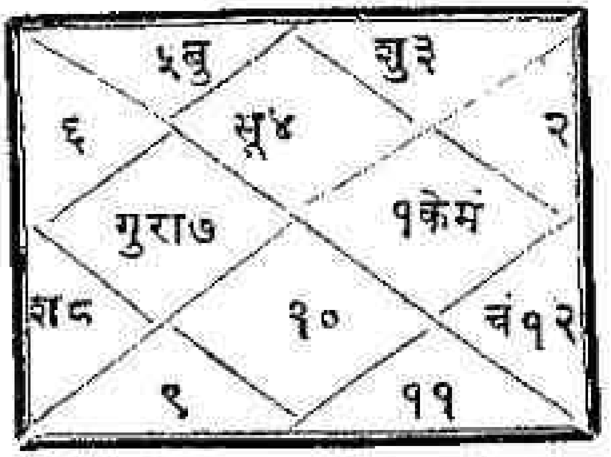

शनि की दशा शेष–१०वर्ष ७ महीने २५ दिन

नवम भाव—कुण्डली संख्या ९६ में लग्नाधिपति चन्द्रमा नवम भाव में स्थित है और उसपर किसी ग्रह की दृष्टि नहीं है।

नवमाधिपति—बृहस्पति नवमाधिपति है और वह वर्गोत्तम में राहु के साथ चौथे भाव में स्थित है। उस पर पंचमेश तथा दसमाधिपति मंगल की दृष्टि है।

पितृकारक—सूर्य लग्न में है और उस पर दसमेश मंगल की दृष्टि है।

चन्द्रमा से विचार—नवम भाव बृश्चिक राशि में एकादशेश और द्वादशेश शनि स्थित है। उस पर द्वितीयेश तथा नवमेश मंगल की दृष्टि है किन्तु उसकी अष्टम दृष्टि है।

निष्कर्ष—नवम भाव और कारक बुरे प्रभाव से मुक्त हैं किन्तु नवमाधिपति राहु की युक्ति और मंगल की दृष्टि के कारण बुरे प्रभाव में है। इसमें सदेह नहीं कि बृहस्पति वर्गोत्तम में है किन्तु वह मंगल के नक्षत्र में है। मंगल नवम भाव से स्वामित्व और अपनी स्थिति के कारण प्रबल मारक है। उस पर केतु का भी प्रभाव है। बृहस्पति राहु से युक्त है किन्तु राहु भी चित्रा नक्षत्र में है। बुध की दशा और राहु की भुक्ति में अप्रैल १९७९ में जातक के पिता की मृत्यु हुई। दशानाथ बुध नवम भाव से सप्तमेश है और पितृकारक से दूसरे भाव में स्थित है। भुक्तिनाथ राहु नवम भाव से आठवें में है।

कुण्डली सं० ९७

जन्म तारीख १२-५-१९५४ समय ८-१२ बजे प्रातः (भा. स्टैं टा.)

अक्षांश १३°४' उत्तर, देशा० ८०° १७' पूर्व ।

राशि

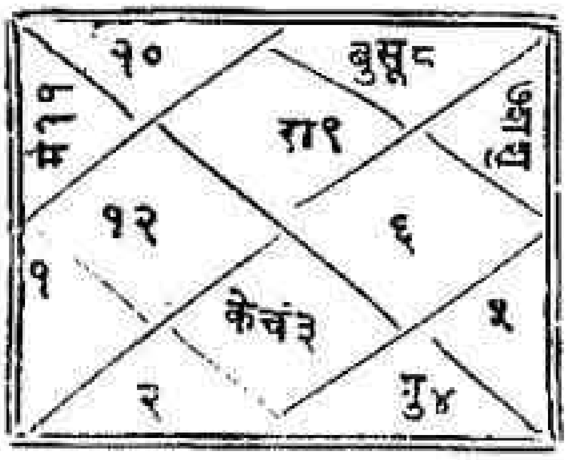

नवांश

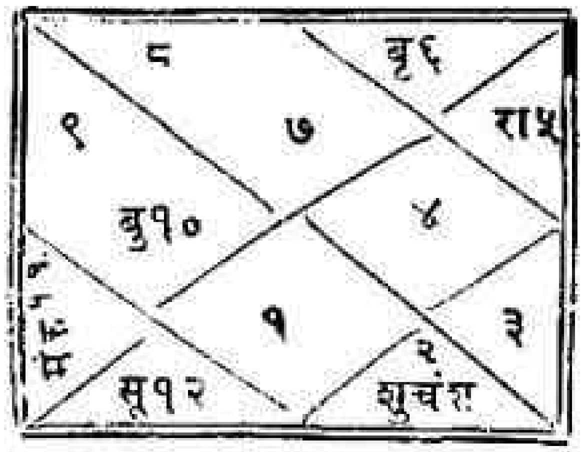

बृहस्पति की दशा शेष—८ वर्ष ५ महीने २३ दिन

नवम भाव—कुण्डली सं० ९७ में सिंह राशि पर पंचमेश और द्वादशेश मंगल की दृष्टि है।

नवमाधिपति—सूर्य नवमेश और पितृकारक दोनों है और सप्तमेश तथा दसमाधिपति बुध के साथ १२ वें भाव में स्थित है। उसपर लग्नाधिपति उच्च के बृहस्पति की दृष्टि है। वह राहु और शनि के कारण पापकर्तरी योग में है।

चन्द्रमा से विचार—नवम भाव कुम्भ में षष्ठेश और एकादशेश मंगल स्थित है जबकि नवमाधिपति पंचम भाव में पंचमेश के साथ उच्च का है।

निष्कर्ष—कारक और नवमाधिपति सूर्य दुःस्थान में है जबकि नवम भाव पर मंगल की दृष्टि है। नवमाधिपति सूर्य बुध के नक्षत्र में है जो नवम भाव से द्वितीयेश होने के कारण मारक है। चन्द्रमा से नवमेश शनि भी चन्द्रमा से नवम भाव से द्वितीयेश बृहस्पति के नक्षत्र में है। इससे नवम भाव कुछ सीमा तक कमजोर हो जाता है। शनि की दशा और राहु की भुक्ति में जातक के पिता का देहान्त हुआ। नवम भाव से शनि सप्तमाधिपति है और वह सूर्य से १२ वें भाव में स्थित है। भुक्तिनाथ राहु सूर्य से दूसरे भाव में है। दशानाथ और भुक्तिनाथ नवमाधिपति को पीड़ित करके पाप कर्तरी योग बना रहे है।

कुण्डली संख्या ९६ और ९७ में नवम भावों पर प्रबल बुरे प्रभाव का अभाव है। कुण्डली संख्या ९६ में लग्नाधिपति नवम भाव में स्थित है और नवमाधिपति वर्गोत्तम में है। कुण्डली संख्या ९७ में नवमाधिपति पर लग्नाधिपति बृहस्पति की दृष्टि है। फिर भी दोनों कुण्डलियों में नवमाधिपति नवम भाव से मारक ग्रहों के नक्षत्र में है जिससे नवम भाव का महत्त्व कम हो जाता है। यदि कुण्डली सं० ९६

में बृहस्पति विशाखा नक्षत्र में होता तो पिता की आयु और लम्बी होती। कुण्डली संख्या ९७ में यदि सूर्य विशाखा नक्षत्र में होता (जिसका स्वामी बृहस्पति अष्टम भाव में उच्च का होगा) अथवा अनुराधा नक्षत्र से होता (जिसका स्वामी एकादशेश के साथ एकादश भाव में उच्च का होगा) तो शनि की दशा में पिता को मरने से बचा जाता।

भाग्य और लम्बी यात्रा

आधुनिक युग में लम्बी यात्रा का अर्थ विदेश यात्रा है। नवम भाव और नवमाधिपति यह पता लगाने के लिए महत्वपूर्ण होते हैं कि क्या किसी विशेष कुण्डली में इस प्रकार की यात्रा की संभावना है। विदेश यात्रा के बारे में संकेत देने के लिये अचर राशि की अपेक्षा चर और द्विस्वभाव राशि अधिक सक्षम है। जलीय राशि को भी हिसाब में लेना चाहिये क्योंकि प्राचीन काल में विदेश जाने का अर्थ जहाज से यात्रा माना जाता था। लग्नाधिपति और उसकी स्थिति पर भी विचार करना चाहिये क्योंकि विदेश यात्रा केवल एक भ्रमण हो सकता है और उसके बाद घर वापस आना अथवा हमेशा के लिये विदेश में रह जाना भी हो सकता है। विकल्पत: वापस घर लौटने से पूर्व कई वर्षों तक विदेश में रहना भी हो सकता है।

प्राचीन पुस्तकों में ऐसी यात्रा के लिये किसी कारक का उल्लेख नहीं है। वर्ष फल कुण्डली में [1]सहम लगाकर प्रभावी रूप से कितना प्रयोग किया जा सकता है इसका अवधारण अनेक कुण्डलियों का अध्ययन करने के बाद ही एक उत्सुक विद्यार्थी कर सकता है।

दो सहम का उल्लेख किया जाता है अर्थात प्रदेश (विदेश) सहम और जल पथन (समुद्री यात्रा) सहम जिससे विदेश यात्रा की भविष्यवाणी करने के लिये विचार किया जा सकता है।

प्रदेश सहम : नवम भाव—नवमाधिपति + लग्न

(क) (ख)

जल पथन सहम कर्क १५° – शनि + लग्न

(क) (ख)

यदि लग्न इन दोनों (क और ख) के बीच में नहीं पड़ता है तो आवश्यक सहम प्राप्त करने के लिए उपरोक्त विधि से प्राप्त मूल्य में ३०° जोड़ देना चाहिये।

---

१. सहम की संगणना और व्याख्या के लिये डा० बी० वी० रमन द्वारा लिखित 'वर्ष फल' या 'हिन्दु उन्नत जन्म कुण्डली' पढ़ें।

यदि सहम या उसका अधिपति लग्न या नवम भाव से सम्बन्धित न हो या अन्यथा उत्तम स्थिति में हो तो सहम से प्राप्त घटना पूरी तरह पूरी नहीं होगी। सप्तमेश, नवमेश और द्वादशेश से दृष्ट सहम जो इनमें से किसी भी भाव से सम्बन्धित हो, समुचित ग्रह के दशाकाल में विदेश यात्रा का संकेत देता है।

जब लग्नाधिपति से १२ वें भाव में स्थित ग्रह उच्च का होकर या मित्र राशि में उत्तम स्थिति में हो या मित्र ग्रह या उच्च के ग्रह द्वारा दृष्ट हो तो जातक अपनी जन्म भूमि में सफलता प्राप्त करेगा। यदि १२ वें भाव में कोई ग्रह न हो तो उसके स्थान पर वहां के भावेश पर विचार करना चाहिये।

यदि जिस राशि में लग्नाधिपति स्थित है वहां से द्वादशेश शत्रु राशि या नीच स्थिति में या अन्यथा कमजोर हो तो जातक विदेश जाता है। यदि लग्नाधिपति से द्वादशेश केन्द्र में या त्रिकोण में या लग्न में और मित्र राशि में हो, अपनी राशि में हो, या अपनी उच्च राशि मे हो और उत्तम स्थिति में हो तो जातक ऐसे देश में जाता है जहाँ उसे सफलता मिलती है। यदि लग्नाधिपति चर राशि में हो और चर राशि में स्थित ग्रहों से दृष्ट हो तो भी विदेश यात्रा करता है और जातक विदेश में सफलता प्राप्त करता है। विदेश यात्रा या विदेश में आवास की भविष्य वाणी करने के लिये नवम भाव में स्थित ग्रहों, नवम भाव पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों, नवमाधिपति और द्वादशेश की दशा अतिमहत्त्वपूर्ण है।

लम्बी यात्रा को नियन्त्रित करने वाले सभी महत्त्वपूर्ण नवम भाव के अतिरिक्त छोटी मोटी यात्रा तीसरे भाव से और विदेश यात्रा सातवें भाव से और लम्बी यात्रा १२ वें भाव से तथा दूरस्थ स्थान पर आवास देखे जाते हैं।

हमारे अनुभव से यह पता लगा है कि कारकत्व, स्वामित्व या ग्रहों की भावों में स्थिति जिससे विदेश यात्रा का संकेत मिलता है, विदेश यात्रा के लिए कारणों का भी संकेत देते हैं। उदाहरण स्वरूप यदि चतुर्थेश और नवमेश परस्पर संबन्धित हों तो जातक उच्च शिक्षण के लिए विदेश जाता है या शिक्षण के उद्देश्य से जाता है। यदि नवमाधिपति और दसमाधिपति आपस में सम्बन्धित हों तो यात्रा जीवन-वृत्ति या व्यवसाय में उन्नति के लिये हो सकती है। यदि षष्ठेश भी शामिल हो तो जातक सरकारी काम से विदेश जाता है। इस हालत में उसे नियोक्ता द्वारा भेजा जाता है। यदि वह ग्रह बुध है तो विदेश में शिक्षा, अनुसन्धान, अध्ययन, लेखन या इसी प्रकार का कार्य करता है। यदि वह ग्रह बृहस्पति हो तो जातक या तो पर्यटक प्रोफेसर से रूप में विदेश जाता है जहां वह किसी विषय पर व्याख्यान देता है अथवा धार्मिक आध्यात्मिक या सांस्कृतिक उद्देश्य से जाता है। यदि एकादशेश अन्तर्ग्रस्त हो तो विदेश यात्रा का सम्बन्ध मुख्यतः धन कमाने से होगा, यदि राज-

नैतिक उद्देश्य हो तो कर्ज, धन या अन्य सहायता प्राप्त करने के लिये, यदि व्यापार का उद्देश्य हो तो अपने उत्पादों को बढ़ाने या बेचने के लिये यात्रा होगी। यदि विदेश यात्रा से सम्बन्धित ग्रहों के साथ सप्तमाधिपति या सूर्य का सम्बन्ध हो तो जातक राजनयिक या शिष्ट मंडल के रूप में विदेश जा सकता है। यदि लम्बी यात्रा का योग बनाने वाले ग्रहों के साथ शुक्र या सप्तमाधिपति का सम्बन्ध हो तो जातक शादी के बाद विदेश जा सकता है। यदि शुक्र और शनि, एकादशेश और दसमेश सम्बन्धित हों तो जातक विदेश में कला का प्रदर्शन करेगा या ललित कला में भाग लेगा। यदि ये ग्रह प्रबल स्थिति में हों तो जातक विदेश में फिल्म की शूटिंग करेगा या इसी प्रकार का कार्य करेगा।

यदि लग्नाधिपति कमजोर हो और षष्ठ भाव या षष्ठेश अन्तर्ग्रस्त हो तो विदेश यात्रा चिकित्सा के कारणों के लिए हो सकती है अर्थात् उपचार या शल्यचिकित्सा। यदि नवमेश और द्वादशेश पर पापग्रहों का प्रभाव हो तो जातक तस्करी, वेश्यावृत्ति, जासूसी जैसे घृणास्पद कला के सम्बन्ध में विदेश यात्रा करेगा। यदि विदेश यात्रा का योग बनाने वाले ग्रहों के साथ षष्ठेश या अष्टमेश या इन भावों का सम्बन्ध हो तो जातक राजनैतिक या अपराध के कारणों से विदेश की यात्रा करेगा।

यदि शनि, बृहस्पति और द्वादशेश उत्तम स्थिति में हों तो जातक आश्रम बनाने या धार्मिक अथवा आध्यात्मिक उद्देश्यों से विदेश में जा सकता है।

कुण्डली सं० ९८

जन्म तारीख १८-४-१९०४ जन्म समय ५-५७ बजे सध्या (स्था० स०)
अक्षांश २५°१८′ उत्तर, देशा० ३°-०′ पूर्व।

राशि

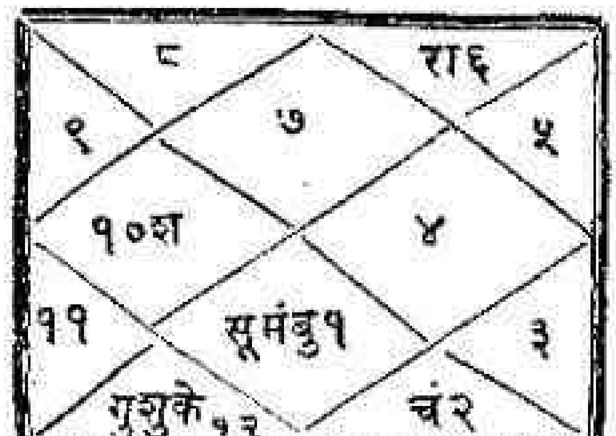

नवांश

सूर्य की दशा शेष-१ वर्ष ० महीने १३ दिन

कुण्डली सं० ९८ में लग्नाधिपति छठे भाव में उच्च का है। चूंकि १२ वें भाव में कोई ग्रह नहीं है, यहां का अधिपति शनि है और वह अपनी ही राशि में स्थित है। जातक जो एक राष्ट्रीय समाचार पत्र का स्वामी है और अनेक कारोबार का मालिक है, इसने अपनी जन्म भूमि पर ही सफलता पाई।

कुण्डली सं० ९९

जन्म तारीख १२–५–१९२५   जन्म समय ७–३० बजे प्रातः (भा. स्टैं. टा.)
अक्षांश १३° ०४′ उत्तर, देशा० ८०° १७′ पूर्व

राशि

नवांश

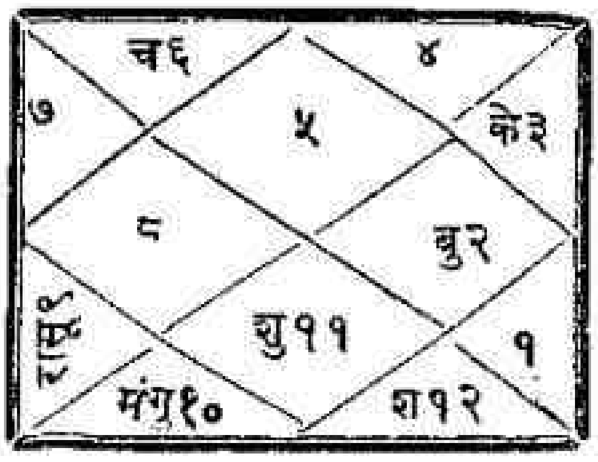

शुक्र की दशा शेष–१३ वर्ष ९ महीने १ दिन

कुण्डली सं० ९९ में लग्नाधिपति लग्न में ही स्थित है। सूर्य और बुध शुक्र से १२ वें भाव में स्थित हैं। सूर्य उच्च का है। एक समाचार पत्र के स्वामी का पुत्र होने के कारण जातक बहुत बड़ी सम्पदा का उत्तराधिकारी था और वह स्वयं भी इसी काम में लगा हुआ था। उसे भी अपनी जन्मभूमि पर सफलता मिली।

यह ध्यान दें कि उपरोक्त दोनों कुण्डलियों में नवम भाव में स्थित ग्रहों या नवमाधिपति की दशा अभी आरम्भ नहीं हुई है। कुण्डली संख्या ९८ में जातक का जन्म सूर्य की दशा में हुआ। उसके बाद अब तक चन्द्र, मंगल, राहु, बृहस्पति और शनि की दशा आई। यद्यपि चूँकि दशानाथ का नवम भाव से सीधा सम्बन्ध नहीं था फिर भी सुसंगत भुक्तियों में जातक विदेश यात्रा पर गया किन्तु अभी तक विदेशी निवासी नहीं बना। कुण्डली संख्या ९९ में जातक का जन्म शुक्र की दशा में हुआ। अब तक उसे सूर्य, चन्द्रमा, मंगल और राहु की दशा मिली। इस मामले में भी इन ग्रहों का नवम भाव से सीधे सम्बन्ध नहीं है और जातक में विदेश की केवल यात्रा की। विदेश में आवास की सम्भावना नहीं है क्योंकि लग्नाधिपति लग्न में अचर राशि में स्थित है। यदि लग्न की स्थिति और विदेश में आवास देने वाले अन्य ग्रह की स्थिति पक्ष में न हो तो उनके दशा काल में भी लाभप्रद फल प्राप्त नहीं होता।

कुण्डली संख्या १००

जन्म तारीख १८८९   समय ११–३ बजे संध्या
अक्षांश २५°–२५ उत्तर, देशा० ८२′ पूर्व।

राशि

नवांश

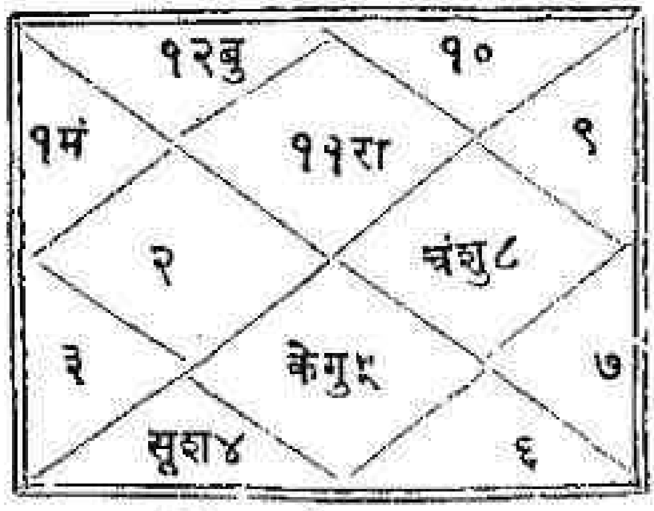

बुध की दशा शेष–१२ वर्ष ७ महीने ६ दिन

जातक केतु की दशा और राहु की भुक्ति में १९०५ में इंग्लैण्ड गया। दशा नाथ केतु नवमेश बृहस्पति से युक्त है और योग कारक मंगल से दृष्ट है। भुक्तिनाथ राहु बुध की राशि में १२ वें भाव में स्थित है जो विदेश यात्रा का कारक भी है। नवम भाव में जलीय राशि मीन है और नवमाधिपति द्विस्वभाव राशि में स्थित है। राहु की दशा में भी जातक ने अनेकों बार विदेश की यात्रा की और अपने देश का प्रतिनिधित्व किया। राहु १२ वें भाव में स्थित है और नवमाधिपति बृहस्पति से दृष्ट है। बृहस्पति शुक्र के नक्षत्र में है जो चतुर्थेश है और उसपर पंचमेश तथा दसमाधिपति मंगल की दृष्टि है। इस बृहस्पति पर केतु और दशानाथ बृहस्पति का प्रभाव है जिससे उन्होंने काफी विदेश यात्राएँ की। बृहस्पति के चतुर्थेश के नक्षत्र में होने के कारण जातक केतु की दशा में शिक्षा के लिए विदेश गया। राहु की दशा में दसमाधिपति के रूप में नवमाधिपति पर मंगल के प्रभाव के कारण उसने स्वयं महसूस किया और जातक ने मुख्य: राजनैतिक कारणों से विदेश की यात्रा की।

हम देखते हैं कि द्वादशेश बुध शुक्र के साथ उसकी मूल त्रिकोण राशि में स्थित है। जातक अपने ही देश में एक लोकप्रिय राजनैतिक व्यक्ति था।

कुण्डली सं० १०१

जन्म तारीख २२-३३-११९ जन्म समय ५–१६ बजे प्रात: (सी.ई.टी.)
अक्षांश २३°६′ उत्तर, देशा० ७°२४० पूर्व।

राशि

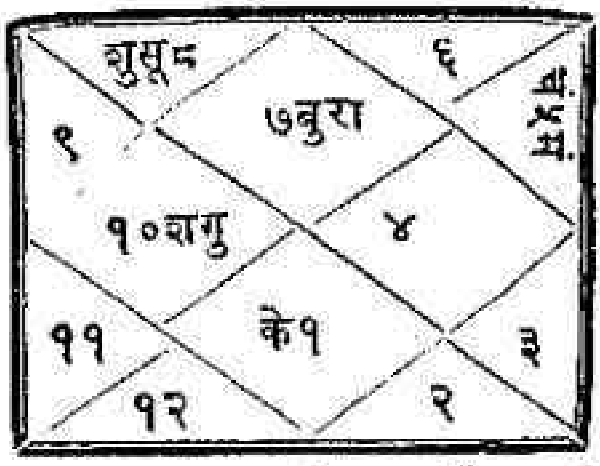

नवांश

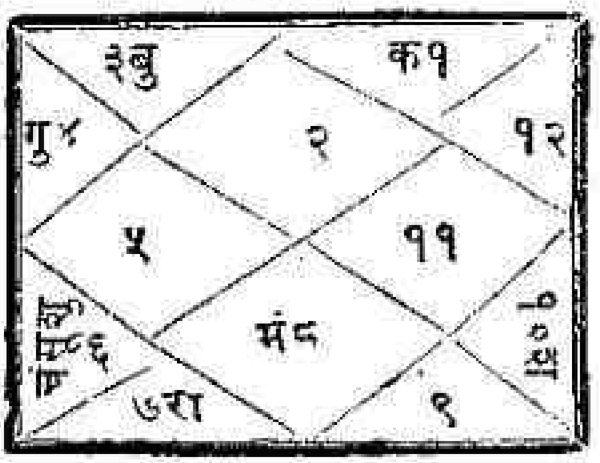

शुक्र की दशा शेष–१२ वर्ष ११ महीने १२ दिन

कुण्डली संख्या १०१ में जातक के जीवन की पहली और महत्त्वपूर्ण घटना शिक्षा के लिए उसका इंगलैण्ड जाना था। वह सूर्य की दशा और बृहस्पति की भुक्ति में गया। सूर्य वृश्चिक राशि में है और सप्तमाधिपति मंगल से दृष्ट है। चन्द्रमा से सूर्य चौथे भाव में स्थित है। जो शिक्षा का भाव है। लग्नाधिपति शुक्र वृश्चिक राशि में है और नवमाधिपति तथा द्वादशेश बुध राहु के साथ स्थित है जो वर्गोत्तम में हैं। अतः जातक के व्यक्तित्व पर विदेश का प्रभाव होगा और यह इसलिए संभव था क्योंकि उसकी शिक्षा विदेश में हुई थी। भुक्तिनाथ बृहस्पति तीसरे भाव में चर राशि में स्थित है। चन्द्रमा की दशा में वह अपने देश में वापस आ गया जहाँ पर उसने वैज्ञानिक सर्कल में ख्याति प्राप्त की। द्वादशेश बुध लग्न में शनि द्वारा दृष्ट है जो अपनी ही राशि में है जिससे जन्मभूमि पर ही सम्पन्नता और सफलता का संकेत मिलता है। राहु दशा में जातक को अन्तर्राष्ट्रिय ख्याति के वैज्ञानिक की प्रसिद्धि प्राप्त हुई और पूरे विश्व की यात्रा की। राहु लग्न में चर राशि में बुध के साथ स्थित है। बुध नवमाधिपति और द्वादशेश है और राशि स्वामी शुक्र वृश्चिक में है जिससे जातक ने बहुत यात्राएँ की। राहु बुध के साथ है जो अध्ययन का कारक है और वह अपने वैज्ञानिक ज्ञान और प्रसिद्धि के कारण विदेश गया।

कुण्डली सं० १०२

जन्म तारीख ९२–१–१८८३ जन्म समय ६-३२ बजे संध्या (स्थन. स.)
अक्षांश २२°३०' उत्तर, देशा० ८८°३०' पूर्व ।

राशि

नवांश

चन्द्रमा की दशा शेष—२ वर्ष ३ महीने २७ दिन

कुण्डली सं० १०२ में जातक दो बार विदेश गया और दोनों ही बार आध्यात्मिक उद्देश्य से गया। वह बृहस्पति की दशा और बृहस्पति की भुक्ति में विदेश गया जबकि उसे चिकागों में धर्म संसद को सम्बोधित करने के लिए आमन्त्रित किया गया था। दशानाथ बृहस्पति ११ वें भाव में चर राशि में स्थित है और द्वादशेश मंगल से दृष्ट है। बृहस्पति मंगल के नक्षत्र में भी स्थित है। दशानाथ बृहस्पति के प्रभाव के कारण ही जातक की विदेश यात्रा की आध्यात्मिक

रंग मिला। सलाहकार द्वारा आरम्भ किए गए आध्यात्मिक उद्देश्य को पूरा करना था जातक दूसरी बार शुक्र की भुक्ति में विदेश गया। शुक्र चर राशि में नवमाधिपति सूर्य और दसमाधिपति बुध के साथ स्थित है।

कुण्डली संख्या १०३

जन्म तारीख १६–१०–१९१८ जन्म समय २–० बजे संध्या (स्था० स०)

अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ७७°३५' पूर्व।

राशि

नवांश

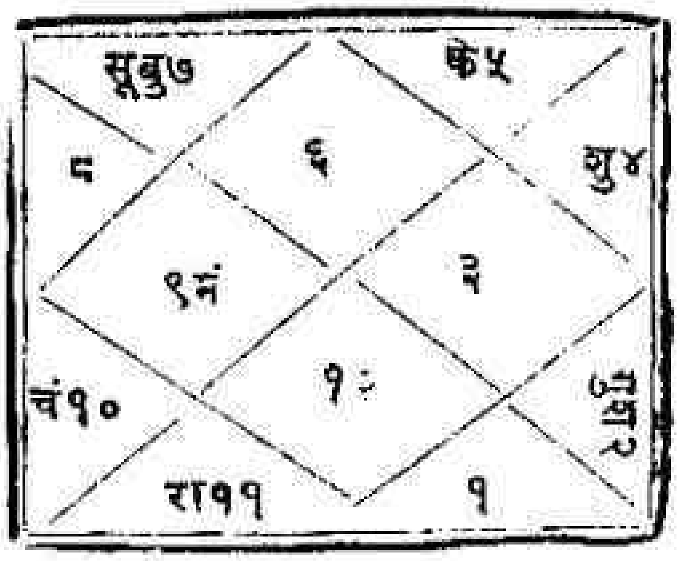

राहु की दशा शेष—११ वर्ष ८ महीने २० दिन

कुण्डली संख्या १०३ में लग्नाधिपति शनि अष्टम भाव में स्थित है। नवमाधिपति बुध दसम भाव में चर राशि में स्थित है और नवम भाव में दसमाधिपति शुक्र स्थित है। चूंकि लग्नाधिपति दुःस्थान में चर राशि में स्थित है अतः समुचित दशा और भुक्ति में जातक विदेश की यात्रा करेगा। बुध की दशा और शुक्र की भुक्ति में जातक विश्व यात्रा पर गई। दशानाथ और भुक्तिनाथ दोनों ही नवम भाव से सम्बन्धित सीधे हैं, एक वहीं स्थित है और दूसरा वहाँ का अधिपति है।

कुण्डली सं० १०४

जन्म तारीख ८-८-१९१२ जन्म समय ७–३५ बजे संध्या (भा.स्टै.स.)

अक्षांश २२°४०' उत्तर, ८८°३०' पूर्व।

राशि

नवांश

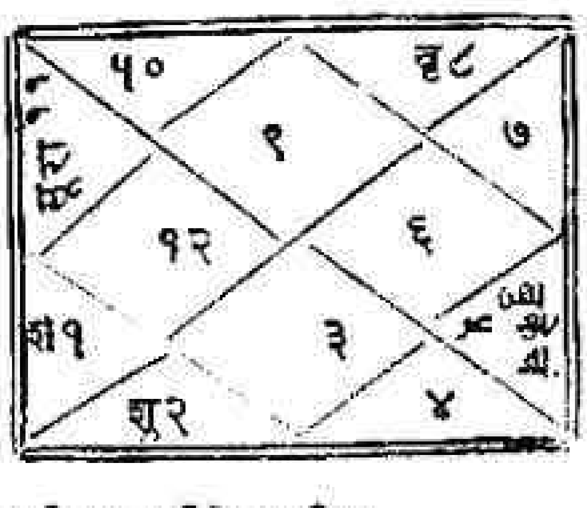

मंगल की दशा शेष—६ वर्ष १ महीने ६ दिन

कुण्डली संख्या १०४ में जातक शनि की दशा और शुक्र की भुक्ति में पहली बार विदेश गया। यद्यपि शनि लग्नाधिपति है, वह द्वादशेश भी है। भुक्तिनाथ शुक्र नवमाधिपति होकर तृतीयेश मंगल के साथ सातवें भाव में स्थित है। जातक उसी दशा और बृहस्पति की भुक्ति में दूसरी बार तथा तीसरी बार विदेश गया। बृहस्पति एक जलीय राशि वृश्चिक में स्थित है और द्वादशेश शनि से दृष्ट है। बुध की दशा और बुध की भुक्ति में भी वह विदेश गया। यद्यपि बुध पंचमेश तथा अष्टमेश है, नवमाधिपति शुक्र के साथ सप्तम भाव में स्थित है। अचर राशि में चौथे भाव में लग्नाधिपति शनि के स्थित होने के कारण उसके जीवनकाल में समुचित दशा और भुक्ति में विदेश की यात्रा हो सकती है किन्तु विदेश में बस नहीं सकता है।

कुण्डली संख्या १०५

जन्म तारीख ३–८–१९४२ जन्म समय ७·२३ बजे प्रात: (भा..स्टै.टा.)
अक्षांश १३° २८′ उत्तर, देशान्तर ७७° २२′ पूर्व।

राशि

नवांश

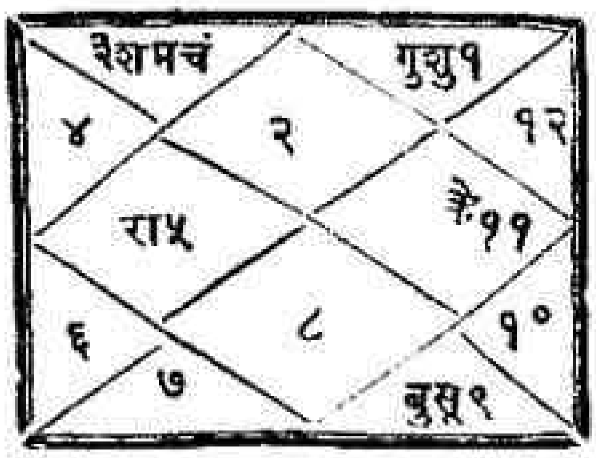

केतु की दशा शेष–२ वर्ष ७ महीने

कुण्डली संख्या १०५ में जातक पहली बार सूर्य की दशा और बृहस्पति की भुक्ति में विदेश गया। सूर्य लग्नाधिपति है। और जलीय राशि कर्क में स्थित है तथा सप्तमेश से दृष्ट है। अगली दशा चन्द्रमा की थी जो द्वादशेश होकर नवम भाव में स्थित है अत: विदेश में आवास जारी रहा। लग्न में नवमाधिपति मंगल वर्गोत्तम राहु के साथ स्थित है। लग्नाधिपति जलीय और चर राशि में १२ वें भाव में स्थित है जिससे समुचित दशा में विदेश में आवास का संकेत मिलता है।

...ण्डली सं० १०६

ज... तारीख १७-९-१९४१ समय १०·० बजे (भा.स्टै.स.)
अक्षांश २२°३४′ उत्तर, देशा० ८८° २४′ पूर्व।

राशि नवांश

शनि की दशा शेष–३ वर्ष २७ दिन

कुण्डली संख्या १०६ का जातक भारत वापस आने के काफी प्रयास के बावजूद विदेश में रहने को बाध्य हो गया । जातक बुध की दशा में विदेश गया। बुध नवमाधिपति और द्वादशेश है और १२ वें भाव में उच्च का है तथा तृतीयेश बृहस्पति से दृष्ट है। लग्न चर राशि है और वहाँ पर उस राशि का अधिपति स्थित तथा सप्तमाधिपति बली मंगल से दृष्ट है। चन्द्रमा से भी तृतीयेश और द्वादशेश बुध तीसरे भाव में स्थित है और नवमाधिपति बृहस्पति से दृष्ट है। केतु की दशा में भी वह विदेश में रहा। केतु जलीय राशि मीन में स्थित है और नवमेश तथा द्वादशेश बुध से दृष्ट है। चन्द्रमा से केतु नवम भाव में स्थित है। अब शुक्र की दशा चल रही है और अपने घर वापस आने की कोई संभावना नहीं है। शुक्र तुला राशि में स्थित है और सप्तमाधिपति मंगल से दृष्ट है।

कुण्डली सं० १०७

जन्म तारीख १२-१-१९३२ समय २–३० बजे सन्ध्या (भा०स्टैं०टा०)

अक्षांश ३२°१०′ उत्तर, देशा० ७४°१४′ पूर्व।

राशि नवांश

बृहस्पति की दशा शेष–१० वर्ष ५ महीने २३ दिन